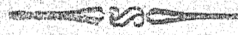
श्रीगणेशाय नमः ।

ताजिकनीलकण्ठी ।

ज्योतिर्विद्वरिष्ठश्रीनीलकण्ठविरचित.



पण्डितमहीधरकृतभाषाटीकासमलंकृत ।



जिसका

लोकोपकारार्थ-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९७९, शके १८४४.

कल्याण–मुंबई.

भूमिका।

अहो! ईश्वरने ज्योतिषशास्त्र संसारमें कैसा अद्वितीय रत्न दियाहै जिसके प्रभावसे मनुष्य पुराकृत और अर्वाकृत जो अपने कृतकर्म और उनका परिणाम है संपूर्ण जान सकते हैं, इस अपार संसारमें समस्त वस्तुमात्र उद्यमी मनुष्यके हस्तगत है. ऐसा कोई पदार्थ नहीं कि जिससे बुद्धिबलवाला मनुष्य न जान सके वा न करसके, केवल जन्म और मरण मनुष्यके अगोचर है इसीसे ईश्वरकी ईश्वरता विदित होतीहै, परंतु ज्योतिषशास्त्र ऐसा अनमोलमणि है कि, जिसकी सलाई नेत्रोंमें देनेसे परोक्षीय जन्ममरणभी प्रत्यक्ष दिखाई देतेहैं. ब्रह्माजीने जब वेदके चार भाग करदिये तब उसके अंग "शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त, छन्द, ज्योतिष" ये छः शास्त्र बनाये इनमेंसे प्रत्यक्ष तात्पर्य और चमत्कृत होनेसे ज्योतिष शिरोमणि गिना जाता है. अब ऐसा समय आया कि, वह ऐसा अद्वितीय रत्न शिरोमणि कैसा गिरता पडता दूर भागता जाता है. कोई इसे पूछताभी नहीं कि, आप कहांके और कौन हैं. कदाचित् किसीने पहचान लिया तो भर्त्सना करताहै कि हां! तू वही है जिसने हमारे पितृपिता-महादिकोंको अपने चमत्काररूपी प्रपंचमें लुभाकर समस्त धन तन दान धर्मादि व्यर्थ कार्य्योंमें व्ययकरायके उन्हें अधोगामी और हमारे तिरस्कार योग्य कर दिया, तेरे प्रपंचमें वे नहीं फँसते तो उनका उपार्जित द्रव्य सब हमहींको अनायास मिलताथा. हमें अनेक प्रकारके परिश्रम आजीवनार्थ क्यों करने पडते, अब हम तो तेरा आदर क्या करेंगे; बाप दादे अज्ञान हुये तो हुये अब हम तो कभी न भूलेंगे. जाइये अपनी इज्जत बचाइये "कुछ आगेबढकर" एक और महाशय मिले. देखकर बोल उठे कि, अजी साहब! अलग ही अलग चले जाइये अपना परछांवा हमारे ऊपर न पडने दीजिये तुम अमंगली हो हमने सुनाहै कि, हमारे माताके विवाहपूर्व तुम्हारे अंजन नेत्रवाले किसीने कहाथा कि, इस कन्याके वैधव्ययोग है अकस्मात् विवाहोत्तर अल्पकालमें वैसाही होगया. उपरांत उसी वैधव्य योगवालीके गर्भसे हम ऐसे हृष्ट पुष्ट और शाक्त पैदा है कि, स्त्रीको कभी विधवा नहीं मानते संसारमें सभी पुरुष ईश्वरके

अंश हैं स्त्रियोंको पुरुषोंकी कमी नहीं है. इन अबला विचारियोंका जीवित वैधव्यरूपमें क्यों व्यर्थ करावें. हमारी माताको केवल तेरे दुर्वचनसे कुछ दिनों वैधव्य मानना पडा फिर तो ईश्वर कृपासे ऐसा सौभाग्य हुवा कि, जिसके प्रतापसे हम ऐसे पंडित भंड संसारमें अवतरित हैं. अब कहिये ! हमारी माताके वैधव्ययोग है वा सौभाग्य ? तुम झूठे तुम्हारे पाठक झूठे हायरे कलियुग ! तुझे अपना अधिकार प्रथम क्या इसी अद्भुत रत्नपर करना था, क्या इसीके साथ तेरी मुख्य शत्रुता थी हां ! तेरा यह प्रयोजन अग्रेसर है कि, प्रथम शिरोमणि शास्त्रको आक्रमण करूं तो और सभी अंतर्गत होजायँगे परंतु यह अनादि शास्त्र सहसा तेरे आक्रमणमें आक्रमित इस दशामेंभी नहीं होनेका; कुछ दिन समय प्रभाव सार्थक करनेके लिये ज्योतिष रत्नराज पक्षसंकोच किये प्रतीक्षु हैं परिणाममें रत्न रत्नही है. इस समयमें ज्योतिषकी प्रभुता न्यूनहोनेके कारण यह है कि ज्योतिषियोंको कहे फल पूरे ठीक नहीं लगते. क्योंकि कलिराजने प्रथमावेश ज्योतिषियोंसेही आरंभ उठाया. पूर्व ऋषिलोग यमनियमादि तप और मिताहारी और अप्रतिग्राही, योगाभ्यासी, सर्व शास्त्रज्ञ वेदाभ्यासी और नित्य अग्निहोत्री थे. इससे भूत, भविष्य, वर्त्तमान समाधि अर्थात् एकाग्र विचारसे कहतेथे. अब ज्योतिषि लोग यमनियमादिके स्थानमें दंभलोभादि और मिताहारके स्थानमें अग्निसम और अप्रतिग्राहीके स्थानमें सर्वग्राही, योगाभ्यासके स्थानमें द्रव्यार्जन, प्रपंच शास्त्र, वेदाभ्यासके स्थानमें वेदविक्रय, तप और जितेंद्रियताके स्थानमें स्त्रीलोलुपता, अग्निहोत्रके स्थानमें तंबाकू. एवं प्रकारके सांप्रतीय ऋषि होगये तो सर्व शास्त्रज्ञताके योग्य बुद्धि कहांसे हो ? बिना बहुज्ञता और बिना दशादिकोंके चमत्कार फल क्योंकर कहसकें. ब्राह्मण सर्वस्व गायत्रीके उपदेश मात्रसे दक्षिणा निमित्त जप विक्रय और यथेच्छा प्रतिग्रह ग्रहण करने लगे तो बुद्धि निर्मल और कही बात सच्ची क्यों होवे. कदाचित् किसने कुछ परिश्रम पठनपाठनमें किया और कुछ शास्त्रज्ञता पाईभी तो दंभ और मत्सरमें परिपूर्ण होजाते हैं. ज्योतिषमें अधिकांश गुरुलक्ष्यस्थान हैं उन युक्तियोंके दूसरेकी प्रभुताका मत्सर

मानकर किसीको नहीं बतलाते पुनः आगे विद्याका प्रचार कैसे बढे ? ऐसे २ आचरणोंसे यह अद्वितीयशास्त्र लोप होता २ इस दशाको प्राप्त होगया सर्वसाधारणको इस अद्भुत रत्नके उन्नतिका यत्न सर्व प्रकारसे करना योग्य है. फिर ऐसा अमूल्यमणि मिलना असंभव है विशेषतः ज्योतिषी लोगोंको इसकी उन्नतिका उद्यम करना चाहिये कि, उनका यह आजीवन पूर्वसे और पश्चात्के लियेभी उपयोगी है. इसमें अतिशयश्रम पठन पाठनसे करना योग्य है जिससे लोक प्रत्ययकारक ठीक फल कहसकें देखिये ! पहिलेके महात्मा आचार्य्योंने सर्व साधारणके भूति और प्रत्ययके लिये कितना श्रम उठायके यह शास्त्रप्रचार किया कि; जिसे अब बहुधा लोग कहते हैं कि, ज्योतिषशास्त्र कुछ वस्तु नहीं न ग्रहोंकोही शुभाशुभ देनेकी सामर्थ्य है जैसा जिसका कर्म वैसा अवश्य होगा. इस अवसरमें कोई नास्तिक कहते हैं कि, यह तो ब्राह्मणोंने केवल अपनी अज्ञान और अल्पश्रमी संतानके उपकारार्थ यह प्रपंच किया है. अब इसमें वक्तव्य यह है कि पूर्व लिखित दशा जब इस प्रत्यक्ष शास्त्रकी होगई तो जनश्रुतिभी ऐसी होनी आश्चर्य तो नहीं तथापि इस शास्त्रका मूल तात्पर्य उन्हें विदित नहीं है नहीं तो सहसा कभी ऐसा न कह सकते. भोक्तव्य तो कर्मफल है यह बोध नहीं कि, वह क्या है और उसका परिणाम कब और क्या होगा इसका विचारद्वारा पूर्वाचार्य्योंने जन्मसमय इष्ट मानकर ऐसे हिसाब बनाये कि, जिससे वह अलक्ष्यकर्म फल हित प्रत्यक्ष होजाता है. उन हिसाबोंके नाम सूर्य्यादि नवग्रह और मेषादि १२ राशि तिथ्यादि पंचांग स्थापन करदिये ग्रह आप न तो कुछ देते न कुछ अशुभ कर सकते जैसा जिसका कर्म उपार्जित होवे वैसा ही फल होगा, परन्तु ग्रहरूपी हिसाबके द्वारा वह अलक्ष्य लक्ष्य हो जाताहै. अब इसमें ऐसा आभास हुआ कि ग्रह असमर्थ हैं फल कर्मानुसार भोक्तव्यही है तो ग्रहार्चन दानादिभी निष्प्रयोजन हैं परंतु यह स्थूल विचार "शृंगग्राहिन्याय" है. प्रयोजन उसका कैसा उत्तम है कि हमने पूर्व ऐसा कर्म किया था, कि जिसका परिणाम हमको अरिष्ट धन नाशादि मिलना है यह कर्म और फल तो अदृश्य था परंतु सूर्य वा कोई ग्रहके दशा कभी होनेसे हमको अरिष्ट ज्ञात हुआ. यह कर्मफलबोधक एक हिसाब

सूर्य्य हुआ अब वह कर्म हमें पहलेही ज्ञात होता तो उसका प्रतिकार करते. केवल ज्ञापक यहां सूर्य्य है तो हमको सूर्य्यहीके द्वारा कर्मनिर्हारोपाय सूर्य्यकी वेदबोधित शांत्यादि करनी चाहिये यह शांति सूर्य्यकी क्या उस उपार्जित दुष्कर्मकी है ? जैसे सूर्य्यद्वारा कर्मफल ज्ञात हुआ ऐसे सूर्य्यहीके द्वारा प्रतिकार करना योग्य है इसमें दो प्रकार शुभत्व होगा कि एक तो अति प्रयत्नोंसे जो द्रव्य उपार्जन किया है उसके अकस्मात् व्यय होजानेमें कष्ट अपनेही हाथसे होगया सूर्यदशाबोधित कर्मफल मिलगया और अपने हाथके व्यय करनेसे पश्चात्ताप न होगा. दूसरा लाभ यह है कि वेदबोधित और शास्त्रसंमत विधिसे जो कुछ शांत्यादि करी जाती हैं उनके कर्मनिर्हार और चित्तानंदता और पारितोषिकशुभत्व और सद्व्यय गणनामें होगा. विधिसे न करेंगे तो असद्व्यय (जिसमें फेर कभी काम नहीं आता) और इस समयमें चित्त संताप करनेवाला होगा जैसे वैद्यको देनेमें वा दंडमें वा चोरी वा अग्नि जलादि पातमें व्यय होजानेसे कर्मफल तो मिलेगाही. कर्मसे कर्मनिर्हार होताहै इसमें चित्तशुद्धि मुख्य है कर्मवासना पुनर्जन्म भी फलभोगके लिये देती है सांप्रतमें साधारणकी बुद्धि ऐसी ससंभ्रम होरहीहै कि, जन्म देहादि न पहिले था न फिर होगा केवल पंचतत्त्व अपने २ स्थानोंमें मिल जायँगे. जन्म फिर कौन लेता है. मरेमें कोई हटकर किसी प्रकार न आया पहिले जन्म भया था पीछे जन्म होगा यह भ्रांति मिथ्या है प्राण नाम वायुका है वहभी वायुमें मिलजाता है जन्म लेनेको स्थूल दृष्टिसे तो कुछभी अवशेष नहीं रहता परन्तु मूलज्ञान यह है कि जिस कर्मके अभ्यासमें शरीर रहता है उसकी वासना बीज मात्र स्थित रहती है उसीके अनुसार कर्मफल भोगनेको दूसरा प्रपंच पंचतत्त्वकी वासना बलसे उत्पन्न होजाता है इसके बहुतसे प्रमाण हैं और बहुत कुछ वक्तव्य है विशेष विस्तार इस विषयका पुनः किसी और ग्रंथके अनुवाद व्याजसे लिखनेकी इच्छा है, "ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पः प्रचक्षते ॥ यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्द्धनि स्थितम् ॥" प्रथम श्रुतिनेत्र ज्योतिष शास्त्रका एक स्कन्ध जन्मफल

बोधक जातकोत्तम बृहज्जातककी भाषाटीका सर्वसाधारणमें थोडा कुछ ज्योतिषका मार्ग जिन्होंने देखा है और बडे ग्रंथ संहितादिकोंमें गति नहीं है ऐसे बालकोंके सुगम बोध निमित्त और गुरुजनोंके पाठनमें अल्प श्रमके निमित्त मैंने करी. उपरान्त इच्छा हुई कि, जातकके फल स्थलकालीन और बहुश्रमी हैं अर्थात् प्रथम सर्वग्रहोंके षड्बल दृष्टि बलेष्ट कष्टबल निसर्गादि बल गणितसे दशांतर्दशा मिलतीहै इसमें सिद्धांत मतसे सूक्ष्म विचार किया तो बहुतश्रमसे स्थूलकाल फल मिलताहै जैसे माहेश्वरी दशामें शुक्रके २० वर्ष निसर्ग दशामें शनिके ५० वर्ष और उच्चादिबल पूर्ण होनेमें चन्द्रमाके १५ वर्ष दशा है ऐसेही अंतर्दशाभी ५।६ वर्षसे कम न होगी तो जातकोक्तफल तो एकही है क्या समस्त अंतर्दशा ५।६ वर्ष पर्य्यंत एकसाही फल होगा इस निमित्त ब्रह्मादि अष्टादश आचार्योंके उपदेष्टा श्रीसूर्य्यने ताजिकशास्त्र बनाया जिससे वर्षप्रवेश मासप्रवेश दिनप्रवेश पर्य्यंत गिननेसे दिन २ पर्य्यंत फल ज्योतिषी कहसकते हैं अतएव बृहज्जातकके अनुवाद करने उपरान्त ऐसाही कुछ ताजिक ग्रंथकाभी अनुवाद करना चाहिये ताजिक ग्रंथोंमें मुख्य जीर्णताजिक है उसीकी सारणी नीलकंठ दैवज्ञ विरचित नीलकंठी है. यह ग्रंथ पाठमें थोडा अर्थ बहुत और संमत होनेसे इसकी भाषाटीका सर्व साधारणके बोधन योग्य खडी बोलीमें परमकारुणिक श्रीबदरीशमूर्ति गढवाल राज्याधीश श्री ५ महाराजा कीर्तिशाहसाहबकी आज्ञानुसार करताहूं. इस ताजिक शास्त्रमें कोई धर्मशास्त्रके वचन "नवदेद्यावनीं भाषां न गच्छेज्जैनमंदिरम् । हस्तिना पीड्यमानोऽपि प्राणैः कंठगतैरपि ॥" इत्यादिसे दोषारोपण करते हैं कि, इसमें इकबाल इस्सराफ, इत्थशालादि बहुतसे फारसीके शब्द हैं इससे ब्राह्मणोंको पाठयोग्य नहीं है किंतु उनका स्थूल विचार है कि, ऐसे अन्य जातिके भाषा अवाच्य हैं तो प्रथम अमरकोश पांडित्यमूलही दूषित होताहै और ज्योतिषके अष्टादश संहिता कारक "पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, गर्ग मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलस्त्य, गुरु शौनक इत्यादि हैं" इन्हींसे ज्योतिषशास्त्र प्रवृत्त भया है. यवनाचार्य्य कृत यवनजातक भी सर्वसंमत प्रमाण ग्रंथ है और यवनाचार्य्यने कुछ अपनीही कल्पना

नहीं करी किन्तु गुरूपदिष्ट वैसाही था. उक्तं च रोमकेण "ब्रह्मणा गदितं भानोर्भानुना यवनाय तत् । यवनेन च यत्प्रोक्तं ताजिकं तत्प्रचक्षते" इति और टोडरानंद, खत खुत रोमक हिल्लाज धिषणा दुर्मुखाचार्य्य इतने ताजिकाचार्य्य हैं येभी तो ब्राह्मणही थे इत्यादि प्रमाणसे ताजिकमें पारशीयशब्दोंका दूषण नहीं है कदाचित् कोई कहै कि "न वदेद्यावनीं भाषां" इस धर्मशास्त्रोक्त वाक्यका खंडन होगया है तो मैंने खंडन नहीं किया. यह श्लोक तो सत्यही है परंच उसकी घटना काव्यालंकारादि विषयोंमें है पारशीयशब्दपक्षमें यहां तो "फले प्राप्ते मूले किं प्रयोजनम्" यह न्याय है, आम खानेसे काम हैं न कि वृक्षगणनासे, जैसे पंकोद्भव कमल देवपूजाही और विषधर सर्प मस्तकोद्भूतमाणि मुकुटयोग्य होताहै ऐसाही यहां भी शास्त्रके प्रयोजनसे प्रयोजन है. जाति द्वेष फलित शास्त्रमें क्या ताजिकशास्त्र इस समयमें तात्पर्य फल बतलानेवाला है और गर्ग वचन है कि, "म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् । ऋषिवत्तेपि पूज्यंते किं पुनर्वेदविद्द्विजाः") और ग्रन्थांतरीय कथानक है कि किसी कालमें ज्योतिषशास्त्रके अनुसार ज्योतिष लोग भूत, भविष्य, वर्त्तमानकी बातें कहकर ईश्वरकी ईश्वरताको स्पर्द्धा करने लगे. यह दशा देख ब्रह्माजीने उन शास्त्रोंसे चमत्काररूपी किरणोंको शापानलसे छादित करदिया. इस दशामें श्रीवशिष्ठादि मुनियोंने अपने प्रकाशित शास्त्रोंके द्योतन निमित्त ताजिकशास्त्रापेक्षा औरभी चमत्कृत बनाया । जिसको अष्टादश संहिताकारक आचार्य्योंने अनेक प्रकारके ग्रंथ उन्ही पारशीय शब्दोंको संस्कृत शब्द मणियोंमें ग्रथन कर प्रकट करदिया और मूल इसकाभी जन्मसमय प्रथमश्वासा लेनेकाही क्षण है. इसका विस्तार बृहज्जातकानुवाद "महीधरी भाषा" के सूतिकाध्याय प्रारंभमें मैंने लिखाहै; अब इस ग्रंथके सर्व प्रकारके हक्क हम अपनी प्रसन्नतासे लोकहितार्थ प्रकाशित करनेको सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षको समर्पण किये हैं ॥

आपका कृपाभिलाषी—
टिहरीनिवासी ज्योतिर्विद् पं० महीधर शर्म्मा.

॥ श्रीः ॥

अथ

ताजिकनीलकण्ठी ।

भाषाटीकासमेता ।

शिवं शिवकरं शिवायुतमजं सुधाप्लावितं समातृगुरुरूपिणं निखिलभैरवैः सेवितम् ॥ प्रणम्य शिरसा मुदा सरभसा परं दैवतं सहस्रदलकर्णिकांतरगतं गभीरं महः॥ १॥ महीधरधरासुरो विबुधधर्म्मदत्तात्मजो विधाय खलु जातके बृहति भाषया व्याकृतिम् ॥ तनोति किल ताजिके त्रिगणनीलकंठ्याह्वये शुभां विवृतिमत्र वै नरगिरा हि माहीधरीम्॥ २ ॥

भाषाकार निर्विघ्नतापूर्वक ग्रंथसमाप्त्यर्थ परब्रह्म गुरुरूपी शिवको प्रणाम सहित स्वकर्म प्रकाश करता है। मंगल मूर्ति, सर्वथा श्रेय करनेवाला, सशक्तिक अर्थात् उमासहित शंकर, स्वतःसिद्ध, सहस्रदल कमलकर्णिकांतर्गत अतिरहस्य अलख अगोचर स्थानमें परमामृतसे प्लावित प्रसन्नवदन बैठा हुआ, चतुःषष्टि मातृका और समस्त भैरवोंसे समंतात्परिवेष्टित, यद्वा मातृका स्वर, भैरव व्यंजन इनसे सेवित प्रणवरूप परमदेवता गुरुरूपी ईश्वर को (ससंभ्रम) आनन्दपूर्वक साशिरस्क प्रणाम करके विबुध धर्मदत्तात्मज महीधर नामा ब्राह्मण, बृहज्जातककी भाषाटीका करने उपरांत सांप्रतमें इसी ज्योतिषप्रकरण "ताजिकनीलकंठी" तीनों तंत्रकी सुगम सरल भाषामें माहीधरी टीका विस्तारित करता है ॥ १ ॥ २ ॥

ग्रन्थकर्त्ता आचार्य्य मुनिश्रेष्ठ गर्गवंशावतंस समस्तविद्वज्जनमुकुटमणि त्रिस्कंध ज्योतिश्शास्त्रनिबंध कर्त्ता चिंतामणि ज्योतिर्विद् पौत्र अनंत ज्योतिर्वित्पुत्र श्रीनीलकंठ ज्योतिर्वित् जीर्ण ताजिक शास्त्रके संज्ञातंत्र, वर्षतंत्र, प्रश्नतंत्र, तीन प्रकरणोंके निर्माणोत्सुक होकर प्रथम संज्ञाविवेक नामक प्रथम तंत्रारंभमें निर्वि-

ग्रता सहित ग्रंथसमाप्त्यर्थ गणेश सूर्य्य पितृचरणकमलको नमस्कार तथा विषय प्रयोजन संबंध उपजाति छन्दमें कहताहै ॥

उपजातिच्छंदः–प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनंतस्य तथा पदाम्बुजम् ॥ श्रीनीलकंठो विविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनःप्रसादकृत् ॥ १ ॥

श्रीनीलकंठनामा दैवज्ञ गणेश और सूर्यनारायण तथा अपने पिता अनंतनामा दैवज्ञ गुरुके चरणकमलको प्रणाम करके जीर्ण ताजिकग्रंथको विचारके इंद्रवज्रा रथोद्धतादि सुन्दर छन्दोंमें बडे बडे ताजिक ग्रंथोंके प्रयोजन स्वल्पतरग्रंथमें बोधननिमित्त विद्वान् ज्योतिषियोंके मन प्रसन्न करनेवाली नीलकंठी नामक ताजिक प्रकट करताहै ॥ १ ॥

उपजा०–पुमांश्चरोऽग्निः शुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः। पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्पपतंगप्रजो रूक्षनृपः समोजः ॥ २ ॥

संज्ञाप्रकरणमें प्रथम राशिस्वरूप वर्णन करते हैं; यथा–मेष; मेंढाका आकार, पुरुष राशि, चरसंज्ञा, अग्नितत्त्व, बलवान्, चौपाया, रक्तवर्ण, सोष्ण अर्थात् तप्तदेह, पित्तप्रकृति, बडा शब्द करनेवाला, पर्वतचारी, वनचारी वा, क्रूरस्वभाव, पीतवर्ण [यहां रक्त पीत दो वर्ण कहनेसे दोनों रंग मिलकर पाटल वर्ण शरीर] दिवा बली, पूर्वदिशा, अल्प स्त्रीसंग करनेवाला, और अल्पप्रजा, रूक्षकांति, क्षत्रियजाति और राशिसंख्यागणनासें विषम है किंतु कार्य्य यह राशि सम काम देती है इस कारण यहां संज्ञा कही है इतने गुण मेषके हैं ॥ २ ॥

उपजा०–वृषः स्थिरः स्त्री क्षितिशीतरूक्षो याम्येट् सुभूवायुनिशाचतुष्पात् ॥ श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभो हि वैश्यः ॥ ३ ॥

वृष; बैलका आकार, स्थिरसंज्ञा, स्त्रीराशि, भूमितत्त्व, रूक्षकांति, शीतस्वभाव, दक्षिण दिशा, सरलभूमिचारी, वातप्रकृति, रात्रिबली, चारचरण, श्वेत वर्ण, बडा शब्द करनेवाला, विषमलग्न, न तो अतिकामी न अल्पकाम, सौम्य राशि, वैश्यजाति, दृढांग, बलवान् शरीर इतने लक्षण वृषराशिके हैं ॥ ३ ॥

इन्द्रवज्रा–प्रत्यक्समीरः शुकभा द्विपान्ना द्वंद्वं द्विमूर्तिर्विषमोद्योष्णः॥
मध्यप्रजासंगवनस्थशूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्धदिनेट् तथोग्रः ॥ ४ ॥

एक स्त्री एक पुरुषके द्वंद्वको मिथुन कहते हैं. ऐसाही आकारभी है और यह राशि पश्चिमदिशाकी स्वामी, वायुतत्त्व (वायुप्रकृति), शुकपक्षीकासा हरितरंग, दो चरण, सौम्य, पुरुषरूप, द्विस्वभाव, पूर्वार्द्धस्थिरस्वभाव और उत्तरार्द्धका चरस्वभाव, विषमराशि, उष्ण स्वभाव, स्त्रीसंगमें मध्यम, संतान भी बहुत अल्प, वनचर, शूद्रजाति, दीर्घ शब्दवाला, स्निग्ध (चिकना) शरीर, दिनमें बलवान्, क्रूरसंज्ञा, दृढ शरीर इतने लक्षण मिथुन राशिके हैं ॥ ४ ॥

उपेन्द्रव०–बहुप्रजासंगपदः कुलीरश्चरोंगनापाटलहीनशब्दः ॥
शुभः कफी स्निग्धजलांबुचारी समोदयी विप्रनिशोत्तरेशः ॥ ५ ॥

कर्कराशि कीटाकार, अतिस्त्रीसंगी, बहुचरण, चरराशि, स्त्रीजाति, पाटल अर्थात् श्वेतरंग, शब्दरहित, सौम्य, कफप्रकृति, स्निग्ध (चिकना) शरीर, जलतत्त्व, जलचारी, समसंज्ञक, ब्राह्मणजाति, रात्रिबलि, उत्तरदिशाका स्वामी, दृढशरीर, इतने लक्षण कर्कके हैं ॥ ५ ॥

उपजा०–पुमान्स्थिरोग्निर्दिनपित्तरूक्षः पीतोष्णपूर्वेड्बलवांश्चतुष्पात्॥
समोदयो दीर्घरवोल्पसंगप्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥ ६ ॥

सिंहाकार पुरुष, स्थिरसंज्ञा, अग्नितत्त्व, दिनबली, पित्तप्रकृति, रूक्ष शरीर, पीलारंग उष्णस्वभाव, पूर्वदिशाका स्वमी, बलवान् अंगप्रत्यंग, चारचरण, समसंज्ञा, दीर्घशब्द, स्वल्पस्त्रीसंगी, अल्पही संतान, पर्वतचारी, नृपति, धूम्रवर्ण यहांभी दोरंग कहेगये हैं, प्रयोजन मेषवत् है कि पूर्वार्द्ध इसका पीत उत्तरार्द्ध धूम्र धूँवेंकासा रंग है इतने लक्षण सिंह राशिके हैं ॥ ६ ॥

उपजा०–पांडुर्द्विपात्स्त्रीद्वितनुर्यमाशानिशामरुच्छीतसमोदया क्ष्मा॥
कन्यार्द्धशब्दाशुभभूमिवैश्या रूक्षाल्पसंगप्रसवा शुभा च ॥ ७ ॥

कुमारीरूप, पांडु (पिंगल) वर्ण, दो चरण, स्त्री राशि, द्विस्वभाव (मिथुनवत्)

पूर्वार्द्ध स्थिर, उत्तरार्द्ध चर, दक्षिणदिशाका स्वामी, रात्रिबली, वायुतत्त्व, शीतप्रकृति, समलग्न इसका भूमितत्त्व भी है और आधाशब्दवाली, सरलभूमिचारी, वैश्यजाति, रूक्ष शरीर, अल्पस्त्रीसंगी, अल्पसंतति, समराशि, इतने लक्षण कन्या राशिके हैं ॥ ७ ॥

उपजा०—पुमांश्चराश्चित्रसमोदयोष्णःप्रत्यङ्मरुत्स्निग्धरवो न वन्यः ॥
स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्रस्तुलोह्युवीर्य्यो द्विपदः समानः ॥ ८ ॥

तुला; तराजूकासा रूप, पुरुषराशी, चरसंज्ञा, चित्रवर्ण; समलग्न, गरम, पश्चिमदिशाका स्वामी, वायुतत्त्व, स्निग्ध (चिकना) शरीर शब्दरहित, वनचारी शूर, अल्पस्त्रीसंगी, अल्पसंतान, शूद्रजाति, दिवा बली, दो चरण, बलवान् अंग इतने लक्षण तुलाराशिके हैं ॥ ८ ॥

उपजा०—स्थिरःसितःस्त्रीजलभुत्तरेशनिशारवोनो बहुपात्कफी च ॥
समोदयो वारिचरोऽतिसंगप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥ ९ ॥

वींछूकासा रूप, स्थिरसंज्ञा, श्वेतरंग, स्त्रीराशि, जलतत्त्व, उत्तरदिशाका पति, रात्रिचर, शब्दरहित, बहुपाद, कफप्रकृति, समलग्न, जलचारी, अतिस्त्रीसंगी, बहुतसंतति, शुभराशि, स्निग्ध (चिकना) शरीर, ब्राह्मण जाति, स्थूल अंग ये लक्षण वृश्चिक राशिके हैं ॥ ९ ॥

उपजा०—ना स्वर्णभाः शैलसमोदयोतिशब्दो दिनंप्राग्दृढरूक्षपीतः ॥
राजोष्णपित्तो धनुरल्पसूतिसंगोद्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः ॥ १० ॥

धनुषाकार, पुरुष, सुवर्णसमानकान्ति, पर्वतचारी, समलग्न, अति शब्दवान्, दिनबली, पूर्वदिशाका स्वामी, बलवान् शरीर, रूक्षतनु, पीलारंग, क्षत्रिय जाति, गरम, पित्तप्रकृति, अल्पसंतान, अल्पस्त्रीसंगी, द्विस्वभावराशि, पूर्वार्द्ध स्थिर, उत्तरार्ध चर, दोचरण, अग्नितत्त्व, क्रूरसंज्ञा; इसके भी दो रंग और दो रूप हैं जैसे पूर्वार्द्ध सुवर्णवर्ण और उत्तरार्द्ध पीतवर्ण और कटि ऊपर मनुष्य और नीचे घोडा ये लक्षण धनराशिके हैं ॥ १० ॥

उपजा०–मृगश्वरः क्ष्मार्द्धरवो यमाशाप्स्त्रीपिंगरूक्षः शुभ-भूमिशीतः ॥ स्वल्पप्रजासंगसमीररात्रिरादौ चतुष्पाद्विषमोदयो विट् ॥ ११ ॥

आकार तो नाकुका परंतु मुख मृगकासा, चरसंज्ञा, भूमितत्त्व, अर्द्धस्वर-वान्, दक्षिणदिशापति, स्त्रीराशि, पिंगल वर्ण, रूक्षशरीर, सौम्य, भूमिचारी, शीतप्रकृति, अल्पस्त्रीसंगी, अल्पप्रजावान्, वायुतत्त्व, रात्रि बली, पूर्वार्द्ध (चतुष्पाद) पशु और उत्तरार्द्ध जलचर, पादरहित, विषम लग्न और वैश्य-जाति ये लक्षण मकरके हैं ॥ ११ ॥

उपजा०–कुंभोऽपदो ना दिनमध्यसंगप्रसूः स्थिरः कर्बुर-वन्यवायुः ॥ स्निग्धोष्णखण्डस्वरतुल्यधातुः शूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः ॥ १२ ॥

कुंभ, कलशका आकार, पादरहित, पुरुष, दिवाबली, अल्पस्त्रीसंगी, अल्प-संतान, स्थिरसंज्ञा, विचित्ररंग, वनचारी, वायुतत्त्व, चिकना शरीर, संतप्त देह, अर्द्धस्वरवान्, तुल्यधातु (वात पित्त कफ तीनों प्रकृति), शूद्रजाति, पश्चिम-दिशापति, विषमलग्न, दृढ अं अत्यंत इतने लक्षण कुंभके हैं ॥ १२ ॥

उपजा०–मीनोपदः स्त्री कफवारिरात्रिनिःशब्दबभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ॥ स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेट् विषमोदयश्च ॥ १३ ॥

मीन राशिका आकार परस्पर एकके मुखपर दूसरीका पुच्छ ऐसी दो मछली और स्त्रीराशि, कफप्रकृति, जलतत्त्व, रात्रिबली, शब्दरहित, पिंगल, भूरारंग, द्विस्वभाव, पूर्वार्द्ध स्थिरवत्, उत्तरार्द्ध चरतुल्य, जलचारी, चिकना शरीर, अति-स्त्रीसंगी, बहु संतति, ब्राह्मणजाति, शुभराशि, उत्तरदिशा पति और समलग्न इतने इसके लक्षण हैं ॥ १३ ॥

उपजा०–धरांबुनोराग्निसमीरयोश्च वर्गे सुहृत्त्वं परतोऽरिभावः ॥ चापांत्यभागस्य चतुष्पदत्वं ज्ञेयं मृगांत्यस्य जले चर-त्वम् ॥ १४ ॥

पूर्व जो तत्त्व कहे गये हैं उनके प्रयोजन कहे जाते हैं, कि—तत्त्व और वर्गोंकी प्रीति स्त्रीपुरुषमेलमें स्वामिसेवकमें और गुरुशिष्यादिमें विचारनी चाहिये: जैसे पृथ्वीतत्त्व और जलतत्त्वकी तथा अग्निवायुकी परस्पर प्रीति है भूमि अग्नि और जल वायुकी परस्पर शत्रुता है, पूर्वोक्त स्त्री पुरुषादिकोंके राशि एकही तत्त्व होनेमें अधिक प्रीति है धनुराशिका उत्तरार्द्ध चौपाया है, पूर्वार्द्ध द्विपद है, मकर उत्तरार्द्ध जलचारी पादरहित और पूर्वार्द्ध द्विपद स्थलचारी है ॥ १४ ॥

इंद्रवज्रा—पित्तानिलौ धातुसमः कफश्च त्रिर्मेषतः सूरिभिरूहनीयाः ॥ राजन्यविट्शूद्रधरासुराश्च सर्वं फलं नामानुसारतः स्यात् ॥ १५ ॥

धातु और जाति गिननेकी युक्ति सुगम प्रकारसे कहते हैं, कि—पित्त वायु समधातु अर्थात् तीनों धातु और कफ इतने मेषादि राशि तीन आवृत्ति करके जानना. जैसे मेष सिंह और धनका पित्त धातु, वृष कन्या मकरका वायु, मिथुन तुला कुंभका समधातु अर्थात् वात पित्त कफ तीनों मिलकर होताहै; एवं कर्क वृश्चिक मीनका कफ धातु है. इसी क्रमसे जाति भी जानी जातीहै, जैसे मेष सिंह और धन क्षत्रियजाति, वृष कन्या व मकर वैश्य जाति, मिथुन तुला व कुंभ शूद्रजाति, कर्क वृश्चिक व मीन ब्राह्मणजाति है. राशियोंके गुण जाति धात्वादि जितने कहेहैं जन्म वर्ष प्रवेश और प्रश्नादि विचारोंमें जैसे जिनके नाम हैं वैसेही फल विचारके कहना. जैसे क्रूर राशिसे क्रूरस्वभाव, सौम्यसे सौम्य और चरराशिसे चरता, स्थिरसे स्थिरता, द्विस्वभावसे दोनों मिलाकर. ऐसेही संपूर्ण राशिगुणोंका फल जन्म वर्ष और प्रश्नादिकोंमें बुद्धिसे कहना, शास्त्र बुद्धिका सहायक है. विशेष विस्तारराशिगुणोंका बृहज्जातककी महीधरीभाषाटीकामें स्पष्टतर लिखाहै ॥ १५ ॥

अनुष्टुप्छं०—गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ॥ स्वर्वे-दाप्तघट्यादियुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥ अब्दप्रवेशे वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥ १६ ॥

ग्रहोंके चालन और ग्रहगणितैक्य स्थापनमें प्रथम वर्षेष्टकाल आवश्यक है. यह गणित आचार्य्योंने वर्षतन्त्रमें लिखाहै. यहांभी अपेक्षित होनेसे वही यह श्लोक है कि-जन्म शककाल, वर्ष शककालमें घटायके शेष गतवर्ष होतेहैं उनमें उन्हींका चतुर्थांश जोड देना पुनः वही गतवर्ष २१ से गुनकर चा-

राशिगुणादिचक्रम् ।

संज्ञाः	मेष.	वृष.	मिथुन	कर्क.	सिंह.	कन्या.	तुला.	वृश्चिक.	धन.	मकर.	कुंभ.	मीन.	१
पुंस्त्री	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	२
चरस्थिरादि	चर.	स्थिर.	द्विस्वभाव	चर.	स्थिर.	द्विस्वभाव.	चर.	स्थिर.	द्विस्वभाव.	चर.	स्थिर.	द्विस्वभाव.	३
तत्त्व.	अग्नि.	पृथ्वी.	वायु.	जल.	अग्नि.	पृथ्वी.	वायु.	जल.	अग्नि.	पृथ्वी	वायु.	जल.	४
पृष्ठकृश	दृढ.	दृढ	मृदु.	मृदु.	दृढ.	कृश.	दृढ.	कृश.	दृढ.	दृढ.	दृढ.	दृढ.	५
पादसंज्ञा.	चतुष्प.	चतुष्प.	द्विपद.	अपद.	चतुष्प	द्विपद.	द्विपद.	बहुपद.	द्विपद.	चतुष्प.	अपद.	अपद.	६
वर्ण.	पाटल रक्त.	श्वेत.	हरित	पाटल.	धूम्र.	पांडुर.	विचित्र	श्वेत.	वर्णः २	पीत.	कर्बुर.	धूम्र.	७
गुण.	[illegible]	शांत.	तम.	शीत.	उष्ण.	वायु.	उष्ण.	वायु.	उष्ण.	शीत.	उष्ण.	शीत.	८
धातु.	पित्त.	वायु.	वायु.	कफ.	पित्त.	जल.	पित्त.	कफ.	पित्त.	वायु.	वायु.	कफ.	९
शब्द.	अतिरव	अतिरव	दीर्घश.	हीनस.	दीर्घश.	अर्द्ध.	शब्द रहित.	शब्दर.	अति शब्द.	अति शब्द.	शब्द रहित.	शब्द हीन.	१०
चार स्थान.	पर्वत	सम भूमि.	वनचर.	जलचर	पर्वत चर.	शुभ भूमि.	वन चारी.	जलचर	पर्वत चर.	वन चर.	भूमि.	जलचर.	११
क्रूरादि.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	१२
दिवादि बल.	दिवा. बली.	रात्रि.	दिन.	संध्या.	दिवा.	रात्रि.	दिवा.	रात्रि.	दिन.	रात्रि.	दिन.	रात्रि.	१३
समविषम.	विषम.	सम.	विषम.	सम.	विषम.	सम.	विषम.	सम	विषम.	सम.	विषम.	सम	१४
दिशा.	पूर्व.	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर.	पूर्व.	दक्षिण.	पश्चिम.	उत्तर.	पूर्व.	दक्षिण.	पश्चिम.	उत्तर.	१५
स्त्रीसंग मत.	अल्प.	मध्य.	मध्य.	बहु.	अल्प.	अल्प.	अल्प.	अति.	अल्प.	अल्प.	मध्य.	अति.	१६
कांति.	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध.	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध.	१७
जाति.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र	ब्राह्मण.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	ब्राह्मण.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	ब्राह्मण.	१८
समादि	सम.	विषम.	विषम.	सम.	सम.	सम.	सम.	सम.	सम.	विषम	विषम.	विषम.	१९

तीससे भाग देकर लब्धि स्वचतुर्थांश युक्त राशिके दूसरे स्थानमें स्थापन करना. शेष ६० से गुनकर ४७ से भाग देना, लब्धि तीसरे स्थानमें स्थापन करना. ये तीन अंक वार, घटी, पल इनमें जन्मके वार इष्ट घटी पला यथाक्रमसे जोडने घटी पल ६० से अधिक हों तो ६० से शेषित करके लब्धि ऊपरकी राशिमें जोडदेना. वारकी राशि ऊपरका अंक जो गतवर्ष चतुर्थांश युक्त है वह ७ से ऊपर हो तो ७ ही से तष्ट करदेना. यही प्रयोजन दूसरे प्रकारसे यह है कि 'सपदा ललिता सदला' अथवा (वर्ष सवाया आधा ड्योढा)अर्थात् गतवर्ष 'सपाद' उसकी चौथाई उसीमें जोडके वार हुवा, फिर 'दलिता' उसका आधा करके घटिका हुई फिर उसका आधा उसीमें जोडके पला हुई, जन्मवार इष्ट घटीपल क्रमसे जोडदिया तो वर्षका ध्रुवक वार घटी पल होते हैं. उदाहरण—इसका प्रथम श्लोकोक्तप्रकार तो यह है कि जैसे जन्म संवत् १९०६ वर्षप्रवेश संवत् १९४३में घटाया, शेष ३७वह जन्मशक १७७१ वर्षशक १८०८ घटाया शेष ३७ गतवर्ष हुआ, इसमें इसीका चतुर्थांश ९ । १५ जोडदिया तो वार ४६ घटी १५ हुई, उपरांत गतवर्ष ३७ गुणक २१ से गुणना किया तो ७७७ हुए, इसमें ४० से भाग लिया, लब्धि १९ घटी मिली वार राशि ४६ के नीचे घटिकाकी राशि १५ में जोडदिया ३४ घटी हुई शेष अंक ६०से गुणकर ४० से भाग दिया लब्धि २५ पला और ३० विपला मिली, इन्हमें जन्म वारादि २।३९।२९ जोडदिया तो वर्ष वारादि होगया. दूसरा प्रकार यह है कि गतवर्ष सवाया ४६ दि. १५ घ. गतवर्ष आधा घ. १८ प. ३० तीसरे गतवर्ष ड्योढा प. ५५ वि. ३० सबको यथाक्रम स्वस्वजातियोंमें मिलाय दिया. जैसे विपल तो ३० रहे पल ३० और ५५ जोडके ८५ यह ६० से उद्धृत करादिया तो पल २५ रही लब्धि १ घटी १८ । १५ तीनों जोडके ३४ घटी मिली, वह ४६ ही हैं इन वारादि ४६।३४।२५।३० में जन्मवार २ घटी ३९ पल २९ जोडदिये तो वार ७ घटी १३ पल ५४।३० यह वर्षेष्ट हुवा ॥ अन्यप्रकार १ ।१५। ३१ । ३० को गतवर्षसे पृथक् २ गुणादिया. यथाक्रम वारादि ध्रुवक होजाताहै इसके और प्रकारभी बहुत हैं इसकी उपपत्ति यह है कि सूर्यके पूरी १२

राशिमें एक सौरवर्ष होताहै, जन्मसमयमें सूर्य्य स्पष्ट जितना राश्यादि है उतनाही पूरा पूरा जिस समयपर हो वह काल पुनर्वर्ष प्रवेशका है सावनमाससे दिन ३६५ घटी १५ पल ३१ विपल ३० में सूर्य उसी स्पष्टपर आजाताहै इससे यह क्षेपक नियत है इस क्षेपकको पृथक् २ चारों स्थानोंमें गतवर्षसे गुनकर स्वस्वजातिके पूर्ण अंकोंसे ऊपर ऊपर चढायके आयुके सावन वर्षादि होतेहैं; जैसे १ । १५ । ३१ । ३० गतवर्ष ३७ से गुनादिये ३७। ५५५ । ११४७ । ११३० इनको घटी पल विपल ६० से उद्धृत करदिये ३७ वर्ष ४६ दिन ३४ घटी २५ पल ३० विपल ० सावन माससे गत हुये, यही रीति सर्वत्र जाननी. यहां वही ४६ आदिकोंमें जन्म वारादि जोडनेसे वर्ष प्रवेश वारादि होगा ॥ १६ ॥

अनु०--शिवघ्नोऽब्दः स्वखाग्नींदुलब्धाढ्यः खाग्निशेषितः॥
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथ्यब्दप्रवेशनम् ॥ १७ ॥

पूर्वोक्त विधिसे वर्षप्रवेश वारादि ज्ञात हुएमें यह वर्षप्रवेश किस तिथिको होगा इस निमित्त तिथ्यानयन प्रकार यह है कि गतवर्ष ११ ग्यारहसे गुनदिया दो स्थानोंमें स्थापन करके एकमें १७० का भाग देकर लब्धि दूसरे स्थानकी राशिमें जोडदिया, उपरांत ३० तीससे भाग देकर जो शेष रहै उसमें जन्मतिथि शुक्लप्रतिपदादिक्रमसे जोडनेसे वर्षप्रवेश तिथि मिलतीहै. उदाहरण गतवर्ष ३७।११ से गुनदिये ४०७ दो स्थानोंमें स्थापन करके एक जगह १७० से भाग लिया लब्धि २ दूसरेमें जोडदिया ४०९ इसमें जन्मतिथि ९ जोडदी तो ४१८ हुए ३० से तष्ट करके शेष २८ कृष्ण त्रयोदशीके दिन वर्षप्रवेश हुआ. इसमें भी तिथि एक दिन आगे पीछे हो जाती है. गणितागत तिथिके पहिले वा पिछले वा उसी दिन वर्षगत वार जिस दिन मिले वही ठीक होतीहै यहां वारकी मुख्यता है तिथिकी आवश्यकता वारको निश्चय करने निमित्त है कि एक महीनेमें एक वार ४।५ आवृत्ति करताहै तो उनमेंसे तिथि एकको निश्चय कर देती है. जैसे इस उदाहरणमें २८ कृष्णत्रयोदशी मिलीहै और वर्षप्रवेश द्वादशीके दिन शनिवार होनेसे

वर्षप्रवेश होगया, अथवा जन्मके (सूर्य्यांशतुल्य) सूर्य्यांशदिन वह वार मिलनेपर वर्षप्रवेश दिन निश्चय होताहै किसी किसी देशोंमें संक्रांतिदिन गिनती मानतेहैं उन्हें गत प्रविष्टा और पैठ कहते हैं उस प्रविष्टाके दिन अथवा एकदिन आगे पीछे उक्त वार मिलनेसेभी दिन निश्चय होताहै ॥ १७ ॥

अनु०गतैष्यादिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ १८ ॥

फल स्पष्ट ग्रहाधीन है, वह गणित सिद्धांत और ग्रहलाघवादि लघुकरणोंसे साधन करनेमें श्रम बाहुल्य है, यहां आचार्य्यने सुगमोपाय ग्रहस्पष्टका इस प्रकार कहाहै कि, पंचांगस्थित अवधिकी गति इष्ट समयसे स्पष्टावधिपर्यंत दिनोंसे गुनकर अवधि स्पष्टमें संस्कार करना तात्कालिक स्पष्ट सिद्ध होजाता है. उदाहरण—संवत् १९४३ वैशाख वदि द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३ । ५४ में वर्षप्रवेश है. और वैशाख वदि अष्टमी सोमवारके दिन ग्रहलाघवीय प्रातःकालीन स्पष्टावधि पंचांगमें स्थापित है अब स्पष्टावधि प्रातःकालसे ५ दिन १३ घटी ५४ पल इष्टकालपर्यंत अधिक है. एष्यदिन हुए उस अवधिके सूर्य्य स्पष्ट ० । १३ । ३७ । ५२ राश्यादि और गति ५८ । १४ है. एष्यदिनादि ५ । १३ । ५४ से गति गोमूत्रिका क्रमसे वा भिन्न गुणनविधिसे गुनदिया ५ । ४ । ३९ अंशादि हुए. अवधि स्पष्टमें ० । १३ । ३७ । ५२ अवधिसे उत्तरदिन होनेसे एष्य हुआ. जोड़ देनेसे ० । १८ । ४२ । ३१ यह तत्काल सूर्य स्पष्ट होगया. यही रीति भौमादि सभी ग्रहोंकी जाननी. दूसरा प्रकार बिना ही अवधि स्पष्ट केवल पंचांगीय ग्रह चालकसे ग्रह स्पष्ट करनेका यह है कि वर्षप्रवेश दिनसे पहला जो नक्षत्र चरणपर ग्रह चालक है और इष्टदिनसे जो पुनः अंत्यचरण पर चालक है इनका अन्तर करके त्रैराशिक करना कि अन्तरीय अमुक संख्यांक दिनोंमें ३ । २० अंशकला स्पष्ट होताहै तो पूर्वचालकसे इष्टसमय पर्यन्त अन्तरांकमें कितना होगा. जो उत्तर मिले उसमें राशिसंबंधि नक्षत्रोंके जितने चरण ग्रहके भुक्त करलिये उतने ३ । २० । जोडते जाना

जहांतक इष्टदिन समयका पूर्व चालक मिलता है. जितना समय हो उसमें त्रैराशिकका गत फल जोडदेना ग्रह स्पष्ट होजाता है.

इतना स्मरण इसमें मुख्य चाहिये कि ९ चरण नक्षत्रोंकेमें एक राशि होती है, एक चरण नक्षत्र भोग में ३ अंश २० कला स्पष्ट होता है, एवं ६ । ४० में दो चरण १० । ० में तीन चरण १३ । २० में चार चरण १६ । ४० में पांच चरण २० । ० में छः चरण २३ । २० में ७ सात चरण । २६ । ४० में आठ ३० । ० में नौ चरण पूरे होजातेहैं, यही नवांशक कमसे है, एकचरण अर्थात ३ । २० अंशकी २०० कला होतीहैं, ये सभी अंक त्रैराशिकमें काम आते हैं. उदाहरण—संवत १९४३ वैशाखवदि द्वादशी शनिवार १२ घटी ५४ पलोंमें वर्षप्रवेश है, इसके पूर्वदिन शुक्रवार ४१ घटी ४६ पलोंमें रेवतीके तीसरे चरणपर चालक है, और चतुर्दशी सोमवार-को ५२ घटी ३ पलोंमें रेवतीके चौथे चरणपर चालक है, इनका अंतर ३ दिन११घ० १७ पल हुवा. प्रथम चालकसे इष्ट समयपर्यंत, ० दिन। ३२ घटी ८ पल अंतर हुवा अब त्रैराशिक है कि ३।११। १७ दिनादि अंतर-में ३ अंश २० कला स्पष्ट हुवा, तो अंतर दिनादि ० । ३२। ८ में कितना होगा ३।२० से ० ।३२। ८ गुननाहै ३ । ११ । १७से भाग देनाहै गुणन भाजनक्रम गोमूत्रिका और भिन्नकी रीतिसे है, सुगमतासे समझनेके लिये यह विधि ऐसी भी है कि ३ अंशको ६० से गुनदिया २० कला जोड दी २०० कला पिंड गुणक हुवा, दूसरी राशि ० । ३२ । ८ शून्यके स्थान में कुछ अंक होता तो ६० से गुनकर ३२ जोडना था यहां शून्य ही में ३२ जुडगये अब ३२ को ६० से गुनकर १९२० में आठ जोडदिये १९२८ गुणक हुवा. गुण्यगुणकको परस्पर गुण देनेसे ३८५६०० हुवा इसमें ३ । ११ । १७के पिंड ११४७७ से भाग दिया. ३३कला मिलीं, शेष अंक-को ६० से गुणकर भाग हारसे भाग देकर लब्धि उसके ऊपर अंश होते शेष कला रहती यहां ३३ साठसे न्यून है तो यही कला रही अंश ० । इसमें अब विचार है कि रेवती के तीसरे चरण में ० । ३३ । ३६ अंशादि

स्पष्ट बुधका हुवा इसके पूर्व एक चरण पूर्वाभाद्रपदका ४ चरण उत्तराभाद्रपदके दो चरण रेवतीके यह सब सात चरण भुक्त हुयेमें २३ अंश २० कला स्पष्ट भुक्त हुवा अब शेष रेवती तृतीय चरणके अनुपातागत अंशादि ० ।३३। ३६ जोडदिये २३ ।५३। ३६ अंशादि स्पष्ट हुवा, बुध मीनका होनेसे राशिके स्थानमें ११ लिखना योग्य है ११ । २३ । ५३ । ३६ राश्यादि बुधका तत्काल स्पष्ट होगया यही रीति औरकी भी जानना यह दोनों प्रकार सुगमता निमित्त स्थूलतर कहे हैं। स्थूल कार्य्य इनसें साधन करते ही हैं सूक्ष्म विचार तो ग्रहलाघव महादेवी मकरंद रामविनोदादि करणसारणियोंके होतेहैं और इनसे भी सूक्ष्म सिद्धांतोंसे होताहै ऐसी ही विधि चंद्रस्पष्टकी भी है सो आगे है ॥ १८ ॥

भुजंगप्रयातम्—खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्स्वतर्काश्वधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ॥ नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥ १९॥

जिस दिनका चंद्र स्पष्ट करना हो उस दिन नक्षत्रका इष्ट कालमें भुक्तभोग्य सर्वभोग्य करलेना. रीति यह है कि इष्टसमयपर्यंत उक्त नक्षत्र जितनी घटी पल भुक्तहुवा उसे भुक्त कहते हैं, जितना बाकी रहा उसे भोग्य और दोनोंको मिलाकर सर्व योग्य होता है. भुक्तको ६० से गुनकर सर्व भोग्यके भाग लेनेसे जो मिले उसे षष्टि प्रमाण भुक्त कहते हैं वर्त्तमान नक्षत्रसे पूर्व अश्विन्यादि जितने नक्षत्र व्यतीत हुये उतनी संख्याको ६० साठसे गुणकर वर्त्तमान नक्षत्रकी भभोगके भागसे मिली हुई घट्यादि जोड देनी सभी अतीत घटिका हुई उपरांत दोसे गुणकर नौ ९ से भाग लेना लब्धि अंश होतेहैं, शेष साठसे गुननकर नौसे भाग देना लाभ कला होतीहैं. पुनः शेष साठसे गुणकर नौसे भाग देना लाभ विकला मिलतीहैं. अंश ३० तीससे अधिक हो तो तीसहीसे भाग देना लाभ राशी शेष अंश होतेहैं, यह चन्द्रमा स्पष्ट सिद्धि होजातीहै उदाहरण— संवत १९४३ वैशाख वदि द्वादशी शनिवार इष्ट घटी १३ पल ५४ इस समय पर उत्तराभाद्र नक्षत्रका भुक्तघटी ५४ पला १३ भोग्यघटी १० पला ४१ सर्व भोग्यघटी ६४ पला ५४ षष्टिप्रमाण भुक्त

घटी ५० पल ८ अश्विनीसे पूर्वाभाद्रपर्यंत २५ नक्षत्र भुक्त हुये, इस अंकको ६० साठसे गुना किया १५०० हुए वर्त्तमान उत्तराभाद्र घटि आव भुक्त ५० । ८ जोडदिया १५५० । ८ इसको दुगुना किया ३१०० । १६ नौसे भाग लिया लाभ ३४४ अंश शेष ४ आठसे गुनाकर अवशिष्ट १६ जोडदिया २५६ नौसे भाग लिया लाभ २८ कला हुई शेष ४ पुनः साठसे गुनाकर२४० नौसे भाग लिया; लाभ २६ विकला हुई. अंशादिचंद्र स्पष्ट ३४४ । २८ । २६ हुआ अंशस्थानमें अंक तीससे अधिक होनेसे ३०से भागलिया. लाभ११ राशिशेष१४ अंक हुये ११ । १४ । २८ । २६यह चन्द्र स्पष्ट होगयाँ. दूसरे प्रकार उदाहरण यह है कि, अश्विनीसे पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरणपर्यंत ग्यारह राशि पूरी भुक्त होगयीं, शेष पूर्वाभाद्रपदाका चतुर्थ चरण और उत्तरभाद्रपदाके ४५ घटी पष्टिमान भुक्त पर्यन्त तीन चरण भुक्त होजानेसे१३ अंश२०कला भुक्त होगयीं अर्थात् उत्तराभाद्रपदाके ४५ घटी भुक्त पर्यन्त चन्द्रस्पष्ट ११ । १३ । २० । ० होगया, अब उत्तराभाद्रके ५ घटी ८ पल अवशेष भुक्तमें हैं इसका त्रैराशिक यह है कि १५ घटी भुक्तमें ३ । २० अंश स्पष्ट होताहै तो ५ घ. ८ प. में कितना होगा ? ५ । ८ । घटीके पिंड ३०८ को३।२०के पिंड २००से गुनाकिया६१६०० उसमें १५ घटीके पलात्मक पिंड ९०० से भागदिया, लाभ ६८ कला हुई शेष ४०० को साठसे गुनाकर २४००० भाग हार ९०० से भाग लिया लाभ २६ विकला हुई. यहां कला ६० से ऊपर होनेसे साठहीसे भागदिया लाभ १ अंश शेष ८ कला रहीं, १ । ८ । २६ इस समलब्ध लाभको पूर्वागत ११ । १३ । २० । ० में जोडदिया ११ । १४ । २८ । २६ यह चन्द्र स्पष्ट होगया, दोनहूं प्रकार से एकही स्पष्ट मिलताहै । यहां दूसरा उदाहरण पूर्व लिखाहै. (अब चन्द्रमाकी गति बनानेकी रीति) एक नक्षत्रका स्पष्ट १३ अंश २० कला हैं इसकी कला ८०० को साठसे गुनाकर ४८००० विकलापिंड होताहै. इसमें नक्षत्रके सर्व भोग्यसे भागलेना जो मिले वह चंद्रमाकी स्पष्टगति होतीहै. उदाहरण—४८००० में

उन्नतांशके सर्वभोग्य ६४ । ९४ का पलात्मक पिंड ३८९४ से भाग देनेके लिये, इसको ६० से गुनाकर पला पिंड किया तो भाज्य भी ६० से गुणदिया २८८०००० भागहार ३८९४ से भागलेकर ७३९ लब्धि+शेष २३३४ को ६० से गुनाकर भागहारसे भागलिया लब्धि ३५ यह ७३९ । ३५ चंद्रमा गति होगई ॥ १८ ॥

उ०जा०–पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखंडं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् । दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखंडं त्वपरं नतं स्यात् ॥ २० ॥

ग्रहस्पष्टके उपरांत भाव स्पष्टके फलके निमित्त आवश्यकता है, लग्नदशम स्पष्टसे भाव स्पष्ट होतेहैं प्रथम दशम स्पष्टसाधनार्थ नतसाधन कहतेहैं कि अर्द्ध रात्रिसे उपरांत दिनार्द्धपर्यंत पूर्वनत और मध्याह्नसे उपरांत सायंकालपर्यन्त दिवा पश्चिमनत होताहै. सूर्य्यास्तसे अर्द्धरात्र पर्यन्त रात्रिका पूर्व नत होताहै. अर्द्ध रात्रिके बाद सूर्य्योदय पर्य्यन्त रात्रिका पश्चिमनत होताहै. मध्याह्नके भीतरका इष्टकाल हो तो दिनार्द्धमें इष्टकाल घटा देना. शेष दिवा पूर्वनत होगा मध्याह्नके बाद सूर्यास्त तक इष्टकाल हो तो इष्टकालमें दिनार्द्ध घटा देना, शेष दिवा पश्चिमनत होगा. सूर्य्यास्तके बाद अर्द्धरात्र तक इष्टकाल हो तो रात्र्यर्द्धमें इष्टकाल को घटा देना शेष रात्रिका पूर्वनत होताहै, और अर्द्धरात्रके बाद सूर्य्योदय तक इष्टकाल हो तो इष्टकालमें रात्र्यर्द्ध घटा देना, शेष रात्रिका पश्चिमनत होगा. यहाँ १५ में नत घटानेसे उन्नत होताहै परंच उन्नतका कोई प्रयोजन नहीं है इस लिये उन्नतका नाम नहीं लिखाहै. इन नतोंका प्रयोजन दशम स्पष्टमें लगेगा. उदाहरण–यहां इष्टकाल घ. १३ प. ५४ है. दिनार्द्ध घ. १६ प. ३१ है दिनार्द्धमें इष्टकाल घटाया तो शेष रहा घ. २ ३७ यह दिनका पूर्वनत हुवा ॥ २० ॥

अनु०–तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसंगुणात् । स्वोदया त्त्रिंशल्लब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥ २१ ॥ इष्टनाडीपले-

स्यश्च गतगम्यान्निजोदयात् ॥ शेषं खत्र्याहतं भक्तमशुद्धेन लब्धादिकम् ॥ २२ ॥ अशुद्धशुद्धभे हीनं युक्तमुव्ययनांशकम् ॥ एवं लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥ २३ ॥

तात्कालिक सूर्य स्पष्टमें <u>अयनांश</u> जोडना जो अंक राशिका है, उसके आगेकी राशि स्वोदय हुआ शेष अंशादि भुक्त हुए, तीसमें घटायके भोग्यांश होतेहैं इन भोग्यांशादिकोंको वा भुक्तांशादिकोंको स्वोदय अर्थात् जिस राशिका अंशादि था उसी संख्याका स्वदेशीय लग्नखंडसे तीनों स्थानोंमें पृथक् २ गुनाकर तीससे भाग लेना लब्धिपलादि सूर्य्यके भुक्त वा भोग्य होतेहैं अर्थात् भुक्तांशादिकोंसे स्वोदयको गुनते हैं तो ३० तीसका लाभ भुक्तसंज्ञक होताहै और भोग्यसे कियेहैं तो भोग्यसंज्ञक होताहै इन पलादिकोंको इष्टघटीकी पलाओंमें घटाय देना जो शेष रहे उसमें स्वोदयकी राशिसे नीचे अथवा उपरांत जितने लग्नखंड घटें एक एक करके घटाते जाना जो लग्नखंड न घटे उसकी अशुद्ध संज्ञा हुई घटानेसे जो शेष रहा उसे ३० तीससे गुनदेना. अशुद्ध संज्ञक लग्नखंडसे भाग लेना लाभ अंशादि हुए स्वोदयसे लेकर जितने लग्नखंड पूर्व घटाये उतनी संख्याकी राशि उन लब्ध अंशादिकोंके पूर्वमें स्थापन करनी यह भोग्य रीतिका क्रम है, भुक्त रीतिमें अशुद्धमें घटादेना उपरांत अयनांश घटाय देना यह लग्न स्पष्ट होजाताहै. <u>उदाहरण</u>—संवत् १९४६ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३ पला ५४ सूर्य्य स्पष्ट० । १८ । ४२ । ३१ <u>अयनांश</u> २२ । ४४ जोडदिया. १ । ११ । २६ । ३१ यह सायन सूर्य्य हुवा इसमें १ राशि है यह <u>वृषस्वोदय</u> हुवा शेष अंशादि ११ । २६ । ३१ भुक्त हुये ३० तीसमें घटायके १८ । ३३ । २९ ये भोग्यांशादि हुये अब इनको स्वोदय खंडोंसे गुनदेनाहै. लग्नखंडोंकी रीति यह है कि लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३ क्रमसे और यही उत्क्रमसे ३२३ । २९९ । २७८ हैं इनमें अभीष्ट देशके चरखंडोंको एक आवृत्ति तीनोंमें जोडदेना दूसरी आवृत्ति तीनोंमें घटाय देना लग्नखंड होतेहैं, जैसे श्रीनगरके पलभा ७ । ० (त्रिघ्ना हताः स्युर्दशभिर्भुजंगे-

दिग्भिश्वरात्ताँनि गुणोद्धतांत्या) इस विधिकरके ७० । ५६ । २३ चर-खंड हैं इनको एक आवृत्तिमें घटाय दिया तो मीन मेषके २०८ वृषकुंभके २४३ मिथुन मकरके ३०० और दूसरी आवृत्तिमें चरखंड जोडदिया तो कर्क धनके ३४६ सिंह वृश्चिकके ३५५ कन्यातुलाके ३४८ ये श्रीनगरके लग्नखंड हुये, यहां स्वोदय वृष २४३ से भोग्यांश गुनादिये४३७४।८०१९। ७०४७ नीचेके दो अंक ६० से चढायादिये तो ४५०९। ३६ । २७ हुये ३० से भागलिया लाभ १५०।१९।१२ भोग्य काल हुवा ऐसी ही रीति भुक्तांशादिसे भी होतीहै. अब इष्ट घटी १३ । ५४ की पलाओंमें ८३४ भोग्यांश १५० । १९ । १२ घटाय दिये ६८३ । ४० । ४८ हुये अब इसमें स्वोदय वृषसे उपरांत मिथुन ३०० घटाया ३८३ इसमेंभी कर्क ३४६ घटाया तो ३७।४०।४८ इसमें सिंह ३५५ घटाना था नहीं; घटता तो इसकी अशुद्ध संज्ञा हुई शेष ३७ । ४० । ४० को पृथक् तीससे गुन-दिया११३ । २४ । ० इसमें अशुद्ध ३५५ से भाग लिया लाभ ३।११ ३ अंशादि हुये कर्क पर्यंत घटगये इससे ४ राशिके स्थानमें स्थापन कर दिया० ।४ । ३११ । ३ इसमें अयनांश २२ । ४४ घटादिया तो ३ । १० । २७ । ३ यह लग्न स्पष्ट होगया, जब स्वोदय न घटे तो, इष्टको ३० से गुनाकर सायन सूर्यके लग्नखंडसे भाग लेना तो अंशादि मिले वह सूर्योदयसे पूर्वका इष्टकाल होय तो सायन सूर्यमें घटायके और परका होय तो जोडके अयनांश घटायके लग्न स्पष्ट होजाताहै ॥ २१-२३ ॥

अनुष्टुप्-पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् । सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ लग्नो न तुर्यतः ॥ २४ ॥ षष्ठांशयुक्ततनुः संधिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ॥ त्रयः ससंधयो भावाः षष्ठांशो नैक-युक्सुखात् ॥ २५ ॥ अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्द्धयुक्ताः परेपि षट् ॥ खेटे भावसमे पूर्णं फलं संधिसमे तु खम् ॥ २६ ॥

अब दशम लग्न स्पष्टकी विधि कहते हैं, कि पूर्वोक्त प्रकारसे नतोन्नत

सूर्य तात्कालिक स्पष्ट सायन स्वोदयगुणित भुक्त भोग्यांश ऋणसंज्ञकलग्न क्रमसे करके भोग्य भुक्तका पलात्मक सूर्य्य स्पष्ट करके लग्नस्पष्टमें इष्टकालकी पलाओंमें घटाया, यहां नत वा उन्नतको इष्ट मानकर उसकी घटिकाकी पलाओं में घटाना और विधि सभी लग्न स्पष्टोक्तवत् करनेसे दशम लग्न स्पष्ट होताहै. जैसे-पूर्व लग्न स्पष्ट करनेमें तात्कालिक सूर्य्य स्पष्ट लियागया, वही यहांभी लिया जाताहै. उनका भुक्तांशादिकोंसे उसीके राशिसंख्यक लग्नखंड गुनके तीससे भाग लेनेसे लब्ध पलादि सूर्य्यकी होंगी, पश्चात् उन्नत पलाओंको इष्टकाल मानकर इनमें सूर्य्यके पलादि घटाय देना; उपरांत सूर्य्यराशि लग्नखंड घटाना यदि न घटे तो शेष पलादिकोंको तीससे गुनकर पूर्व अशुद्ध लग्नखंडसे भाग देना, लब्धि अंशादि हुये. अशुद्ध लग्न राशिमें घटायके अयनांश घटाय देना वह लग्नस्पष्ट राश्यादि होजायगा, इस प्रकार दशम होता है यह ऋणसंज्ञक विधि है यहां वही तत्काल सूर्य्य स्पष्टके अंशादि ३० में घटायके स्वोदयमें गुनना ३० से भाग लेकर लब्धि पलादि सूर्य्यका भोग्य हुवा इसे पश्चिम नत जो इष्ट मानाह उसके पलाओंमें घटाय देना. जो न घटे तो शेष ३० से गुना-कर अशुद्ध लग्नखंडसे भाग लेना लब्ध अंशादि राश्यादि यथाक्रमसे योजित करके अयनांश घटाय देना, राश्यादि दशम लग्न स्पष्ट हो जाताहै यह धन-संज्ञक विधि है इस प्रकार लग्न दशम स्पष्ट करके लग्न स्पष्टमें छः राशि जोडके सप्तम भाव स्पष्ट होताहै. ये ४ भावोंके स्पष्ट होगये. और भावसंधियोंकी रीति इस प्रकार है कि चतुर्थभावस्पष्टमें लग्नस्पष्ट घटाय देना. शेषमें छः से भाग लेने-से लब्ध षष्ठांश हुवा. यह लग्नमें जोडनेसे तनुधनकी संधि होतीहै इस संधिमें जोडनेसे द्वितीय भाव होताहै. ऐसेही द्वितीयभावमें जोडनेसे २ । ३ की संधि इसमें जोडनेसे तृतीय भाव और इसमें भी जोडनेसे ३ । ४ की संधि होगी इस संधिमें जोडनेसे सुखभाव जो दशममें ६ राशि जोडके बनाहै वही मिल जायगा. उपरांत पूर्वानीत षष्ठांशको एक राशिमें घटायके जो क्षेपक हो वह चतुर्थभावमें जोडनेसे ४ । ५ की संधि होगी. संधिमें जोडनेसे पंचमभाव और

इस भावमें जोडनेसे ५ । ६ की संधि संधिमें जोडनेसे षष्ठभाव. इसमें जोडनेसे सप्तमभाव जो लग्नमें ६ राशि जोडकर हुई. वही मिलजायगी. अब सप्तमभावसे उपरांत लग्नादिकोंमें ६ राशि जोडते जाना. सप्तमादि स्पष्ट होजायँगे, जैसे लग्नमें ६ जोडनेसे सप्तमभाव हुवाहै. लग्न धनसंधिमें जोडनेसे सप्तमाष्टमभावकी संधि होगी. एवं द्वितीयभावसे अष्टमभाव, संधिमें सन्धि तृतीयसे नवम सन्धिसे संधि, चतुर्थसे दशम संधिसे सन्धि, पंचम भावसे लाभभाव संधिसे संधि छठेमें बारहवां संधिसे संधि इस प्रकार बारह भावोंके स्पष्ट संधियोंसहित होते हैं. अति सुगम होनेसे उदाहरण न लिखा. इन भावस्पष्टोंका प्रयोजन यह है कि ग्रहस्पष्ट जिस भावस्पष्टपर मिले वह ग्रह उसी भावका फल देताहै. सन्धिगत यह मिश्रित फल दोनों भावोंका देता है परंतु यह फल युक्तिसिद्ध है ग्रंथकर्त्ताकी उक्ति तो यह है कि जो ग्रह स्पष्ट जिस भावस्पष्टके तुल्य है वह उस भावका फल पूर्ण देता देताहै. सन्धिगत ग्रह फल नहीं देता इनके फल अगले तंत्रमें हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

शालिनी०-भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालात्प्रशुद्धं चेत्त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदया-
प्तं लवाद्यम् ॥ हीनं युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्द्ध-
युक्तार्कतस्तु ॥ २७ ॥

जब इष्टकाल सूर्योदयसे पूर्व वा पश्चात् दो घटी हो अर्थात् लग्न और सूर्य एक राशिमें हों तो पूर्वोक्त विधिसे सूर्यके भुक्त वा भोग्य पला बनाकर इष्टकाल पलाओंमें घटे तो घटाय देना. न घटे तो अल्पेष्टकाल पलाओंको तीससे गुनाकर स्वोदयसे भाग लेना, फल अंशादि तत्काल सूर्य्य स्पष्टमें पूर्वोक्त ऋण धन क्रमसे हीन वा युक्त जैसा संभव हो करना, उपरांत अयनांश घटायके लग्नस्पष्ट होताहै. ऐसे ही दशम लग्नके लिये नतेष्टकाल पलाओंसे करना रात्रिका इष्टकाल हो तो सूर्य स्पष्टमें ६ राशि जोडके पूर्वोक्तविधि करनी. हेतु इसका यह है कि उदयकालिक सूर्य्यसे रात्रि इष्टकालपर्य्यंत बहुत लग्नखंड घटाये जाते हैं इसमें कुछ न कुछ अंतर हो जाता है छः राशि जोडनेसे बहुत लग्नखंड

न घटेंगे अंतर भी नहीं पडेगा सुगमता भी है ॥ २७ ॥

अनुष्टुप्—खेटे संधिद्वयांतःस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ॥
हीनेऽधिके द्विसंधिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥ २८ ॥

दो संधियोंके अन्तर्गत जो ग्रह है वह उसी भावका फल देताहै, और भावकी पूर्वसंधिमें ग्रह घटे तो पूर्वभावका फल देता है और ग्रहस्पष्टमें परसंधिस्पष्ट घटे तो परभावका फल देताहै ॥ २८ ॥

अनु०—ग्रहसंध्यंतरं कार्य्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ॥
भावसंध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

ग्रहस्पष्ट जिस भावमें या उसके परसंधिमें हो तो उसी संधि और ग्रहसे अंशादि अंतर करना. उस अंतरको २०से गुनकर भाव और संधिके अंतरको भाग देकर जो मिले वह विंशोपका बल होताहै बलशून्य हानेमें फलशून्य, बलमध्यममें मध्यम और पूर्णबलमें पूर्णफल ग्रह भावका देताहै ॥ २९ ॥

उपजा०—भौमोशनः सौम्यशशीनवित्सितारज्यार्किमंदांगिरसो गृहेश्वराः ॥ आद्याः कुजाद्या रवितोपि मध्यमाः सितात्तृतीयाः क्रियतो दृक्काणपाः ॥ ३० ॥

वर्षेश के निमित्त बलाबल विचारना चाहिये इसलिये स्वगृह उच्च हद्दा त्रैराशि मुर्शल्लह पंचवर्गी बलगणनामें प्रथम राशिस्वामी दृक्काणस्वामी कहते हैं. कि, मेषका स्वामी मंगल, वृषका उशना (शुक्र), मिथुनका बुध, कर्कका चन्द्रमा, सिंहका सूर्य्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनका बृहस्पति, मकरका शनि, कुंभका शनि और मीनका बृहस्पति ये राशिस्वामी हैं. द्रेष्काण त्रिभागको कहते हैं. एकराशिके ३० अंश होतेहैं दश दश अंशका एक एक द्रेष्काण होताहै. एकराशिके ३० अंश होतेहैं अंशके भीतर हो तो मंगलसे गिनना, १० अंश ऊपर २० के भीतर दूसरा द्रेष्काण हो तो मंगलसे छठा सूर्य्यसे और २० अंश ऊपर ३० के भीतर तीसरा द्रेष्काण हो तो सूर्य्यसे छठा शुक्रसे गिनना प्रगट चक्रमें लिखा है ॥ ३० ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	अंश
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ	अंश
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं	अंश

इंद्रवज्रा—सूर्य्यादितुंगर्क्षमजोक्षनक्रकन्याकुलीरांत्यतुला लवैःस्युः ॥ दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैर्भुतैर्भसंख्यैर्नखसंमितैश्च ॥ ३१ ॥

सूर्यका उच्च मेषके दश अंशपर, चंद्रमाका वृषके ३ अंशपर, एवं मंगलका मकरके २८ पर, बुधका कन्याके १५ अंशपर, बृहस्पतिका कर्कके ५ अंशपर, शुक्रका मीनके २७ अंशपर, शनिका तुलाके २० अंशपर परमोच्च है॥ ३१ ॥

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च.	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०
नीच.	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०

उपजा०—तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो ग्रहोऽधिकश्चेद्भसभाद्विशोध्यः ॥ चक्रात्तदंशाङ्कलवो बलं स्यात्क्रियेणतौलींदुर्भतो नवांशाः ॥ ३२ ॥

उच्चराश्यंशक पूर्व श्लोकमें कहे गये उससे सप्तम नीच होता है उच्चराश्यंशकमें ६ राशि जोडनेसे नीचराश्यंश परम होताहै. उच्च बलकी विधि कहतेहैं कि ग्रहके नीच स्पष्टको तत्काल स्पष्ट ग्रहमें घटा देना न घटे तो ग्रहस्पष्टमें १२ जोडके घटाना, शेष ६ राशिसे ऊपर हो तो १२ में घटाके षड्भाल्प कर लेना फिर उसका अंशादि करके ९ का भाग देना, लब्धि उच्चबल होता है. उदाहरण—संवत् १९४३ वैशाखकृष्ण द्वादशी शनिवारको इष्ट घटी १३ पल ५४ सूर्यस्य ०० । १८ । ४२ । ३१ । सूर्यका उच्चस्पष्ट १० । ० । ० नीचस्पट ६ । १० । ० । ० को रविस्पष्ट में घटाया शेष ६ । ८ । ४ । ३१ इनको १२ में घटाके षड्भाल्प किया ५ । २१ । १७ । २९

अब यही ५। २३। १७। २९ के राशिको ३० से गुनाकर १५० अंश इसमें २१ जोडदिये १७१। १७।२९ हुये इसमें ९ से भाग लेकर १९।१। ५३। ३३। २० यह उच्चबल हुवा ऐसेही सभी ग्रहोंके उच्चबलकी रीति है ॥ मुशल्लह नवांशको कहते हैं.-एक राशि ३० अंशके नौ भाग ये हैं.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
३ २०	६ ४०	१० ०	१३ २०	१६ ४०	२० ०	२३ २०	२६ ४०	३० ०

मेष सिंह धनके नवांश मेषसे गिनना, वृष कन्या मकरके मकरसे, मिथुन तुला कुम्भके तुलासे, और कर्क वृश्चिक मीनके कर्कसे यह नवांशक 'मुशल्लह' की रीति है ॥ ३२ ॥

उपजा०-मेषेंगतर्कांष्टशरेषु भागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्वराणाम् ॥
वृषेष्टषण्नागशरानगांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३३ ॥

हद्दाके स्वामी कहते हैं-मेषके ६ अंश पर्यन्त बृहस्पतिकी हद्दा ६ से १२ लौं शुक्रकी १२ से बीस २० लौं बुधकी २० से २५ तक मंगलकी २५ से ३० लौं शनैश्वरकी, वृषके ८ अंशपर्य्यन्त शुक्रकी ८ से १४ लौं बुधकी १४ से २२ लौं बृहस्पतिकी २२ से २७ लौं शनिकी २७ से ३० तक मंगलकी 'हद्दा' होतीहै ॥ ३३ ॥

उपजा०-युग्मे षडंगेषु नगांगभागाः सौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः ॥
कर्केद्रितर्कांगनगाब्धिभागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्वराणाम् ॥ ३४॥

मिथुनके ६ अंश पर्य्यंत बुधकी ६ से १२ लौं शुक्रकी १२ से १७ लौं बृहस्पतिकी १७ से २४ लौं मंगलकी २४ से ३० लौं शनिकी, कर्कके ७ अंश पर्य्यन्त मंगलकी ७ से १३ लौं शुक्रकी १३ से १९ लौं बुध की १९ से २६ लौं बृहस्पतिकी २६ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होतीहै ॥ ३४ ॥

उपजा०-सिंहेंगभूताद्रिरसांगभागा देवेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः ॥
स्त्रिया नगाशाब्धिनगाक्षिभागाःसौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः॥३५॥

सिंहके ६ अंश पर्यन्त बृहस्पतिकी ६ से ११ लौं शुक्रकी ११ से १८ लौं शनिकी १८ से २४ लौं बुधकी २४ से ३० लौं मंगलकी और कन्याके ७ अंश पर्यन्त बुधकी ७ से १७ लौं शुक्रकी १७ से २१ लौं बृहस्पतिकी २१ से २८ लौं मंगलकी २८ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होतीहै ॥ ३५॥

उपजा०—तुलेरसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः ॥
कीटे नगाब्ध्यष्टशरांगभागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥ ३६॥

तुलाके ६ अंश पर्य्यन्त शनिकी ६ से १४ लौं बुधकी १४ से २१ लौं बृहस्पतिकी २१ से २८ तक शुक्रकी २८ से ३० तक मंगलकी; और वृश्चिकके ७ अंश पर्यन्त मंगलकी ७ से ११ लौं शुक्रकी ११ से १९ लौं बुधकी १९ से २४ लौं बृहस्पतिकी २४ से ३० लौं शनिकी ॥ ३६ ॥

उपजा०—चापे रवीष्वब्धिपंचवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ॥
मृगे नगाब्ध्यष्टयुगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्राकिकुजेशहद्दाः ॥ ३७ ॥

धनके १२ अंश पर्यंत बृहस्पतिकी १२ से १७ लौं शुक्रकी १७ से २१ लौं बुधकी २१ से २६ लौं मंगलकी २६ से ३० लौं शनिकी और मकरके ७ अंश पर्यंत बुधकी ७ से १४ लौं बृहस्पतिकी १४ से २२ लौं शुक्रकी २२ से २६ पर्यंत शनिकी २६ से ३० तक मंगलकी 'हद्दा' होतीहै॥ ३७॥

उपजा०—कुम्भे नगांगाद्रिशरेषुभागाः ज्ञशुक्रजीवारशनैश्चराणाम् ॥
मीनेर्कवेदानलनंदपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥ ३८ ॥

कुंभके ७ अंश पर्यंत बुधकी ७ से १३ लौं शुक्रकी १३ से २० लौं बृहस्पतिकी २० से २५ लौं मंगलकी २५ से ३० लौं शनिकी; और मीनके १२ अंश पर्यंत शुक्रकी १२ से १६ लौं बृहस्पतिकी १६ से १९ लौं बुधकी १९ से २८ लौं मंगलकी २८ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होतीहै ॥ ३८॥

उपजा०—त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुंगे हद्देक्षचंद्रा दश के हकाणे ॥
मुशल्लहे पञ्चलवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥ ३९ ॥

पंचवर्गी बलके न्यास इस प्रकार हैं, कि, गृहबलमें ३० विश्वे बल पाता है, उच्चबलमें २० विश्वे, हद्दामें १५ विश्वे, द्रेष्काणमें १० विश्वे और मुशलहमें ५ विश्वे, इन सबमें मिलेहुये जोडके ४ भाग देनेसे पंचवर्गी विंशोपक बल होताहै ॥ ३९ ॥

हद्दाचक्रम् ।

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशयः
बृ ६	शु ८	बु ६	मं ७	बृ ६	बु ७	श ६	मं ७	बृ १२	बु ७	बु ७	शु १२	ग्रहाः अंशाः
शु ६	बु ६	शु ६	शु ६	शु ५	शु १०	बु ८	शु ४	शु ५	बृ ७	शु ६	बृ ४	तथा
बु ८	बृ ८	बु ५	बु ६	श ७	बृ ४	बृ ७	बु ८	बु ४	शु ८	बृ ७	बु ३	तथा
मं ५	श ५	मं ७	बृ ७	बु ६	मं ७	शु ७	बृ ५	मं ५	श ४	मं ५	मं ९	तथा
श ५	मं ३	श ६	श ४	मं ६	श २	मं २	श ६	श ४	मं ४	श ५	श २	तथा

इंद्रवज्रा—स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्द्धं समभेरिभेऽङ्घ्रिः ॥
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥ ४० ॥

पूर्वश्लोकोक्त पंचवर्गी बलका नियम है कि, ग्रह अपने गृहादि अधिकारोंमें पूर्ण बल और मित्रकेमें चौथाई कम, समग्रहकेमें आधा, शत्रुके अधिकारमें चतुर्थांश बल पाताहै. जैसे—पहिले स्थानबलमें अपनी राशिका ग्रह पूरे ३०।० बल और मित्रराशिमें पादोन २२। ३० समकी राशिमें आधा १५। ० शत्रुराशिमें चौथाई ७। ३० पाताहै. दूसरे उच्चबलमें परमोच्चपर पूरे २०। ० और परम नीचमें ०। ० बीचके राशियोंमें अंतर करनेसे मिलताहै. उसकी विधि (३२) श्लोक (तत्स्वनमं नीचमनेन हीनेत्यादि) में कहागयाहै (तीसरे) हद्दाबलमें अपनी हद्दाका ग्रह १५। ० पूरा और मित्रहद्दामें पादोन ११ ।१५ सममें आधा ७। ३० शत्रुमें चौथाई ३। ४५ ४५ बल पाताहै. चौथे द्रेष्काण बलमें अपने द्रेष्काणका ग्रह पूरे १०। ० और मित्रद्रेष्काणमें पादोन ७। ३० सममें आधा ५। ० शत्रुमें चौथाई

२ । ३० पांचवाँ (मुशल्लह) नवांश अपने नवांशका पूरे ५ । ० बल मित्रका पावेन ३ । ४५ सममें आधा २ । ३० शत्रुनवांशमें चौथाई १ । १५ बल पाताहै. इस प्रकार पांचों बल लेकर सबका ऐक्य एक जुदे कोष्टमें स्थापन करना. उसमें ४ से भाग लेकर लाभ विंशोपकाबल होताहै. उसे भी जुदे जुदे स्थानोंमें स्थापन करना ग्रह ५ अंक पर्यन्त निकृष्ट बल ५ से १० पर्यंत हीनबल १० से १५ लों मध्य बल १५ से २० लों पूर्ण बली कहाताहै; जैसा जिसका बल वैसा ही फलभी देताहै ॥ ४० ॥

०	गृह	उच्च	हद्दा	द्रेष्का	नवांश	
स्व०	३० / ०	२० / ०	१५ / ०	१० / ०	५ / ०	*
मित्र	२२ / ३०	उपरांत अनुपातसे	११ / १५	७ / ३०	३ / ४५	*
सम	१५ / ०		७ / ०	५ / ०	२ / ३०	*
शत्रु	७ / ३०		३ / ४५	२ / ३०	१ / १५	*

शालिनी—क्षेत्रं होरा त्र्यब्धिपंचांगसप्तवस्वंकांशेशार्कभागास्सुधीभिः ॥
विज्ञातव्या लग्नसंस्थाः शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः॥४१॥

अब द्वादशवर्गी बल कहतेहैं. राशि १ होरा २ द्रेष्काण ३ चतुर्थांश ४ पंचमांश ५ षष्ठांश ६ सप्तमांश ७ अष्टमांश ८ नवमांश ९ दशमांश १० एकादशांश ११ द्वादशांश १२ ये द्वादश वर्ग हैं. पापवर्ग और शुभ वर्ग अलग करके देखना. शुभवर्ग अधिक पापवर्ग हीन हो तो वह वर्ष शुभ होगा. विपरीत होनेमें फलभी विपरीत होताहै ॥ ४१ ॥

इन्द्रव०—ओजेरवींद्वोः सम इंदुरव्योर्होरे गृहार्द्धप्रमिते विचिन्त्ये ॥
द्रेष्काणपाः स्वेषु नवर्क्षनाथास्तुर्यांशपाः स्वर्क्षजकेंद्रनाथाः ॥ ४२ ॥

(१) प्रथमवर्ग राशीश हैं. यहां आचार्य्यनें पंचवर्गी प्रकरण ३० वें श्लोकमें कह दियाहै. ग्रन्थांतरोंमें, “ भौमशुक्रज्ञचंद्रार्कबुधशुक्रारमंत्रिणः ॥ सौरिश्शानिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः ” ऐसा है. प्रयोजन वही है १. दूसरा बल (२) होरा विषम राशीके १५ अंश पर्य्यंत सूर्य्यकी १५ उपरांत चंद्रमाकी समराशिमें १५ अंश पर्यंत चन्द्रमाकी १५ से ३० पर्यंत सूर्यकी होरा

होतीहै. तीसरा, द्रेष्काण प्रथम १० अंश पर्यंत उस राशिसे नवमीं राशिके स्वामीका द्रेष्काण होताहै. इसीको त्रिभाग भी कहतेहैं. चौथा, चतुर्थांश १ राशिके ४ चारों भागोंमें ४ केंद्रोंके स्वामी जैसे ७।३० अंशपर्य्यंत उसी राशिके स्वामीका ७।३० से १५ अंश पर्य्यंत उस राशिसे चौथी राशिके स्वामीका १५ से २२।३० लों उससे सातवीं राशिके स्वामीका २२।३० से ३०।० पर्य्यंत उससे दशवीं राशिके स्वामीका चतुर्थांश होताहै ॥ ४२ ॥

अनु०—ओजर्क्षे पंचमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः ॥
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ॥ ४३ ॥

पाँचवा, पंचमांश विषम राशिमें ६ अंश पर्यंत मंगलका ६ से १२पर्यंत शनिका १२ से १८ लों बृहस्पति १८से २४ लों बुधका २४से३० लों शुक्रका, और समराशिमें विपरीत ६ अंशपर्यंत शुक्रका ६ से १२ लों बुधका १२ १८ लों बृहस्पतिका १८ से २४ पर्यंत शनिका २४ से ३० लों मंगलका पंचमांश होताहै. बारहवां (द्वादशांश) १राशिके बारह विभाग २ अंश ३० कला होते हैं. जितने भागमें स्पष्ट हों स्वराशिसे उतने संख्यक राशिस्वामीका द्वादशांश होताहै ॥ ४३ ॥

उपजा०—लवी कृतो व्योमचरांगशैलवस्वंकादिग्रुद्रगुणाः स्वरामैः ॥
भक्तो गतास्तर्कनगाष्टनंदादिग्रुद्रभागाः कुयुताः क्रियात्स्युः ॥४४॥

पूर्व श्लोकोंमें ६।७।८।९।१०।११ अंश छोडकर द्वादशांश कह दिया. अब इनके लिये यह रीति है कि लग्नादिभाव वा ग्रहस्पष्टकी राशिको ३० से गुनाकर अंश छोडदिया. सभी अंश होगये उपरांत षष्ठांशको ६ से सप्तमांशको ७ से अष्टमांशको८ से नवमांशको ९ से दशमांशको १० से एकादशांशको ११ से गुणाकर ३०से भाग लिया लब्धि छोडदेना शेषमें१जोडके वर्त्तमान अंशेश होताहै १२ से अधिक रहे तो १२ से शेष करदेना यह श्लोकार्थ है. प्रकट यह है कि षष्ठांशको

३०अंशसे गुनकर ६ से भाग लिया लब्धि ५ एक भाग भया. विषम राशि हो तो मेषसे गिनना, सम राशि हो तो तुलासे गिनना. जैसे–विषम राशिमें ५ अंशपर्यंत मेषके स्वामी मंगलका५से१०लों वृषेश शुक्रका इत्यादि. समराशिमें५ अंश लों तुलेश शुक्रका ५ से१०लों वृश्चिकके मंगल का इसी प्रकार सब राशियोंके षष्ठांशेश जानना सातवां सप्तमांश ३० अंशमें ७ से भाग देके४।१७।१८।१४यह अंशादि सप्तमांश हुवा. विषम राशि हो तो अपनी राशि से गिनना समराशि हो तो उससे सातवीं राशिसे गिनना जैसे–विषम राशिमें ४।१७।१८।३४ अंशादि पर्यंत उसी राशिके स्वामीका ८।३४।१७।८ अंशादि हो तो उससे दूसरी राशिके स्वामीका और सम राशि हो तो ४।१७।१४।३४अंशादि पर्यंत उस राशिसे सप्तमराशिके स्वामीका इससे ८।३४।१७।८ पर्यंत. इससे दूसरा अर्थात् स्वष्ट राशिसे अष्टम राशिके स्वामीका सप्तमांश होताहै.ऐसेही सबोंको जानना. आठवां अष्टमांश ३०अंशमें८से भागलेकर३अंश४५कला होतीहैं चर राशिमें मेषसे गिनना. स्थिरमें धनसे और द्विस्वभावमें सिंहसे. जैसे–चर राशि१।४।७।१० में ३।४५ अंशपर्यंत मेषका७।३०लों वृषका. और स्थिरमें ३।४५लों धनका ७।३०लों मकरका और द्विस्वभावमें३ ।४५लों सिंहका७।३०लों कन्याका इत्यादि सभी अष्टमांश जानना.नवें नवमांश३०अंशमें९से भाग लेकर३अंश२० कला हुई; मेष, सिंह, धनका मेषसे, वृष,कन्या,मकरका मकरसे, मिथुन,तुला, कुंभका तुलासे, कर्क,वृश्चिक मीनका कर्कसे, अर्थात् त्रिकोण राशि विभागमें प्रथम चरसंज्ञकसे गिनना जैसे–मेष सिंह धनके३ । २०लों मेषका६।४०लों वृषका और वृष कन्या मकरके ३ । २०लों मकरका, ६ । ४०लों कुंभका नवमांश होताहै. ऐसेही सब राशियोंके नवमांश जानना. दशवां दशमांश ३०में १० का भाग देनेसे ३ अंश दशमांश हुआ. मेष और तुलाका मेषसे, वृष वृश्चिकका कुंभसे, मिथुन धनका तुलासे, कर्क मकरका सिंहसे, सिंह कुंभका कुंभसे, कन्या मीनका मीथुनसे गिनना. जैसे–मेष और

तुलाके ३ अंश लौं मेषका, ६ लौं वृषका, वृश्चिकके ३ लौं कुंभका ६ लौं मीनका इत्यादि जानना. ग्यारहवां एकादशांश- ३० अंशमें ११ से भाग लेकर २ अंश ४३ कला ३८ विकला होतीहैं. गणना सब राशियोंमें प्रथम मेषका. दूसरा मीनका. तीसरा धनका, चौथा मकरका पांचवां मिथुनका, छठा वृश्चिकका, सातवां तुलाका, आठवां कन्याका, नववां सिंहका, दशमाँ कर्कका, ग्यारहवाँ वृषका एकादशांश होताहै. बारहवां द्वादशांश ३० अंशमें १२ से भाग देनेसे २ अंश ३० कला हो, जिस राशिका द्वादशांश कर्नाहो प्रथम उसीसे गिनकर बारह राशिपर्यंत अढाई अढाई अंश प्रत्येक राशिस्वामीका द्वादशांश होताहै. कोई कोई अंश गणनाके मूलवाक्य स्पष्टतर हैं, यहां आचार्योंने ग्रंथभूयस्त्वके कारण न लिखे. ग्रंथांतरों में ये हैं,-भौमशुक्रज्ञचंद्रार्कबुधशुक्रारमंत्रिणः ॥ सौरिः शनिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः ॥ १ ॥ लग्नार्द्धं जायते होरा सर्वलग्नेषु सर्वदा ॥ ओजराशिषुवार्केन्द्वोः समे चन्द्रार्कजा मताः ॥ २ ॥ मेषादिसर्वराशीनां त्रिभागेषु यथाक्रमम् । आद्यं पंचनवेशानां द्रेष्काणा भणिता बुधैः ॥ ३ ॥ एकद्वित्रिचतुर्थेषु लग्नपादेषु च क्रमात् ॥ स्वराश्यादिकेंद्रेशाः पादांशनायका मताः ॥ ४ ॥ कुजार्कीज्यबुधाः शुक्रः पंचमांशेषु नायकाः ॥ ओजराशिषु युग्मेषु ग्रहा व्यत्ययतः स्मृताः ॥ ५ ॥ मेषाद्या विषमे राशौ समराशौ तुलादिकाः ॥ विज्ञेया विबुधैरेवं राशिषष्ठांशनायकाः ॥ ६ ॥ ओजराशौ स्वराश्याद्यास्समे सप्तमराशितः ॥ सप्तांशनायकाः सर्वे विज्ञेया विबुधैः स्फुटाः ॥ ७ ॥ मेषाद्याश्चरराशीनां चापाद्याः स्थिरराशिषु ॥ द्विस्वभावेषु सिंहाद्या ज्ञेयाश्चाष्टांशनायकाः ॥ ८ ॥ मेषमृगतुलाकर्कस्तुलनाः स्युर्नवमांशकाः ॥ मेषकेसरिधन्वादिराशिचक्रे व्यवस्थिताः ॥ ९ ॥ अजकुंभधनुस्तौलिसिंहयुग्मक्रमेण तु ॥ दशांशनायका लग्ने ग्रहानेवं विदुर्बुधाः ॥ १० ॥ मेषमीनवटानक्रचापालितुलकन्यकाः ॥ सिंहकर्कटकामोक्षादिका रुद्रांशनायकाः ॥ ११ ॥ स्वस्वराश्यादिका ज्ञेया द्वादशांशकनायकाः ॥ एवं लग्नेत्र विज्ञेया बुधैर्द्वादशवार्षिकाः ॥ १२ ॥ 'ये वामनोक्त श्लोक हैं,' प्रयोजन इनका पूर्व लिखागयाहै इस प्रकार द्वादशवर्गी जानना ॥ ४४ ॥

अनु०—एवं द्वादशवर्गी स्याद्ग्रहाणां बलसिद्धये ॥
स्वोच्चमित्रशुभाः श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः ॥ ४५ ॥

इस प्रकार ग्रहोंके बल साधनेके लिये द्वादशवर्गी है, शुभग्रह और अपने उच्चगत ग्रह मित्र राशिस्थ ग्रह शुभ होताहै, पापग्रह और नीचराशिगत ग्रह अशुभ होताहै. उच्च वा मित्र क्षेत्रगत ग्रह पाप भी शुभ पंक्तिमें और नीच राशिगत शुभ भी पापपंक्तिमें गिना जाता है. शुभपंक्ति अधिक होनेमें शुभ, अशुभ पंक्ति अधिक होनेमें अशुभ द्वादशवर्गी कहाती है. ऐसेही फल भी जानना ॥ ४५ ॥

उपजा०—एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे ॥
दशाफलं भावफलं च वाच्यं शुभं त्वनिष्टं त्वशुभाधिकत्वे ॥ ४६ ॥

इस प्रकार गृह होरादि द्वादश वर्ग स्थापन करके शुभ पंक्ति जुदी पाप पंक्ति जुदी स्थापन करनी; शुभपंक्ति अधिक हो तो वह ग्रह दशाफल और भावफल शुभ देगा, पापपंक्ति अधिक हो तो अनिष्ट फल देगा यही विचार द्वादशवर्गोंमें है ॥ ४६ ॥

उपजा०—क्रूरोपि सौम्याधिकवर्गशाली शुभोतिसौम्यःशुभखेचरश्चेत्॥सौम्योपि पापाधिकवर्गयोगान्निंद्योतिनिंद्यःखलु पापखेटः४७ ॥

शुभग्रह शुभ वर्गाधिक हो तो अति शुभ होताहै. पापवर्गाधिक होनेसे सौम्यभी निंद्य होताहै. ऐसेही पापग्रह शुभ वर्गाधिक होनेसे शुभ और पाप वर्गाधिक होनेसे अति निंद्य होताहै. द्वादशवर्गमें भी यही विचार मुख्य है॥ ४७॥

उपजा०—राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण चिंत्यस्तनोस्तच्च तथैव युक्त्या॥
भावेषु सर्वेष्वपि वर्गचक्रं विलोक्य तत्तत्फलमूहनीयम् ॥ ४८ ॥

ग्रहोंकी द्वादशवर्गी २ पंक्ति करके भावोंके साथ उनका सम्बंध देखना चाहिये. जैसे—लग्नेश शुभग्रह शुभ राशिमें वा मित्रराशि वा उच्च राशिमें स्थित हो तो लग्न शुभवर्गाधिक भया. इससे लग्नसम्बन्धी सभी शुभ फल होंगे, जो लग्न पापाधिकवर्ग हो और उसका स्वामी पाप या पापराशिगत वा शत्रु राशि वा नीचराशिमें हो तो लग्नसम्बन्धी अनिष्ट फल अधिक होगा.

जहां एक प्रकार शुभ एक प्रकार अशुभ होंगे; जैसे—लग्नेश शुभ शुभराशिमें नीच वा शत्रुराशिस्थ हो अथवा लग्नेश पाप मित्रोच्च राशिस्थित हो तो मिश्र फल कहना. ऐसे ही द्वितीय तृतीय भावादिकोंसे भावसंबंधी फल विचारना. किस भावमें कौन २ विचार चाहिये यह आगे कहते हैं ॥ ४८ ॥

अनु०—शरीरवर्णचिह्नायुर्वयोमानं सुखासुखम् ॥
जातिः शीलं च मतिमाँल्लग्नात्सर्वं विचिंतयेत् ॥ ४९ ॥

तनु १ धन २ सहज ३ सुहृत ४ सुत ५ रिपु ६ जाया ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ ये द्वादश भावों के नाम हैं. लग्नमें शरीरका शुभाशुभ कृशता वा पुष्टता वर्ण रक्तश्वेतादि (रंग) मशक तिलादि चिह्न आयु बाल यौवनादि, अवस्था लघुदीर्घादि मान, बल (पराक्रम) सुखदुःख, ब्राह्मणादि जाति और आचरण इतने विचार करना, यहां लक्षणमात्र कहाहै बुद्धिसे विशेष इन्हींमें जानलेना ॥ ४९ ॥

अनु०—सुवर्णरौप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखा धने ॥
विक्रमे भ्रातृभृत्याध्वापित्र्यस्खलितसाहसम् ॥ ५० ॥

सुवर्ण, चांदी, रत्नजात, लोहा, शीशकादि धातु, धनादि और मित्र उपलक्षणसे वस्त्र, मोती, पशु आदि धनसंज्ञक वस्तु इतनोंका विचार धनभावसे करना और भाई, भगिनी, नोकर, मार्ग, पैत्रिक कर्मकी हानि, साहस, उपलक्षणसे व्यापार, पराक्रम, उद्यमादि इतनोंका विचार सहजभावसे करना ॥ ५० ॥

अनु०—पितृवित्तं निधिं क्षेत्रं गृहं भूमिं च तुर्यतः ॥
पुत्रे मंत्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् ॥ ५१ ॥

पितृसंबंधी वित्त शेवधि (हंडेडा) खेती आदि भूमि कर्म, घर उपलक्षणसे जलज कर्म, भूमिशोधनादि, पाताल कर्म, माता, सौख्य, मित्र बांधव, वाहन (यानादि) चतुर्थभावसे विचारना; और पुत्र मंत्र धन उपाय गर्भस्थिति विद्या संतान बुद्धिसंबंध उदरकर्म विनयादि पंचमभावसे विचारना. यह पुत्र आत्मज जो वाक्य एकही अर्थके लिखे इसका हेतु यह है कि दत्तकादि बारह प्रकारके पुत्र होते हैं आत्मज औरस ही होताहै ॥ ५१ ॥

अनु०—रिपौ मातुलमांद्यारिचतुष्पाद्भयभीव्रणान् ॥
द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥ ५२ ॥

छठे भावमें मातुल (माताके भाई,) रोग, शत्रु, चौपाया, पराश्रय, भय, (व्रण) विस्फोटकादिसे घावका दाग, और सप्तम भावमें स्त्री व्यापार (नष्टता) कुछ वस्तु खोयेजानेका विषय, विस्मरण, भूलका विचार करना, लग्नमें शरीरके तुल्य सप्तममें स्त्रीके शरीरका विचार है ऐसेही चतुर्थमे मातृशरीर, दशमसे पिता, पंचमसे पुत्रका इत्यादि जानना ॥ ५२ ॥

अनु०—हृताध्वकलिमार्गादि चिंत्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ॥
मृत्यौ चिरंतनं द्रव्यं मृतवित्तं रणो रिपुः ॥
दुर्गस्थानंमृतिर्नष्टंपरीवारो मनोव्यथा ॥ ५३ ॥

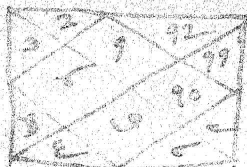
सप्तमस्थानमें और भी विचार विशेष है कि चोरीकी वस्तु, कलह, मार्ग-कार्य विचार इसी भावसे होताहै. और ७ में सभी ग्रह अशुभ हैं अष्टमभावमें पूर्वसंचित द्रव्य, आयु, धन, ऋण, संग्राम, शत्रु कोट दुर्गादि (कठिन स्थान) मृत्यु द्रव्यादि नष्ट, मानसी व्यथा इतना विचार हैं ॥ ५३ ॥

अनुष्टु०—धर्मेरतिस्तथापन्थाधर्मोपायं च चिंतयेत् ॥
व्योम्निमुद्रां परं पुण्यं राज्यं वृद्धिं च पैतृकम् ॥ ५४ ॥

नवम भावमें धर्मकार्यमें प्रीति अप्रीति मार्ग पुण्य पाप भाग्य ऐश्वर्यका विचार और दशम स्थानमें मुद्रा (मोहर) पुण्यकर्म, राज्यवृद्धि, पितृ-द्रव्य, और पितृशरीर इतने विचार करने ॥ ५४ ॥

अनु०—आये सर्वार्थधान्यार्घकन्यामित्रचतुष्पदाः ॥५५॥
राज्ञोवित्तं परीवारलाभापायांश्च भूरिशः ॥
व्यये वैरिनिरोधार्त्तिव्ययादि परिचिंतयेत् ॥ ५६ ॥

सब प्रकार धन, सुवर्ण, मणि, मुक्तादिकोंका लाभ, चतुष्पद, राजद्रव्य, मित्र, परिवार, कन्या, भूषण वस्त्रादि अनेक वस्तुओंका लाभ, हानि ग्यारहवें भावसे विचारना. बारहवें भावमें शत्रुका निरोध, पीडा, धनव्यय. नेत्र कर्ण रोगादि और नीचकर्म इत्यादि विचार करना ॥ ५५ ॥ ५६ ॥



अनु०–लग्नांबुद्यूनकर्म्माणि केंद्रमुक्तं च कंटकम् ॥
चतुष्टयं चात्र संस्थो बली लग्ने विशेषतः ॥ ५७ ॥

लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशम १०।११ इन भावोंकी संज्ञा केंद्रकंटक और चतुष्टय है चकारसे अनुक्त यहभी भास होताहै कि, केंद्रोंसे द्वितीयस्थान २। ५।८।११ पणफर और इनसे भी दूसरे ३।६।९।१२ ये आपोक्लिम कहाते है केंद्रमें जो ग्रह है वह बली होताहै केंद्रोंमें भी लग्नका विशेष बलवान् होताहै जन्म वर्ष प्रश्न मुहूर्त्तादिकों में ऐसेही सर्वत्र विचार करना चाहिये॥ ५७ ॥

अनु०–लग्नकर्मास्ततुर्य्यायसुतांकस्थो बली ग्रहः ॥
यथादिमं विशेषेण सन्निवित्तेषु चंद्रमाः ॥ ५८ ॥

बलवान् ग्रह लग्न १ कर्म १० अस्त ७ तुर्य्य ४ आय ११ सुत ५ अंक ९ इन स्थानोंमें अधिक बली होकर शुभफल अधिक देताहै इसमें भी विशेष यह है कि, नवमकी अपेक्षा पंचम इससे ग्यारहवां ग्यारहवेंसे चतुर्थ चतुर्थसे सप्तम सप्तमसे दशम् दशम्से लग्नका क्रमसे अधिक बली होताहै यह नैसर्गिक बल है. चन्द्रमा नवम द्वितीय भावोंमें भी पूर्वोक्तभावोंके तुल्य बली होताहै इसमें भी द्वितीयसे नवम विशेष है ॥ ५८ ॥

अनु०–कुजः सन्निषुपृच्छायां सूतौचान्यत्रचिंतयेत् ॥
भावानवेत्थं शस्ताःस्युः स्वामिसौम्यैर्युतेक्षिताः॥५९॥

पूर्वोक्तभावोंसे विशेष मंगल नवम भावमेंभी बलाधिक होताहै यह विचार प्रश्न जन्म और वर्षमुहूर्त्तादिकोंमें सर्वत्र करना ये भाव शुभ हैं इनमें ग्रह बली होकर शुभ फल अधिक देताहै. और अपने स्वामी व शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट जो भाव है वह अपने संबंधी फलको अच्छा देताहै. स्वामी और शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट न हो तो अपना (फल) मध्यम न अतिशुभ न अति नेष्ट देता है

जब पापग्रह और स्वामीके शत्रुग्रहसे भावयुक्त वा दृष्ट हो तो अपने फलोंको (अनिष्ट) बुरा करदेताहै, जब स्वामीसे अन्य ग्रह कुछ शुभ और कुछ अशुभ हो तो मिश्र फल देताहै जब भले या बुरे किसी ग्रहसे युक्त वा दृष्ट न हो तो मध्यम फल देताहै ॥ ५९ ॥

अनु०-दीप्तांशातिक्रमेशस्ताइमेपीति विचिन्तयेत् ॥ ६० ॥

पूर्वोक्त स्वामी शुभग्रह योगदृष्टिमें बुध बृहस्पतिके योगदृष्टिमें चन्द्रमा शुक्रकी की अपेक्षासे विशेष शुभ होता है. रिष्फ १२ अष्ट ८ रिपु ६ ये स्थान नेष्ट हैं इनको त्रिकभी कहते हैं इसमें ग्रहबल हीन होकर अशुभ फल विशेष देताहै इनमें ग्रह अपने दीप्तांशोंके भीतर उक्त फल देताहै जब दीप्तांशसे अधिक अंशपर पहुँच जाय तो अशुभ फल नहीं देता दीप्तांश सूर्य्यके १५ चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ बृहस्पतिके ९ शुक्रके ७ शनिके ९ इस प्रकार सर्वत्र भाव तथा ग्रहोंकी प्रीति विचारनी ॥ ६० ॥

उपजाति-त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिनेनिशीज्येंदु-बुधक्ष्माजाः ॥ मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वर्किकुजेज्यचंद्राः ६१ ॥

अब त्रिराशीश कहते हैं, मेषके कर्कलौं सिंहसे वृश्चिकलौं धनसे मीन पर्य्यंत राशिचक्रके ३ भाग हुये इससे त्रिराशीश नाम हुवा इनके स्वामी ऐसेहैं कि दिनके वर्षप्रवेशमें मेषका सूर्य्य, वृषका शुक्र, मिथुनका शनि, कर्कका शुक्र और रात्रिवर्षप्रवेशमें मेषका बृहस्पति, वृषका चंद्रमा, मिथुनका बुध, कर्कका मंगल, अब सिंहसे विपरीत अर्थात् मेषादिकोंके जो दिनके वे सिंहादिकोंके रात्रिके और रात्रिवाले दिनके जैसे दिनके सिंहका गुरु, कन्याका चंद्रमा, तुलाका बुध, वृश्चिकका मंगल, उपरांत धनका शनि मकरका मंगल, कुंभका बृहस्पति मीनका चंद्रमा ये दिन रात्रिके वही स्वामीहैं जिसका विस्तार चक्रमें भीं लिखा है ॥ ६१ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	रा.शि.
सू.	शु	श	शु	बृ	चं	बु	भौ	श	कु.	बृ	चं	दिनमें.
बृ	चं	बु	भौ	सू	शु	श	शु	श	भौ	गु	चं	रात्रिमें.

(अनु०)–वर्षेशार्थं दिननिशाविभागोक्तास्त्रिराशिपाः ॥
पंचवर्गीबलाद्यर्थं द्रेष्काणेशान्विचिंतयेत् ॥ ६२ ॥

एकतो त्रिराशीश, द्रेष्काणको कहते हैं. दूसरे मेषादि दिनरात्रिविभागकोभी त्रिराशीश कहते हैं. इसमें कौनसा लेना इस लिये यह श्लोक है कि, दिनरात्रि विभागका त्रिराशीश तो वर्षेश निर्णयको लेना, क्योंकि पंचवर्गीमें अधिकबली वर्षेश होताहै, परंतु पंचाधिकारियोंमें नहीं होगा तो वर्षेश नहीं होता. पंचाधिकारी जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश मुन्थेश त्रिराशीश दिनमें सूर्य राशिपति रात्रिवर्ष प्रवेशमें चंद्रमाके राशीश ये ५ होते हैं, इन्हीके बीचका कोई जिसकी लग्नपर दृष्टि अधिक होवे वह वर्षेश होताहै, पंचवर्गी वर्गमें बली हो तो विशेष है हीनबली मध्यबली हो तोभी पंचाधिकारियोंमेंसे लग्नपर दृष्टिवाला वर्षेश होताहै. कहीं चंद्रमा वर्षेश नहीं होता है ऐसाभी लिखा है जहां सर्वथा चंद्रमाहीकी प्राप्ति वर्षेश होनेकी हो तो कैसे करना. इसकी व्यवस्था ऐसी है कि चंद्रमा जिसके साथ इत्थशाल करता हो वह वर्षेश होगा. फल चंद्रमाके तुल्य देगा. चंद्रमा स्वयं वर्षेश तोभी नहीं होता. दूसरे त्रिराशीश द्रेष्काण कोभी कहतेहैं वह पंचवर्गीबलमें लेना यहां पंचाधिकारियोंमें त्रिराशीश इत्यादि यही लेना ॥ ६२ ॥

शार्दूलविक्रीडित–श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुः पद्धतिम् ॥ तत्सूनुः खलु नीलकंठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया संतुष्ट्यैव्यदधाद्ग्रहप्रकरणं संज्ञाविवेकेऽमलम् ॥ ६३ ॥

ग्रंथकर्त्ता अध्यायके स्थानमें अपने नामादि श्लोकसे प्रकाश करताहै कि, श्री शोभा विद्याविलासयुक्त गर्गाचार्य्यके वंशका भूषण स्वरूप और गणितशा-

वज्ञ चिंतामणि नामा आचार्य्यका पुत्र, अनंत नामा दैवज्ञ जिसकी ज्योतिष शास्त्रमें अनंतबुद्धि थी और जिसने जनुःपद्धति (जातक ग्रंथ) दुष्टजनोंके मत काटने निमित्त रचे. इनका पुत्र नीलकंठ नामा पंडित महाभाष्यादि शास्त्रपारंगमने वेदशास्त्र और श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठान शील दाक्षिणात्य शिवनामा ब्राह्मणके आज्ञानुसार समरसिंहोक्त ताजिक शास्त्रके आर्य्याछंदोंको दुर्योजक समझकर इन्द्रवंशा प्रभृति अनेक छंदोंमें और ताजिक ग्रंथोंका प्रकारसहित, इस संज्ञा प्रकरणमें ग्रह प्रकरण बारह भाव पंचवर्गी द्वादशवर्गी प्रभृति सविस्तर कहे ॥ ६३ ॥

इति महीधरकृतायां ताजिकनीलकंठीभाषायां राशिस्वभावनिर्माणपंचवर्गीभावकृत्यप्रकरणग्रहाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

उपजाति—सूर्य्योनृपोनाचतुरस्रमध्यांदिनेन्द्रदिक् स्वर्णचतुष्पदोग्रः ॥
सत्त्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिश्च पित्तंजरन्पाटलमूलवन्यः ॥ १ ॥

अब ग्रहस्वरूप प्रकरणमें प्रथम सूर्य्यका स्वरूप कहतेहैं कि, जातिमें राजा (क्षत्रिय) पुरुष, चतुरस्र, मध्याह्नबली, पूर्वदिशाका स्वामी, सुवर्ण धातु स्वामी अश्वादि चतुष्पदोंका स्वामी, पाप (क्रूर) सत्त्वप्रधान, सद्गुणवान् स्थिर प्रकृति. तिक्त (तीता) रसको प्रिय माननेवाला पशु भूमिचारी पित्तप्रकृति वृद्धावस्था, श्वेतरक्तवर्ण मूलवस्तु वनचारी ॥ १ ॥

उपजातिच्छन्दः—वैश्यः शशी स्त्रीजलभूस्तपस्वी गौरोपराह्णीबुगधातुसत्त्वम् ॥ वायव्यदिक्श्लेष्मभुजंगरूप्यस्थूलो युवाक्षारशुभःसिताभः ॥ २ ॥

चंद्रमाका स्वरूप, वैश्यजाति वणिग्वृत्ति स्त्रीग्रह जल भूमिचारी, तप करनेवाला, उज्ज्वल वर्ण (गौररंग) अपराह्णबली जलचारी गैरिकादि धातु स्वामी सत्वप्रधान वायव्यदिशाका स्वामी, श्लेष्म (कफप्रधान) भुजंग (सर्पों) का स्वामी रौप्य द्रव्यका पति, स्थूल तरुणावस्था. लवणादिक्षार रसप्रधान. सौम्यग्रह शुभ्रवर्ण इतने रूपादि चंद्रमाके हैं ॥ २ ॥

उप०—भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्योमध्याह्नधातुर्यमदिक्चतुष्पात् ॥
नाराट्चतुष्कोणसुवर्णकारोदग्धावनीव्यंगकटुश्च रक्तः ॥ ३ ॥

मंगल तमोगुणी, पित्त प्रकृति युवावस्था, उग्र, पापग्रह वनचारी. मध्याह्न-बली. धातु प्रधान, दक्षिण दिशाका स्वामी, चौपाया पुरुष ग्रह, राजा वा क्षत्रियजाति, चौकोण रूप, स्वर्णकारादियोंका स्वामी, दग्धभूमिचारी अंगहीन, कडवारसप्रिय, ताम्रवर्ण, ताम्रादिद्रव्यका स्वामी, इतने रूपादि मंगलके हैं॥ ३॥

उप०—ग्राम्यः शुभोनीलसुवर्णवृत्तः शिशिष्टकोच्चः समधातुजीवः ॥
श्मशानयोषोत्तरदिक्प्रभातं शूद्रः खगः सर्वरसो रजोज्ञः ॥ ४ ॥

बुध ग्राम्य सौम्यग्रह नीलरंग सुवर्णधातुका स्वामी (वर्तुल) वृत्ताकार बाल्यावस्था ईटोंसे ऊंची भूमिका चारी, सम धातुजीव वात पित्त कफ तीनों बराबर जीवरक्षा करनेवाला श्मशानवासी स्त्रीग्रह उत्तरदिशाका स्वामी प्रातः-कालबली शूद्रवर्ण पक्षिजाति कटुकादि सर्व रसप्रधान रजोगुणी है ॥ ४ ॥

उप०—गुरुः प्रभाते नृशुभेशदिग्द्विजः पीतो द्विपाद्ग्राम्यसुवृत्तजीवः ॥
वाणिज्यमाधुर्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्त्वम् ॥ ५ ॥

बृहस्पति प्रातःकाल बली, पुरुष, सौम्यग्रह, ईशान दिशाका स्वामी ब्राह्म-णवर्ण, पीतरंग, दोपैया, ग्रामांतरचारी, सुवृत्ताकृति, जीवप्रधान, वाणिज्यका स्वामी, मधुर रसप्रिय, देवतालय स्वामी, वृद्धावस्था, पुष्परागादि सुरत्न स्वामी, समधातु (वातपित्तकफात्मक) सत्त्वगुण प्रधान है ॥ ५ ॥

उपजाति—शुक्रः शुभःस्त्रीजलगोपराह्णः श्वेतः कफी रूप्यरजोम्लमू-लम् ॥ विप्रोग्निदिङ्मध्यवयोरतीशोजलावनिः स्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥ ६॥

शुक्र सौम्यग्रह स्त्री जलचारी अपराह्णबली श्वेतवर्ण कफप्रकृति रूपा धातु रजोगुणी खट्टा रसप्रिय, मूल वस्तुस्वामी ब्राह्मण वर्ण, आग्नेय दिशाका स्वामी युवावस्था, रति क्रीडारसप्रिय, जलमयभूमिवासी कोमल वपु द्विपाद मनु-ष्यजाति है ॥ ६ ॥

उपजाति-शनिर्विहंगोनिलवन्यसंध्या शूद्रांगनाधातुसमः स्थिरश्च ॥
क्रूरः प्रतीचीतुवरोतिवृद्धोत्कराक्षितीड् दीर्घसुनीललोहम् ॥ ७ ॥

शनि पक्षिजाति, वायु प्रकृति, वनवासी सन्ध्याबली शूद्रजाति, स्त्रीग्रह समधातु, स्थिर क्रूर पश्चिम दिशाका स्वामी कषाय (क्वाथ कांजिक आदि) रसप्रिय, अतिवृद्धावस्था उत्कर भूमिका स्वामी, दीर्घाकृति सुन्दरनीलवर्ण लोहधातु, ऐसा रूप शनिका है ॥ ७ ॥

उपजाति-राहुस्वरूपंशनिवन्निषादजातिर्भुजंगोस्थिपनैर्ऋतीशः ॥
केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमित्थमूह्यम् ॥ ८ ॥

राहुका स्वरूप शनिके तुल्यहै. परन्तु निषाद जाति. सर्पाकार मृत हाड्डियोंका स्वामी. नैर्ऋत्यदिशाका स्वामी इतना विशेष है. और केतुका रूप शनि यद्वा राहुके तुल्य है. परन्तु शिखावान और तुल्य बहुस्वरूपवालाहै इतना विशेष है, ग्रहस्वरूपकाः प्रयोजन जैसे राशि स्वरूपादि बतलानेमें, ब्राह्मणादि जाति, बाल्यादि अवस्था, ग्रामारण्यादि स्थानज्ञान, वाय्वादि प्रकृति, चतुरस्रादि आकृति पाटलादि वर्ण विचार कहते हैं अथवा कैसा शत्रु वा मित्र मिलेगा, इत्यादि प्रश्नमेंभी यही विचार है बलवान् ग्रहके सदृश मूर्ति और ताम्रादि धातु जन्म वर्ष यात्राप्रश्नआदिमें कहतेहैं ॥ ८ ॥

वर्षलेखनक्रम, शक मास, तिथ्यादिके उपरान्त ग्रहतात्कालस्पष्ट, भावस्पष्ट ग्रहकुंडली, तदनंतर मुन्था कुंडली, नवांश, अर्थात मुशल्लह द्रेष्काण अर्थात त्रिकाण हद्दा और जन्मकुंडली स्थापन करके, पंचवर्गी द्वादशवर्गी चक्र स्थापन करना; तदनंतर पंचाधिकारी और षोडश योग विचारार्थ स्पष्ट दृष्टिचक्र स्थापन करना, उपरान्त सहम और दशा अन्तर दशाका न्यास होताहै, यह सूक्ष्म न्यास है, विशेष वर्षपत्रमें बहुत प्रकार चक्र और दशा लिखीजाती हैं.

अथ ग्रहाणां वर्णादिचक्रम् ।

ग्रह	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद
पुंस्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्र	वर्तुल स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
समय	मध्या	अपरा	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपरा	अपरा	अपराह्ण	अपराह्ण
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्यादि मि. धा.	हीरसुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह
पाद	चतुष्पाद	बहुपाद	चतुष्पाद	द्विपाद	द्विपाद	द्विपाद	भुजंग अपाद	अपाद	अपाद
सौम्यादि	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभा.	स्थिर	चर	पक्षी स्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटुक	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय क्वाथ	कषाय	कषाय
भूमि	पशुप्राय	जलभू	दग्ध	रमशा.	वाणि. सुराल.	जलभू	उत्कर	ऊषर	ऊषर
पित्तादि धातु	पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधा.	समधा.	कफ शुक्र	वायु	वायु अस्थप	वायु
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अ० वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
वर्ण	पाटल	गौर श्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	नील	धूम्र
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर

Five kinds
५ दृष्टि

(शार्दूलवि०)-दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा पादोनाखिलकार्य्यसाधनकरी मेलापकाख्योच्यते ॥ गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवने कार्य्यस्य संसिद्धिदा त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवनेषड्भागदृष्टिर्भवे ॥ ९ ॥

अब दृष्टिका विचार कहतेहैं. कि ग्रह अपनी आक्रांत राशिसे नवम और पंचमस्थ ग्रह अथवा भावको पादोन ४५ । ० दृष्टिसे, देखताहै यह बलवान् दृष्टि है. मेलापका इसका नाम है परस्पर प्रीति देतीहै. मित्रस्वजनादियोंका सुख और धन सम्पत्ति देतीहै. यह प्रत्यक्ष स्नेहदृष्टि हुई सम्पूर्ण कार्य्य यह भावजन्य साधन करतीहै । द्वितीय-स्वकीय स्थानसे तृतीय ३ स्थानमें और ११ एकादशस्थानमें क्रमसे तृतीयांशोन ४० । ० तथा षड्भाग १० । ० दृष्टि होती है इसका नाम गुप्तस्नेहा, और सर्वत्र कार्य्य सिद्धि देनेवाली दृष्टि होती है । ये दोनहूं ३ । ११ दृष्टिस्नेह बढावनेहारी पुत्रसुख और आयु धनको बढाती है ॥ ९ ॥

(शार्दूल०)-दृष्टिःपादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावास्मृतान्योन्यं सप्तमभेतथैकभवनेप्रत्यक्षवैराखिला ॥ दुष्टंहक्त्रितयंक्षुताह्वयमिदं कार्य्यस्य विध्वंसकृत्संग्रामादिकलिप्रदं दृशइमाःस्युर्द्वादशांशांतरे ॥ १० ॥

यह अपनी आक्रांत राशिसे चतुर्थ ४ दशम १० स्थानमें चतुर्थांश १५ कलादृष्टि देखताहै. इसका नाम गुप्तारि दृष्टि है, और परस्पर सप्तम ७ भावमें पूर्णदृष्टि ६० कला देखताहै, इसका नाम प्रत्यक्षवैरा है, और ऐसेही एक भावस्थ ग्रहोंमेंभी प्रत्यक्षवैरादृष्टि होती है. ये तीनों दृष्टि क्षुत संज्ञक है अनिष्टफल देती हैं कार्य्यका नाश करनेवाली संग्राम कलह आदि क्लेशफल करती हैं. यहां प्रत्यक्षस्नेहा १ गुप्तस्नेहा २ गुप्तवैरा ३ प्रत्यक्षवैरा ४ और एक स्थानस्थिता-अत्यन्तवैरा ५ पांच प्रकार दृष्टि कही हैं. परन्तु बारह अंशके भीतर अर्थात् जो देखनेवाला है उसके स्पष्ट अंशोंसे जिसे देखता है इसके स्पष्ट अंश बारह १२ अंशके भीतर हो तो दृष्टिका उक्तफल पूर्ण देताहै. बारह अंशके उपरांत कुछ क्षणमात्र उक्तफलको देता हैं. पूराफल नहीं देता है इसका गणित उदाहरणसहित आगे कहते हैं ॥ १० ॥

उपजाति०—अपास्यपश्यन्निजदृश्यखेटादेकादि शेषेध्रुवलिप्तिकाः स्युः ॥ पूर्णंखवेदास्तिथयोक्षवेदा खंषाष्टिरब्धंशरवेदसंख्या ॥ ११ ॥ तिथ्यः खचंद्राबियदभ्रतर्काः शेषांकयातैष्यविशेषघातात् ॥ लब्धं खरामैरधिकोनकैष्येस्वर्णध्रुवेताःस्फुटदृष्टिलिप्ताः ॥ १२ ॥

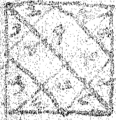
इन दो श्लोकोंका युग्म होनेसे अर्थ दोनोंका इकट्ठे लिखते हैं कि, जो ग्रह देखता है वह द्रष्टा और जिसे देखता है वह दृश्य कहाताहै. दृश्य ग्रह राश्यादिमें द्रष्टा ग्रह राश्यादि स्पष्ट घटाय देना. शेष एक आदिक राशिमें शून्यादि कलात्मक दृष्टि ध्रुवक होताहै. जैसे एक शेष हो तो दृष्टि ध्रुवक शून्य हुवा. दो शेष रहनेमें ४० तीन शेषमें १५ चारमें ४५ पांच शेषमें ० छः में ६० सातमें ० आंठमें ४५ नौमें १५ दशमें ११ ग्यारहमें ० बारहमें ६० जहां शून्य रहै, जैसे १।५।७।११ में है तो दृष्टि साधन प्रकार ऐसा है कि, दोनों स्पष्टोंके अतरसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
०	४०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०

शेष अंशादिका शेषांक नाम है तथा प्राप्त ध्रुवक और ध्रुवकको अंतरयातैष्य विशेष नामक है. शेषांकको यातैष्य विशेषसे गुणना तीससे भागलेना लब्धि, पूर्वोक्त ध्रुवकोंमें जैसा गत गम्य है. आगेका अधिक हो तो धन करना आगेका ध्रुवक पूर्व ध्रुवकसे न्यून हो तो ऋण करना. इस प्रकार दृष्टिकला सिद्ध होतीहै. (उदाहरण) भौमस्पष्ट ४ । १३ । ३७ । ९ शुक्र १ । २४ । ५२ । ४५ इनकी आपसमें चतुर्थ दशम दृष्टि है. यहां द्रष्टा शुक्र और दृश्यमंगल है. भौमस्पष्टमें शुक्रस्पष्ट घटाया शेष २ । १८ । ४४ । २४ राशिशेष रही तो २ का ध्रुवक ४० गत ध्रुवक हुवा. एष्य ध्रुवक ३के नीचेका १५ है. इनका अंतर २५ शेष अंशादि १८ । ४४ । २४ गुन दिये ४६।८। ३०।० अंशके स्थानमें ३० से भाग दिया लब्धि कलादिफल १५ । ३७ । ० अग्रिम ध्रुवक अधिक होता तो यह गत ध्रुवकमें जोड देनाथा. यहां अग्रिम १५ गत ४० से न्यून हो तो ४० में लब्धि घटाय दिया शेष २४ । २३ । ० यह कलादि दृष्टि हुई जब मंगलकी दृष्टि शुक्रपर गिननी है तो द्रष्टा मंगल दृश्य शुक्र हुवा पूर्ववत्

विधिसे दृष्टि ११।७।२४ होती है ऐसेही सभीका जानना ॥ ११ ॥ १२ ॥

शार्दूलवि०–पश्चन्मित्रदृशा सुहृद्रिपुदृशा शत्रुः समास्त्वन्यथा तिथ्यर्काघ्नगांकशैलखचराः सूर्य्यादिदीप्तांशकाः ॥चक्रेवामदृगुच्यते बलवती मध्याद्यथावेश्मनीत्येकर्क्षेंपिदृगुच्यतेर्थजननीत्येके विदुः सूरयः ॥ १३ ॥



नवम पंचमकी प्रत्यक्ष स्नेहदृष्टि जो ग्रह देखता है. वह तत्काल, अधिमित्र होता है .और जो तीसरे ग्यारहवेंमें गुप्त स्नेह दृष्टि देखता है. वह तात्कालमें मित्र है, जो ग्रह चतुर्थ दशममें गुप्त शत्रु दृष्टि देखता है वह तात्कालमें शत्रु होता है; और जो १ । ७ स्थानोंमें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि देखता है वह अधिशत्रु होता है इनसे उपरांत २ । ६ । ८ । १२ स्थानोंमें दृष्टि तो गणितसे किय-द्भागमात्र जैसे कहीं ० । ० भी होजाती है, परंतु तत्कालमें पूर्णभाग दृष्टि न होनेसे वह सम कहाता है यह तात्काल मैत्री हुई और नैसर्गिक मैत्री ताजिकांतरोंसे यह है कि, "मित्राण्यारशशांकशक्रसचिवाः सौम्यार्कदेवार्चिता जीवार्कक्षणदाधिपा शनिसितौ मंदज्ञशुक्रा इमे ॥ सूर्य्यात्स्यू रिपवश्च ताजिकमते शेषा बुधैश्चोदिताः" इति १ इसका अर्थ चक्रसे समझना ये नियत मित्र शत्रुहैं.

नैसर्गिकमैत्रीचक्र ।

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
मित्राणि	चं मं बृ	बु सू बृ	सू चं बृ	शु श	शु बु श	बु श	बु शु	बु शु श
शत्रवः	बु शु श	बु शु श	बु शु श	सू चं मं बृ	सू चं मं	सू चं मं बृ	सू चं मं बृ	सू चं मं बृ

प्रयोजन कहतेहैं कि जोग्रह नैसर्गिक मैत्री और तत्कालमेंभी मित्रहै वह अधिमित्र होताहै,जोनैसर्गिकमें शत्रु औरतात्काल-मेंभी शत्रु है वह अधिशत्रु होताहै. जो एक चक्रमें मित्र दूसरेमें शत्रुहै वह सम कहाताहै.परंतु यह मत जातकोंकामुख्य है.मित्रामित्रीका विचार पुर्वोक्त पंचवर्ग्यादिविचारमें काम आता है.लग्नादि द्वादश

भाव चक्रमें वाम दक्षिण दो प्रकार दृष्टि होती है. जैसे लग्नसे सप्तमपर्यंत दक्षिण दृष्टि और सप्तमसे लग्नपर्यंत वामदृष्टि होती है; प्रयोजन यह है कि, एक भावस्थदृष्टि निर्बल और वामदृष्टिकी अपेक्षा दक्षिण दृष्टि बलवती होती है इसमें इनमेंसे दशमस्थ गृहपर सप्तमस्थके चतुर्थ होनेसे अतिबलवती दृष्टि होती है और किसी २ आचार्योंका मत है कि एक स्थान स्थित ग्रहोंकी परस्पर दृष्टिभी अति बलवती अर्थात् कार्य साधन करनेवाली होती है विशेषतः शुभफल देती है अब दीप्तांश कहते हैं—सूर्य्यके १५ अंश एवं चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ गुरुके ९ शुक्रके ७ शनिके ९ राहु केतु शनिवत् ९ । ९ दीप्तांश हैं, मतान्तरसे सभी ग्रहोंके दीप्तांश बारह मात्र हैं, दृश्यग्रह द्रष्टाग्रहके दीप्तांशके भीतर होवे तो इत्थशाल तथा सम्बन्ध योगादिफल शुभ वा अशुभ पूरा देता है. दीप्तांशसे ऊपर होजानेमें फल पूरा नहीं देता. यही दीप्तांशोंका तात्पर्य है, आगे षोडश विशेष योगमें काम आवेगा ॥ १३ ॥

(अनु०)—पुरःपृष्ठेस्वदीप्तांशैर्विशिष्टंदृक्फलंग्रहः ॥ दद्यादतिक्रमेतेषांमध्यमंदृक्फलं विदुः ॥ १४ ॥ इति नीलकंठ्यां ग्रहचारदृष्टिविचाराऽध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

दीप्तांशोंका प्रयोजन विशेष कहतेहैं कि जो ग्रह नवम पंचमादिदृष्टि देखताहै और जिसे देखता है ये दोनहूं अपने दीप्तांशोंके भीतर हो तो इत्थशाल और दृष्टि आदिका नियत फल विशेष देते हैं. जो दीप्तांशोंसे अधिक अंशपर द्रष्टा दृश्य ग्रह हों तो उक्त फल साधारण देते हैं ॥ १४ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां ग्रहचारदृष्टिविचारोद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

अथ षोडशयोगाध्यायः ।

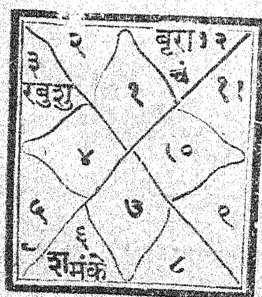
उपजाति०—प्रागिक्कवालोऽपरइंदुवारस्तथेत्थशालोऽपरईशराफः ॥
नक्तंततःस्याद्यमयामणूऊकंबूलतोगैरिकबूलमूक्तम् ॥ १ ॥
इंद्रवज्राछं०—खल्लासरं रद्दमथोदुफालिकुत्थंचदुत्थोत्थदिवीरनामा ॥ तंबीर कुत्था दुरफश्च योगाः स्युः षोडशैषां कथयामि लक्ष्म ॥ २ ॥

अब षोडश योगाध्यायमें प्रथम इनके नाम कहते हैं पहिला इक्कवाल, १ दूसरा इंदुवार, एवं इत्थशाल ३ ईशराफ ४ नक्त ५ यमया ६ मणूऊ ७ कम्बूल ८ गैरिकंबूल ९ खल्लासर १० रद्द ११ दुफालिकुत्थ १२ दुत्थोत्थदिवीर १३ तंवीर १४ कुत्थ १५ दुरफ १६ ये संज्ञा हैं इनके लक्षण आगे कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

(वसन्तति०)–चेत्कंटकेपणफरेचखगाःसमस्ताःस्यादिक्कवाल इतिराज्यसुखाप्तिहेतुः ॥ आपोक्लिमे यदि खगाः साकिलेंदु व न स्याच्छुभः क्वचन ताजिकशास्त्रगीतः ॥ ३ ॥

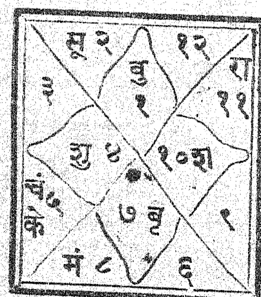
जो सभी ग्रह कंटक १ । ४ । ७ । १० और पणफर २ । ५ । ८ । ११ स्थानोंमें हो अर्थात् आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में कोई ग्रह न हो तो इस योगका नाम, इक्कवाल है, इसका फल राज्य सुख है, वह मनुष्योंको कुलानुमान होता है, अथवा जिसके वर्षमें अरिष्ट योग हो, वह अरिष्टही इक्कवाल योगके फलसे भंग होजायगा, दूसरे ये भी ग्रह आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में हों अर्थात् इक्कवालोक्त कंटक १ । ४ । ७ । १० पणफर २ । ५ । ८ । ११ में कोई ग्रह न हो तो इस योगका नाम इंदुवार है, इसका फल अनिष्ट है, इन्दुवारनामहीका अर्थ शुभका विपरीत अर्थात् अशुभ है, ऐसाही फलभी है, इनका उदाहरण कुण्डलियोंमें लिखा है ॥ ३ ॥

१ इक्कवालयोग ।



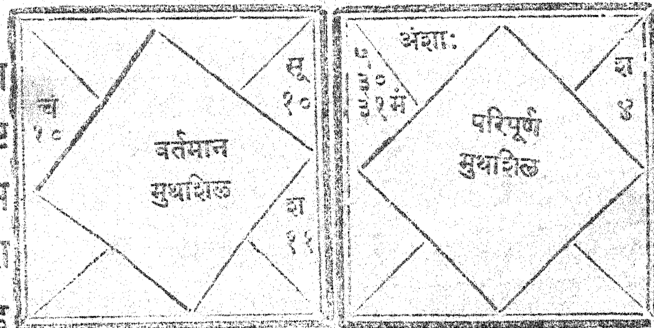
कुंडली.

१ इन्दुवारयोग ।



इं० व०–शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमंदेऽग्रस्तेनिजंतेजउपाददीत ॥ स्यादित्थशालोयमथोविलिप्तालिप्तार्द्धहीनोयदिपूर्णमेतत् ॥ ४ ॥

मंदगतिग्रह बहुत अंश होके आगे वैठा हो और शीघ्र गति अल्प अंशपर हो और दृष्टि दोनोकी दीप्तांशके भीतर हो तो शीघ्रग्रह अपना तेज अग्रगत मंदग्रहकों दो देता है इसको मुथशिलयोग कहते हैं. यह योग चार प्रकारका होता है. प्रथम वर्त्तमान मुथशिल १ परिपूर्ण मुथशिल २ राश्यन्त राश्यादि स्थित शीघ्र मंद ग्रहोंसे वर्त्तमान मुथशिल ३ भविष्यन्मुथशिल ४ शीघ्र और मंदगति स्पष्टसे जाननी, यहां मंदगतिका प्रयोजन नहीं है. तत्काल स्पष्टकी गतिसे शीघ्र वा मंदग्रह समझना. और मुथशिल नाम इत्थशालका है. यहां प्रथम वर्त्तमान मुथशिल योगका उदाहरण कहतेहैं. शीघ्रगतिवाला ग्रह मंद-गतिवालेसे न्यून अंशपर हो, वस्तुतः शीघ्रके दीप्तांश संख्याके भीतर हो, और दोनोंकी परस्पर. नवम पंचमादि उक्त दृष्टि हो तो इसका नाम. वर्त्तमान इत्थ-शाल हुआ फल है कि शीघ्र अर्थात् पृष्ठगत ग्रह अपना तेज (सामर्थ्य) मंद गति ग्रहको देदेता है इसका फल पूर्ण मुथशिलसे न्यून होता है. अब पूर्ण मुथशिलयोगका उदा-हरण कहते हैं. वर्त्तमान इत्थशालके तरह दृष्टि और शीघ्र और अल्प भाग मंदग्रह बहुत अंश पर हो परंतु शीघ्र ग्रह

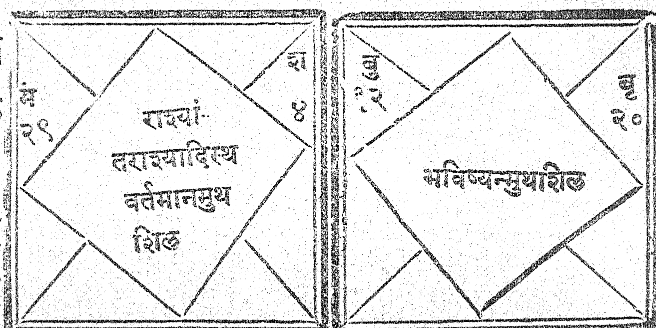


मंदग्रहके बराबर अंशके पर हो केवल कला अथवा विकला मात्र न्यून हो तो इसको पूर्ण इत्थशाल कहते हैं फलभी इसका पूर्ण होता है; ५ में दो प्रकारके हुये ॥ ४ ॥

इंद्रवज्रा—शीघ्रोयदाभांत्यलवेस्थितःसन्मंदेऽन्यभस्थेनिदधाति तेजः ॥ स्यादित्थशालोयमथैषशीघ्रदीप्तांशकांशैरिहमंदपृष्ठे ॥ ५ ॥ तदाभविष्यद्गणनीयमित्थशालं त्रिधैवं मुथशीलमाहुः ॥ लग्नेश-कार्य्याधिपयोर्यथैष योगस्तथा कार्यमुशंति संतः ॥ ६ ॥

शीघ्र ग्रह २९ अंश राश्यंतमें हो अर्थात् जिस राशिसे मंद ग्रहपर पूर्ण

दृष्टि होती है उसमें जाता हो और मंदग्रह स्वल्प अंशपर हो जैसे मंगल २९ अंश धनस्थानमें है. तीसरे स्थानमें जाना चाहता है. दूसरा मंदग्रह शनि ग्यारहवें भावमें ४ अंशपर है यहभी वर्त्तमान मुथशिल योग है. राश्यंत राश्यादिस्थ वर्त्तमान, इसे कहतेहैं अर्थात् मंगल तीसरे भावमें जानेको तैयार है वहां पहुँचकर शनिसे इत्थसाल करनेवाला है ३ चौथा शीघ्रग्रह मंदग्रहसे न्यून अंशपर और पूर्ण दृष्टि परस्पर हो परंतु शीघ्र ग्रहके उक्त दीप्तांशों के अंतर्गत मंद न हो किंतु शीघ्र स्वदीप्तांशोंके अंतर मंदग्रहको लेना चाहता हो, जैसे तीसरे भावमें बुध १२ अंशपर



और ग्यारहवेंमें बृहस्पति २० अंशपर है तो बुधके दीप्तांश ७ से अधिक पर है परंतु बुध बृहस्पतिका स्वदीप्तांशांतर्गत करना चाहता है; इसको भविष्य मुथशिल योग कहते हैं ये ४ चार उदाहरण हैं. प्रकार तो मुख्यतः तीनही हैं वर्त्तमान, पूर्ण और भविष्य, परंतु वर्त्तमानके २ प्रकार होनेसे यहां उदाहरणमें चार भेद करदिये और मुथशिल मुत्थशिल मुत्थशील मूथशील ये चार प्रकारके नाम एक इत्थशालकेहीहैं. अब इनके फल कहतेहै कि जिस भाव संबंधी कार्य्य है उसके स्वामी और लग्नेशका इत्थशाल होनेमें उस कार्य की सिद्धि होती है, कार्य्य. भाइयोंके निमित्त तृतीयेश संतानार्थ पंचमेश राज्यार्थ दशमेश, और जायार्थ सप्तमेश इत्यादि पूर्वोक्त भाव कर्मोंसे कार्य्येश जानना जैसे संतान प्रश्नमें लग्नेश पंचमेशका इत्थशाल योग और स्त्री प्रश्नमें लग्नेश सप्तमेशका, एवं राज्यप्रश्नमें लग्नेश दशमेशका योग विचारना. और इन ४ प्रकार के इत्थशालोंमें यह विचारभी मुख्य चाहिये कि ३ । ११ और ५।९ भाव संबंधी इत्थशाल तद्भावजन्य शुभफल करतेहैं- क्योंकि ये मित्र दृष्टिसेहैं और १।७ तथा ४ ।१० इन भवों संबंधी इत्थशाल तद्भावोक्त फलको अनिष्ट कर देतेहैं. अर्थात् तद्भावोत्थ-

कार्य्यको नाष करदेतेहैं. यह शत्रुदृष्टिका प्रभाव है यह फलका शुभाशुभ, पूर्व दृष्टि विचार दशवें श्लोकमें कहाहै, इत्थशाल कर्त्ता लग्नेश कार्य्येशके अंशोंका अंतर करके जो शेष रहे उसे बारह १२ से गुनदेना, इतने दिनोंमें उस इत्थशालका फल होगा ऐसे सर्वत्र जानना ॥ ५ ॥ ६ ॥

उपजा०—लग्नेशकार्य्याधिपतत्सहायायत्रस्थुरस्मिन्पतिसौम्यदृष्टे ॥ तदाबलाढ्यंकथयंतियोगं विशेषतःस्नेहदृशापिसंतः ॥ ७ ॥

लग्नेश और कार्य्येशके मित्र ग्रहभी उन्हींके सदृश फल देतेहैं परंतु लग्नेशादियुक्त ग्रह जिस भावमें है वह अपने स्वामी और शुभग्रहोंसे दृष्ट हों तो पूर्वोक्त योग बलवान् होताहै उक्तग्रह इत्थशालके फलोंका (उत्कृष्ट) विशेष करदेते हैं, पण्डित लोग स्नेहदृष्टिसे फलकी विशेषता कहते हैं, इत्थशाल हुये में इतना विचार और भी चाहिये कि इत्थशाली मन्दग्रह वक्र हो तो उक्तफल अधिक होगा, यह विचार युक्तिसिद्धहै ॥ ७ ॥

स्त्रीप्राप्तिप्रश्ने.



स्त्रीलाभप्रश्न.



धनलाभप्रश्ने.



कवलार्थप्रश्ने



(उपजाति०)-स्वर्क्षादिसत्सत्स्थानगतःशुभैश्चेद्युतेक्षितोभूद्भविताऽथवास्ते ॥ तदाशुभंप्रागभवत्सुपूर्णमग्रे भविष्यत्यथवर्त्ततेच ॥ ८ ॥

इत्थशाल योग कर्त्ता लग्नेश और कार्य्याधीश वा दोनहूं गृह उच्च वा मित्र राशि, वा स्वहद्दा, स्वत्रिंशांश, स्वमुशल्लहादि सत्स्थानमें प्राप्त हो और शुभ

ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो, इत्थशालोक्त शुभफल तत्कालही होगा. जो स्वराश्यादि शुभस्थानमें प्राप्त होनेवाला हो और शुभग्रह युक्त वा दृष्ट होनेवाला हो तो, उक्तफल पीछे होगा, यदि स्वक्षांदि शुभ स्थानसे दूसरे स्थानमें प्राप्त हुये, थोडाही काल बीता हो तो पूर्वोक्त फल होगयाहै, कहना ये विचार वर्ष और प्रश्नादियोंमें सर्वत्र बुद्धिबलसे करना ॥ ८ ॥

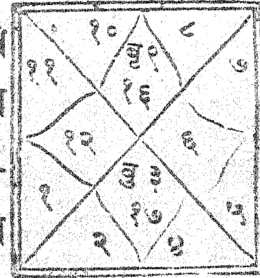
उपजा०—व्यत्यस्तमस्माद्विपरीतभावेस्वेष्टर्क्षतोनिष्टगृहं प्रपन्नः ॥ अभूच्छुभंप्रागशुभंत्विदानीं संयातुकामेनचभाविवाच्यम् ॥ ९ ॥

पूर्वश्लोकमें जो स्वक्षांदिस्थ इत्थशाली ग्रहोंसे भूत भविष्य, वर्त्तमान कालिक शुभफल कहेहैं तैसेही शत्रुराश्यादि अनिष्टस्थान और पापग्रह योगदृष्टिसे अशुभ फलभी होताहै, जैसे लग्नेश कार्येश वा दोनहूं शत्रु वा नीच राशिमें वा शत्रुके हद्दा, मुथहादि दुष्ट स्थानोंमें हों, और पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो इत्थशालोक्त अनिष्ट फलतत्कालही होगा, आगे पीछे शुभ होगा जो ऐसाही स्वोच्चादिराशिगत पापयुक्त दृष्ट होकर वर्त्तमान राशिमें आया हो तो उक्तफल भी पूर्वही देदेवेगा, पीछे शुभ फल देगा, जो स्वोच्चादि राशि प्राप्त और पापयुक्त दृष्ट होनेवाला हो तो उक्तफल भी आगे होगा इन योगोंमें अनिष्ट फलकी प्राप्ति होनेमें शुभाशुभ दोनों यथोक्त कालपर दोनहूं होते हैं, शुभफलकी प्राप्तिमें सर्वदा शुभही होताहै, उदाहरणके वास्ते तीसरे मुथशिलका रूप कहतेहैं कि चन्द्रमा राश्यंत २९ अंशपर है और सूर्य्य राश्यादि १० अंशपर हैं चन्द्रमाके दीप्तांश १२ के भीतर होनेसे इत्थशाल हुवा, अब इसमें यह विचारना चाहिये कि चन्द्रमा वर्तमान कुम्भराशिमें होनेसे शत्रुराशि गत है, आगे १२ राशि मित्रराशिमें जाता है तो प्रथम अशुभ फल पीछे शुभफल होगा, इसी प्रकार सर्वत्र गतागत वर्त्तमान कालिक फल कहना ॥ ९ ॥

(इं० व०)-शीघ्रो यदा मंदगतेरथैकमप्यंशमभ्येतितदेशराफः ॥ कार्यक्षयोमूशरिफेखलेत्थसौम्येनहिद्धाजमतेनचिंत्यम् ॥ १० ॥

पूर्वोक्त इत्थशाल योगका विपरीत ईसराफ योग कहते हैं कि शीघ्रगति

यह जो मंदगति ग्रहके एक अंश भी आगे बढ जाय तो इसराफ योग होता है. इसको मूशरिफ भी कहते हैं. यह कार्य्यका नाश अर्थात् इत्थशाल होनेमें जो कार्य्यसिद्धि होनीथी उसको विपरीत करदेता है. इसमें हिल्लाजमतसे इतना विचार है कि यह मूशरिफ पापग्रहोंका हो तो कार्य्य विपरीत अर्थात् शुभके बदले अशुभ करेगा. जो उक्त योग शुभग्रहोंसे हो तो कार्य्यको विपरीत तो नहीं करेगा, किंतु शुभफल जो इत्थशालसे होनाथा उसे न होने देगा उदाहरण ९ लग्नमें बृहस्पति १६ अंश लग्नमें व सप्तमेश बुध मिथुनमें १७ अंश पर है तो मंद-गति बृहस्पतिसे शीघ्र गति बुध एक अंश अधिक बढगया

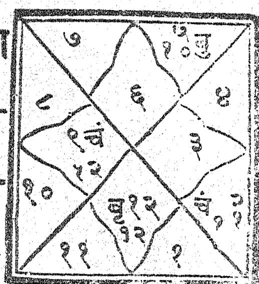


इसका नाम ईसराफ वा मुशरिफ हुआ, स्त्रीप्राप्ति कार्य्य था यह सिद्ध नहीं होगा. यह दोनों पापग्रह होते तो स्त्रीप्राप्तिके बदले स्त्रीसंबन्धी कर्मसे अनिष्ट होता, ऐसाही सर्वत्र जानना ॥ १० ॥

उपजा०-लग्नेशकार्य्याधिपयोर्नदृष्टिर्मिथोऽथतन्मध्यगतोपिशीघ्रः ॥
आदाय तेजोयदिपृष्ठसंस्थाद्यसेदथान्ये यदि नक्तमेतत् ॥ ११ ॥

लग्नेश और कार्याधीशकी परस्पर दृष्टि न हो किंतु इन दोनोंके बीच किसी भावमें उन दोनोंसे शीघ्र ग्रह लग्नेश और कार्य्येशको भी देखता हो तो अपने पीछेवाले स्वल्पांश ग्रहका तेज लेकर आगेवाले बृहदंशको देदेताहै, परंतु यह शीघ्रगति अल्पांश ग्रहसे अधिक और मंदगति, बृहदंश ग्रहसे न्यून अंशपर होवे यह योग अन्यद्वारा कार्य्यसिद्धि करता है, इसका नाम नक्तयोग है, उदाहरण आगे कहते हैं ॥ ११ ॥

उपजा०-स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्तिकन्या स्वामीबुधः सिंहगतो दशांशैः ॥सूर्य्यांशकैर्देवगुरुःकलत्रेदृष्टिस्तयोर्नास्तिमिथोथचंद्रः॥ १२॥
चापेवृषेचोभयदृश्यमूर्तिः शीघ्रोर्कभागैरथवाभवांशैः ॥ आदायतेजो नयतोददौयज्जीवायलाभःपरतःस्त्रियाःस्यात् ॥ १२ ॥



नक्तयोगका उदारण जैसे स्त्रीलाभ प्रश्नमें कन्या लग्न, लग्नेश शीघ्रगति बुध सिंहके दश अंशपर कार्य्येशस्त्री प्रश्न होनेसे सप्तमेश मंदगति बृहस्पति मीनराशिके बारह अंश पर है इनकी परस्पर दृष्टि होती तो, शीघ्राल्पभागेत्यादि इत्थशाल हो तो यहां इनकी ६ । ८ स्थानोंमें होनेसे दृष्टि नहीं हैं, परंतु इनके बीच धनराशिमें वा वृषराशिमें लग्नेश और कार्य्येशके अंशोंके मध्यवर्त्ती बारह वा ग्यारह अंशपर चन्द्रमा दोनोंसे शीघ्रगति है, और दोनोंको नवम चतुर्थ वा लाभ चतुर्थ पूर्णदृष्टिसे देखताहै, इस व्यवस्थामें चंद्रमा अपने पीछेवाले शीघ्रबुधका तेज लेकर अपने अग्रवर्ती मंदगति बृहस्पतिको देदेताहै. प्रयोजन है कि बुध गुरुकी दृष्टि होती तो इत्थशाल योगसे अपनीही हाथसे स्त्रीप्राप्ति होती यहां नक्तयोग चन्द्रमा तीसरे ग्रहसे है तो स्त्रीप्राप्ति भी तीसरे किसी मध्यस्थ मनुष्यके हाथसे होगी. ऐसाही सर्वत्र जानना यहां तेरहवें श्लोकमें (शीघ्रोऽर्कभागैः) के स्थानमें (शीघ्रोऽष्टभागैः) ऐसा पाठ है, प्रयोजन यह है कि, चन्द्रमा ८ अंशपर होनेसे लग्नेश कार्य्येशके बीच तो न हुआ परंतु अति शीघ्रहै, बुध १० अंशवालेको लांघकर बारह अंशवाले बृहस्पतिको पहुँच सकताहै, इस कारण नक्तयोग संभावना होती है, यह ताजिकांतर मत है और यहां १० । ११ । १२ । अंश इन तीनोंके उपलक्षणार्थ लिखे है, दीप्तांशोंके भीतर किसी अंशपर क्रमसे हो तो नक्तयोग होजाताहै, आगे बुद्धिके बलसे विचारना ॥ १२ ॥ १३ ॥

इन्द्रवज्रा-अंतःस्थितोमंदगतिस्तुपश्येद्दीप्तांशकैर्द्वावथशीघ्रतस्तु ॥
नीत्वामहोयच्छतिमंदगायकार्य्यस्यसिद्धयैयमया प्रदिष्टः ॥ १४ ॥

लग्नेश और कार्य्येश किसी भावोंमें हों उनकी परस्पर दृष्टि न हों किंतु एक शीघ्रगति एक मंदगति हो और दीप्तांशोंके भीतर हो मध्यस्थ स्थानगत दोनोंसे मंदगतिकोही ग्रह उक्त ग्रहको देखता हो तो ग्रहसे तेज लेकर

मंदग्रहको देदेताहै. इस योगका नाम यमया है. कार्य्यकी सिद्धि दूसरेके द्वारा करताहै ॥ १४ ॥

इं० व०—राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथोमेषेसितस्त्वष्टलवैर्वृषस्थः ॥ चंद्रोदशांशैर्यदिराज्यनाथोदृष्टिस्तयोर्नास्ति गुरुस्तुमंदः॥ १५॥

उ० व०—दिगंशगःकर्कगतस्तुपश्यन्तुभौमहोदीतलवैःसचांद्रम् ॥ ददौसितायेतिपदस्यलाभोमात्येन भावीतिविमृश्यवाच्यम् ॥ १६॥

यमया योगका उदाहरण, जैसे राज्यप्राप्ति प्रश्नमें तुलालग्नका स्वामी शुक्र सप्तम भावमें मेषके ८ अंशपर और कार्य्य दशम स्थान सम्बन्धी होनेसे दशमेश चन्द्रमा वृषके १० अंशपर अष्टम स्थानमें है, इन लग्नेश कार्य्येशोंकी परस्पर दृष्टि नहीं है, दीतांशोंके अन्तर्गत है. योग होनेमें



केवल दृष्टिकी न्यूनता रही यह कार्य्य, तीसरा ग्रह अर्थात् बृहस्पति सम्पादन कर्त्ता है कि, यह स्थानदृष्टिसे १० । ११ स्थानमें शुक्र चंद्र० दोनहूंको देखता है तो शीघ्र चन्द्रमासे तेज लेकर, उससे मन्द शुक्रको देताहै इस योगका नाम यमया है. फल यह है कि, लग्नेश कार्य्येशका इत्थशाल होता तो आपही राज्यप्राप्ति होनीथी, यहां बृहस्पतिसे योग पूर्ण हुआ तो दूसरेके द्वारा राज्यप्राप्ति होगी, बृहस्पति देवगुरु यद्वा देवमन्त्री है इससे फल (राज्यप्राप्ति) पुरोहित वा अमात्यके द्वारा होगी ऐसे सभी संबंधी फल अपनी बुद्धिसे विचारके कहना, यहां राज्यप्राप्ति प्रश्न केवल उपलक्षण मात्र है ॥ १५ ॥ १६ ॥

इन्द्रवज्रा—वक्रः शनिर्वा यदि शीघ्रखेटात्पश्चात्पुरस्तिष्ठति तुर्य्यदृष्ट्या ॥ एकर्क्षसत्तर्क्षसुवादृशावा पश्यंस्तथांशैरधिकोनकश्चेत् ॥ १७ ॥ उपजातिपूर्वार्द्ध—तेजोहरेत्कार्य्यपदेत्थशालीस्थितोपिवासौमणऊःशुभो न ॥

मणऊ योगका लक्षण कहते हैं, यह नक्तयोगके तरह है परन्तु शनि वा मंगलकी ऐसी प्राप्तिमें फल विपरीत होजाता है, इस कारण यह मणऊ मान

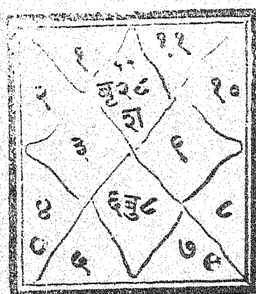
योग पृथक् है, मणऊ पारशीय (मनै) पदका पर्य्याय है. प्रयोजन है कि, कार्य्य करनेमें (मनै) अर्थात् विघ्न करदेताहै. लक्षण यह कि, लग्नेश और कार्य्येश इत्थशाली अर्थात् शीघ्रोल्पभाग मन्द घन भाग और परस्पर दृष्टियुक्त हों, परंतु इनके बीच मंगल वा शनि शीघ्रगति ग्रहके समीप उसके दीप्तांशोंके भीतर आगे वा पीछे हो और चतुर्थ सप्तम वा एकार्क्ष दृष्टिसे उसे देखे मन्दग्रहकोभी किसी दृष्टिसे देखे और इसके दीप्तांशोंके अन्तर वह मन्दग्रह होवे जो कि लग्नेश वा कार्य्येश है; तो शीघ्र ग्रहका तेज हरलेताहै, मन्दहको वह तेज नहीं देता यह मंगल शनिकी प्रकृति और शत्रुदृष्टिका फल है, इसको मणऊ योग कहतेहैं इत्थशालका विरुद्धफल अर्थात् कार्य्यनाश कर्त्ता है ॥ १७ ॥

उपजा०—स्त्रीलाभपृच्छातनुरास्तिकन्याज्ञोदिगंशोस्तितिथिभिः सुरेज्यः ॥ १८ ॥ कलत्रगःखेवनिजो भवांशैःपूर्णंबुधोभौमहृतस्ततेजाः ॥ जीवेनपश्चान्मिलतीतिलाभोनाय्यांस्तुनो पृष्ठगतेऽथवास्मिन् ॥ १९ ॥

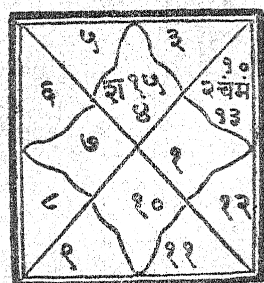
मणऊं



मणऊं



मणऊं



मणऊं योगका उदाहरण स्त्रीलाभ प्रश्नमें कन्या लग्न लग्नेश बुध लग्नके दश अंशपर स्त्रीलाभ कार्य्य होनेसे सप्तमेश सप्तम बृहस्पति मीनके १५ अंशमें है, इनका इत्थशाल स्त्रीलाभकारी था परन्तु मंगल मणऊं अर्थात् मनै करताहै कि यह दशम थानमें मिथुनके ग्यारह अंशपर स्थित होकर लग्नेश बुधको तुर्य्यदृष्टि अर्थात् शत्रुदृष्टिसे देखता है, और बुधक अंश समीपवर्त्ती है इस हेतु बुधका तेज मंगलने हरण किया, बुध निस्तेज होगया, अर्थात् फल देनेको सामर्थ्य इसको न रहा, मंगलने हानि अथात् मणऊं मनै करली

है, लग्नेश कार्य्येश बु० बृ० के इत्थशालसे स्त्रीप्राप्ति होनीथी, मंगलके मणउं करनेसे यह कार्य्य नहीं होगा. प्रत्यक्षतः स्त्रीसम्बन्धी हानि होगी ऐसेही शनिसेभी मणउं योग होता है, दूसरा उदाहरण-मीनलग्न मन्द लग्नेश बृहस्पति ८ अंश सप्तमेश बुध ८ अंश सप्तम स्थानमें शनि मीनके ९ अंशपर यह एक अंश अधिक होनेपरभी मणउं योग हुवा. तीसरा उदाहरण-लाभ प्रश्नमें कर्क लग्नसे लग्नेश चंद्रमा वृषके दश अंशपर लाभेश शुक्रलग्नमें कर्कके १३ अंशपर इनके इत्थशाल होनेसे धनलाभ होना था, परन्तु वृषके १६ अंश पर चन्द्रमाके साथ एक भावगत शत्रुदृष्टि देखनेवाला मंगल वा शनि होनेसे मणउं योग होगया.शीघ्र चन्द्रमाके तेज मंगलने शुक्रको न देने दिया.आपही नाश करदिया. फल इत्थशाल होना था नहीं होगा प्रत्युत हानि होगी; यहां इस योगके मूल वाक्यमें "अंशैरधिकोनकैश्चेत्"अर्थात् मणउं करनेवाला ग्रह शीघ्रसे पीछे वा आगे अंशोंमें समीप हो कहा है युक्तिसे यह भी विचार चाहिये कि, जो शीघ्र ग्रहसे आगे हो तो इससे भी आगे कार्य्येश जो ग्रह है वह मणउं करनेवाले ग्रहसे मन्दगति हो. क्योंकि यह उसको अपनी गतिसे आक्रमण करसके तो मणउं योग होगा जब मणउं करनेवालेसे आगेका लग्नेश शीघ्रसे मन्दग्रह मणउंवालेसे शीघ्र हो तो मणउं करनेवालेसे; क्योंकि इसमें उसको आक्रमण नहीं कर्त्ता है दूसरा जब शीघ्र ग्रहसे पीछे मणउं करनेवाला मंगल वा शनि हो तो यह इतना शीघ्रगति होनाचाहिये कि कार्य्येश वा लग्नेश पूर्वोक्त शीघ्रगति ग्रहको आक्रमण करके आगेवाले योगकारक मन्द ग्रहको पहुँचसके तो मणउं ठीक होगा. जब इसकी इतनी शीघ्र गति नहीं है कि पीछेवाले शीघ्र ग्रहोंको उल्लंघन कर आगेवाले मन्दगति तीसरे ग्रहको न पहुँचसके तो मणउँ योग नहीं होगा,लग्नेश कार्य्येशका पूर्वोक्त इत्थशालही रह जायगा ऐसे विचार औरभी स्वबुद्धिसे करने चाहिये; यहां शनि और मंगलके मणउं योग तीन तीन प्रकारके होनेसे छः भेद हुये, उपरान्त शीघ्र ग्रहके पीछे और आगे मणउंवाला ग्रह होनेसे बारह भेद हैं, शेष बुद्धिसे विचारना, भाषा बहुत बढ जानेके कारण मैंने सूक्ष्मही लिखा है ॥ १८ ॥ १९ ॥

उपजा०—यदीत्थशालोस्त्युभयोःस्वदीप्तहीनाधिकांशैः शनि-भूसुतौचेत् ॥ एकर्क्षगौलग्नपकार्य्यपौस्तस्तेजोहरौकार्य्यहरौ निरुक्तौ ॥ २० ॥

नक्तयोगका भेद औरभी है कि, जब लग्नेश कार्य्येशका पूर्वोक्त प्रकारसे इत्थशाल हो और इनके दीप्तांशोंके भीतर आगे वा पीछे शनि मंगल दोनहूं वा एक ग्रह उन दोनोंके समीप दीप्तांश भीतर आगे वा पीछे हो अथवा लग्नेश कार्य्येशमें एकके साथ शनि वा मंगल उसके दीप्तांश भीतर आगे वा पीछे हो तो यहभी मणऊं योग कार्य्यनाश करनेवाला होताहै ॥ २० ॥

उपजा०—राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः कर्केसितोंशैस्तिथिभि-र्दिगंशैः ॥ वृषेशशीभूपलवैःकुजश्चहरेद्द्वयोर्भाहरतेचराज्यम् ॥२१॥



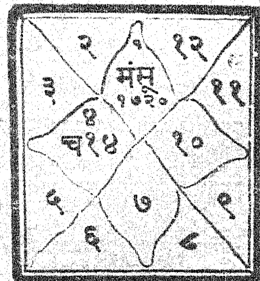
इस मणऊं योगका उदाहरण राज्यप्राप्ति प्रश्नमें तुला-लग्न लग्नेश शुक्र दशम कर्कके पंद्रह अंशपर राज्येश चंद्र-मा अष्टम वृषके दशअंशपर उच्चवर्ती तथा मंगलभी अष्टम-वृषके १६ अंशपर है और शनिभी अष्टम वृषके दश अंशपर है मंगल शनिमेंसे एकके होनेसेभी योग होजाता है, यहां उपलक्षणार्थ दोनहूं लिखे हैं. प्रयोजन यह है कि, लग्नेश कार्य्येशमेंसे एकके भी दीप्तांश भीतर आगे वा पीछे भौम शनिमेंसे एकभी होनेसे योग सम्पन्न होता है, यहां लग्नेश कार्य्येशके शुक्र चन्द्रके इत्थशालमें राज्यप्राप्ति होनीथी मंगल शनि कार्य्येशके साथ उसके दीप्तांशोंके समीप होनेसे इन्होंने उसका तेज नाश कर-दिया इसका नामभी मणऊं योग है, राज्यप्राप्ति नहीं होने देगा प्रत्युत राज्यहानि करेगा, यहभी मणऊंका भेद है ॥ २१ ॥

अनुष्टुप्—लग्नकार्य्येशयोरीत्थशालेत्रेद्विह्त्थशालतः ॥
कंबूलंश्रेष्ठमध्यादिभेदैर्नानाविधंस्मृतम् ॥ २२ ॥

लग्नेश कार्येशका पूर्वोक्त प्रकारसे इत्थशाल हो और चन्द्रमा लग्नेश वा कार्य्येश वा दोनोंके साथ इत्थशाली रहे तो इसका नाम कंबूल योग

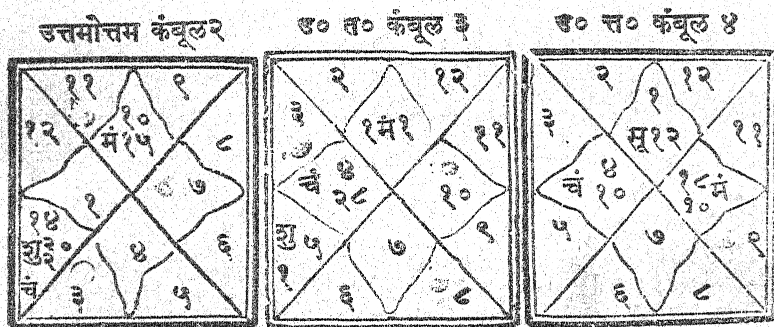
होताहै, कंबूल पारशीय पद कबूलका पर्य्याय है इसके श्रेष्ठ मध्य अधम भेदोंसे अनेक प्रकार हैं. उच्च स्वगृहसे उत्तमाधिकार स्वहद्दा द्रेष्काण नवांशकसे दूसरा मध्यम अधिकार शत्रु नीचगृहावस्थितिसे तीसरा अधमाधिकार जहां इन तीनोंमेंसे एकभी अधिकारी न हो तो यह चौथा समाधिकार है, इससेभी चन्द्रमा उत्तमाधिकारी हो और लग्नेश कार्येशमेंसे कोई प्रत्येक भेद करके चार अधिकारोंमें होनेसे चार भेद; ऐसेही चन्द्रमा मध्यमाधिकारी और अधम तथा समाधिकारी होनेमें उनके प्रत्येक अधिकारों करके ४ । ४ भेद होतेहैं. समस्त सोलह १६ भेद हुये; पुनः १६ भेद लग्नेशके १६ कार्य्येशके होनेसे सम्पूर्ण ३२ बत्तीस भेद होतेहैं, इनके नाम उत्तमोत्तम १ उत्तम मध्यम २ उत्तम सम ३ उत्तमाधम ४ मध्यमोत्तम ५ मध्यम मध्यम ६ मध्यमाधम ७ मध्यम सम ८ समोत्तम ९ सम मध्यम १० सम सम ११ समाधम १२ अधमोत्तम १३ अधममध्यम १४ अधम सम १५ अधमाधम १६ ये सोलह विकल्पोंके नाम हैं, लग्नेश कार्य्येशके प्रत्येक करके ३२ बत्तीस होते हैं, उनमें उत्तम सम और समोत्तम ये दोनों मध्यमहीके हैं. ४ । ४ भेद सभीके होते तो ३२ सेभी अधिक विकल्प होते थे किंतु यहां लग्नेश कार्य्येशकी उच्चादिकल्पना आवश्यक नहीं है. इत्थशालमात्र चाहिये, केवल चन्द्रमाके उच्चादिभेद आवश्यक होनेसे यहां १६ ही भेद होतेहैं लग्नेश कार्य्येशके पृथक् गणनासे ३२ बत्तीस होतेहैं ॥ २२॥

अनु०–यदीन्दुःस्वगृहोच्चस्थस्तादृशौलग्नकार्य्यपौ ॥
इत्थशालीकबूलंतदुत्तमोत्तममुच्यते ॥ २३ ॥



चन्द्रमा स्वराशि ४ में अथवा अपने उच्च राशि २ में ऐसे ही स्वराशि वा स्वोच्चराशिगत लग्नेश और कार्य्येशभी हो लग्नेश कार्य्येशका इत्थशाल हो चन्द्रमा दोनोंके इत्थशाली हो तो इसका नाम उत्तमोत्तम कम्बूल होताहै यहां ग्रन्थकर्त्ताने केवल उत्तमोत्तम उत्तमाधम दोनों आद्यन्तवालोंके उदाहरण

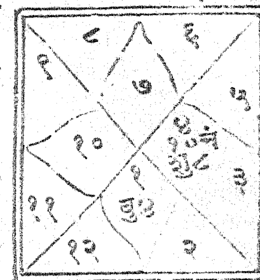
कहेहैं. पूरे ग्रन्थ बढजानेके भयसे न लिखे, अपनी बुद्धिसे समझलेना कहाहै इस भाषामें और ग्रन्थसे ग्रन्थकर्त्ता अभिप्राय पुष्ट करनेको मैं उदाहरण लिखताहूं कि, " मेषेरविःकुजेवापि वृषेकर्केथवाशशी ॥ तत्रेत्थशालात्कंबूलमुत्तमोतमका-र्य्यकृत ॥ १ ॥ " अर्थ–सन्तति होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें मेष लग्न लग्नेशमें २० अंशपर सन्तानप्रश्न होनेसे पंचमेश आवश्यक है सोही पंचमेश सूर्य लग्नमें मेषके १७ अंशपर होनेसे एकराशिस्थ दृष्टि और दीप्तांशाभ्यंतर होनेसे इत्थशाल हुआ. अब कम्बूल करनेवाला चन्द्रमा स्वगृही चतुर्थ स्थानमें कर्क १४ अं-शपर है लग्नेश कार्य्येश मं० शु० दोनहूंके साथ इत्थशाल करता है, यह उ-त्तमोत्तम कंबूल हुआ, कार्यभी उत्तमोत्तम करेगा, इस विषयके उदाहरण तीन



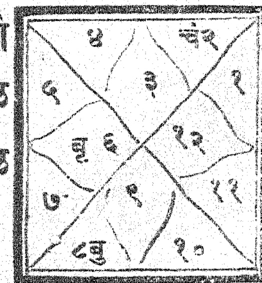
कुंडलियोंमें औरभी लिखेहैं और लग्नेश कार्य्येशमेंसे एक ग्रहके साथभी चन्द्रमा मुथशिल करे तो यहभी कंबूल होताहै ॥ २३ ॥

अनु०–स्वीयहद्दाद्रिकाणांकभागस्थेनेत्थशालतः ॥
मध्यमोत्तमकंबूलंहीनाधिकृतिनोत्तमम् ॥ २४ ॥

लग्नेश कार्य्येश अपने हद्दा स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशकमें परस्पर मुथशिल-कारी हो, और चन्द्रमा स्वराशि वा उच्चराशिमें बैठकर उनके साथ इत्थशाल करे तो उत्तम मध्यम संज्ञक कंबूलयोग होता है. यहां ग्रन्थकर्ताने श्लोकमें छन्दोभंगके भयसे मध्यमोत्तम लिखाहै. संज्ञा इसकी उत्तम मध्यम है इसका उदाहरण भाग्यवृद्धिमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र दशम स्थानमें कर्कका



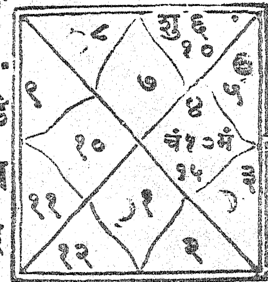
अपनी हद्दामें और भाग्यभावाधीश बुध सप्तमस्थानमें अपने हद्दामें १४ अंश पर है इनका परस्पर मुथशिलयोग है अब कंबूली चन्द्रमा स्वराशिगत कर्कके ८ अंशमें लग्नेश कार्य्येश दोनहूंके साथ मुथशिल करता है, योगपूर्ण हुआ. यह लग्नेश कार्य्येशके स्वहद्दामें और चन्द्रमाके स्वोच्च वा स्वराशिगत होनेसे उत्तम मध्यम कम्बूल हुआ. ऐसे लग्नेश कार्य्येशके स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशगत और चन्द्रमा स्वोच्च वा स्वराशिगत होनेमें उत्तम मध्यम कम्बूल होते हैं, जब लग्नेश कार्य्येश समगृहेश हद्दाद्रेष्काण नवांशमें स्थित होकर परस्पर मुथशिल करे और चन्द्रमा स्वगृह वा स्वोच्चगत होकर मुथशिली हो तो उत्तम सम कम्बूल होता है, इसका उदाहरण राज्यप्राप्तिप्रश्नमें मिथुनलग्न लग्नेश बुध समग्रह मंगलकी राशि ८ में और राज्यभावेश बृहस्पति समगृह बुधके ६ राशिमें है, कम्बूली चन्द्रमा अपने उच्चराशि वृषमें है स्वराशि कर्कमें होनेसेभी यही होताहै यहां अंशकन्यांश दीप्तांशोंक अंतर मुथशिल योग होनेके योग्य चाहिये. यह उत्तम सम कंबूल हुआ, राज्यप्राप्ति उत्तम होगी ॥ २४ ॥



अनुष्टु०-उत्तमाधमतानीचरिपुगेहांस्थितेनचेत् ॥
स्वद्रेष्काणांशगश्चंद्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥ २५ ॥

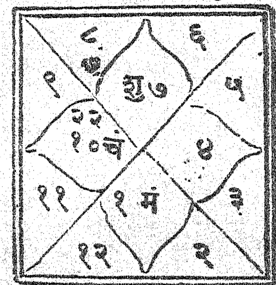
नीचराशि वा शत्रुराशिमें लग्नेश वा कार्य्येश परस्पर मुथशिली हों और चन्द्रमा अपने उच्च वा अपनी राशिमें बैठा दोनहूंके साथ इत्थशाल करे तो उत्तमाधम कम्बूल होता है, यह योग चन्द्रमाके उत्तमाधिकारी और लग्नेश कार्य्येशके निकृष्टाधिकारी होनेसे है, उदाहरण स्त्रीप्राप्तिप्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र कन्याके १० अंशपर नीच राशिगत और सप्तमेश मंगल नीच राशिगत कर्कके १५ अंशपर

उत्तमाधम कंबूल



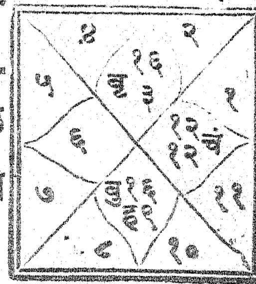
शुक्रके साथ इत्थशाली है. चन्द्रमा स्वराशि ४ गत कर्कके १० अंशपर बैठकर शु० मं० के साथ मुथाशला है. इस हेतु यह उत्तमाधम कम्बूल हुआ, स्त्री प्राप्ति थोडे प्रयाससे होगी यह फल है. यह पचीसवें श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ हुआ इसके उत्तरार्द्ध और छब्बीसवेंके पूर्वार्द्ध मध्यमोत्तम इसमें मध्यमोत्तमकंबूल इस प्रकारका है कि चन्द्रमा अपने द्रेष्काण वा अपने नवांशमें स्थित हो और लग्नेश कार्य्येश अपने २ स्थानोंमें बैठ परस्पर इत्थशाली मध्यमकंबूलके तरह यहभी है; उदाहरण स्त्रीप्राप्तिप्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र लग्नमें सप्तमेश मंगल मेषका और चन्द्रमा मकरराशिमें २२ अंश अपने नवांशपर है, शुक्र मंगलका परस्पर मुथशिल और चन्द्रमा दोनहूंसे मुथशिली हैं, यह मध्यमोत्तम कम्बूल हुआ; फल पूर्ववत् है ॥ २५ ॥

मध्यमोत्तम कंबूल



अनु०–मध्यमोत्तममेतच्चपूर्वस्मान्नविशिष्यते ॥
स्वहद्दादिपदस्थेनकंबूलंमध्यमध्यमम् ॥ २६ ॥

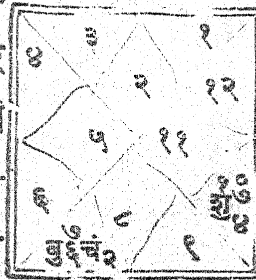
इस श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ पूर्व २५ श्लोकार्थके साथ सम्बंधवशसे लिख दिया है, उत्तरार्द्धसे मध्यम कम्बूल इस प्रकार है कि स्वहद्दा द्रेष्काण वा नवांशकमें स्थित लग्नेश वा कार्य्येश हो दोनहूं परस्पर मुथशिली हों और चंद्रमाभी स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशमें बैठकर इनके साथ मुथशिली हो तो मध्यममध्यमकम्बल होताहै, यहां तीनहूंकी स्वगृहस्वोच्चराशि छोडकर स्वहद्दादि मध्यमाधिकारोंकी आवश्यकता है. उदाहरण, स्त्रीलाभ प्रश्नमें मिथुन लग्न लग्नेश बुध धनके १८ अंशपर अपने हद्दामें सप्तमेश बृहस्पति



मिथुनके १६ अंशपर अपने हद्दामें और चंद्रमा मीनके दूसरे द्रेष्काणमें १२ अंशपर अपने द्वादशांशपर है. यहां तीनहूंकी परस्पर स्थान दृष्टि होनेसे एवं मुथशिल परस्पर होनेसे मध्य मध्यम कंबूल हुवा. स्त्री प्राप्ति अति यत्नसे होगी यह फल है ॥ २६ ॥

अनु०-मध्यमध्यमकंबूलंहीनाधिकृतखेटजम् ॥
मध्यमाधमकंबूलं नीचारिभगखेटजम् ॥ २७ ॥

स्वगृह स्वोच्च हद्दा द्रेष्काण नवांश और शत्रु नीचाधिकार रहित अर्थात् समगृह हद्दा द्रेष्काण नवांशमेंसे किसीमें लग्नेश कार्य्येश हों और चंद्रमा मध्यमाधिकार अर्थात् स्वनवांश वा स्वद्रेष्काणमें हो, परस्पर इत्थशाली हो तो मध्यमसम कंबूल होता है. उदाहरण, संतान प्रश्नमें वृष लग्न लग्नेश शुक्र मकरके



चार अंशपर सम बुधकी हद्दामें और पंचमेश बुध तुलाके पांच अंशपर सम हद्दामें और तुलाका चंद्रमा २ अंशपर है अपने द्रेष्काणमें है. यह मध्यमसम कंबूल हुवा. संतति प्राप्ति यत्नसे होगी. और लग्नेश कार्य्येश नीच वा शत्रुराशिमें परस्पर मुथशिल हों, चंद्रमा अपने द्रेष्काण वा नवांशकमें बैठकर दोनोंके साथ मुथशिली हों तो मध्यमाधम कंबूल होताहै, उदाहरण, मेष लग्न लग्नेश मंगल कर्कका नीच राशिमें और भाग्याधीश बृहस्पति



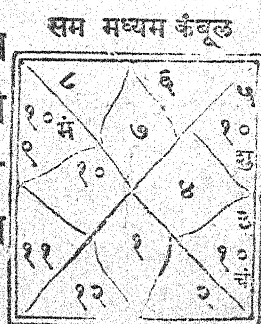
मकर अपने नीच राशिमें चन्द्रमा तुलाके पांच अंशपर है, मंगल बृहस्पतिके अंश मुथशिल योग्य लिखने चाहिये. जैसे यहां उदाहरण कुंडलीमें मंगल ९ अंश बृहस्पति १० अंश लिखाहै इनका परस्पर मुथशिल हुआ और चंद्रमा दोनहूंके साथ मुथशिली अपने त्रिभागमें है. यह अधमाधम कंबूल हुवा, भाग्य प्राप्ति अतिकष्टसे होगी ॥ २७ ॥

अनु०-इन्दुः पदोनः स्वर्क्षोच्चयुतेनाप्युत्तमंतुतत् ॥
स्वहद्दादिगतेनापिपूर्ववन्मध्यमुच्यते ॥ २८ ॥

चंद्रमा अधिकाररहित होनेसे पदोन होता है. यह दो प्रकारका है; पहिला समग्रहक हद्दा द्रेष्काण नवांशमें, और दूसरा सूक्ष्म है. कि समग्रह हद्दा द्रेष्काण नवांशके आदि वा अंतमें संधिगत होनेमें यह दो प्रकार पदोन कहाताहै, लग्नेश वा कार्य्येश अपनी राशि वा अपने उच्चराशिमें हो परस्पर इत्थशाली लग्नेश कार्य्येश हों और पदोन चंद्रमा इनसे मुथशिली हो तो समोत्तम कंबूल होता है, उदाहरण, धन लाभ प्रश्नमें तुला लग्न लग्नेश शुक्र लग्नमें अपने घरका धनेश मंगल अपने उच्चराशि मकरका और चंद्रमा मिथुनका समके हद्दामें है. यहां अंश कल्पना इत्थशाल योग्य करनी चाहिये. यह समोत्तम कंबूल योग हुवा. फल धनप्राप्ति उत्तम होगी और



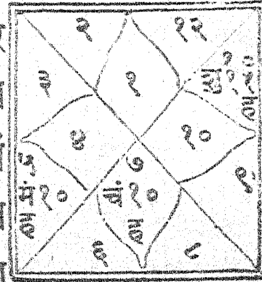
श्लोकोत्तरार्धसे दूसरा योग यह है कि चंद्रमा पूर्ववत् पदोन हो और लग्नेश कार्य्येशमेंसे एक अथवा दोनहूं अपने हद्दा द्रेष्काण नवांशकमें हो परस्पर लग्नेश कार्य्येशका इत्थशाल हो. चंद्रमा भी इत्थशाली हो तो यह सममध्यम कंबूल होता है, उदाहरण, धनलाभ प्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश यह शुक्र ग्यारहवां सिंहके दश अंशपर अपने हद्दामें और धनेश दश अंशपर तीसरा और चंद्रमा मिथुनके दश अंशपर समकी हद्दामें है, इनका परस्पर मुथशिल योग होनेसे यह सम-कंबूल हुवा, धनलाभ यत्नसे होगा यह इसका फल भया ॥ २८ ॥


सम मध्यम कंबूल

अनुष्टु०-पदोनेनापिमध्यंस्यादितियुक्तंप्रतीयते ॥
नीचारिस्थेनेत्थशालोऽधमं कंबूलमुच्यते ॥ २९ ॥

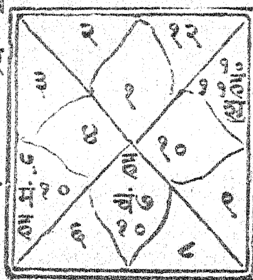
लग्नेश और कार्य्येश पादोन होकर परस्पर इत्थशाली हों और चन्द्रमाभी पदोन होकर लग्नेश और कार्य्येशके साथ इत्थशाली हो तो समसमाख्य मध्यम कंबूल प्रतीत होताहै "उदाहरण" धनलाभ प्रश्न मेषलग्न लग्नेश मंगल सिंहके दश अंशपर धनाधीशशुक्र कुंभके दशअंशपर और चन्द्रमा तुलाके दश अंशपर तीनहूं द्रेष्काणोंके संधियोंमें पूर्वोक्त दूसरा प्रकार सूक्ष्म पदोनता हुई इन तीनहूंका परस्पर मुथशिल है, यह समसमाख्य मध्यम कंबूल हुआ

समसमाख्य मध्यम कं०



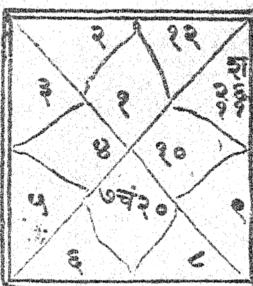
फल धनलाभ मध्यम अर्थात् न बहुत अधिक न अत्यंत अल्प होगा अथवा वही लग्नलग्नेश भौम सम और सूक्ष्मके २६ अंशपर धनेश शुक्रसम शनि हद्दामें २६ अंशमें और चंद्रमा सम बृहस्पतिके द्रेष्काणमें २० अंश पर हैं ये तीन परस्पर मुथशिली हैं यह भी प्रकारांतरसे

समासमाख्य कंबूल



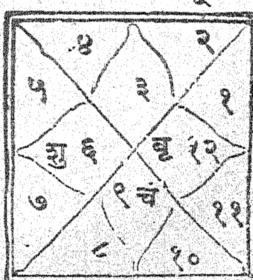
समसमाख्य मध्यम कंबूल है. फलभी पूर्वोक्तही होगा. यह श्लोक पूर्वार्द्धका है अब उत्तरार्धसे समाधम कंबूलका लक्षण कहते हैं कि लग्नेश वा कार्य्येश नीचराशि वा शत्रुराशिमें होकर परस्पर मुथशिली हों और पूर्ववत् पदोन चंद्रमा उनसे इत्थशाली हो तो समसमाख्य कंबूल होता है.

समसमाख्य मध्य कं०



उदाहरण, पुत्र प्रश्नमें मिथुनलग्न लग्नेश बुध नीचका मीनमें पुत्रभावेश शुक्र नीचका कन्यामें चंद्रमा बृहस्पतिके द्रेष्काणमें है, यहांभी अंश कल्पना इत्थशालयोग चाहिये. यह तीनोंके परस्पर मुथशिल होनेसे समाधम कंबूल हुआ फल संतानप्राप्ति अल्पयत्नसे होगी ॥ २९ ॥

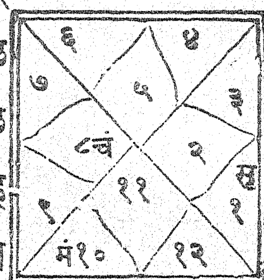
समाधमाख्य कंबूल



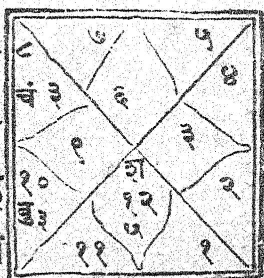
अनुष्टु०-नीचशत्रुभगश्चंद्रःस्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥
अधमोत्तमकंबूलंस्वहद्दादिगतेनचेत् ॥ ३० ॥

चंद्रमा नीच राशि वा शत्रु राशिमें हो और लग्नेश वा कार्य्येश अपनी राशि वा अपने उच्च राशिमें दोनहूं वा एक भी हो तो चंद्रमाके अधम और लग्नेश कार्य्येशके उत्तमाधिकार होनेसे यह अधमोत्तम कंबूल योग होता है. इसका फल पूर्वोक्त अधमोत्तम कंबूलके सदृश जानना उदाहरण; सुख प्राप्ति प्रश्नमें सिंह लग्न लग्नेश सूर्य अपने उच्च मेषका और चंद्रमा अपने नीच वृश्चिकका है. यहां अंश इत्थशाल योग्य रखने चाहिये जिनसे परस्पर तीनहूंका मुथशील होजाय. फल इसका सुख थोडा प्रयत्नसे प्राप्त होगा यह श्लोकके तीन चरणोंका अर्थ हुआ. अब चौथे चरण और दूसरे श्लोक पूर्वार्द्धके अर्थसे अधममध्यम कंबूल इस प्रकारका है कि जब चंद्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो और लग्नेश वा कार्य्येश वा दोऊ अपने हद्दा द्रेष्काण नवांशकमेंसे किसीमें हों परस्पर तीनहूं इत्थशाली हों तो चंद्रमाके निकृष्टाधिकार और लग्नेश कार्य्येशके मध्यमाधिकारी होनेसे यह मध्यममध्य कंबूल होताहै. उदाहरण पुत्रप्राप्ति प्रश्नमें कन्यालग्न लग्नेश बुध मकरके तीन अंशपर अपनी हद्दामें पुत्रभावेश शनि मीनके ५ अंश अपने द्रेष्काणमें और चंद्रमा वृश्चिकके तीन अंशपर है. इनका परस्पर मुथशिल है यह अधममध्यम कंबूल हुवा. फल इसका संततिप्राप्ति अति कष्टसे होगी. इसीमें अधमसम कंबूली है कि चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशम हो और लग्नेश कार्य्येश दोनहूं वा एक पदोन हो (पदोनका अर्थ पूर्वोक्त जानना तो अधमसम कंबूल होता है. उदाहरण, राज्यप्राप्ति

अधमोत्तम क०



मध्यममध्य कं०

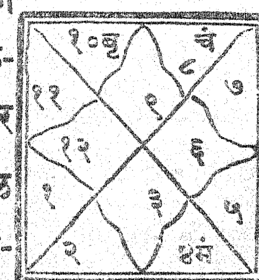




प्रश्नमें वृष लग्न लग्नेश शुक्र सिंहके ६ अंशमें सूर्य्य एक राशिमें है, और राज्य भावेशशनि वृषके १० अंशमें और चंद्रमा नीच वृश्चिकके ३ अंशमें है सबकी परस्पर दृष्टि होनेसे इत्थशालभी है, यह अधमसम कम्बूल है, फल राज्यप्राप्ति कठिन उपायसे होगी॥ ३०॥

अनु०-नीचारिभस्थखेटेननीचारिभगतः शशी ॥
इत्थशालीकंबूलंतदधमाधममुच्यते ॥ ३१ ॥

अधमाधम कम्बूलका लक्षण कहते हैं कि चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो, और लग्नेश कार्य्येशभी नीच वा शत्रुराशियोंमें हो तो यह अधमाधम कम्बूल होता है, उदाहरण-पुत्रलाभ प्रश्नमें धन लग्न लग्नेश बृहस्पति अपने नीच मकर राशिमें पुत्रभावेश मंगल अपने नीच कर्कका और चंद्रमाभी अपने नीच वृश्चिकका है, यहां अंश कल्पना इत्थशाल योग्य चाहिये यहां इन तीनहूंके परस्पर मुथशिल हैं, अधमाधिकार होनेसे यह अधमाधम कंबूल हुवा पुत्रलाभ नहीं होगा यह फल है. ऐसेही इनके शत्रुराशिगत होनेमें भी निकृष्टाधिकारसे यह योग है ॥ ३१ ॥



अनुष्टु०-मेषेरविः कुजेवापिवृषेकर्केथवाशशी ॥
तत्रेत्थशालात्कंबूलमुत्तमोत्तमकार्य्यकृत् ॥ ३२ ॥

प्रथम भेद उत्तमोत्तम और अंतिम भेद अधमाधम उपलक्षणार्थ पुनः प्रकारांतर सुगमार्थ अन्योक्तिसे कहते हैं कि किसी लग्नसे मेषका सूर्य्य अथवा मंगल हो और चंद्रमा उच्च वृषका वा स्वराशि कर्कका हो इनकी परस्पर दृष्टि और दीप्तांश इससे इत्थशाल हो तो यह उत्तमोत्तम कंबूल कार्य्य कर्त्ता होताहै यह हेतु लग्नेश कार्य्येश और चंद्रमाके उत्तमाधिकार होनेका है ॥ ३२ ॥

अनुष्टु०—वृश्चिकस्थः शशीभौमः कर्कैतन्नेत्थशालतः ॥
अधमाधमकंबूलंकार्य्यविध्वंसदुःखदम् ॥ ३२ ॥

जो चंद्रमा वृश्चिकका और मंगल कर्कका हो परस्पर इत्थशाली हो तो अधमाधम कंबूल कार्यनाशक होता है, इसका हेतु इनके अधमाधिकारी होनेसे है ॥ ३२ ॥

अनुष्टु०—एवंपूर्वोक्तभेदानामुदाहरणयोजना ॥
उक्तलक्षणसंबंधादूहनीयाविचक्षणैः ॥ ३४ ॥

ये भेद आदि अंतमें मुख्य हैं, इनके बीचके चौदह भेद उक्त लक्षण संबंधसे जानने एवं प्रकार सोलह भेद जो प्रकट हैं, इनके तो पृथक् २ उदाहरण कहदिये हैं, उपरांत इनके बहुत भेद होतेहैं बुद्धिमानोंने अपने बुद्धिबलसे उक्त लक्षणोंके आधारसे जानलेने ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०—मेषस्थेब्जेशनीत्यादि दृष्टांतौ मंदशीघ्रयोः ॥
एकर्क्षांशस्थितावित्थशालादीनपरेजगुः ॥ ३५ ॥

प्रकारांतरसे एक राशिस्थ शीघ्रमंद ग्रहोंके मुथशिल कहते हैं, कविता, "मेषस्थेब्जे शनिना कर्कस्थे भूभुवाप्रिया । मकरस्थेन गुरुणा सहमनिस्थज्ञं न शुभं च ॥ १ ॥ " यह आर्य्याछंदका भेद समरसिंहकृत है । जिसका प्रतीक मेषस्थे ब्जेशनीत्यादि. आचार्य्यने कहाहै, अर्थ इसका यह है कि, मेषके चंद्रमा और शनि परस्पर अंशोंसे मुथशिल हो तो मध्यमाधम कंबूल अशुभ फल कर्त्ता होता है यहां चंद्रमा मेषमें स्वगृहोच्चाधिकारी भाव है, परंतु स्वीय नवांशमें है और शनि नीचका हुवा ऐसे इस योगकी प्राप्ति हुई १ और चन्द्रमा मंगल कर्कमें इत्थशाली हो तो एक स्वगृह एक नीचका होनेमें उत्तमाधम कंबूल होताहै २ तथा चंद्रमा शुक्र कन्यामें परस्पर इत्थशाली हो तो शुक्र नीचका और चंद्रमा कन्यामें अपने अंशपर होनेसे यह मध्यमाधमकंबूल होताहै ३ तथ चन्द्रमा बृहस्पति मकरमें परस्पर मुथशिली हों तो बृहस्पति नीचका चन्द्रमा स्वनवांशक होनेसे मध्यमाधमकंबूल होता ४ तथा चन्द्रमा बुध मीनमें इत्थशाली हो तो बुध नीचका और चन्द्रमा स्वनवांशक होनेसे मध्यम मध्यम कंबूल होता है, ५ ये

पाचों उदाहरण अशुभफल देनेवाले होते हैं, आचार्य्यने मेषस्थेऽब्जेत्यादि समरसिंहवाक्यके दृष्टांतसे शीघ्र मंदगतिग्रहोंके एकराशिस्थ होनेमें कहा इत्यादि भेद औरभी होते हैं यह अभिप्राय प्रकट कियाहै ॥ ३५ ॥

अनु०—तदुयुक्तंनीचगस्थनीचेनारिपुणारिपोः ॥
इत्थशालकार्य्यनाशीत्युक्तंतत्रयतः स्फुटम् ॥ ३६ ॥

लग्नेश कार्य्येश और चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो तो इत्थशाल कार्य्यनाशक कंबूल होता है यह पूर्वोक्तवाक्य और आचार्यतरोक्ति है और यहां कार्य्यनाशक एक राशिस्थ इत्थशाल भेदभी कहा है तो इसमें अतिव्याप्ति होती है. इसके शंकानिवृत्त्यर्थ आचार्य्यकृत यह श्लोक है, प्रयोजन है कि, नीचराशि गतग्रह नीचस्थ ग्रहसे और शत्रुराशिस्थ ग्रहसे इत्थशाली हो और चन्द्रमा नीचशत्रुगत इत्थशाली हो तो यह अन्यत्र तो संभव है परंतु एकराशिस्थ जो होकर अशुभफली कंबूल भेद कहेहैं उनमें अयुक्त हैं क्योंकि नीचराशि दो ग्रहकी एक नहीं होती तथा शत्रुराशि दोकी एकभी यहां असंभव है, जहां शत्रुता होगी तहां दृष्टि न होगी दृष्टि विना इत्थशालही नहीं होताहै, यद्वा लग्नेश कार्य्येशकी परस्पर दृष्टि न होनेमें बीचवाले किसी ग्रहके दोनहूंके समीपांशवर्ती होनेसे इत्थशाल संभावना मानी जाय तो इस प्रकार होनेमें नक्तयोग ही होगया, यद्वा दोनहूंके बीच तीसरा एकसे तेज लेकर दूसरेको देताहै, यह मानाजाय तो यमया योग होजाताहै, ऐसी ही शनि मंगलसे मणऊ योगभी संभव है तो प्रथम भिन्न राशिगत चतुर्थ सप्तम दृष्ट्यादि स्पष्टही कहा है, अब मेषस्थेऽब्जेत्यादि दृष्टान्तको अंगीकार नहीं करते तो उक्तनक्तादि योगोंमें व्यत्यास पडताहै तस्मात् सभी योगोंमें मुथशिल विचार भिन्न राशि वा एक राशिस्थ ग्रहोंका होताही है यह सिद्धांत हुआ ॥ ३६ ॥

अनुष्टु०—लग्नकार्य्यपयोरित्थशालेनैकोस्तिनीचगः ॥
स्वर्क्षादिपदहीनोन्योऽत्रेंदुः कंबूलयोगकृत् ॥ ३७ ॥

कंबूल योगका भेद और प्रकारभी है कि प्रथम लग्नेश कार्य्येशमेंसे एकभी अपने अधिकारमें होकर मुथशिली होनेसे सम कहा, जो लग्नाधीश वा कार्य्येश

एक नीच राशिमें हो और दूसरा स्वर्क्षादि पदहीन अर्थात् समद्रेष्काणादिकोंमें हो और चन्द्रमाभी पदहीन हो इन तीनहूंका परस्पर मुथशिल हो तोभी कंबूल योग होता है ॥ ३७ ॥

अनुष्टु०-तत्रकार्य्याल्पताज्ञेयायथाजात्यन्यमर्थयन् ॥
अन्यजातिपुमानर्थंतथैतत्कवयोविदुः ॥ ३८ ॥

इस कबूल भेदका फल दृष्टांत सहित कहते हैं कि, जैसे एक जाति दूसरे जातिवालेसे याचना करके स्वल्पलाभी होता है, तैसेही यह कंबूलभी स्वल्प-लाभ देता है, प्रकट यह है जो यजमान ब्राह्मणको आपही बुलायकर देगा तो उसकी इच्छानुकूल देगा जो ब्राह्मण आपही जायकर मांगेगा तो यजमान स्वल्पही देगा, ऐसा फल इस कंबूलका कविजन कहते हैं ॥ ३८ ॥

अनुष्टु०-यस्याधिकारः स्वर्क्षादिशुभोवाप्यशुभोपिवा ॥
केनाप्यदृश्यमूर्तिश्चसशून्याध्वगइष्यते ॥ ३९ ॥

अब गैरिकंबूलके लक्षणके लिये प्रथम शून्य मार्गगत ग्रह लक्षण कहते हैं कि, जो ग्रह स्वगृह वा स्वोच्च वा स्वद्रेष्काण स्वनवांशमें कोई भी शुभाधिकारी नहीं है तथा नीच शत्रु राश्यादि अशुभाधिकारीभी नहीं है, तथा (पदहीन) समद्रेष्काण हद्दा नवांशाधिकारीभी नहीं है, और उसपर पाप वा शुभ किसी ग्रहकी दृष्टि नहीं हो तो वह ग्रह शून्याध्वग कहाता है ॥ ३९ ॥

अनुष्टु०-लग्नकार्य्येशयोरित्थशालेशून्याध्वगः शशी ॥ उच्चादिपद-शून्यत्वान्नेत्थशालोऽस्यकेनचित् ॥ ४० ॥ यद्यन्यर्क्षप्रविश्यैषस्वर्क्षोच्च-स्थेत्थशालवान् ॥ गैरिकंबूलमेतत्तुपदोने नाशुभंस्मृतम् ॥ ४१ ॥

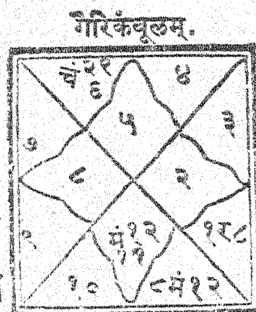
चन्द्रमा शून्य मार्ग हो और लग्नेश कार्य्येश एक वा दोनहूं ऐसेही शून्या-ध्वग हो चन्द्रमा इनसे इत्थशाली तो न हो किंतु चन्द्रमा राश्यंतर अर्थात् दूसरी ऐसी राशिमें प्राप्त होनेवाला हो कि वह राशि जिसका स्वगृह वा जिसका उच्च हो वह ग्रह उसीमें बैठा हो अंशोंमें ऐसा हो कि चंद्रमा प्रवेश करतेही उस ग्रहसे इत्थशाली होजाय, इस प्रकार होनेमें गैरिकंबूल योग होताहै, यहभी कंबूल भेदके तुल्य फल देताहै, दूसरे जो अन्य राशिस्थ

शून्याध्वग चंद्रमा उसी राशिस्थित शून्याध्वग ग्रहसे इत्थशाली हो तो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल देताहै, यह गैरिकम्बूल पारसीय पद (गैरकबूल) अंगीकार न करनेका अर्थ कबूलका विपरीत अशुभही है यहां जो कम्बूल भेदके तुल्य फलदेना एक पक्षका है इसमें राश्यंत राश्यादिवर्तमान इत्थशाल भाव प्राप्त होनेसे तद्वत् हुवा, अगैरिकम्बूल गैरकम्बूलही है, यह ताजिकवेत्ता आचार्य्योंका सम्मत है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अनुष्टु०—लप्स्येसुखमितिप्रश्ने सिंहलग्नेरविः क्रिये ॥ अष्टांशैः सुखपःकुंभेभौमोंशैरविभिस्तयोः ॥ ४२ ॥ इत्थशालोस्तितत्रेंदुःकन्यायांचरमेंशके ॥ स्वर्क्षादिपदहीनस्यनेत्थशालोस्यकेनचित् ॥ ४३ ॥ स्वस्वोच्चगेनशनिनाऽन्यर्क्षस्थेनेत्थशालकृत् ॥ गैरिकंबूलमन्येनसहायाल्लाभदायकम् ॥ ४४ ॥

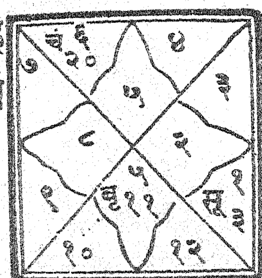
गैरकम्बूलका उदाहरण, सुखप्राप्ति प्रश्नमें सिंह लग्न लग्नेश सूर्य्य मेषके आठ अंशपर नवम स्थानमें, कार्य्येश मंगल सप्तम कुम्भके १२ अंशपर है, इनका परस्पर मुथशिल है, अब इस योगमें चन्द्रमा द्वितीय भावमें, कन्याके अन्त्य २९ अंशमें पूर्वोक्त प्रकारसे शून्यमार्ग है, इसका लग्नेश गैरकम्बूल,

गैरिकंबूलम्.



वा कार्य्येशसे मुथशिल नहीं है, परन्तु चन्द्रमा तुलाका होनेवाला है, यह राशि शनिका उच्च है शनि यहां तुलाके इत्थशाल योग्य अंशपर है कि, लग्नेश कार्य्येश सू० मं० के साथ इत्थशाली हो सकताहै, अब चन्द्रमा तुलाके होनेपर शनिके साथ इत्थशाली होना चाहताहै ऐसा होनेमें शनिका दोनहूंके साथ इत्थशालीका प्रयोजन चन्द्रमाने ग्रहण किया, यह गैरिकम्बूल योग चन्द्रमाके प्रभावसे शनिने किया अर्थात् सुखप्राप्ति फल तीसरे मनुष्यकी सहायतासे होगा, यह प्रथम प्रकार हुवा पुनः लग्न और सभी यथावत् हैं, और तुलामें जैसा शनि पूर्व कहा था वैसा बुधादिकोंही ग्रह शून्या-

गैरिकं.

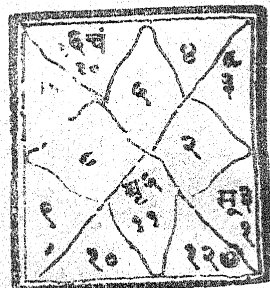


श्वग हो तो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल देताहै अर्थात् सुखप्राप्ति नहीं होगी इस उदाहरणमें कुम्भके शनिके स्थानमें बुध जानना ॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥

अनुष्टुप्–शून्येध्वनींदुरुभयोनेत्थशालोनवायुतिः ॥
खल्लासरो न शुभदः कंबूलफलनाशनः ॥ ४५ ॥

चन्द्रमा शून्य मार्गमें हो और लग्नेश कार्य्येशके साथ इत्थशाली न हो अथवा उनसे युक्तभी न हो तो यह खल्लासर कंबूलके फलका नाशक है, यद्वा अशुभ फल देता है, खल्लासर पारसीय खल्लासर शब्द बलवाची है, "खल्लासरयोगोदाहरण" सिंह लग्न लग्नेश सूर्य्य मेषके तीन अंशपर, पुत्र भावेश बृहस्पति कुंभके पांच अंशपर, परस्पर इनका मुथशिल है, चन्द्रमा कन्याके२० अंशमें है यह किसीके साथ इत्थशाल नहीं करता लग्नेश कार्य्येशसे युक्तभी नहीं है यह खल्लासर योग पुत्रप्राप्तिमें बाधा कर करेगा यह इसका फल है ॥ ४५ ॥



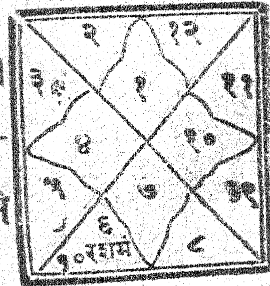
रथोद्ध०–अस्तनीचरिपुवक्रहीनभादुर्बलोमुथशिलंकरोतिचेत्॥
नेतुमेषनविभुर्यतोमहोंतेमुखेपिनसकार्य्यसाधकः ॥ ४६ ॥

रद्दयोगका लक्षण कहते हैं–रद्द शब्द पारसीय (निकम्मा) निर्बलका पर्याय है जो ग्रह अस्त वा नीच राशिगत वा शत्रुराशिस्थ वा वक्रगति वा (हीनभा) अस्त होनेवाला समीपही उदय हुआ अर्थात् बाल वा वृद्ध हो और उपलक्षणसे (खलस्थान) तत्काल शत्रुस्थान वा पापयुक्त वा क्रूराक्रांत हो यह दुर्बल कहाता है, ऐसा निस्तेज ग्रह जब किसीके साथ इत्थशाल करे तो आदि वा अन्तमें इत्थशालका तद्भावजन्यफल नहीं दे सकता, क्योंकि यह निर्बल होनेसे न किसीका तेज आप ले सकता न अपना तेज किसीको दे सकता, इस योगका नाम रद्द योग है ॥ ४६ ॥

उपजाति०–केन्द्रस्थआपोक्लिमगंयुनक्तिभूत्वादितोनश्यतिकार्यमंते॥ आपोक्लिमस्थोयदिकेंद्रगतंविनश्यपूर्वंभवतीहपश्चात् ॥ ४७ ॥

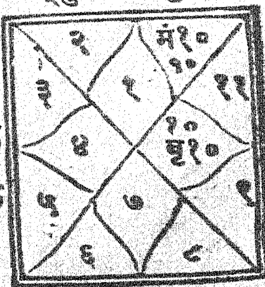
रद्दयोगका लक्षण फलसहित प्रकारांतरसे यहभी है, कि जब पूर्वोक्त दुर्बल ग्रहके साथ इत्थशाल कर्त्ता कार्य्येश ग्रह केंद्रमें हो और लग्नेश दुर्बल कार्य्येशसे आपोक्लिममें हो तो यह समस्त फल सर्वदा रद्दही न होगा किन्तु प्रथम वह कार्य्य सिद्ध होकर अन्तमें नष्ट हो जायगा यहां आपोक्लिम कहनेसे तीसरा और नवमस्थान लिये जाते हैं ६ । १२ स्थानोंमें दृष्टि न होनेसे इत्थशाल योगकी सम्भावनाही नहीं जो कार्य्येश दुर्बल होकर आपोक्लिम स्थानमें बैठा केन्द्रस्थानगत लग्नेशके साथ मुथशिल कर्त्ता हो तो उक्त भावोत्थ कार्य्यको प्रथम नष्ट करके पश्चात् उस कार्य्यकी सिद्धि करदेगा 'रद्दयोगका प्रथमोदाहरण' मेषलग्न लग्नेश मंगल भाग्येश बृहस्पति और सूर्य शनि छठे स्थानमें कन्याके १० । १० अंशमें है यहां लग्नेश कार्य्येश अस्तंगत और पापयुक्त तथा छठे स्थानमें होनेसे

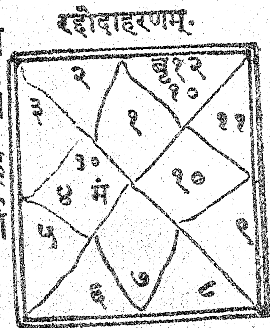
प्राक्शुभपश्चादशुभरद्द-



यह रद्द योग हुआ, फल भाग्यप्रश्न था भाग्यनाश होगा यद्वा 'दूसरा उदाहरण' यही मेषलग्न लग्नेश बारहवां मंगल दुर्बल और भाग्येश बृहस्पति मकर नीचका दश अंशमें है यहां शीघ्र मंगल आपोक्लिममें बैठकर केन्द्रस्थ मन्दगति गुरुके साथ इत्थशाली होनेसे यह रद्दयोग प्रथम अशुभ पश्चात् शुभ फल कर्ता है यद्वा तीसरा उदाहरण शीघ्र ग्रह

प्राक्शुभपश्चाच्छुभरद्द-

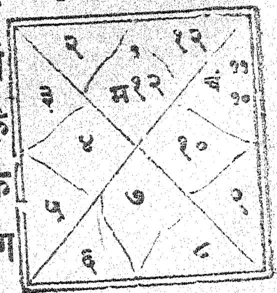




निर्बली केन्द्रमें कर्कके दश अंशपर नीचका मंगल और कार्य्येश बृहस्पति आपोक्लिम बारहवें स्थानमें है मंगल बृहस्पतिसे इत्थशाली है यह रद्दयोग पूर्व शुभ फल पश्चात् अशुभ फल कर्ता है ॥ ४७ ॥

उपजाति–मंदःस्वभोच्चादिपदेस्थितश्चेत्पदोनशीघ्रेणकृतेत्थशालः ॥
तत्रापिकार्य्यंभवतीतिवाच्यंवक्रादिनिर्वीर्यपदेनचेत्स्यात् ॥ ४८ ॥

दुष्फाली कुत्थयोगका लक्षण कहते हैं–जब मन्दगति ग्रह अपनी नीच राशि वा उच्च वा स्वद्रेष्काण स्वहदा नवांशकमें हो और शीघ्रग्रह पदोन अर्थात् स्वभोच्चादि शुभाधिकार रहित इत्थशाली हो तोभी कार्य्यसिद्धि कठिनसे होजायगी कहना किंतु शीघ्रग्रह अस्त नीच शत्रु वक्र और बाल-वृद्ध निर्बल स्थानस्थित होकर इत्थशाली हो तो अनिष्ट फल कहना यह दुष्फाली कुत्थयोग है, पारसीय दुष्फालीशब्द दुःसाध्य और कुत्थशब्द शुभवाची है, दुष्फालीकुत्थ दुःसाध्य शुभवाचक है, उदाहरण, सौख्य प्रश्नमें मेषलग्न लग्नेश मंगल लग्नमें मेषके बारह अंशपर सुखभावेश ग्यारहवाँ कुम्भके दश अंशपर चन्द्रमा इत्थशाली है, मंगल पदयुक्त और चन्द्रमा पदहीन है, ऐसा दुष्फाली कुत्थयोग हुआ, सुखप्राप्ति यत्नसे करता है ॥ ४८ ॥

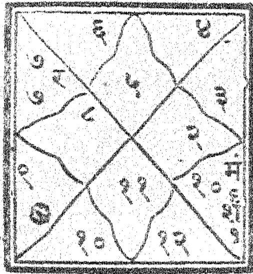


इंद्रव०–वीर्य्योनितौकार्य्यविलग्ननाथौस्वर्क्षादिगैनान्यतरोयुनक्ति ॥
अन्यौयदाद्वौबलिनौतदान्यसाहाय्यतःकार्यमुशंतिसंतः ॥ ४९ ॥

दुत्थोत्थदिवीरयोगका लक्षण कहते हैं–लग्नेश कार्य्येश दोनहूं बल-हीन (अस्त नीच रिपुवक्रहीनभा) इत्यादिसे हों परस्पर इत्थशालीभी हों और इनमेंसे शीघ्रग्रह अपनेसे मन्दगतिवाले किसी अन्य तीसरे स्वर्क्षादि बलयुक्त ग्रहसे युक्तहो, विशेषतः मुथशिलीभी हो तो अन्यद्वारा कार्य-

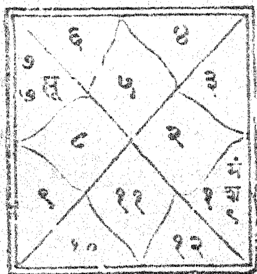
सिद्धि होगी, अथवा अन्य कोई स्वर्क्षादि पदयुक्त हो ग्रह शीघ्रगति हों और लग्नेश वा कार्य्येश हीनबलीसे युक्तहो वा मुथशिल करें तोभी किसी औरकी सहायतासे कार्य्य सिद्ध होगा. यह सज्जनोक्ति है, " उदाहरण " स्त्रीलाभ प्रश्नमें सिंहलग्न लग्नेश सूर्य्य नीचराशि तुलामें, कार्य्येश सप्तम भावका स्वामी शनि नीच राशि मेषका है, अथवा राश्यंतरमें वक्री है

दुत्थोत्थदिवीरयोग.



तात्पर्य्य यह है कि दोनहूं निर्बल हैं इनमेंसे शनि मंगलसे युक्त है यह स्वगृही होनेसे बलवान् है, लग्नेश कार्य्येशके निर्बल होनेसे कार्य्यसिद्धि नहीं होनीथी. परंतु बलवान् मंगल तीसरे ग्रहसेभी युक्त होनेसे दूसरेकी सहायतासे लाभप्राप्ति होगी कहना १ अथवा दो शीघ्र ग्रह सूर्य्य मंगल मेषमें

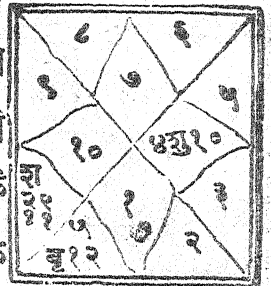
दुत्थोत्थदवीरयोगः ।



अपने २ उच्च स्वगृह होनेसे बलवान् हुये शनिके साथ दोनहूंके इत्थशाल करनेसे योग होजाताहै पूर्वोक्तही फल देताहै. यहां अंश कल्पना मुथशिल योग्य करनी. इस योगका नाम दुत्थोत्थदिवीर. पारसीय शब्द है ॥ ४९ ॥

अनु०–बलीराश्यंतगोन्यर्क्षगामीदीप्तांशकैर्ग्रहः ॥
दत्तेन्यस्मैकार्यकरस्तंबीरोलग्नकार्य्ययोः ॥ ५० ॥

तंबीरयोगके लक्षण कहते हैं. जब लग्नेश कार्य्येश किसी स्थानोंमें हों इनका परस्पर इत्थशाल न हो. परंतु इनमेंसे कोई राश्यंतगत हो और जिस राशिको गंतव्य है उसमेंसे कोई अन्यग्रह बलवान् और इत्थशाल संबंधी अंशोंपर हो. वस्तुतः इसके साथ वह भविष्य इत्थशालकारी हो तो वह तीसरेको तेज देताहै यह तंबीरयोग हुवा. फल इसका कार्य्यसाधक है.



"उदाहरण" सुखप्राप्ति प्रश्नमें तुला लग्न लग्नेश शुक्र कर्कके दश अंशमें सुखभावेश शनि कुम्भके उनतीस अंशपर है. इनका इत्थशाल नहीं है, परंतु बृहस्पति मीनके पांच अंशपर है इसको शीघ्रगति शनि कुम्भके २९ अंशपर मीनको गंतव्य होनेसे और बृहस्पतिके साथ भविष्य मुथशिल करनेसे अपना तेज बृहस्पतिको देताहै यहभी कार्य्य साधक योग है. सुखप्राप्ति करेगा ॥ ५० ॥

उपजा०—लग्नेऽथकेन्द्रेनिकटेपिवास्यविलग्नदर्शीस्वगृहोस्वदृक्के ॥ मुशल्लहेस्वेनिजहद्दगोवाबलीग्रहोमन्दगतिस्त्वशीघ्रः ॥ ५१ ॥

पन्द्रहवां कुत्थयोगका लक्षण, कुत्थ पारसीय शब्दसे बलीग्रह लियाजाता है वह बहुत प्रकारका है. इस कारण प्रथम बलवत्ता कहते हैं कि और स्थानोंसे लग्नगत ग्रह बली तदभावमें अन्य केंद्रगत ४ । ७ । १० बली होता है तथापि लग्नकी अपेक्षा न्यून ही होता है इनसेभी पणफर आपोक्लिम २।५ ८। ११। ३।६।९।१२ में न्यून होता है. दुरफमें तो ६।८।१२ स्थानोंमें निर्बली कह दिया है. केंद्र पणफर आपोक्लिममें क्रमसे बल न्यून होता है और लग्नदर्शी तथा स्वोच्च स्वद्रेष्काण स्वनवांश स्वहद्दामें ग्रह बली होता है तथा मध्यगति. (नंदाक्षा भुजगारवेः) इत्यादि पूर्वोक्त मध्यगतिपर जो ग्रह हो वह बलवान् और अल्पगति उससे न्यूनबली विशेष गति अधिक बली होता है. इसमें युक्ति यह है कि लग्नगत ग्रह पूर्ण (६०) बली, पणफरमें आधा (३०) आपोक्लिममें चरण (१५) वीर्य्य होता है, संधिमें अनुपात करना तब लग्नदर्शी ग्रह "अपास्य पश्यन्निजदृश्यखेटेत्यादि" से पूर्ण पापदृष्टिसे पादोन इत्यादि. तथा स्वगृही ग्रह पूर्णवीर्य्य स्वगृहसे सप्तममें निर्वीर्य और अंतरमें त्रैराशिक विधिसे बल लेना. दुरफमें स्वगृही ७ भाव बल पावै इत्यादि अंतरका त्रैराशिक उच्चबल विधिवत् करना. सूर्य्य चंद्रमा के एक गृह होनेसे

यही होगयीं भौमादियोंके दोराशि गृह होनेसे अपने गृहसे सप्तम गृह शोधके ६ से न्यून हो तो वही रखना, ६ से अधिक हो तो बारहमें शुद्ध करलेना उपरांत उसके अंशादिमें ३० का भाग लेना लब्धिकलादि फल होगा, यह संप्रदाय युक्त है, यहभी स्मरण चाहिये कि स्वगृहारंभमें पूर्ण बल (६०) और उसके सप्तम भावारंभमें ० अंतरमें अनुपात जैसे १ राशि षट्यंश १८० से पूर्ण ६० बल मिलता है तो अमुक इष्टराशिसे कितना मिलेगा, यहां ६० से अपवर्त्तन करदिया तो गुणक १ भाजक ३० हुआ इत्यादि १ उच्चबल पूर्वोक्त ही है २ द्रेष्काणारंभमें ५ बल और समाप्तिमें पूर्ण १० और समान होही गया तो ० शून्यबल होता है. जैसे द्रेष्काण भुक्त भोग्यांशोंका अंतर अंशादि बारहसे गुनकर बल मिलता है पांच अंशसे ६० है तो शेषसे कितना इत्यादि ३ ऐसाही मुशल्लहमें और हद्दामें भी जानना. गतिबलके निमित्त सूर्य चन्द्रमा नित्य शीघ्र होनेसे गति बल तुल्य है, भौमादियों के ५ होताहै इति ॥ ५१ ॥

उ०जा०–कृतोदयोमार्गगतिःशुभेनयुतेक्षितःक्रूरखगस्यदृष्ट्या ॥
क्षुताख्ययानाधिगतोनयुक्तःक्रूरेणसायंचसितेंदुभौमाः ॥ ५२ ॥

और प्रकारसे बलवत्ता कहते हैं, कि जो ग्रह उदय हुआ है जो मार्ग गति अर्थात् वक्र होकर मार्गी हुआहै जो शुभ ग्रहयुक्त वा वीक्षित है और जिसपर क्रूर ग्रहकी क्षुत १० । ४ । ७ । १ दृष्टि है तथा जो क्रूरयुक्त नहीं है, वह बलवान् होताहै, समय बलके निमित्त ' सायंचसितेंदुभौमा ' इस पदका अर्थ आगश्लोकमें कहेंगे. यहां बलगणनेकी विधि यह है कि उदय बलके वास्ते उदयदिनमें पूर्ण ६० बल अस्तदिनमें ० शून्यबल होताहै अंतर दिनको अनुपात करना. जैसे उदय दिनसे अस्तदिन पर्यंत जितने दिन हैं उनका आधा करके जो उसमें ६० बल होता है तो इष्ट दिनोंमें कितना होगा यह त्रैराशिक विधि है. १ मार्गगति ग्रहका बल पूर्ववत् ही जानना, २ शुभ युक्त बलके लिये उसके समानलिप्ता पर्यंत हो तो ६० बल. न्यूनाधिक हो तो दोनहूंका अंतर करना वह अंश ३० से न्यून होगा पुनः वे अंशादि दुगुणे करनेसे बल होताहै ३ शुभ दृष्टि बल दृश्य ग्रहकी

पूर्वोक्त प्रकार दृष्टिमें उसकी चौथाई घटायके दृष्टिबल होता है, ४ ऐसेही औरभी जानने ॥ ५२ ॥ ॥

उ०जा०—यदोदयंतेपररात्रिभागेजीवार्कजावह्निनराःसवीर्याः ॥
अन्येनिशिनिस्यनचैकभागे स्थिताःस्थिरर्क्षेचबलेनयुक्ताः॥ ५३ ॥

शुक्र चंद्रमा मंगल सायंकालमें उदय हो तथा बृहस्पति शनि अर्द्ध रात्रिसे उपरांत, जिस समयमें उदय हों तथा पुरुष ग्रह सूर्य्य भौम बृहस्पति, दिनमें स्त्री ग्रह चंद्रमा बुध शुक्र शनि रात्रिमें तथा स्थिर राशि २ । ५ । ८ । ११ में जो ग्रह हो, इतने सभी बलवान् होतेहैं, बलानयन प्रकार है कि सायं-समयोदयी शुक्र तो होताही नहीं चन्द्र भौमका व सूर्य्य स्पष्टका अंतर करके उसमें छः घटाय देना, शेषके अंश करके तीनसे भागलेना लाभ-बल होगा यहां भी पूर्ण बल साठही है उत्पत्ति उच्चबल तुल्य, है शुक्रके व सूर्यके अंतर करके छःसे गुनदेना पांचसे भागदेना लाभ बल शुक्रका होगा इसकी उपपत्ति, जो पचास अंशोंसे ६० बल मिलता है तो इष्टांशके कितना यह त्रैराशिक है, इनमें १० से अपवर्त्तन करके गुणक ६ भाजन ५ होताहै १ अपररात्रिस्थ बृहस्पति शनि बल निमित्त जब अर्द्धरात्रोत्तरका इष्ट हो तो अर्द्धरात्रिसे तीसरे प्रहर पर्यंत क्रमसे बल पूर्ण और तीसरे प्रहरसे क्रम करके चौथे प्रहर होनेमें बल शन्य होजाता है, अर्द्धरात्रिसे उपरांत इष्ट काल हो तो उसमें रात्र्यर्द्ध घटायदेना तीसरे प्रहर उपरांत हो तो रात्रिमानमें घटाय देना शेष साठसे गुनाकर प्रहर प्रमाण घट्यादिसे भागलेना लब्धि गुरु शनिको बल होगा २ दिवाग्रहबलाविधि यह है कि जो इष्टकाल प्रातःकालसे मध्याह्नके भीतर हो तो दिनगत लेना मध्याह्नोत्तर सायंकालके अंतर हो तो दिनशेष लेना उसे ६० से गुनाकर दिनार्द्धसे भागलेना दिवाबल ग्रहोंको बल मिलेगा उपपत्ति यह है कि जब दिनार्द्धमें ६० बल मिलताहै तो दिनगत वा दिनशेष असुक संख्यासे कितना मिलेगा ३ इसी विधिसे रात्रि बली ग्रहोंका बल रात्र्यर्द्धसे मिलता है ४ । सूर्यके भावबलविधि यह है कि ग्रहमें सूर्य घटाय देना, शेष अंशादि त्रिगुना करके ६० से शुद्ध करना बल

होता है इसमें सूर्य्यके प्रवृत्ति निवृत्तिके २० अंश है इनमें ६० बल मिलता है तो पूर्वोक्त अंतरसे कितना मिलेगा. गुणक भाजकके २० से अपवर्त्तन करके गुणक तीन भाजक १ एक होता है. ५ स्थिर राशिबल यह है कि राशिके आरंभमें बलका आरंभ १५ अंशमें पूर्ण ६० पंद्रह अंशमें ३० तो शून्यबल क्रमसे घटता बढता है ग्रहराशिके पूर्वार्द्धमें हो भुक्तांश उत्तरार्द्धमें हो तो भोग्यांशलेने वही चतुर्गुणा करके बल होता है अनुपात यह है कि १५ अंशमें पूर्ण ६० बल होता है तो भुक्त वा भोग्यांशोंसे कितना होगा ६ किसीका मत यह है कि ग्रह राश्यादिमें पूर्ण बली मध्यमें मध्य अंतमें शून्य बली क्रमसे होता है, तो ग्रहके अंशादि ३० से शुद्ध करके शेष द्विगुण करना वही बल होता है "अनुपात" जो ३० अंशके पूर्ण बल ६० मिलता है तो ग्रह भोग्यांशोंसे कितना मिलेगा यहां दोनहूंमें ३० से अपवर्त्तन करके शेषद्विगुण बल होगा, यह अर्थयुक्त है ॥ ५३ ॥

उपेंद्रव०–स्त्रियश्चतुर्थात्पुरुषावियद्धाद्धषट्‌कगाओजभगाःपुमांसः॥
समेपरेस्युर्बलिनोविमृश्यविशेषमेतेषुफलंनिगद्यम् ॥ ५४ ॥

और प्रकारसे बल कहते हैं कि स्त्री ग्रह चं. बु. शु. श. चतुर्थ भावसे दशम पर्य्यंत छः स्थानमें और पुरुष ग्रह सू. मं. बृ. दशमसे चतुर्थ पर्य्यंत बली होते हैं तथा विषम राशियोंमें पुरुष ग्रह सम राशियोंमें स्त्री ग्रह बली होते हैं यहां स्त्रीग्रह चतुर्थसे दशम और पुरुषग्रह दशमसे चतुर्थ पर्य्यंत, सभी भावोंमें तुल्यही बल पाते हैं यही उपपत्ति है और विषम सम राशिगत पुंस्त्री ग्रहोंका बल स्थिर राशिसंस्थ ग्रहवत् पूर्वोक्त प्रकारसे जानना इतने प्रकार बलाबल कहनेका प्रयोजन यह है कि इत्थशाल कर्त्ता वा इत्थशाल करना चाहता ग्रह उक्त प्रकारोंसे जैसेमें हो वैसाही फल कहना. यहां उक्त बल भेदोंमेंसे किसी प्रकार बली जो इत्थशाली ग्रह है उसीको कुत्थ योग कहते हैं न कि कुत्थ शब्दसे बली ग्रह लिया जाता है ॥ ५४ ॥

स्रग्धरा–लग्नात्षष्ठांत्यमेंत्येऽनृजुररिगृहगोनीचगोवक्रगामीक्रूरैर्युक्तो-
स्तगोवायदिचमुथशिलीक्रूरनीचारिभस्थैः ॥ क्षुद्दृष्ट्याक्रूरदृष्टो-

व्ययरिपुमृतिगेरित्थशालंविधित्सुः कुर्वन्वानिर्बलोयंस्वगृहद्गन-
भगोराहुपुच्छास्यवर्त्ती ॥ ५५ ॥ उपजा०—अनीक्षमाणस्तनुम
स्तभागस्थितः स्वभोच्चादिपदैश्चशून्यः॥ क्रूरेसराफीनखवीर्य्ययु
क्तः कार्य्यविधातुंनविभुर्यतोसौ ॥ ५६ ॥

अब सोलहवें दुरफ योगका लक्षण कहते हैं पारशीय दुरफ शब्द निर्बल-वाची है यह निर्बलता बहुत प्रकार होतीहै इसलिये निर्बलप्रकाश प्रथम श्लोकसे यह है कि वर्ष प्रश्न वा दिन लग्नसे जो ग्रह छठे आठवें बारहवें स्थानमें हो तथा गतिरहित यद्वा शत्रुराशिस्थ नीचराशिगत वक्रगतिवाला तथा पापयुक्त और अस्तंगत ग्रह यद्वा जो शत्रु ग्रहसे वा नीच शत्रुराशिगत ग्रहसे इत्थशाली हो और जिस पर पापग्रहकी क्षुत दृष्टि ४।१०।७।१ हो और छठे आठवें बारहवें स्थानगत ग्रहसे जिसका इत्थशाल हो वा करना चाहता हो, यद्वा अपनी राशिसे सप्तम राशिमें हो, तथा राहुके पुच्छ वा मुखमें हो राहुके भुक्तांश पुच्छ भोग्यांश मुख होताहै इतने प्रकार युक्त ग्रह निर्बल होताहै. इसके निर्बलांक गणितकी पूर्ववतही विधि है. जैसे शत्रुराशिगतका स्थिर राशिगत ग्रह तुल्य विधिसे करना वक्रग्रहके लिये वक्रदिनोंमें पूर्ण फिर क्रमसे पूरे दिनोंमें शून्य होताहै, मध्यदिनोंसे पूर्ण (६०) मिलताहै तो इष्टदिनोंमें कितना मिलेगा इति। तथा क्रूर युक्त ग्रह नौ अंशके भीतर शून्य उपरांत भाव फलके तुल्य बल लेना, अस्तग्रहको उदित ग्रहवत् विधिसे त्रैराशिक करना, उपरांत ६० से शुद्ध करके अशुभ बल मिलताहै इत्यादि पूर्वोक्त विधियोंसे सभीका हीन बल लेना ॥ ५५ ॥ और प्रकार अशुभ बल प्रकार कहते हैं कि जो ग्रह लग्नको नहीं देखता वह निर्बल होताहै जिस भावमें जिस ग्रहकी दृष्टिका अभाव है उसमें गणितसे जो कुछ अंक पायाहै वह उसके आगेके भावके अंकमें घटाय देना शेष अशुभ दृष्टि होतीहै १ तथा अस्तंगत सूर्य्य जिस नवांशकमें है उससे सप्तम नवांशमें जो हो वह निर्बल होताहै. पूर्वविधिसे जो बल अस्तका आता है

उसे ६० में शुद्ध करके अशुभ बल होताहै, किसीका मत है कि सूर्य्य जिस राशि नवांशमें अस्त होता है उसमें वर्त्तमान ग्रह निर्बल होताहै परन्तु जिस दिन सूर्य्य उदय नवांशसे अन्यमें अस्त हो उस दिन यह विचार है. सूर्य्य तो सर्वदा उदय नवांशमें अस्त होताहै कदाचित् बदलताहै २ तथा स्वगृह उच्च हद्दा द्रेष्काण नवांश संज्ञक पदोंसे रहित ग्रह निर्बल होता है यहभी स्वगृहादियोंका शुभ बल जो पूर्व कहा गया है उसे ६० में शुद्ध करनेसे अशुभ बल होताहै और (क्रूरेसराफी) ईसराफ योग पूर्व कहा गया है, जो ग्रह पाप ग्रहके साथ ईशराफी अर्थात् शीघ्र धन भाग मन्द अल्प भाग हो तो यह अपना तेज दूसरेको नहीं देसकता इस कारण यहभी निर्बली होताहै मन्दग्रहसे पीछे शीघ्र-ग्रह स्वदीप्तांशोंके अन्तर हो तो शून्य बल इसके उपरांत क्रमसे मन्दग्रहोंके अंशोंके समान होनेपर पूर्ण बली होताहै, बीचमें हो तो अनुपात जैसे यदि अमुक दीप्तांशोंसे पूर्ण (६०) बल मिलता है तो दीप्तांशोंमें भुक्त अंशोंका कितना मिलेगा ऐसाही ईशराफकीभी रीति है, इत्थशालीग्रह इत्युक्त प्रकारोंमें किसी प्रकारसे निर्बल हो तो इत्थशालोक्त फल नहीं देता, इसका नाम दुरफ योगहै ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

शालि०—चन्द्रः सूर्य्याद्द्वादशेवृश्चिकाद्यखंडेनेष्टोंतेतुलायांविशेषात् ॥
राशीशेनादृष्टमूर्त्तिर्नसर्वैर्दृष्टोज्ञेयःशून्यमार्गःपदोनः ॥ ५७ ॥

सब ग्रहोंके दुरफ कहने उपरांत केवल चन्द्रमाका दुरफ कहते हैं कि जो सूर्य्यसे बारहवें स्थानमें चन्द्रमा हो तो निर्बल होताहै तथा वृश्चिकके पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्य्यंत और तुलाके उत्तरार्द्ध १५ अंश उपरांत तद्वत् चन्द्रमा जिस राशिमें है उसका स्वामी इसको न देखे, तथा चन्द्रमाको कोई ग्रह न देखे तथा शून्याध्वग अर्थात् स्वोच्चादि शुभाधिकाररहित हो तो इतने प्रकारसे चन्द्रमा निर्बल होताहै. ग्रन्थांतरोंमें चन्द्रमाके निर्बल होनेके दश प्रकार ये हैं कि नीच-गत १ नीचस्थ ग्रहसे मुथशिली २ सूर्य्यके समीप १२ अंशके अभ्यंतर ३ (राहुमुख) राहुके सौम्यांशोंमें ४ पापग्रहके साथ १२ अंशकेभीतर ५ अपनी राशिसे सप्तम मकरका ६ धन राशिमें धन नवांशका, अपनी राशीसे सप्तम राशिमें ग्रह निर्बल होता है; जो कहा वह उससे पूर्व राशिके एक नवांशको लेकर होता

है ७ अस्तंगतके ८ अस्तंगतके साथ मुथशिली ९ शत्रुक्षेत्रगत १० इतने प्रकारोंसे चन्द्रमा निर्बल होताहै ॥ ५७ ॥

शालि०—क्षीणोभांतेनाशुभोजन्मकालेपृच्छायांवाचंद्रएवंविचिंत्यः ॥ शुक्लेभौमःकृष्णपक्षेर्कसूनुः क्षुद्दृष्टयेंदुंवीक्ष्यतेनोशुभोसौ ॥ ५८ ॥

और चन्द्रमा कृष्ण पक्षकी एकादशीसे शुक्लकी पंचमी पर्य्यंत तथा राशिके अत्यन्त २६ । ४० अंशसे ऊपर अर्थात् नवम नवांशकमें (क्षीण) अशुभ होताहै यह विचार जन्मकाल वा प्रश्नादिमें करना तथा मंगल शत्रु दृष्टि ४ । १० । ७ । १ से शुक्ल पक्षके चन्द्रमाको देखे और शनि ऐसी दृष्टिसे कृष्ण पक्षके चन्द्रमाको देखे तो वह चन्द्रमा संपूर्ण कार्य्योंमें अशुभ होताहै ॥ ५८ ॥

वसंततिलका०—शुक्लेदिवानृगृहगोर्कसुतः शशांकं कृष्णे कुजो-
निशि समर्क्षगतःप्रपश्येत् ॥ दोषाल्पतां वितनुतेऽपरथाबहुत्वं
प्रश्नेथवाजनुषिबुद्धिमतोहनीयम् ॥ ५९ ॥

जो शुक्लपक्ष और दिनमें (पुरुष राशि) विषम राशिमें बैठा शनैश्वर चन्द्रमाको देखे तथा कृष्णपक्ष और रात्रिमें (समराशि) स्त्री संज्ञकराशिमें बैठा मंगल इसे देखे तो चन्द्रमाका पूर्वोक्त (दुरफ) निर्बलताका दोष न्यून हो जाताहै इस प्रकार श. मं. की दृष्टि न होनेमें दोष प्रबलही रहताहै यह विचार जन्म तथा प्रश्न उपलक्षणसे वर्षादियोंमें विचारना चाहिये, इन दोनहूं-को (कुत्थ) बलवान् और (दुरफ) निर्बल योग सभी ग्रहोंके सर्वदा विचा-रने चाहिये. इन दोनोंका बल उक्त प्रकारसे गिनकर इनका अन्तर करना जो कुत्थ बल अधिक हो तो वह ग्रह अशुभ स्थानमेंभी शुभ देताहै, वह शुभ स्थानमें अत्यन्तही शुभ देता है जो दुरफ बल अधिक हो तो वह ग्रह शुभ स्थानमेंभी अशुभ फल देताहै अशुभ स्थानमें अत्यन्त अशुभ देताहै यह बलतारतम्यसे फल सर्व विचारना. इति १६ योग स० ॥ ५९ ॥

अथ हर्षबलानयनम् ।

उ० जा०—नन्दत्रिषड्लग्नभवर्क्षपुत्रव्ययाइनाद्धर्षपदंस्वभोच्चम् ॥

त्रिभंत्रिभंलग्नभतः क्रमेणस्त्रीणांनृणांरात्रिदिनेचतेषाम् ॥ ६० ॥

अब सामान्यतासे चार प्रकार हर्षस्थान कहते हैं कि सूर्य्य नवम स्थानमें चंद्रमा तीसरे मंगल छठेमें बुध लग्नमें बृहस्पति ग्यारहवेंमें शुक्र पंचम शनि बारहवेंमें हर्षबल पातेहैं १ दूसरा सूर्य्यादि ग्रह अपने २ उच्च तथा अपनी २ राशिमें हर्ष बली होतेहैं २ तीसरा जैसे १ । २ । ३ भावोंमें स्त्री ग्रह ४ । ५ ६ में पुरुष ग्रह तथा ७ । ८ । ९ में स्त्री ग्रह १० । ११ । १२ में पुरुष ग्रह ३ चौथे रात्रिमें स्त्री ग्रह दिनमें पुरुष ग्रह बल पातेहैं ४ यह बल प्रश्न और जन्म वर्षादियोंमें भी विचारना. इनका न्यास चक्र बनायके जिस स्थानमें जो ग्रह बल पावे उसके उस संज्ञाके कोष्ठमें ५ अंक लिखना और स्थानोंमें

कुण्डली वर्ष.

८ के	६	७	शु ५	१	चं १०	४	सू १
सू ११	बु १	३	गु १२	बुमंरामु			

हर्षबलचक्रम् ।

श्री०	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
स्थान	०	०	०	०	०	०	०
स्वरा०	०	०	०	०	०	०	०
स्वोच्च	५	०	०	०	०	५	०
स्त्री.पु.	०	०	०	५	५	०	५
स.दि	५	०	०	०	५	०	०
योग.	१०	०	०	५	१०	५	५

शून्य करदेना. पीछे सबका योग करना. जैसे कोई ग्रह एक स्थानमें बल पावे तो ५ ही योग हुवा दोनोंमें बली हो तो १० तीनमें १५ चारोंमें २० योग होगा इसे हर्ष विशोपका बल कहतेहैं इसके अनुसार फल कहना विशेष विचार यह है कि जो पूर्व कुत्थ दुरुफ बल त्रैराशिकसे मिलेहैं उनको और हर्षबलको त्रिगुण करके मिलायदेना शुभाधिक हो तो शुभफल विशेषहीन बलाधिक हो तो अंतर करके अशुभ फल विशेष कहना. यह ताजिक शास्त्रवेत्ताओंका संप्रदाय है॥ ६० ॥

शार्दूल०–श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतो नंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥ तत्सूनुःखलु नीलकंठविबुधोविद्वच्छिवानुज्ञया योगान्षोडशहर्षभानिच तथा संज्ञाविवेकेव्यधात् ॥ ६१ ॥

प्रथम संज्ञा प्रकरणमें आचार्य्यने स्वनाम गुणादि प्रकट किये वही इस दूसरे प्रकरणमें भी जानना इतना विशेष है कि षोडशयोग हर्षस्थान इस दूसरे प्रकरणमें कहेहैं ॥ ६१ ॥ इति महीधरकृतायां ताजिकनीलकंठीभाषायां ग्रहस्वरूपदृष्टिषोडशयोगहर्षस्थानविवरणनामाध्यायः ॥

इन्द्रवज्राछन्दः–पुण्यंगुरुर्ज्ञानयशोथमित्रंमाहात्ममाशाच समर्थताच ॥ भ्राताततोगौरवराजतातमातासुतोजीवितमंबु कर्म ॥१॥ वसंतति०–मांद्यंचमन्मथकलीपरतः क्षमोक्तं शास्त्रंसबंधुसहमंत्वथबंदकंच ॥ मृत्योश्चसद्मपरदेशधनान्यदारा स्यादन्यकर्मसवणिक्त्वथकार्य्यसिद्धिः ॥ २ ॥ अनु०–उद्वाहसूतिसंतापाःश्रद्धाप्रीतिर्बलंतनुः ॥ जाड्यव्यापारसहमे पानीयपतनं रिपुः ॥ ३ ॥ अनुष्टुप्०–शौर्योपायदरिद्रत्वंगुरुताजलकर्मच ॥ बंधनंदुहिताश्वश्चपंचाशत्सहमानिहि ॥ ४ ॥

अब सहम विचार कहतेहैं (सहम) पारशीय पद सद्मवाची है यह समरसिंहमतसे ४८ और यवनादियोंके मतसे ५० हैं कोई अधिकभी कहतेहैं यहां ५० के नाम कहे जातेहैं कि पुण्य १ गुरु २ ज्ञान ३ यश ४ मित्र ५ माहात्म्य ६ आशा ७ समर्थता ८ भ्राता ९ गौरव १० राजा ११ तात १२ माता १३ सुत १४ जीवितं १५ जल १६ कर्म १७ मांद्य १८ कामदेव १९ कलह २० क्षमा २१ शास्त्र २२ बन्धु २३ बंदक २४ मृत्यु २५ परदेश २६ धन २७ अन्यदारा २८ अन्यकर्म २९ वणिक् ३० कार्य्यसिद्धि ३१ विवाह ३२ प्रसूति ३३ संताप ३४ श्रद्धा ३५ प्रीति ३६ बल ३७ तनु ३८ जाड्य ३९ व्यापार ४० पानीयपतन ४१ शत्रु ४२ शौर्य्य ४३ उपाय ४४ दरिद्र ४५ गुरुता ४६ जलकर्म ४७ बन्धन ४८ दुहिता ४९ अश्व ५० ये तो आचार्य्य कथित हैं और इनमें परदेशही मार्ग विवाहही स्त्री ज्ञानही विद्या सहम जानना. और आचार्य्य मतसे सहम औरभी हैं कि भार्य्या ५१ मोक्ष ५२ वसु ५३ पितृव्य ५४ क्लेश ५५ गमागम ५६ गज ५७ सन्माति ५८ घात ५९ कोश ६० चतुष्पद ६१ व्यसन ६२ कृषि ६३ दृष्टि ६४ आखेट ६५

मृत्य ६६ अंग ६७ प्राप्ति ६८ निधि ६९ ज्ञाति ७० ऋण ७१ बुद्धि ७२ आधान ७३ धैर्य्य ७४ सत्यक ७५ इतने औरभी हैं ॥ १ ॥ २॥ ३ ॥४॥

इन्द्रव०-सूर्योनचंद्रान्वितमह्निलग्नंवांद्धकेयुक्तंनिशिपुण्यसंज्ञम् ॥
शोद्ध्यर्क्षशुद्ध्याश्रयभांतरालेलग्नंनचेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥ ५ ॥

अब सहमोंकी बनानेकी रीति कहतेहैं प्रथम पुण्य सहमके लिये यह है कि, वर्षप्रवेश वा जन्मादि काल दिनका हो तो तात्कालिक स्पष्ट चन्द्रमामें तात्कालिक सूर्य्य स्पष्ट घटायके तात्कालिक लग्न स्पष्ट जोडदेना, रात्रिका लग्न हो तो सूर्य्यमें चन्द्रमा घटायके लग्न स्पष्ट जोडदेना; यह पुण्यसहमका राश्यादि स्पष्ट होताहै, परन्तु जिसमें संस्कार औरभी है, जो ग्रह घटाया जाता है वह शोध्य और जिसमें घटाया जाताहै वह शुद्ध्याश्रय कहाताहै शोध्यर्क्ष और शुद्ध्याश्रयके बीच अर्थात् शोध्य ग्रहकी राशिसे शुद्ध्याश्रयग्रह स्थित राशि पर्य्यंत लग्न न हो तो पूर्वानीत पुण्यसहममें एक (१) राशि जोडदेना ऐसा न हो तो न जोडना (उदाहरण) सूर्य्य स्पष्ट राश्यादि ४ । ८ । १० चन्द्र स्पष्ट राश्यादि ६ । १२ । १० लग्न स्पष्ट । ८ । १० । १० दिनके वर्ष प्रवेशमें सूर्य्य चन्द्रमामें घटाया शेष २ । ४ । ० लग्न जोडदिया तो १० । १४ । १० अब संस्कार है कि शोध्यर्क्ष सिंह ८ अंशसे शुद्ध्याश्रय तुला १२ अंशके भीतर लग्न न होनेसे एक जोडदिया तो ११ । १४ । २० यह पुण्यसहम हुआ, रात्रिका वर्षप्रवेश हो तो उदाहरण सूर्य्य ८ । ४ । १० में चन्द्रमा ६ । १२ । १० घटाया शेष १ । २२ । ० लग्न ० १०।० जोडदिया तो भया २ । २ । ० सूर्य्यमें चन्द्रमा घटाया इस लिये तुला १२ अंशसे धन ४ अंशपर्य्यंत लग्न न होनेसे सैक करना इससे ३ । २ । ० यही पुण्यसहम भया शोद्ध्याश्रय राश्यंतर लग्न न हो तो राशिमें १ जोडना यह संस्कार सभी सहमोंमें जानना ॥ ५ ॥

उ० जा०-व्यत्यस्तमस्माद्गुरुविद्ययोस्तुसंसाधनंपुण्यवियुक्सुरेज्यः॥
दिवाविलोमंनिशिपूर्ववत्तुयक्षोभिधंतत्सहमंवदंति ॥ ६ ॥

अब गुरुविद्या और यश सहमके विधि कहते हैं, इनमें गुरु और विद्या, सहम तो पुण्य सहमके विपरीतहै जैसे दिनमें सूर्य्यमें चन्द्रमा घटायके रात्रिमें चन्द्रमामें सूर्य्य घटायके लग्न जोडदेना 'शोद्ध्यर्क्षेत्यादि' संस्कार करके गुरु और विद्यासहम होतेहैं विद्यासहमको ज्ञानभी कहतेहैं ३ यश सहमके लिये दिनमें बृहस्पतिमें पुण्य सहम घटायदेना रात्रिमें पुण्य सहममें बृहस्पति घटायदेना शोद्ध्यर्क्षेत्यादि सर्वत्रही है यह यशसहम होताहै ॥ ६ ॥

रथोद्ध०–पुण्यसद्मगुरुसद्मतस्त्यजेद्व्यत्ययोनिशिसितान्वितंचतत् ॥
सैकतातनुवदुक्तरीतितोमित्रनामसहमंविदुर्बुधाः ॥ ७ ॥

मित्र सहम निमित्त दिनमें गुरु सहममें पुण्यसहम घटायके शुक्र जोड देना, रात्रिको पुण्य सहममें गुरु सहम घटायके शुक्र जोडना शोद्ध्यर्क्ष शुद्ध्याश्रय भांतराल लग्न हो तो १ जोडदेना मित्र ५ सहम होताहै ॥ ७ ॥

शालिनी–पुण्याद्भौमंशोधयेदुक्तवत्स्यान्माहात्म्यंतन्नक्तमस्माद्विलोमम् ॥
शुक्रंमंदाद्वह्निनक्तंविलोममाशाख्यंस्यादुक्तवच्छेषमूह्यम् ॥ ८ ॥

माहात्म्य और आशा सहमके लिये पुण्य सहममें मंगल घटाके लग्न जोडदेना शोध्यर्क्षेत्यादिसे सैक प्राप्ति हो तो १ जोडदेना दिनका माहात्म्य सहम ६ होताहै रात्रिको विपरीत, जैसे मंगलमें पुण्य सहम घटायके शेष पूर्ववत् करना आशा सहमको शनिमें शुक्र घटायके शेष लग्न में जोडना एक योगकी प्राप्ति हो तो जोडना. दिनका आशा सहम होताहै, रात्रिको विपरीत जैसे शुक्रमें शनि घटायके शेष पूर्ववत् करना. आशा इच्छाका नाम है ॥ ८ ॥

इन्द्रवज्रा–सामर्थ्यमारात्तनुपंविशोध्यनक्तंविलोमंतनुपेकुजेतु ॥
जीवाद्विशुध्येत् सततंपुरावद्भ्रातार्किहीनाद्गुरुतःसदोह्यः ॥ ९ ॥

दिनको लग्नेश मंगलमें घटाना रात्रिको मंगल लग्नेशमें घटाय देना जब लग्नेश मंगलही हो तो दिन तथा रात्रिमें बृहस्पतिमें शुद्ध करना सामर्थ्यसहम होताहै तथा दिन रात्रिमें बृहस्पतिमें घटायके शेष पूर्ववत् करना यह भ्रातृसहम होताहै ॥ ९ ॥

उपजाति–दिनेगुरोश्चंद्रमपास्यनक्तंरविंक्रमादर्कविधूचदेयौ ॥

रीत्योक्तयागौरवमर्कमार्कैरपास्यवामंनिशिराजतातौ ॥ १० ॥

दिनको बृहस्पतिमें चन्द्रमा घटायके शेषमें सूर्य जोड़ना, रात्रिको बृहस्पतिमें सूर्य घटायके चन्द्रमा जोड़ना शोध्यर्क्षेत्यादिसे अन्तरालमें सूर्य वा चन्द्रमा न हो तो १ जोड़ना गौरवसहम होताहै १० तथा दिनको शनिमें सूर्य घटायके और रात्रिको सूर्य्यमें शनि घटायके पूर्ववत् लग्न जोड़ना शोध्यर्क्षेत्यादि संस्कार करके राजसहम होताहै ११ यह पितृसहम १२ भी है ॥ १० ॥

इन्द्रव०–भातेन्दुतोपास्यसितं विलोमं नक्तंसुतोह्निशामिंदुमीज्यात् ॥

स्याज्जीविताख्यंगुरुमार्कितोह्निवामंनिशीदंसममंबयांबु॥ ११ ॥

दिनको चन्द्रमामें शुक्र घटायके रात्रिको शुक्रमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोड़ना,मातृ और अंबु अर्थात् जलसहम होताहै १३ दिनको और रात्रि कोभी गुरुमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोड़ना पुत्रसहम होताहै १४ दिनको शनिमें बृहस्पति घटायके रात्रिको बृहस्पतिमें शनि घटायके लग्न जोड़ना जीवितसहम होताहै १५ इसीको ऐश्वर्य्यसहमभी कहते हैं अम्बुसहम मातृ सहमही होता है सो कह चुके हैं १६॥ ११ ॥

इं०व०–कर्मेंदुमारान्निशिवामसुतंरोगाख्यमिंदुंतनुतःसदैव ॥

स्यान्मन्मथोलग्नपमिंदुतोह्नि वामंनिशींदुंतनुपंसदाऽकात् ॥ १२ ॥

दिनको मंगलमें बुध रात्रिको बुधमें मंगल घटायके लग्न जोड़ना कर्मसहम १७ होताहै, लग्नमें चन्द्रमा घटाय लग्न जोड़के रोगसहम १८ दिनरात्रिका होताहै लग्नमें चन्द्रमा घटायके रात्रिको विपरीत करके लग्न जोड़ना कामसहम १९ होता है चन्द्रमाही लग्नेश हो तो दिन तथा रात्रि सूर्यमें चंद्रमा घटाना ॥ १२ ॥

उ०जा०–कलिक्षमेस्तोगुरुतोविशुद्धकुजेविलोमंनिशिपूर्वरीत्या॥

शास्त्रंदिने सौरिमपास्यजीवाद्वामं निशिज्ञस्ययुतिःपरावत् ॥१३॥

बृहस्पतिमें मंगल घटायके लग्न जोड़ना दिनका कलिसहम २० होताहै, रात्रिको मंगलमें बृहस्पति घटायके लग्न जोड़नी क्षमासहमभी इसी प्रकारक

है २१ दिनको बृहस्पतिमें शनि रात्रिको शनिमें बृहस्पति घटायके शेषमें बुध जोड़ना शास्त्रसहम होताहै २२ शोध्यर्क्षेत्यादि संस्कार सर्वत्रही है ॥ १३ ॥

उ०जा०—दिवानिशंज्ञाच्छशिनंविशोध्यबंध्वाख्यमेतान्निशिबंदकंस्यात् ॥ शमंदिनेचन्मृतिरष्टमर्क्षादिंदुंविशोध्योक्तवदार्किंयोगात् ॥ १४ ॥

दिनको बुधमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोड़ना रात्रिकोभी यही करना बन्धुसहम होताहै २३ दिनको चन्द्रमामें बुध और रात्रिको बुधमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना बंदकसहम होताहै २४ दिन तथा रात्रिमें मृत्युभावमें चंद्रमा घटायके शनि जोडना मृत्युसहम २५ होताहै ॥ १४ ॥

उपजा०—अहर्निशंवित्तपमर्थभावाद्विशोध्यपूर्वोक्तवदर्थसद्म ॥ देशांतराख्यंनवमाद्विशोध्यधर्मेश्वरंसंततमुक्तवत्स्यात् ॥ १५ ॥

दिवा और रात्रिमेंभी धनभावमें धनभावेश घटायके लग्न जोडना धन सहम २६ होताहै तथा दिवा रात्रि धनभावमें धर्मभावेश घटायके लग्न जोड- ना परदेशसहम २७ होताहै ॥ १५ ॥

उपजा०—सितादपास्यार्कमथान्यदाराह्वयंसदाप्राग्वदथान्यकर्म ॥ चन्द्राच्छनिंवाममथोनिशायांशश्वद्वणिज्यंदिनवंदकोक्त्या ॥ १६ ॥

दिनरात्रि शुक्रमें सूर्य्य घटायके लग्न जोडना परस्त्री सहम२८होताहै दिनको चन्द्रमामें शनि रात्रिको शनिमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना परकर्म २९ सहम होताहै. दिनरात्रि चन्द्रमामें बुध घटायके लग्न जोडना वाणिज्य सहम ३० होताहै ॥ १६ ॥

उपजा०—शनेर्दिवार्कंनिशिचंद्रमाकोंविशोध्यसूर्य्येंदुभनाथयोगात् ॥ स्यात्कार्यसिद्धिः सततंविशोध्यमंदंसितात्स्यात्तुविवाहसद्म ॥ १७ ॥

दिनको शनिमें सूर्य्य घटायके सूर्यराशिनाथ जोडना, रात्रिको शनिमें चन्द्रमा घटायके चंद्रराशिस्वामी जोडना कार्य्यसिद्धि ३१ सहम होताहै, दिनरात्रि शुक्रमें शनि घटायके लग्न जोडना विवाहसहम ३२ होताहै ॥ १७ ॥

उपजा०–गुरोर्बुधंभोऽन्ह्यथभर्वेत्प्रसूतिर्वामांनिशींदुंशनितोविशोध्य ॥
षष्ठांशिपेदुक्तदिशासदैव संतापसद्मारमपास्यशुक्रात् ॥ १८ ॥

दिनको बृहस्पतिमें बुध रात्रिको बुधमें बृहस्पति घटायके लग्न जोडना प्रसूतिसहम होताहै ३३ दिनरात्रि शनिमें चन्द्रमा घटायके रिपुभाव जोडना संतापसहम ३४ होताहै ॥ १८ ॥

उ०जा०–श्रद्धासदाभौमदिशाथपुण्यंविद्याख्यतःप्रोऽन्ह्यसदापुरोत्या ॥
प्रीत्याख्यमुक्तंबलदेहसंज्ञेयशःसमेजाड्यमपास्यभौमात् ॥ १९ ॥

दिनरात्रि शुक्रमें मंगल घटायके लग्न जोडना श्रद्धासहम ३५ होता है दिनको रात्रिकोभी विद्यासहममें पुण्यसहम घटायके लग्न जोडना प्रीतिसहम ३६ होताहै, बलसहम ३७ और देहसहम ३८ यशसहमके तुल्य जानने और दिनको मंगलमें तथा शनि रात्रिमें विपरीत करके बुध जोडना जाड्य ३९ सहम होगा ॥ १९ ॥

उपजा०–शनिर्विलोमंनिशि चांद्रभोगाद्व्यापारमाराज्ज्ञमपास्यशश्वत् ॥
पानीयपातः शशिनंविशोध्यसौरेर्विलोमंनिशिपूर्ववत्स्यात् ॥ २० ॥

दिनरात्रि भौममें बुध घटायके लग्न जोडदेना व्यापारसहम ४० होताहै दिनको शनिमें चन्द्रमा रात्रिको चन्द्रमामें शनि घटायके लग्न जोडना पानीयपतनसहम ४१ होताहै ॥ २० ॥

उपजा०–मन्दंकुजात्प्रोऽन्ह्यरिपुर्विलोमंरात्रौभवेद्भौमाविहीनपुण्यात् ॥
शौर्य्यंविलोमंनिशिपूर्ववत्स्यादुपायइज्यंशनितोविशोध्य ॥ २१ ॥

दिनको मंगलमें शनि रात्रिको शनिमें मंगल घटायके लग्न जोडना शत्रु४२ सहम होताहै, दिनको पुण्यसहममें मंगल रात्रिको मंगलमें पुण्यसहम घटायके लग्न जोडना शौर्य्यसहम४ ३होता है; दिनको शनिमें बृहस्पति रात्रिको बृहस्पतिमें शनि घटायके लग्न जोडना, उपायसहम ४४ होताहै ॥ २१ ॥

उपजा०—वामंनिशिज्ञंतुविशोध्य पुण्याज्ज्ञयुग्विलोमंनिशितद्दरिद्रम् ॥
सूर्य्योच्चतःसूर्यमपास्यनक्तं चन्द्रंतदुच्चाद्गुरुतापुरोक्त्या ॥ २१ ॥

दिनको पुण्यसहममें बुध घटायके बुध जोडना रात्रिको बुधमें पुण्यसहम घटायके बुध जोडना तो दारिद्र्यसहम ४५ होता है, दिनको सूर्य्यके उच्च० । १० में सूर्य्य घटायके लग्न जोडना, रात्रिको चन्द्रमाके उच्च १ । ३ में चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना गुरुसहम ४६ होताहै, शेषकर्म शोध्यक्षेत्यादिसे संस्कार सर्वत्रही देखना चाहिये ॥ २२ ॥

अनु०—कर्कार्द्धतःशनिंप्रोज्झ्यस्याज्जलाध्वान्यथानिशि ॥
पुण्याच्छनिंविशोध्याह्निवामंनिशितुबंधनम् ॥ २३ ॥

दिनको कर्कके आधा ३ । १५ में शनि घटायके रात्रिको विपरीत करके लग्न जोडना जलमार्गसहम ४७ होताहै, दिनको पुण्यसहममें शनि और रात्रिको शनिमें पुण्यसहम घटायके बंधन ४८ सहम होताहै ॥ २३ ॥

सहमसारणी ।

सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ना०	पुण्य	गुरु	ज्ञान विद्या	यशाव लवपु	मित्र	माहात्म्य	आशा	सामर्थ्य	भ्रातृ	गौरव
दिवा लग्न	चंद्रे	रवौ	रवौ	जीवे	गुरु सहम	पु. स.	शनौ	भौमे	जीवे	जीवे
ऋण	रवि	चंद्र	चंद्र	पु. स.	पु. स.	भौम	शुक्र	तनुपः	शनि	चंद्र
धन	ल.	ल.	ल.	ल.	शुक्र	ल.	ल.	ल.	ल.	रवौ
रा. ल.	रवौ	चंद्रे	चंद्रे	पुण्ये	पुण्ये	भौमे	शुक्रे	तनुपतौ	गुरौ	गुरौ
ऋ.	चंद्र	रवि	रवि	जीवे	गु. स.	पु. स.	शनि	भौम	शनि	रवि
धन	ल.	ल.	ल.	ल.	शुक्र	ल.	ल.	ल.	ल.	चंद्रः

सं०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
ना०	राज	तात.	माता जल.	सुत.	जीव.	अंबु. कांति.	कर्म.	रोग.	काम. दे०	कलि.
दिवा लग्न.	शनौ.	शनौ.	चंद्रे.	गुरौ.	शनौ.	चंद्रे.	भौमे	शनौ.	चंद्रे.	गुरौ.
ऋण.	रवि.	रवि.	शुक्र.	चंद्र.	जीव	शुक्र.	बुध.	चंद्र.	लग्नेश.	भौमे.
धन.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रात्रौ	रवौ.	रवौ.	भृगौ.	गुरौ	गुरौ.	शुक्रे.	बुधे.	तनौ.	लग्नेश	भौम.
ऋण.	शनि.	शनि.	चंद्र.	चंद्र	शनि.	चंद्र.	भौम.	चंद्र.	चंद्र.	गुरौ.
धन.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.

सं.	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
ना.	क्षमा	शास्त्र	बंधु	बंदक	मृत्यु	परदेश	धन	अन्य दारा	परकर्म	वणिक्	कार्य	विवाह.
दिवाल.	शनौ	जीवे	बुधे	चंद्रे	मृत्यु भाव	धर्मभा	धनभा	शुक्रे	चंद्रे	चंद्रे	शनौ	शुक्रे
ऋण	भौम	शनि	चंद्र	बुध	चंद्रः	धर्मेश	धनेश	रवि	शनि	बुध	सूर्य	शनि
धन	लग्न	बुध	लग्न	ल.	शनि	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	सूर्यरा-शीश	ल.
रा.ल.	भौमे	शनौ	बुधे	बुधे	मृत्यु भाव	धर्मभा	धनभा.	शुक्रे	शनौ	चंद्रे	शनौ	शुक्रे
ऋण	गुरु	जीव	चंद्र	चंद्र	चंद्र	धर्मेश	धनेश	रविः	चंद्रः	बुधः	चंद्रः	शनि
धन.	ल.	बुध	ल.	ल.	शनि	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	चंद्रराशीश	ल.

सं०	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
ना०	प्रसूति	संताप	श्रद्धा	प्रीति	बल सैन्य	तनु	जाड्य	व्यापार	पानी यपात	रिपु	शौर्य	उपाय
दि.ल.	गुरौ	शनौ	शुक्रे	विद्या सहमे	गुरौ	गुरौ	भौमे	भौमे	शनौ	कुजे	पुण्य सहमे	शनौ
ऋ.	बुध	चंद्र	भौम	पुण्य सहमे	पु. स.	पु. स.	शनि	बुध	चंद्रे	श.	भौम	गुरु
ध.	ल.	रिपुभाव	ल.	ल.	ल.	ल.	बुध	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रा.ल.	बुधे	शनौ	शुक्रे	विद्या भाव	पुण्यस.	पु. स.	शनौ	भौमे	चंद्रे	शनौ	भौमे	गुरौ
ऋ	गुरु	चंद्र	भौम	पुण्यस.	गुरु	गुरु	शै.	बुध	शनि	कुज	पुण्यस.	शनि
ध.	ल	रिपुभाव	ल.	ल.	ल.	ल.	बुध	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.

सं.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
ना.	दरिद्रः	गुरुता	जले मार्ग	बंधन	कन्या	अश्व	गज	हस्त	मार्ग	ऐश्वर्य	स्त्री	देशांतर
दिवाल.	पुण्यस	०।१०	३ १५	पुण्य सहमे	शुक्रे	पु. स.	चंद्रे	चंद्रे	धर्म भावे	शनौ	शुक्रे	धर्मेशे
ऋ.	बु.	सू.	श.	श.	चं.	सू.	शु.	श.	धर्मेश	गुरु	जायेश	धर्म भाव
ध.	गु.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	आ प.भा	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रात्रि.ल	बुध	११२	शनौ	श.	शु.	सू.	चं.	श.	धर्म भाव	गु.	शु.	धर्म भावे
ऋ.	पु.स.	चंद्र	३।१५	पुण्य सहम	चंद्र	पु.स.	शु.	चं.	धर्मेश	श.	जायेश	धर्मेश
धन	बु.	ल.	ल.	ल.	ल.	आय भाव	ल.	ल.	ल.	ल.	जाया भाव	ल.

अनुष्टु०-चन्द्रांसितादपास्योक्तं सदा कन्याख्यमुक्तवत् ॥
पुण्यादर्कमपास्यायययोगादश्वोऽन्यथानिशि॥ २४ ॥

दिन तथा रात्रिको शुक्रमें चंद्रमा घटायके लग्न जोडना कन्यासहम ४९ होताहै, दिनका पुण्यसहममें सूर्य्य घटायके लग्न जोडना रात्रिको सूर्य्यमें

पुण्यसहम घटायके ग्यारहवां भाव जोडना अश्वसहम ५० होताहै,ये ५० सहम आचार्योक्त कहेगये. मतांतरसे जो अन्य सहम हैं उनमेंसे कोई तो इनहींमें अंतर्भावहै कोई सारणीमें लिखेंगे सहमसारणी आवेहै सहम विचार जिसके निमित्त करनाहै उसीके संबंधी भावसे सहमकल्पना करनी. जैसे भाइयोंके वास्ते तृतीयभावको स्त्रीके निमित्त सप्तम भावको लग्न जानकर पुण्यादि सहम कल्पना करनी यहभी किसीका मत है ॥ २४ ॥

उपजा०-स्वनाथहीनं सहमं तदंशाः स्वीयोदयघ्ना वि- हृतास्त्रिशत्या ॥ तत्सद्मपाको दिवसैर्हि लब्धैः स्यात्तद्दशायां तदसंभवेवा ॥ २५ ॥

सहमका फल पाकसमय कहतेहैं कि, सहमका फल पाकसमय चाहिये उसमें उस भावके स्वामीका स्पष्ट घटाय देना शेषके अंश करके स्वदे- शीय लग्न खंडसे गुणना. ३०० तीनसौसे भाग लेना लब्धि उस सहमफल पाकके दिन जानना किसीका मत है कि पूर्वविधिसे जो दिन मिले हैं उनमें ३० का भाग देके लब्धि राशि जाननी तदनंतर वर्षप्रवेशकालिक सूर्यराश्यादि कलापर्यंतमें जोडदेना राशिस्थानमें १२ से अधिक होनेपर १२ से शेषकर देना यह सूर्य स्पष्ट जिस समयपर आवे वह समय सहम फल पाकका जानना कोई कहतेहैं कि, हीनांश पात्यांश क्रमसे जब सहमेशकी दशा हो तब फल होगा, यह सर्व संमत है. इन दो मतोंमें यह निश्चय है कि, पूर्वोक्त प्रकारसे जो दिन मिलेहैं, यदि उनके भीतर तत्स्वामीकी दशा हो तो दशाहीमें फल होजायगा. जब उक्तदिनोंसे उपरांत दशा हो तो दशाप्रारंभ दिवससे उतने दिनोंमें फल होगा. इसमेंभी स्मरण चाहिये कि ऐसी विधिसे वर्षांत होजाय तो दूसरे वर्षमें फल कहना, परंतु इसमें बहुत शंका होतीहै इस लिये यादववाक्यहै, "सहमेश्वरयोः कार्यमंतरं पूर्वराशिकम्॥तद्युक्तोर्को भवेद्यावांस्तावत्संक्रांतिगे फ- लम्॥" अर्थात् जिस भावसंबंधी सहमका फल चाहताहै उसके पूर्वभावसे उसका

अंतर करके दशाप्रवेशसामयिक सूर्यस्पष्टमें जोडदे उसके जितने अंश हों उतने सौर दिनोंमें फल होगा यह निश्चय है ॥ २५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां सहमाधिकारः समाप्तः ।

वसंततिलका-स्वोच्चादिसत्पदगतो यदिलग्नदर्शी वीर्या न्वितस्सहमपोयदिनेक्षतेङ्गम् ॥ नासौबलीरविशशिश्रितभेद दर्शपूर्णांतलग्नपबलस्य विचारणेत्थम् ॥ २६ ॥ १ ॥

सहमेशोंका बलाबल कहतेहैं कि, अपने उच्चादि पूर्वोक्त शुभ स्थानोंमें होकर लग्नको यद्वा अपने सहमको सहमेश देखे तो बलवान् होतेहैं. जो लग्नको न देखें तो सत्पदगतभी निर्बल होताहै और इसमें जन्मकालिक सूर्यराशीश १ जन्मकालिक चन्द्रराशीश २ जन्ममासकी पूर्णमासी जिस लग्नमें अंत हो इसका स्वामी ३ जन्ममासकी अमावास्या जिस लग्नमें अंत हो उसका स्वामी ४ इनका बलाबलभी इसी रीतिसे विचारना, इनके बलाबलसे पुण्यसहमके तुल्य फल कहना ॥ २६ ॥ १ ॥

अनु०-पंचवर्गीबलेनोनो नहर्षस्थानमाश्रितः ॥
अबलोयं लग्नदर्शी बलीस्वल्पेस्तिचेत्पदे ॥ २७ ॥ २ ॥

जो ग्रह पंचवर्गीमें (हीन) पांचसे कम बली हो तथा हर्षस्थानमें न हो उपलक्षणसे लग्नदर्शी भी न हो वह निर्बल होताहै जो त्रैराशिक मुसल्लहसंज्ञक लघुस्थानमेंभी हो और लग्नको देखे तो बली होताहै, स्वगृहोच्च "महाधिकारी" स्वहद्दा मध्यम और स्वत्रैराशिक स्वमुसल्लह स्वल्पाधिकार कहेहैं यह सर्वत्र जानना ॥ २७ ॥ २ ॥

वसंतति०-स्वस्वामिनाशुभखगैःसहितंचदृष्टंस्वामीबलीचय-दितत्सहमस्यवृद्धिः ॥ यत्स्वामिनाशुभखगैश्चनयुक्तदृष्टंततस्सं-भवोनहि भवेदितिचिंत्यमादौ ॥ २८ ॥ ३ ॥

जो सहम अपने स्वामी शुभ यद्वा पापसे युक्त वा दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा सहमेश पूर्वोक्त प्रकारसे बली हो तो उस सह-

मकी वृद्धि होती है और जो सहम शुभग्रह तथा स्वस्वामीसे युक्त दृष्ट नहीं. वह सहम निर्बल होता है फल देनेकी सामर्थ्य उसको नहीं होतीहै॥ २८॥ ३॥

रथोद्ध०–अष्टमाधिपतिनायुतेक्षितंपापदृग्युतमथेत्थशालितम् ॥
संभवेऽपिविलयंप्रयातितत्तेनजन्मनिपुरेदमीक्ष्यताम् ॥२९॥४॥

जो सहम वर्षलग्नसे वा अपने स्थानसे अष्टमभावेशसे युक्त वा दृष्ट हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो यद्वा पूर्वोक्त अष्टमेशसे वा पापग्रहसे सहमेश इत्थशाली हो तो पूर्वोक्त शुभफलदातृलक्षणयुक्तभी हो तोभी निर्बल कहाता है फलदेनेकी सामर्थ्य नहीं होती है जन्ममें प्रथम इसी बलको देखलेना ॥ २९ ॥ ४ ॥

अनुष्टु०–आदौजन्मनिसर्वेषां सहमानांबलाबलम् ॥
विमृश्यसंभवोयेषांतानिवर्षेविचिंतयेत् ॥ ३० ॥ ५ ॥

सहमोंका प्रथम बल सहम बलादि सर्वप्रकारसे सहमोंका बलाबल जन्ममें तदुत्तरवर्षमें देखके जिनका बलाधिक हो फल देनेकी सामर्थ्य हो उन्हें वर्षमें स्थापन करना जिनको फल देनेकी सामर्थ्य न हो उन्हें छोडदेना॥ ३०॥ ५॥

अनु०–सबलेपुण्यसहमेधर्मवृद्धिर्धनागमः ॥
शुभस्वामीक्षितयुतेव्यत्ययेव्यत्ययंविदुः ॥३१॥६ ॥

अब सहमोंके फल कहे जाते हैं, प्रथम पुण्यसहमका फल यह है कि पुण्य सहम पूर्वोक्त लक्षणोंसे बलवान् हो तो धर्मकी वृद्धि धनका आगमन होता है शुभग्रह स्वस्वामियुक्त दृष्ट होनेमें भी ऐसा हीं फल है जो इनसे विपरीत पूर्वोक्त प्रकारसे बलरहित तथा पापयुत दृष्ट हो तो फल भी विपरीत अर्थात् धर्म धन हानि होगी॥ ३१ ॥ ६ ॥

अनु०–लग्नात्षष्ठाष्टरिःफस्थंधर्मभाग्ययशोहरम् ॥
शुभस्वामिदृशाप्रांतेसुखधर्मादिसंभवः ॥ ३२ ॥ ७ ॥

जो पुण्यसहम लग्नसे ६।८।१२। इन स्थानोंमें हो तो भाग्य (ऐश्वर्य) यशका हरण करताहै और शुभग्रह स्वस्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो तो सुख और

धर्मादि शुभ फलका संभव करता है, स्वस्वामी वा शुभसे युक्त दृष्ट सहम वर्षके उत्तरार्द्ध अर्थात् प्रवेशसे ६ महीने पीछे सौख्यादि फल देता है, जो पापादि युक्त दृष्टसे अशुभ फल है, वह वर्ष पूर्वार्द्धमें होता है ॥ ३३ ॥ ७ ॥

अनुष्टु०–पापयुक्तशुभदृष्टंचेदशुभंप्राक्ततःशुभम् ॥
शुभयुक्तंपापदृष्टमादौशुभमतत्परे ॥ ३३ ॥ ८ ॥

संसर्गसे स्वभाव गुण बदल जाताहै पुण्यादिसहम पापयुक्त और शुभ दृष्ट हो तो वर्षके पूर्वार्द्धमें अशुभ, उत्तरार्द्धमें शुभ फल देते हैं. जो शुभ युक्त और पाप दृष्ट हो तो पूर्वार्द्धमें शुभ फल उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देते हैं जो युक्त और दृष्टभी पापहीसे हो तो समस्त वर्षमें अशुभही फल होगा; जो शुभहीसे युक्त और दृष्टभी हों तो समस्त वर्षमें शुभही फल होगा ॥ ३३ ॥

अनु०–यत्राब्देपुण्यसहमंशुभंसोऽत्रशुभावहः ॥
अनिष्टेऽस्मिञ्छुभैर्नेतिपुण्यमादौविचारयेत् ॥ ३४ ॥९ ॥

जिस वर्षमें पुण्यसहम पूर्वोक्त विधिसे शुभ हो वह समस्तही शुभ होताहै और सहम अशुभ भी हों तो अनिष्टफल सहसा नहीं देसकते जिसमें पुण्य सहम (निर्बल) अशुभ है वह वर्ष अशुभही व्यतीत होता है. और सहम शुभ भी हो तो शुभ फल नहीं देते इस कारण पुण्यसहम सभी "जन्मवर्षमें" मुख्य विचार्य्यहै ॥ ३४ ॥ ९ ॥

अनु०–सूतौषष्ठाष्टरिःफस्थेऽब्देपापहतंपुनः ॥
पुण्यंधर्मार्थसौख्यघ्नंपत्यौदग्धेफलंतथा ॥ ३५ ॥ १० ॥

जन्ममें पुण्यसहम लग्नसे छठा आठवाँ वा बारहवाँ हो और वर्षमें पापयुत हो तथा सहमेश (दग्ध) अस्तंगत हो, तो धर्म, धन और सुखका नाश करता है ॥ ३५ ॥ १० ॥

अनु०–सहमान्यखिलानित्थंसूतौवर्षेविचिंतयेत् ॥
मांद्यारिकलिमृत्यूनांव्यत्ययादादिशेत्फलम् ॥ ३६ ॥ ११ ॥

उक्त प्रकारसे सम्पूर्ण सहम जन्म तथा वर्षमें विचारने पुण्यसहमके बलवान् होनेमें द्रव्यादिक लाभ होतेहैं, परंतु रोग और कलि झकटक मृत्यु इन सहमोंके बलवान् होनेमें विपरीत फल, उनके नामसदृश होताहै. यदि रोगादि पांच अनिष्ट सहम निर्बल अशुभफलदाता हों तो वर्षादिमें शुभ फल जानना ॥ ३६ ॥ ११ ॥

रथोद्ध०—कार्य्यसिद्धिसहमंयुतंशुभैर्दृष्टमूथशिलगंजयप्रदम् ॥
संगरेऽशुभपापदृष्टियुक्क्लेशतोजयउदीरितोबुधैः ॥३७॥१२॥

कार्य्यसिद्धि सहम शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा शुभग्रहोंसे मुथशिलकारी हो तो संग्राममें जय देता है. शुभयुत दृष्ट और शुभमुथशिली भी हो तो विशेषतर जय देता है जो दृष्ट युक्त वा मुथशिली शुभ और पापोंसेभी हो तो संग्राममें क्लेशसे जय देता है ऐसा ही विचार विवाहादिसहमोंमें करना. यद्वा कार्य्यसिद्धि हर किसी कार्य्यकी होती है ॥ ३७ ॥ १२ ॥

मंजुभा०—कलितस्त्रपापखगदृष्टिसंयुतंयादिपापमूथशिलगंकलेमृतिम् ॥ अथतत्रसौम्यसहितावलोकितेजयमेतिमिश्रदृशितेकलिव्यथे ॥३८ ॥ १३ ॥

कलि कलह सहम पाप शुभ दोनोंही से युक्त हो तथा पापग्रहसे मुथशिली हो तो कलहमें मरण होवे जो वही कलिसहम शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो थोडेही कलहसे जय होवे. जब पाप और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि तुल्य हो वा दोनोंहीसे युक्त हो तो कलह वा व्यथा परिश्रममात्र होती है जय वा पराजय परिणाममें कुछ भी नहीं ॥ ३८ ॥ १३ ॥

उपजा०—विवाहसद्माधिपसौम्यदृष्टयुतंशुभैर्मूथशिलंशुभातिम् ॥
कुर्य्याद्यदामिश्रसमेतदृष्टंकष्टादथक्रूरमृतीश्वरैर्न ॥ ३९॥ १४ ॥

विवाहसहम स्वस्वामी वा शुभग्रह युक्त वा दृष्ट हो और शुभग्रहके साथ मुथशिल करे तो विवाहप्राप्ति करेगा जो शुभ और पाप ग्रहोंसे युगपत् युक्त वा दृष्ट हो उपलक्षणसे मिश्रहीके साथ इत्थशाली हो तो विवाह प्राप्ति कष्टसे करेगा

जब पापहीसे युक्त दृष्ट और मुथशिली हो तो विवाह प्राप्ति नहीं होने देगा ॥ ३९ ॥ १४ ॥

उपजा०–यशोधिपेनैधनगेखलेनयुतेक्षितेसद्यशसोविनाशः ॥ पापार्जितस्यायशसोस्तिलाभोनष्टेजाक्षिस्यात्कुलकीर्त्तिनाशः ॥ ४० ॥ १५ ॥

यशसहमाधीश अष्टम स्थानमें हो और पाप युक्त वा दृष्ट हो तो अपने प्राप्ति किये यशका नाश होवे. किंच स्वयमर्जित महापातकोंमेंसे किसी एक पातक संबन्धी अयशका लाभ होवे जब यही यशसहमेश अष्टम और पापयुत दृष्ट होकर अस्तंगत भी हो तो अपने वंशसे चलाआया पितृ पितामहादिकोंका जो यश उसे नाश करता है अर्थात् अपने सारे वंशकी कीर्ति नाशक है ॥ ४० १५॥

उपजा०–शुभेत्थशालेशुभदृग्युतेवाबलान्वितेस्याद्यशसोभिवृद्धिः ॥ युद्धेजयोवाहनशस्त्रलाभःपापेसराफादयशोर्थनाशः ॥ ४१ ॥ १६ ॥

यशसहमेश शुभग्रहसे मुथशिली अथवा शुभदृष्ट वा युक्त हो तो यशकी वृद्धि होवे. उपलक्षणसे धर्मवृद्धि धनलाभभी होवे तथा संग्राममें जय, अश्वादि वाहन और धनुषादि शस्त्रोंका लाभ होवे जो यशसहमेश पापग्रहसे मुथशिली यद्वा शुभग्रहसे ईसराफी उपलक्षणसे नष्टबली हो तो अपयशवृद्धि और धननाश होवे ॥ ४१ ॥ १६ ॥

उपजा०–आशातदीशश्चषडष्टरिःफविवर्जितःसौम्ययुतेक्षितश्च ॥ स्याद्वांछितार्थांबरवाहनादिलाभःखलेक्षायुतितोतिदुःखम् ॥४२ ॥१७॥

आशासहम और इसका स्वामीभी ६ । ८ । १२ स्थानोंमें न हों तथा शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो इच्छानुकूल हिरण्यादि द्रव्य वस्त्र वाहन आदि और शस्त्रसे भूमिलाभ होताहै, जो दोनोंही पूर्ववर्जित स्थानोंमें हो तथा पापग्रह युक्त वा दृष्ट हों तो अतिदुःख और वांछितार्थनाश होवै ॥ ४६ ॥ १६ ॥

उ०जा०–मांद्याधिपःपापयुतेक्षितश्चपापःस्वयंरोगकरोविचिंत्यः ॥ चेदित्थशालोमृतिपेनमृत्युस्तदाभवेद्धीनबलेतिकष्टात् ॥ ४३ ॥ १८ ॥

रोगसहमेश आप पापग्रह हो तथा पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो वह रोगकर्त्ता जानना: पुनः लग्नसे अष्टमभावेशसे इत्थशालीभी हो तो मृत्युकरेगा, इसमें हीनबल हो तो मृत्यु भी अतिकष्टसे होगी बलवान् होनेमें अल्पकष्टसे मृत्यु होगी, इस प्रकार कष्टाधिक्यकी प्राप्ति होनेमें धर्मशास्त्रोक्त शांति करनी चाहिये जैसे उक्तभी है कि "क्लेशेषु शांतिरुक्ता ज्ञातव्या तत्र शास्त्रज्ञैः" इति ॥ ४३ ॥ १८ ॥

उपजा०—स्वस्वामिसौम्येक्षणभाजिमांद्येनाथेसवीर्य्येऽष्टषडंत्यवर्ज्यः ॥
रोगस्तदानैवभवेद्विमिश्रयुतेक्षितेस्वल्पभयमस्तिकिंचित् ॥ ४४ ॥ १९ ॥

मांद्यसहम अपने स्वामी वा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट पूर्वोक्त रीतिसे हो और छठा आठवां बारहवां न हो तो रोग नहीं होगा सुखी रहेगा जो सौम्य पाप दोनहूंसे युक्त दृष्ट होतो स्वल्परोगभय होगा जो वह सहमेश बली होकर शुभग्रहसे मुथशिलकारी होतो वाहनादिप्राप्ति भी होगी उपलक्षणसे रोग सहमेशका शुभग्रह मुथशिली भी ऐसाही होता है, यह रोग न होनेका योग सिद्ध होजावे तो समझना कि, पूरेतौरसे रोग होगा क्योंकि पूर्वमें लिख दिया है आचार्य्यने कि, "मान्द्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत्फलम्" ॥ ४४ ॥ १९ ॥

शार्दूलवि०—अर्थाख्यंशुभनाथदृष्टिसहितंद्रव्यागमात्सौख्यदं
पापैर्दृष्टयुतंचवित्तविलयंकुर्य्यात्तथापापयुक् ॥ सद्दृष्टंचशुभे-
त्थशालियदितत्पूर्वंधनंनाशयेत्पश्चादर्थसमुद्भवंचसुखसंव्य-
त्यासतोऽत्ययः ॥ ४५ ॥ २० ॥

अर्थाख्यसहम स्वस्वामी वा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो द्रव्यकी प्राप्ति करके सुख देता है, जो पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो द्रव्यका नाश करता है; शत्रुग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो शत्रुसंबंधी कर्मसे धननाश होता है, जो पापयुक्त और शुभदृष्ट भी हो और शुभग्रहके साथ इत्थशाली भी हो तो पूर्वसंचितद्रव्यका नाश करके पुनः अपने पुरुषार्थसे द्रव्यसंचय सुखसहित करता है, केवल पापयोग दृष्टिसे सर्वथा धननाश करता है ॥ ४५ ॥ २० ॥

अनु०—रिपुदृष्ट्यारिपोर्भीतितस्करादेर्धनक्षयः ॥
मित्रदृष्ट्यामित्रयोगाद्धनंमानोयशःसुखम् ॥ ४६ ॥ २१ ॥

सहमसहमेशपर शत्रुदृष्टि हो तो शत्रुभय और चोर आदिसे धनक्षय होता है, मित्रदृष्टि हो तो मित्रके संबंधसे धनप्राप्ति मानोदय यशलाभ और सुख होता है ॥ ४६ ॥ २१ ॥

इन्द्रव०—सत्स्वामिदृष्टंयुतमात्मजस्यलाभंसुखंयच्छतिपुत्रसद्म ॥
पापान्वितसौख्यखगेत्थशालीप्राग्दुःखदंपुत्रसुखाय पश्चात् ४७॥२२

पुत्रसहम स्वस्वामी शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो पुत्रसुख अर्थात् पुत्रोत्पत्ति और उत्पन्न पुत्रोंका सुख देता है, ऐसाही शुभ मुथशिलसेभी कहना. जो पुत्रसहम पापयुक्त और शुभ ग्रहसे इत्थशाली हो तो प्रथम पुत्रसंबंधी दुःख पश्चात् पुत्रसौख्य देता है; योगफल प्रथम दृष्टिफल पीछे होता है ॥ ४७ ॥ २२ ॥

इन्द्रव०—पापान्वितंपापकृतेसराफंनाशायपुत्रस्यगतौजसीशे ॥
सुतीशुतेशःसहमेश्वरोब्देपुत्रस्यलब्ध्यैशुभमित्रदृष्टः ॥ ४८॥२३ ॥

जो पुत्रसहम पापयुक्त वा दृष्ट हो और पापग्रहसे ईसराफी हो तथा पुत्रभावेश निर्बल अस्तंगत हो तो पुत्रनाश करता है, जन्मलग्नसे पंचमेश वर्षमें भी पंचमेश वा पुत्रसहमाधीश हो और शुभग्रह स्वस्वामि स्वमित्र युक्त दृष्ट हो तो पुत्रप्राप्ति करता है ॥ ४८ ॥ २३ ॥

वसंतति०—पित्र्यंसदीक्षितयुतं पतियुक्तदृष्टं तातस्ययच्छतिधनांबरमानसौख्यम् ॥ पत्यौगतौजसिमृतौखलमूसरीफेनाशः पितुश्चरगृहे परदेशयानात् ॥ ४९ ॥ २४ ॥

पितृसहम शुभग्रह वा स्वस्वामि युक्त वा दृष्ट और शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो पितृसंबंधी धन वस्त्र मान सुख देता है, जो पितृसहमेश अस्तादिसे निर्बल हो वा लग्नसे अष्टम स्थानमें हो पापग्रहसे मूसरीफी हो और

चरराशिमें हो तो पिता विदेशमें मरजावे, स्थिरराशिमें हो तो स्वदेशमें मरे ॥ ४९ ॥ २४ ॥

उपजा०-शुभेत्थशालेखलवेटयोगेगदप्रकोपःप्रथमंमहान्स्यात् ॥
पश्चात्सुखंविंदतिपूर्णवीर्येनाथेनृपान्मानयशोऽभिवृद्धिः ॥ ५० ॥२५ ॥

पितृसहम स्वस्वामीसे वा शुभग्रहसे इत्थशाली हो और पापग्रहसे युक्तभी हो तो वर्षके पूर्वार्द्धमें रोगवृद्धि होवे उत्तरार्द्धमें सुख होवे, जब पितृसहम स्वामी पूर्णवीर्य १५ विश्वासे अधिक बल होकर शुभस्थानमें हो तो राजासे मान तथा यशकी वृद्धि होवे, मातृसहममेंभी ऐसाही जानना ॥ ५० ॥ २५ ॥

रथोद्धता-बंधनाख्यसहमंयुतेक्षितंस्वामिनानहितदास्तिबंधनम् ॥
पापवीक्षितयुतेस्तुबंधनं पापजे मुथशिलेविशेषतः ॥ ५१ ॥२६॥

बन्धनसहम स्वस्वामी वा शुभग्रह युक्त दृष्टि हो तो बंधन (कारागार) आदिका भय नहीं होता, पापयुक्तवीक्षितसे तथा पापेत्थशालसे बंधन होता है यहभी फल विपरीतही जानना चाहिये ॥ ५१ ॥ २६ ॥

रथोद्ध०-गौरवाख्यसहमंयुतेक्षितं स्वामिनाशुभखगैः सुखाप्तये ॥
राजगौरवयशोम्बराप्तयः पापवीक्षणयुतेपदक्षतिः ॥ ५२ ॥ २७ ॥

गौरव सहम स्वस्वामी वा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो सुख प्राप्ति और राज्य गुरुता अर्थात् बडप्पन और यश तथा वस्त्रप्राप्ति होतीहै इत्थशाली शुभग्रहसेभी हो तो धन, वाहन, यश और सुख मिलते हैं जो पापग्रहसे युक्त दृ० वा इत्थशाली हो तो पद (अधिकार) तथा धननाश सौख्य नाश करता है ॥ ५२ ॥ २७ ॥

उपजा०-शुभाशुभैर्दृष्टयुतंखलैश्चेत्कृतेत्थशालंधनमाननाशम् ॥
पूर्वेविधत्तेचरमेशुभेत्थशालेसुखंवाहनशस्त्रलाभम् ॥ ५३ ॥ २८ ॥

गौरवसहमका फल और भी कहते हैं कि जो यह शुभ पाप दोनहूं प्रकारके ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो और पापग्रहसे इत्थशाली हो तो पूर्वार्धमें धन

तथा मानका नाश कर्त्ता है; उत्तरार्धमें शुभ फल देताहै, जो पाप शुभसे दृष्ट युक्त होकर शुभ ग्रहसे इत्थशाली हो तो वर्षपूर्वार्द्धमें शुभ उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देताहै सभी प्रकार मिश्र हो तो संपूर्णवर्षमें मिश्रही फल करता है, केवल इत्थशालीभी एक राशि साहित्यसे पूर्वार्धमें भिन्नराशि साहित्यसे उत्तरार्द्धमें शुभ फल सौख्य वाहन शस्त्रादि वा वस्त्रादि लाभ देताहै (वस्त्रलाभम्) ऐसा भी पाठहै ॥ ९३ ॥ २८ ॥

रथोद्ध०—कर्मभावसहमाधिपाःशुभैःस्वामिनामुथशिलाबलान्विताः ॥
हेमवाजिगजभूमिलाभदाःपापदृष्टियुतितोऽशुभप्रदाः ॥ ९४ ॥ २९ ॥

कर्मभाव, कर्मभावेश, तथा कर्मसहम, कर्मसहमेश, ये चारों प्रागुक्त रीतिसे बलवान्हों अर्थात् स्वस्वामी शुभग्रह युक्त दृष्ट तथा शुभग्रहके साथ इत्थशाली हों तो सुवर्ण घोडा हाथी भूमि इनका लाभ देते हैं जो पापयुक्त दृष्ट वा पापग्रहसे इत्थशाली हों तो द्रव्यका नाशादि अशुभ फल देते हैं ॥ ९४ ॥ २९ ॥

शालि०—दग्धावक्राःकर्मवैकल्यदास्तेयुक्तादृष्टाःसौरिणातोविशेषात् ॥
राज्यभ्रंशःकर्मनाशश्चराजकर्मेशौचेन्मूशरीफौखलेन ॥ ९५ ॥ ३० ॥

पूर्वोक्त कर्मभाव सहमाधिपति पापग्रह युक्त वा दृष्ट अथवा पापोंसे इत्थशाली होतो कर्मकी विकलता (नाश) देताहै, यद्वा शनिसे युक्त वा दृष्ट होतो विशेष करके कर्मका नाश करताहै, ऐसे ही दग्ध (पापकर्त्तर्य्यादिसे उपद्रुत) तथा वक्र (विपरीत गति) होनेमें भी फल देतेहैं तथा राज्यसहमेश, कर्मभावेश, राज्यभावेश, कर्मसहमेश, जो पापग्रहसे मुथशिली हों उपलक्षणसे क्रूरयुक्त दृष्ट हो तो राज्यनाश पापमुशरीफसेभी यही फलहैं तथा सुवर्णादि द्रव्यका नाश करते हैं शुभ पापसे तुल्य योग दृष्टि वा मूशरीफ हो तो फल बलाबलके तारतम्यसे विचारके कहना इसीप्रकार माता आदि सहमोंका विचार करना ॥ ९५ ॥ ३० ॥

अनु०—उपदेष्टागुरुर्ज्ञानंविद्याशास्त्रंश्रुतिस्मृती ॥
मोहाजाड्यंबलंसैन्यमंगंदेहोजलंद्युतिः ॥ ९६ ॥ ३१ ॥

किसी २ सहमोंके पदार्थसे अर्थ भ्रम होता है. जैसे गुरु, गौरव, कर्म, राज, बल, वपु इत्यादि इसके सन्देह निवारणार्थ कहते हैं कि, गुरु उपदेश करनेवाला, विज्ञानविद्यामात्र विषयिक बुद्धि विद्या (वेदन) जानना, शास्त्र श्रुति स्मृति ज्ञान, जाड्य अज्ञान ग्रन्थविस्मरणादि, बल सेना, सामर्थ्य शारीरादिक बल, देह हस्तपादादि पिंड देह, जल कांति, हीरकादि मणि, कांतिवत्, जलपथ जलमार्ग, इत्यादि इनके पर्याय हैं ॥ ५६ ॥ ३१ ॥

अनु०–गुरुतामंडलेशत्वंगौरवंमानशालिता ॥
निग्रहानुग्रहविभूराजाछत्रादिलिंगभाक् ॥ ५७ ॥ ३२ ॥

गुरुता, मण्डलेशत्व, सामान्यराजा गौरव, श्रेष्ठ, मानी, राजा, निग्रह कारागार, बंधन, सामर्थ्य, तथा अल्पानल्प देश, द्रव्य, दान, सामर्थ्य, तथा छत्र चामरादि राजचिह्नधारीको राजा कहते हैं ॥ ५८ ॥ ३३ ॥

अनुष्टु०–माहात्म्यंमन्त्रगांभीर्य्यंधृतिबुद्ध्यादिशालिता ॥
सामर्थ्यंदेहजाशक्तिःशौर्य्ययत्नोरिनिग्रहे ॥ ५७ ॥ ३२॥

माहात्म्य मन्त्र गांभीर्य्यका नाम है धृतिनाम बुद्धिमानीका है सामर्थ्य शरीरशक्तिको और शौर्य्य शूर वा वीरत्व शत्रुनिग्रहत्व सामर्थ्यको कहते हैं ॥ ५८ ॥ ३३ ॥

अनुष्टु०–आशेच्छोक्तामातिधर्म्याश्रद्धावंदःपराश्रयः ॥
पानीयपतनं वृष्टिर्जलेऽकस्मान्निमज्जनम् ॥ ५९ ॥ ३४॥

आशा इच्छाका नाम है दिशाकाभी नाम है, श्रद्धा, धर्म कार्य्यकी मतिको कहते हैं तथा यहां विश्वासताका अर्थ लेना मुख्य है. वन्दनाम पराश्रयका है पानीयपतनका प्रयोजन वृष्ट्यादि ऊपरसे गिरनेवाला पानीका है जलमें डूबनेकाभी अर्थ है ॥ ५९ ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०–आधिव्याधीतापमांद्येसपिण्डाबंधवः स्मृताः ॥
सत्यालीकंवणिग्वृत्तिराधानंप्रसवः स्मृताः ॥ ६० ॥ ३५ ॥

आधि मानसी व्यथा, व्याधी रोग, ताप सन्ताप, ये सब मांद्यके पर्याय हैं,

बांधव, सपिण्ड सातपुरुष पर्य्यन्तका नाम है, सत्यालीक वणिग्भावका पर्य्याय है अस्त्र गर्भाधान सन्तानोत्पत्तिका नाम है ॥ ६० ॥ ३५ ॥

अनुष्टु०–दासत्वं परकर्मोक्तमन्यत्स्पष्टंस्वनामतः ॥
निरूप्याणियथायोग्यंकुलजातिस्वरूपतः ॥ ६१ ॥ ३६ ॥

परकर्म दासत्वका पर्य्याय है इतने सहमोंके नाम द्व्यर्थ होनेसे पर्य्याय कहे गये शेष सहमोंके प्रकट नाम हैं जैसे पुण्य विवाह आदि यथायोग्य कुल, तथा जाति विचारके फल कहना ॥ ६१ ॥ ३६ ॥

अनुष्टु०–शुभयोगेक्षणात्सौख्यंपत्युर्वीर्य्यानुसारतः ॥
दारिद्र्यमृतिमांद्यारिकलिषूक्तोविपर्य्ययः ॥६२॥ ३७ ॥

सम्पूर्ण सहम शुभग्रहके दृष्टि तथा योगसे सहमेशके वीर्यानुसार शुभफल देते हैं परन्तु दारिद्र्य, मृत्यु, मांद्य, कलह ये ४ सहम विपरीत फल देते हैं अर्थात् शुभयोगेक्षण, तथा स्वामी बलवान् होनेमें भावसदृश अशुभ फल और पापयोग दृष्टि तथा सहमेशके निर्बल होनेमें नाम गुणसे विपरीत शुभ फल देते हैं ॥ ६२ ॥ ३७ ॥

अनुष्टु०–प्रश्नकालेपिसहमंविचार्य्यंप्रष्टुरिच्छया ॥
सर्वेषामुपयोगोत्राचित्रंपृच्छंतियज्जनाः ॥ ६३ ॥ ३८ ॥

जिसका जन्मपत्र हो तो प्रथम जन्मके तदुत्तर वर्षके सहम विचारने जन्मपत्र जिसका न हो उसके प्रश्न लग्नसे पुण्यादि सहम विचार करना (यतः) प्रष्टा अनेक प्रकार प्रश्न पूँछते हैं सहमोंसे सभी प्रकार कहदेना ॥ ६३ ॥ ३८ ॥

वसंत०–आसीदसीमगुणमंण्डितपाण्डिताढ्योव्याख्यद्भुजंगपदवीं श्रुतिवित्सुवृत्तः ॥ साहित्यरीतिनिपुणोगणितागमज्ञश्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥ ६४ ॥ ३९ ॥

इस तन्त्रकी समाप्तिमें ग्रंथकर्त्ता अपने नामादि कहताहै कि साधुत्व शास्त्र पांडित्यादि निःसीम गुणोंसे भूषित तथा पंडितोंमें श्रेष्ठ तथा शेषनागके वाणी पातंजल्यादि महाभाष्यकी व्याख्या करनेवाला तथा वेदज्ञान जाननेवाला तथा शुभाचरण युक्त और गणितादि ज्योतिश्शास्त्र पारंगम साहित्य काव्यादिकी

रीतिमें निपुण होरहा ऐसा चिन्तामणि नामा दैवज्ञ गर्गमहर्षिके कुलका भूषण हुआ ॥ ६४ ॥ ३९ ॥

उपजा०-तदात्मजोनंतगुणोऽस्त्यनंतोयोऽधोक्सदुक्तिकिलकामधेनुम् ॥ संतुष्टयेजातकपद्धतिंचन्यहृपयद्दुष्टमतंनिरस्य ॥ ६५ ॥ ४० ॥

तिसका पुत्र अगणित गुणशाली अनंत नामा दैवज्ञ है जिसने सुन्दर वाणी युक्त गणितरूपी कामधेनु जैसी कामधेनुका दोहन किया, अर्थात् कामधेनुग-णितकी टीका की तथा गुणज्ञ सज्जनोंके प्रसन्नतार्थ जन्मपद्धति सम्प्रदायके अनभिज्ञ दुष्ट जनोंके दुष्ट मनको नाश करके गणितग्रन्थविशेष जातकपद्धतिभी निर्मित करी ॥ ६५ ॥ ४० ॥

इंद्रव०-पद्मांबयासावितनोविपश्चिच्छ्रीनीलकंठःश्रुतिशास्त्रनिष्ठः ॥ विद्वच्छिवप्रीतिकरंव्यधात्तंसंज्ञाविवेकंसहमावतंसम् ॥ ६६ ॥ ४१ ॥

ऊपर अपने पिताका नाम अनन्तज्योतिर्वित् ग्रन्थकर्त्ताने प्रकट किया पुनः पद्मानामा अपनी मातासे उत्पन्न पण्डित वेद तथा शास्त्र व्याकरण मीमांसा ज्योतिष तन्त्रादि पारंगम श्रीनीलकंठ नामा दैवज्ञने संज्ञाविवेक नामा ताजिक-ग्रंथका एक तन्त्र जिसमें सहमरूप भूषण है ऐसा शिवनामा पाठक पंडित महाराष्ट्रदेशीय ब्राह्मणकी प्रीति करनेवाला यद्वा, विद्वत् भूत भविष्यवर्त्तमान त्रिकालज्ञ सर्वांतर्यामी शिव सकलदुःखापनोदनपूर्वक कल्याण करणशील श्री-महादेवजीकी प्रीति करनेवाला यह ग्रन्थ निर्माण किया ॥ ६६ ॥ ४१ ॥ इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां सहमविवेको नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

श्रीनीलकंठचाविदधान्महीधरस्संज्ञाविवेकस्यमतिप्रवर्द्धिनीम् ॥
माहीधरींसज्जनतोषकारिणींभाषाविवृत्तिंसुमनःप्रसादिनीम् ॥ ४२ ॥

श्रीनीलकंठ दैवज्ञकृत ताजिकनीलकंठीके संज्ञाविवेक नाम एक प्रथम तंत्र की बुद्धि बढानेवाली तथा सज्जनोंको सन्तोष करनेवाली सद्बुद्धिपाठकोंके मन प्रसन्न करनेवाली माहीधरी नाम भाषाटीका महीधरने रची ॥ ४२ ॥

इति महीधरकृतनीलकंठीभाषाटीकायां प्रथमं संज्ञातंत्रम् ।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ नीलकंठीद्वितीयतंत्रप्रारम्भः ।

उपेंद्रवज्राछन्दः—स्वस्वाभिलाषंनहिलब्धुमीशानिर्विघ्नमीशानमुखाः सुरौघाः ॥ विनाप्रसादंकिलयस्यनौमितंढुंढिराजंमतिलाभहेतुम् ॥ १ ॥

ग्रन्थकर्त्ता आचार्य्य नीलकण्ठ दैवज्ञ ताजिकनीलकंठी द्वितीय फलतंत्र-प्रारम्भमें निर्विघ्ननार्थ गणेशजीको प्रणाम करताहै कि, जिसके कृपा विना महादेव प्रभृति देवसमूह अपने अपने अभिलाषोंको निर्विघ्नतासे पानेको समर्थ नहीं हैं ऐसे ढुंढिराज गणेशको सद्बुद्धिप्राप्तिके लिये प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥

रथोद्धता—जातकोदितदशाफलंयतःस्थूलकालफलदंस्फुटंनृणाम् ॥
तत्रनस्फुरतिदैवविन्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात् ॥ २ ॥

जातकोंमें दशाफल बहुत कालपर्यंत एकही फलदाता मनुष्योंको कहेहैं यहां ज्योतिषीकी बुद्धि स्फुरित नहीं होती जैसे शुक्रकी दशा २० वर्ष पर्य्यंतकी कहीहै तो इतने समय पर्य्यंत एकहीसा किसीकोभी नहीं रहता इस लिये सौर वर्ष मात्र समयावधिवाला सूक्ष्म फलविचार मैं प्राचीन ताजिकके अनुसार कहताहूं ॥ २ ॥

(गाथा) तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतःसमः ॥
एकैकराशिवृद्ध्याचेत्तुल्योंशाद्यैर्यदारविः ॥
तदामासप्रवेशोद्युप्रवेशश्चेत्कलासमः ॥ ३ ॥

जन्म कालका सूर्य्य स्पष्ट राश्यादि पूरा वही जब मिले वह वर्ष प्रवेशका समय होताहै, उसी स्पष्ट एक राशिमात्र जोडके अंशादि वही स्थापन करके मास प्रवेशका सूर्य्य स्पष्ट होताहै तथा इसी स्पष्टमें एकएक अंश जोडके जिस महीनेका दिन प्रवेश करना है उसकी राशि उसी महीने लौं रखके तथा कला विकला पूर्ववतही स्थापन करके दिनप्रवेश होता है । इस सूर्यसे स्पष्ट

लग्नस्पष्टसे इष्टकाल निकालनेका "उदाहरण" जन्मकालका सूर्य स्पष्ट ० १८। ४२। ३१ है: संवत् १९४३ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३। ५४ वर्ष प्रवेश३८ में भी सूर्य स्पष्ट यही० । १८। ४२। ३१ है अब इससे लग्नस्पष्ट और लग्नस्पष्टसे इष्टकाल लेनाहै सूर्यस्पष्टसे लग्नस्पष्टकी विधि उदाहरणसहित प्रथम मज्ञातंत्रके २१। २२। २३ श्लोककी टीकामें प्रकट लिखीहै. सूर्य्यस्पष्टसे इष्टकालके लिये ग्रहलाघवका श्लोकार्ध "अर्कभोग्यस्तनोभुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोभीष्टकालोभवेत् ॥" यह है, इसके क्रमसे लग्नस्पष्टसे इष्टघटी साधन होताहै, "उदाहरण" सूर्य स्पष्ट राश्यादि० ।१८। ४२।३१ लग्न स्पष्ट ३। १०। २७। ३ सायन सूर्य१। ११। २६।३१ अंशादि ३० में घटायके भोग्यांश १८। ३३। २९ हुये, ३० से उद्धृत करनेपर भोग्य काल १५०। १९। १२ हुवा, सायन लग्न ४। ३। ११। ३३ सोदयसे गुनके ३० से भाग दिया तो भुक्तकाल ३७। ४०। ४५ हुवा, अर्क भोग्य काल १५०। १९। १२ में जोड दिया १८७। ५९। ५७ अब सूर्य और सायन लग्न के बीच जितने लग्न हैं उनके स्वदेशीय खंड जोडने हैं यहां मिथुन ३०० कर्क ३४६ ये दो जोड दिये तो ८३३। ५९। ५७ हुवे इनमें ६० से भाग देकर लब्धि १३ घटी शेष ५३पला और विशेष विपलभी ५९।५७ जानना अर्द्धाधिक्ये रूपम् १ के प्रमाणसे १३। ५४ यह इष्टकाल होगया जो किसी कारण इष्टकाल खोगया हो और लग्न स्पष्ट सूर्य स्पष्ट हो तो ऐसेही इष्ट निकाललेना यह प्रसंगसे लिख दियाहै ॥ ३ ॥

वसंतति०–तात्कालिकास्तुखचराः सुधिया विधेयाः स्पष्टा विलग्नसुखभावगणो विधेयः ॥ वीर्यं तथोक्तविधिना निखिलग्रहाणामब्दाधिपस्यविधयेकथयामियुक्तिम् ॥ ४ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहताहै कि प्रथमोक्त प्रकारसे तात्कालिक ग्रह स्पष्ट लग्नादि भाव स्पष्ट करके सद्बुद्धिमान् ज्योतिषीने ग्रह तथा भावका बल उस प्रकार सभीका

करके वर्षेश नियत करना इसके विधिनिमित्त आगे युक्ति कहताहूं ॥ ४ ॥

रथोद्धता–जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुंथहाधिप इतित्रिराशिपः ॥
सूर्य्यराशिपतिरह्निचंद्रमाधीश्वरो निशि विमृश्यपंचकम् ॥ ५ ॥

कि जन्मलग्नका स्वामी १ तथा वर्ष लग्नका स्वामी २ मुंथराशिका स्वामी ३ त्रिराशीश, (त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रेत्यादिसे) ४ और। दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशीश रात्रिका वर्ष प्रवेश हो तो चंद्र राशीश ५ ये पांच अधिकारी हैं इनकी विधि पूर्व संज्ञातंत्रमें कहीहै ॥ ५ ॥

उपजाति–बलीयएषांतनुमीक्षमाणस्सवर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ॥
नैवाब्दपोदृष्टयतिरेकतः स्याद्बलस्यसाम्ये विदुरेवमाद्याः ॥ ६ ॥

उक्त प्रकार पंचाधिकारियोंको स्थापन करके इनका द्वबल पंचवर्गी बल देखके, जो ग्रह बलसे अधिक हो तथा लग्नकोभी देखे तो वह वर्षेश होताहै, बलाधिक हो और लग्नको न देखे तो वर्षेश नहीं होता, बलाधिककी दृष्टिभी पूर्ण हो तो वही होगा इसके अभावमें इससे न्यून बली तथा इससेभी न्यून-बली दृष्टि विशेष वर्षेश होताहै, जो वर्षमें सभी वा २ तुल्यबली हों तो जिसकी दृष्टि अधिक हो वही होगा, लग्नपर दृष्टि जिसकी नहीं है वह बलाधिक हो तौभी वर्षेश नहीं होताहै ॥ ६ ॥

उ०जा०–दृगादिसाम्येप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपःस्यान्मुथहेश्वरस्तु ॥
पंचापिनोचेत्तनुमीक्षमाणावीर्याधिकोब्दस्याविभुर्विचिंत्यः ॥ ७ ॥

जो पंचाधिकारियोंमें सभीकी दृष्टि लग्नपर बराबर हो तथा बलवान्भी सभी तुल्य हों यद्वा (हीनबलःशरोनः) इत्यादिसे सभी हीनबल हों तो मुंथाराशिपति वर्षेश होताहै, जो पंचोंमें कोई लग्नको न देखे तो बलाधिक ग्रह वर्षेश होताहै जो लग्नपर दृष्टि पांचोंकी पूर्णही हो तो उनमेंसे बलाधिक वर्षेश जानना, कोई कहते हैं कि; पांचोंमें बल तथा दृष्टि पूर्ण कोई न हो तो वर्ष लग्नेश राजा होताहै, किसीका मत है कि ऐसी प्राप्तिमें जिसके स्वोच्च गृह नवांश द्रेष्काण हद्दादि बहुत अधिकार हैं वह राजा होगा, किसीका मत है कि पांच अधिकारियोंमें जिसके

दो तीन वा चार अधिकार मिलेहों वह राजा होताहै. इतने मतोंमें प्रमाणभी अन्यग्रन्थोंसे है, इनमें भी जिसका बल यद्वा दृष्टि अनेक हो वही वर्षराजा करना ॥ ७ ॥

उपजा०–बलादिसाम्येरविराशिपोह्निनिशींदुराशीडितिकेचिदाहुः ॥ येनेत्थशालोब्दविभुःशशीसवर्षाधिपश्चंद्रभपोऽन्यथात्वे ॥८॥

किसीका मत है कि बल तथा दृष्टिके तुल्य पांचोंके होनेमें दिनका वर्ष हो तो सूर्य्यराशीश रात्रिका वर्ष हो तो चन्द्रराशीश राजा करना. पूर्वोक्त प्रकारोंसे चंद्रमा वर्षेश हो तो यह वर्षेश न करना, पांच अधिकारियोंमेंसे जिसके साथ यह इत्थशाली हो उसे वर्षेश करना जब किसीके साथ इत्थशाल भी न हो तो जिस राशिमें चन्द्रमा बैठाहै उसके स्वामीको वर्षेश करना, जो चंद्रमा कर्कका हो तो चंद्रराशीश चंद्रमाही हुआ, तब तो चन्द्रमाही वर्षेश करना पडा इसी हेतु आचार्य्यने आगे चन्द्रमा वर्षेशके फल भी लिखेहैं. नहीं तो चंद्रमा राजा न होता तो इसका राजत्व फलभी नहीं होनाथा ॥ ८ ॥

वसंतति०–अब्दाधिपोव्ययषडष्टमभिन्नसंस्थो लब्धोदयोब्दजनुपोऽसदृशो बलेन ॥ निःशेषमुत्तमफलंविदधातिकायेनैरुज्यराज्यबललब्धिमतीवसौख्यम् ॥ ९ ॥

अब वर्षेशका सामान्य फल कहतेहैं कि, वर्षेश व्यय १२ षट् ६ वा अष्ट ८ इन स्थानोंमें न हो तथा जन्मवर्षमें उदयी हो अस्तंगत न हो बलमें पूर्ण हो यद्वा जन्ममें तथा वर्षमेंभी बली हो तो संपूर्ण उत्तम फल देताहै तथा शरीरमें नीरोगिता कुलानुमान राजसुख और बल तथा अतिसौख्य देताहै ॥ ९ ॥

अनु०–बलपूर्णेब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् ॥
अधमे दुःखशोकारिभयानि विविधाः शुचः ॥ १० ॥

वर्षेश पूर्वोक्त गणितागत बलसे पूर्ण बली हो तो शुभ फल पूर्ण देताहै मध्यबली हो तो मध्यम अर्थात् शुभ न अशुभ और अधम बली हो तो

रोगादि दुःख तथा स्वजन वियोगादि शोक शत्रुभय और नानाप्रकारकी चिंता उत्पन्न करताहै ॥ १० ॥

वसंततिल०—सूर्य्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थलाभः कुलोचितविभूः परिवारसौख्यम् ॥ पुष्टं यशो गृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा शत्रुर्विनश्यति फले जनिखेटयुक्तया ॥ ११ ॥

सूर्य उत्तम बली होकर वर्षेश हो तो कुलानुमान राज्य तदीय सुख और पुत्र तथा धनलाभ होवै कुलानुसार प्रभुता और कुटुंबका सौख्य मिले शरीरमें पुष्टता होवै यश बढे गृहसंबंधी सौख्य होवै, अनेक प्रकारकी प्रतिष्ठा बढे शत्रुनाश होवे इतने फल जन्मकेभी स्वोच्च गृहादि उत्तम बली होनेमें होता है जन्मका हीन बली हो तो फल पूरे नहीं होते, मिश्रतामें मिश्रही फलभी होतेहैं ॥ ११ ॥

वसंतति०—मध्ये रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं स्वल्पं सुखं स्वजनतोपि विवादमाहुः ॥ स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशता ऽपि देहे भीतिर्नृपान्मुथशिलेऽन्शुभे न चेत्स्यात् ॥ १२ ॥

सूर्य मध्य बली होकर वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलका फल मध्यम होता है सुख थोडा होताहै और अपने मनुष्योंसे कलहभी कराता है, तथा स्थान वा पदसे भ्रष्ट हो जाना सुख न मिलना शरीरपीडा होजाना राजासे भय होना, और इतने फल होतेहैं परंतु यह सूर्य शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो उत्तम बलोक्त फल होतेहैं ॥ १२ ॥

वसंतति०—सूर्य्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेशयानं धनक्षयशुचोऽरिभयं च तंद्रा ॥ लोकापवादभयमुग्ररुजातिदुःखं पित्रादितोपिनसुखंसुतमित्रभीतिः ॥ १३ ॥

सूर्य्य बलरहित होकर वर्षेश हो तो विदेशगमन तथा धननाश चिन्ता शत्रुभय तंद्रा (आलस्य सहित अर्द्धनिद्रा) होवे, तथा संसारमें अपवाद (झूंठे कलंककी भय) होवै, उग्ररोग उत्पन्न और अति दुःख होवै पिता माता आदिसेभी सुख न मिलै, तथा पुत्र और मित्रोंसेभी भय होवै ॥ १३ ॥

अनु०-चंद्रेऽब्दपे मुथाशिलं येनासावब्दपे नचेत् ॥
कंबूलमिन्दुना जन्म निशि वर्षं तदोत्तमम् ॥ १४ ॥

चंद्रमाको वर्षेशप्राप्तिमें जिसके साथ वह मुथशिल करता हो वह वर्षेश होताही है परंच उसके साथ चंद्रमा यदि उत्तमादि भेदसे कंबूल करे और रात्रिका वर्षप्रवेश हो तो यह ग्रह हीनबलीभी हो तौभी वर्षमें उत्तमही फल देता है. पूर्ण बली वह ग्रह हो तो क्याही कहना पडता है अर्थात् अत्युत्तम फल देता है जो दिनका वर्ष हो तो सामान्य फल जानना ॥ १४ ॥

व०ति०-वीर्यान्विते शशिनिवित्तकलत्रपुत्रमित्रालयादिवि वि-धंसुखमाहुरार्याः ॥ स्रग्गंधमौक्तिकदुकूलसुखानि भूतिर्लाभः कुलोचितपदस्य नृपैःसखित्वम् ॥ १५ ॥

चंद्रमा जब किसीके साथ इत्थशाली न होकर वर्षेश पूर्वोक्त विधिसे होही जावै तो उत्तम बल होनेमें धन स्त्री पुत्र मित्र गृहादि अनेक प्रकारके सुख देताहै ऐसे श्रेष्ठजन कहतेहैं. तथा शृंगारी वस्तु माला चंदन मृगमदादि सुगंधि मोती वस्त्र आदिकसे सुख देताहै. ऐश्वर्य्य, लाभ तथा कुलानुमान अधिकार देताहै और राजाओंसे मैत्री होतीहै ॥ १५ ॥

व०ति०-वर्षाधिपे शशिनि मध्यबले फलानि मध्यान्यमूनि रिपुतासुतमित्रवर्गैः ॥ स्थानांतरे गतिरथो कृशता शरीरे श्लेष्मोद्भवश्च यदि पापकृतेसराफः ॥ १६ ॥

चंद्रमा वर्षेश मध्य बली हो तो उत्तम बलोक्त फल सभी मध्यम होतेहैं तथा पुत्र और मित्रवर्गसे शत्रुता होतीहै एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन और शरीरमें पीडा होतीहै. जो पापग्रहके साथ ईसराफ योगभी करता हो तो श्लेष्मविकारसे क्लेश भी देताहै ॥ १६ ॥

व०ति०-नष्टेऽब्दपे शशिनिशीतकफादिरोगश्चौर्य्यादिभिः स्वजनविग्रहमप्युशंति ॥ दूरेगतिः सुतकलत्रसुखात्ययश्च स्यान्मृत्युतुल्यमतिहीनबले शशांके ॥ १७ ॥

नष्टबली चंद्रमा वर्षेश हो तो शीत तथा कफ आदिक रोग हों चोर ठग आदिसे भय हो और अपने मनुष्योंमें कलहभी कहतेहैं दूर गमन होवै पुत्र वा स्त्रीका सुख नष्ट होवै और यह अतिहीनबली हो तो शीतकफादि रोगोंसे मृत्यु समान कष्ट होताहै ॥ १७ ॥

व० ति०—भौमब्दपे बलिनिकीर्त्तिजयारिनाशः सेनापतित्वरणनायकता प्रदिष्टा ॥ लाभःकुलोचितधनस्य नमस्यता च लोकेषु मित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम् ॥ १८ ॥

बलवान् मंगल वर्षेश हो तो कीर्त्ति बढै शत्रुसे जीत मिले तथा शत्रुनाश होवे सेनापतिका अधिकार तथा रणमें श्रेष्ठताभी होवे है और कुलउचित धनकी प्राप्ति होवै. संसारमें साधारण मनुष्योंसे नमस्कार प्रणाम करनेके योग्य होवे मित्र पुत्र धन स्त्रीका सौख्य मिलै ॥ १८ ॥

व० ति०—मध्येब्दपेवनिसुते रुधिरस्रुतिश्चकोपोधिकोऽझकटशस्त्रहतिक्षतानि ॥ स्वामित्वमात्मगणतो बलगौरवं च मध्यं सुखं निखिलमुक्तफलं विचिंत्यम् ॥ १९ ॥

मध्यबली मंगल वर्षेश हो तो शरीरसे किसी प्रकार रुधिर गिरै क्रोध बहुत आवै, शस्त्रकी चोट लगनेसे घाव होवैं और अपने जनोंमें स्वामित्व तथा बल और गुरुता मिलै सौख्य मध्यम होवे इस प्रकारका कहा हुआ फल मध्यबलमें मध्यमही विचारना ॥ १९ ॥

व० ति०—हीनेब्दपेऽसृजिभयं रिपुतस्कराग्निलोकापवादभयमात्मधिया विनाशः ॥ कार्य्यस्य विघ्नमतिरोगभयं विदेशयानं क्षयोपनयतो गुरुदृष्ट्यभावे ॥ २० ॥

हीनबली मंगल वर्षेश हो तो शत्रु चोर और अग्निसे भय होवे झूंठा कलंक लगनेका भय होवे; और अपनीही बुद्धिसे वस्तु वा कार्यका नाश होवे तथा कार्य्यमें विघ्न होवे, बहुधा रोगभय तथा परदेशगमन होवे और उद्धतपनसे धन एवं कार्यादिक्षय होवे; परंतु इतने फल ऐसे मंगलपर बृहस्पतिकी दृष्टि न होनेमें होतेहैं, गुरुकी दृष्टि होनेमें सभी शुभफल कहेहैं ॥ २० ॥

वसंतति०-सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवादलेख्यसच्छास्त्रसद्व्यव-हृतौ विजयोऽर्थलाभः ॥ ज्ञानं कलागणितवैद्यभवं गुरुत्वं राजा-श्रयेण नृपता नृपमंत्रिता वा ॥ २१ ॥

बुध पूर्ण बली वर्षराजा हो तो विवादमें तथा लिखनेके कर्मसे और शुभ शास्त्र शुभ व्यवहारसे विजय तथा धनलाभ होवे. मंत्रादि कला वैद्यत्व गणित-शास्त्र, इनसे गौरवता मिले, ज्ञान होवे और राजाके आश्रयसे राज्य मिले अथवा राजमंत्रित्व मिले ॥ २१ ॥

वसंतति०-अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्य्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाध्वयानम् ॥ वाणिज्यवर्त्तनमथात्मजमित्रसौख्यं सौम्येत्थशालवशतोऽपरथानसम्यक् ॥ २२ ॥

मध्यबली बुध वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलीका फल समस्त मध्यम होता है और मार्ग चलना पडताहै. व्यापार तथा पुत्रमित्रोंका सुख होताहै परंतु शुभ-ग्रहसे इत्थशाली हो तो उक्तफल है अन्यथा अशुभ फल देताहै ॥ २२ ॥

वसंतति०-सौम्येऽब्दपेऽधमबलेबलबुद्धिहानिर्धर्म्मक्षयः परिभवो निजवाक्यदोषात् ॥ निक्षेपतो विपदतीव मृषैव साक्ष्यं हानिः परव्यवहृतेः सुतवित्तमित्रैः ॥ २३ ॥

अधम बली बुध वर्षेश हो तो बल तथा बुद्धिकी हानि धर्मका क्षय होवे तथा अपनेही वचनसे अपमान पावे इत्यादि निक्षेप (निधानसे) विपत्ति बहुत होवे झूँठी साक्षी (गवाहीमें) कठिनाई आनपडे पराये व्यापारमें अपनी धन हानि और पुत्र मित्र धनकीभी हानि होवे ॥ २३ ॥

व०ति०-जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं धर्मोगुणग्राहिलता धनकीर्तिपुत्राः ॥ विश्वास्यताजगति सन्मतिविक्रमाप्तिर्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमप्यारिघ्नम् ॥ २४ ॥

बृहस्पति उत्तम बली वर्षेश हो तो कुटुंबका सुख तथा धर्म होवे शौर्यादि गुणोंका आग्रह होवे अर्थात् ये गुण मिलें धन यश और पुत्र प्राप्ति होवे संसा-

रमें सभी विश्वास माने अच्छी बुद्धि होवे पाक्रमसिद्धि तथा निधि वस्तु मिले राजासे गुरुता मिले, शत्रुनाश होवे ॥ २४ ॥

वसंतति०-अब्दाधिपे सुरगुरौ किलमध्यवीर्य्ये स्यान्मध्यमं फलमिदं नृपसंगमश्च ॥ विज्ञानशास्त्रपरताप्यशुभेसराफे दारिद्र्यमर्थविलयश्चकलत्रपीडा ॥ २५ ॥

मध्यबली बृहस्पति वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलके फल मध्यम होतेहैं. तथा शुभ ग्रहसे इत्थशालभी करता हो तो राजाका संगम होगा. ज्ञान तथा शास्त्रमें तत्पर रहताहै जो पापग्रहसे ईसराफ योग कर्त्ता हो तो दरिद्र और धननाश और स्त्रीसे कष्टभी करेगा ॥ २५ ॥

वसंतति०-जीवेऽब्दपेऽधमबले धनधर्मसौख्यहानिस्त्यजंति सुतमित्रजनाः सभार्य्याः ॥ लोकापवादभयमाकुलताऽतिकष्टवृत्तिस्तनौ कफरुजोरिपुभीः कलिश्च ॥ २६ ॥

अधमबली वर्षेश बृहस्पति हो तो धन धर्म और सुखकी हानि होवे, तथा पुत्र मित्र लोग और स्त्री उसे त्यागदेवें, संसारमें झूंठे कलंक लगनेका डर होवे. चित्त व्याकुल रहे आजीवन बडे कष्टसे होवे. शरीरमें कफ रोग होवे. शत्रुसे भय तथा कलहभी होवेहै ॥ २६ ॥

वसंततिलकाछंद-शुक्रेऽब्दपेबलिनिनीरुजताविलासलब्धाशास्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः ॥ क्षेमप्रतापविजयावनिताविलासो हास्यंनृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ २७ ॥

उत्तम बली वर्षेश शुक्र हो तो शरीर निरोग रहै. नित्यसुखसे विलास करें. शुभ शास्त्र तथा मिष्टान्न भोजनादि भोगोंसे प्रसन्नता रहै सर्वथा कुशल प्रताप बढे शत्रुसे जय मिले स्त्रीविलासका सुख रहै. प्रसन्नता रहे और राजाके आश्रयसे धन तथा सुख मिले ॥ २७ ॥

वसंतति०-अब्दाधिपे भृगुसुते खलुमध्यवीर्य्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाल्पवृत्तिः ॥ ग्रस्तं न दुःखमखिलं सुनिबद्धवृत्तिः पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः ॥ २८ ॥

मध्यबली शुक्र वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तमबलीका फल सभी मध्यम होताहै तथा आजीवनार्थ थोडा द्रव्यादि मिलता है गुप्त प्रकारसे दुःख लगा रहे, वाच्य अथवा अवाच्य सुख मध्यम वृत्ति जीवनोपाय अल्प रहे; जो पापग्रह शत्रुसे युक्त दृष्ट हो तो विपत्ति होवे धननाश भी होवे ॥ २८ ॥

व० ति०–शुक्रेऽब्दपेऽधमबलेऽमनसोऽतितापो लोकोपहासविपदो निजवृत्तिनाशः ॥ द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टादन्नाशनं च विफलक्रियता न सौख्यम् ॥ २९ ॥

अधम बली शुक्र वर्षेश हो तो मनमें अति संताप रहे लोगोंसे उपहास होवे, अपनी आजीवनकी वृत्ति नष्ट होवे, स्त्री पुत्र मित्रजनोंसे वैर होवे, भोजन भी अति कष्टसे प्राप्त होवे. जो कुछ कर्म भलाई निमित्त करै वही निष्फल होवे, सुख न मिले ॥ २९ ॥

व० ति०–मंदेऽब्दपे बलिनि नूतनभूमिवेश्मक्षेत्रातिरर्थनिचयो यवनावनीशात् ॥ आरामनिर्मितजलाशयसौख्यमंगपुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणीत्वम् ॥ ३० ॥

उत्तम बली शनि वर्षेश हो तो नवीन गृह भूमि (खेती) मिले, धन बहुत मिले, यवनावनीश (मुसलमान आदि जाति राजा) वा राजतुल्यसे मिले, उपवन (बगीचा) बनावे, जलाशय, कूप तडागादिका सुख मिले, शरीर पुष्ट रहे अपने कुलयोग्य अधिकार मिले अपने समाजमें श्रेष्ठ रहे ॥ ३० ॥

व० ति–अब्दाधिपेरविसुते खलुमध्यवीर्येस्यान्मध्यमं निखिलमन्नभुजिस्तु कष्टात् ॥ दासोष्ट्रमाहिषकुलान्यरतस्तुलाभः पापं फलं भवति पापयुगीक्षणेन ॥ ३१ ॥

मध्यबली शनि वर्षेश हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम सभी मध्यम होवे तथा अन्न खानेमें किसी प्रकार (अपची) अरुची, आदिसे होवे और दास ऊंट भैंस तथा अपनेसे हीन कुलमें तत्पर रहे कहीं 'कुधान्यरत' ऐसा पाठ भी है अर्थात् दुष्ट अन्न कोद्रव, सांवा, जुवार, बगड आदिमें तत्पर रहे. इतनी वस्तु-

ओंका लाभ भी होवे, और पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो समस्त फल दुष्टही होंगे शुभ दृष्टिसे शुभ जानना ॥ ३१ ॥

व०ति०–मंदेबलेन रहितेऽब्दपतौ क्रियाणां वंध्यत्वमर्थविलयो विपदोरिभीतिः ॥ स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तिः सौम्येत्थशालयुजिसौख्यमपीषदाहुः ॥ ३२ ॥

शनि हीनवली वर्षेश हो तो कर्ममात्रका वंध्यत्व (निष्फलता) होवे, (कुत्सितअन्न) कुलत्थ, कोद्रव, जुवार, सांवा, आदि भोजनको मिले धन-नाश तथा विपत्ति, शत्रुभय और स्त्री पुत्र मित्र जनोंसे वैर होवे, जो शुभग्रहसे इत्थशाली वा युक्त हो तो थोडा सुख भी होगा ऐसा कहते हैं ॥ ३२ ॥

व०ति०–वर्षेश्वरो भवति यः सदृशाधिपोऽब्दे ज्ञेयोऽखिलोऽब्दज नुषोर्बलमस्य चिंत्यम् ॥ वीर्यान्वितेच निखिलं शुभमब्दमाहु र्हीने त्वनिष्टफलतासमतासमत्वे ॥ ३३ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे जो वर्षेश हुआ वही प्रथम दशाधीश भी जानना यतः सभी दशाधीश ग्रहोंका यह राजा होता है इसका फल थोडा २ सभीके दशा-ओंमें होताहै, और वर्षेश बल जन्ममें भी पंचवर्गी क्रमसे वर्षतुल्य गिनना, जन्म वर्षका बल मिलायके बलाबल जानना, दोनहूंमेंसे बली होनेसे पूर्णबली कहाताहै, संपूर्ण वर्षमें शुभही फल देताहै, इसी क्रमसे उत्तम मध्यम कनिष्ठ भी बल जानना, हीनबलमें मध्यम फल कनिष्ठमें अशुभ सममें समफल समस्त वर्षमें विचारसे कहना बलाबल विधि पूर्ण कही है ॥ ३३ ॥

उ०जा०–येनेत्थशालोऽब्दपतौग्रहाऽसौस्वीयस्वभावात्सुफलंददाति ॥ शुभेसराफे शुभमास्तिकिंचिदनिष्टमेवाशुभमूसरीफे ॥ ३४ ॥

वर्षेश जिस ग्रहके साथ इत्थशाल करता हो वह ग्रह अपने पूर्वोक्त स्वभा-वानुसार शुभ फल देताहै. जो शुभग्रहसे ईसराफ योग हो तो शुभ फल थोडा देताहै, और पापग्रहसे इत्थशाल हो तो अनिष्ट फल देताहै. बलाबलसे उत्तम मध्यम व अधम फलका विचार करना ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०-हद्दे यादृशि यः खेटः आवर्त्तेऽत्रचयोग्रहः ॥
जन्मन्यब्देचताहक्त्वे तदात्मफलदस्त्वसौ ॥ ३५ ॥

जन्ममें जो ग्रह जिस प्रकारकी हद्दामें होकर दूसरेका तेज ग्रहण करता हो वर्षमेंभी उसी प्रकार हद्दामें हो तो अपना फल अपने संबंधी ग्रहको देदेताहै अर्थात् जन्ममें जिस हद्दामें ग्रह हैं उसी हद्दामें जो कोई ग्रह हो उसके साथ मुथशिली हो तो जन्मके उस ग्रहका तेज लेलेताहै, जैसे जन्ममें राज्य भावेश मंगल मेषके २० अंश अपने हद्दामें है, और शुक्रादि कोई ग्रह सुखाधीश १६ अंशपर स्थित होकर मुथशिली होनेसे तेज ग्रहण करता है. एवं वर्षमें मंगल स्वहद्दामें होकर शुक्रसे मुथशिली हो तो शुक्र अपनी दशामें मंगलके स्वभाव तुल्य फल दशम भावसंबन्धी फल भी देगा ॥ ३५ ॥

अनुष्टु०-योजन्मानिफलं दातुं विभुर्मूसरिफोऽस्यचेत् ॥
अब्दलग्नाब्दपतिना तस्मिन्नब्देन तत्फलम् ॥ ३६ ॥

जो ग्रह जन्मसे शुभ वा अशुभ फल देनेको समर्थ है वह वर्षमें वर्षलग्नेश वा वर्षेशके साथ मूसरिफ योग करता हो तो जन्मकालोक्त फल वर्षमें नहीं होताहै, जो इनके साथ ईसराफ हो तो जन्मकालोक्त फल वर्षमें होताहै, ईशराफ, मूसरीफ कोई भी नहीं हो तो जन्मोक्तफल जन्महीमें वर्षोक्त वर्षहीमें फल देताहै इसका उदाहरण अगले श्लोकमें है ॥ ३६ ॥

इन्द्रवज्रा-पुत्राधिपो जन्मनि पुत्रभावं पश्यन्सुतंदातुमसौसमर्थः॥वर्षेत्रपुत्राब्दपमूसरीफी पुत्रस्य नाशोभवतीहवर्षे ॥ ३७ ॥

जन्मकालमें पुत्रभावेश पुत्रभावको देखे "उपलक्षणसे" वा पुत्र स्थानमें हो तो अपनी दशामें इसे पुत्र देनेकी सामर्थ्य है, वर्षमें यही जन्मका पुत्रभावेश वर्षलग्नेश वा वर्षेशसे वा पंचमेशसे मूसरीफ योग करे तो इस वर्षमें अवश्य पुत्रनाश करेगा यह पूर्व श्लोकका उदाहरण है, ऐसेही सभी भावोंका विचार करना ॥ ३७ ॥

अनु०-अब्देश्वरोगुरुर्मित्रहद्देमित्रदृशाशशी ॥
महोत्राधायमुद्दिश्यवर्षेशस्तेनशोभनः ॥ ३८ ॥

वर्षमें वर्षेश बृहस्पति हो और जन्ममें बृहस्पतिसे चन्द्रमा इत्थशाल करता हो, परन्तु बृहस्पति अपनी हद्दामें हो और वर्षमें चन्द्रमाको देखे तो जन्ममें चन्द्रमा बृहस्पतिको तेज देनेसे यह वर्ष शुभफल देनेवाला होगी ॥ ३८ ॥

अनु०-एवमुन्नेयमन्यच्चशुभाशुभफलं बुधैः ॥
बलाबलविवेकेन योगत्रयविमर्शतः ॥ ३९ ॥
इति श्रीनीलकंठदैवज्ञकृतायां नीलकंठ्यांफलतंत्रे वर्षपति-
फलानि समाप्तानि ॥ १ ॥

इसी प्रकार जन्मका तथा वर्षका बलाबल संबंध देखके तथा भविष्य मुथशिल वर्त्तमान मुथशिल ईसराफ तीन योगोंसे पंडितोंने विचार करना चाहिये, यह लक्षण मात्र कहाहै ऐसेही औरभी विचार सर्वत्र करलेना ॥ ३९ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां वर्षतंत्रे वर्षेशफल-
निरूपणं नाम प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ मुंथानिरूपणम् ।

उ०व०-स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहाभ्रमेण ॥
स्वजन्मलग्नंरवितष्टयातंगताब्दयुक्तंभमुथेंथिहास्यात् ॥ १ ॥

जन्मलग्नका नाम मुंथा है प्रतिवर्ष एक एक राशि भोगनेके क्रमसे भ्रमण करती है. जैसे जन्मका सिंह लग्न हो तो दूसरे वर्षमें कन्याकी तीसरेमें तुलाकी इत्यादि, पुनः तेरहवें वर्षमें जन्मलग्न सिंहकी चौदहवेंमें कन्याकी यही क्रम है, जन्मलग्नमें गतवर्ष जोडके बारहसे भाग करके शेष राशिमें मुंथा वर्षकी होतीहै, जन्मलग्नका जो स्पष्ट है वही मुंथा स्पष्ट रहताहै केवल एक एक राशिमात्र प्रति-वर्ष बढती है ॥ १ ॥

अनु०-प्रत्यहंशरलिप्ताभिर्वर्द्धते सानुपाततः॥
सार्द्धमंशद्वयंमासइत्याहुः केपिसूरयः ॥ २ ॥

मासप्रवेश दिनप्रवेशमें मुंथाके लिये अनुपात त्रैराशिकसे है कि सौरमान १ वर्षमें १ राशि भुगती है तो एक महीनेमें कितना एक राशिके ३०

अंश १ अंशकी ६० कला प्रसिद्ध है त्रैराशिक करनेसे एक महीनेमें २ अंश ३० कला और एक दिनमें ५ कला मिलतीहै मासप्रवेशमें वर्ष मुंथाके स्पष्टमें २ अंश ३० कला जोडके दूसरे मासकी मुंथाका स्पष्ट होताहै पुनः प्रतिमास २ अंश ३० कला जोडतेरहना दिनप्रवेशमें केवल ५ कला प्रतिदिन जोडना ॥ २ ॥

अनु०–स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यंक्षुतदृष्ट्याभयंरुजः ॥
भावालोकनसंयोगात्फलमस्यानिरूप्यते ॥ ३ ॥

मुंथाका फल कहतेहैं कि, जिस राशिमें मुंथा है उसका स्वामी मुंथेश कहाताहै मुंथा स्वस्वामी वा शुभ ग्रहके देखनेसे सुख देतीहै तथा शत्रु और पाप अल्पबली ग्रहके दृष्टिसे भय तथा रोग देतीहै, भाव दृष्टि और योगके अनुसार इसका फल कहा जाताहै ॥ ३ ॥

अनु०–वर्षलग्नात्सुखास्तांत्यरिपुरंध्रेष्वशोभना ॥
पुण्यकर्मायगाः सौख्यंदत्तेऽन्यत्रोद्यमाद्धनम् ॥ ४ ॥

मुंथा वर्षलग्नसे सुख ४ अस्त ७ अंत्य १२ रिपु ६ रंध्र ८ स्थानोंमें शुभ नहीं होती. पुण्य ९ कर्म १० आय ११ स्थानोंमें सुख देनेवाली होती है इनसे उपरांत १ । २ । ३ । ५ स्थानोंमें उद्यम करनेसे धन देतीहै ॥ ४ ॥

उपजा०–शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम् ॥
शरीरपुष्टिंविविधोद्यमांश्चददातिवित्तं मुथहातनुस्था ॥ ५ ॥

मुंथाके भावफल कहते हैं लग्नमें मुंथा हो तो शत्रुक्षय होवे मन संतुष्ट रहे प्रताप बढे राजासे प्रसाद हो शरीर पुष्ट रहे अनेक प्रकारका उद्यम होवे तथा धन देवे ॥ ५ ॥

उपजा०–उत्साहतोर्थागमनंयशश्च स्वबंधुसम्माननृपाश्रयश्च ॥
मिष्टान्नभोगोबलपुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुथहायदाब्दे ॥ ६॥

मुंथा द्वितीय स्थानमें हो तो उत्साहसे धन आवे यश बढे (बंधु) स्वजातिमें सन्मान होवे तथा राजाका आश्रय मिले मीठे पदार्थ खानेको मिलें शरीरमें बल तथा पुष्टता होवे और सुख मिले ॥ ६ ॥

उपजा०-पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानिसौंदर्य्यसौख्यंद्विजदेवपूजा ॥
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकांतिनृपाश्रयाश्चेन्मुथहातृतीया ॥ ७ ॥

मुंथा तीसरे स्थानमें हो तो अपने पराक्रमसे धन यश और सुख होवे, सुन्दरता और सौख्य होवे, देव ब्राह्मणोंकी पूजा अपनेसे होवे. सभीका उपकार अपनेसे बने शरीर पुष्ट कांतिमान् होवे, राजाका आश्रय मिले ॥ ७ ॥

उपजा०-शरीरपीडारिपुभीः स्ववर्गवैरंमनस्तापानिरुद्यमत्वे ॥
स्यान्मुंथहायांसुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ॥८॥

मुंथा चतुर्थ स्थानमें हो तो अपने समुदायमें वैर होवे मनको संताप रहै, उद्यमहानि अर्थात् आलस्य रहे और लोगोंमें झूठा कलंक लगे अनेक प्रकारके रोग और दुःख बढैं ॥ ८ ॥

उपजा०-यदीथिहापंचमगान्दनेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः ॥
प्रतापवृद्धिर्विविधाविलासादेवद्विजार्चानृपतेःप्रसादः ॥ ९ ॥

मुंथा पंचम स्थानमें हो तो भली बुद्धि तथा सुख पुत्र धन लाभ होवे, प्रताप बढे अनेक प्रकार हर्षनादि होवे देव ब्राह्मणोंका पूजन अपनेसे होवे॥ ९ ॥

उपजा०-कृशत्वमंगेषुरिपूदयश्च भयंरुजस्तस्करतोनृपाद्वा ॥
कार्य्यार्थनाशोमुथहारिगाचेद्दुर्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतोनुतापः १० ॥

मुंथा छठे स्थानमें हो तो सभी अंग माडे होजावें शत्रु बढें रोग उत्पन्न होवे चोरसे वा राजासे भय होवे कार्य्य तथा धनका नाश होवे, दुष्टबुद्धि बढे अपने किये कामसे आपही पछतावे ॥ १० ॥

उपजा०-कलत्रबन्धुव्यसनारिभीतिरुत्साहभंगोधनधर्मनाशः ॥
द्यूनोपगाचेन्मुथहातनौस्याद्रुजामनोमोहविरुद्धचेष्टे ॥ ११ ॥

स्त्री और बांधव पक्षमें कष्ट होवे द्यूतादि व्यसनसे हानि शत्रुभय उद्यमहानि धन और धर्मका नाश होवे शरीरमें रोग होवे, मनकी अज्ञानता वा तंद्रादिसे विपरीत कर शारीरी चेष्टाओंको बिगाड देवे ॥ ११ ॥

उपजा०-भयंरिपोस्तस्करतो विनाशोधर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च ॥
मृत्युस्थितानेमुथहानराणां बलक्षयः स्याद्गमनंसुदूरे ॥ १२ ॥

मुंथा अष्टम भावमें हो तो शत्रुसे भय चोर धन धर्मका नाश दुष्ट व्यसन, जुँवा चोरी वेश्या आदिमें नाश हो रोगभी पैदा हो बलहानि हो बहुत दूर गमन निरर्थक करना पडे ॥ १२ ॥

इंद्र०-स्वामित्वमर्थागमो नृपेभ्योधर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ॥
देवद्विजार्चापरमंयशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेंथिहायाम् ॥ १३ ॥

नवम स्थानमें मुंथा हो तो सब लोगोंमें स्वामित्व मिले, राजासे धन आवे, धर्मसंबंधी उत्साह होवे पुत्र और स्त्रीका सुख मिले, देव ब्राह्मण पूजन होवे, पूरा यश मिले ऐश्वर्य बढे ॥ १३ ॥

उपजा०-नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ॥
यशोभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेंबरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥१४॥

मुंथा दशम स्थानमें हो तो राजासे प्रसाद मिले अपने मनुष्योंका उपकार होवे. भले कर्मकी सिद्धि तथा देवता ब्राह्मणकी भक्ति अपनेसे बने यश बढे, अनेक प्रकार धन सामग्री देतीहै और (पदाप्तिम्) उत्तमस्थानभी देतीहै ॥ १४ ॥

उपजा०-यदींथिहा लाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्यमनःप्रसादाः ॥
भवंति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमतास्तयश्च ॥ १५ ॥

मुंथा ग्यारहवें स्थानमें हो तो अष्ट प्रकार शृंगारका विलास और सौभाग्य नीरोगिता मनकी प्रसन्नता होवे, राजाके आश्रयसे धन मिले, अच्छे मित्र और पुत्र मिलें मन मानती भलाई होवे ॥ १५ ॥

उपजा०-व्ययोधिको दुष्टजनैश्च संगो रुजातनौ विक्रमतोप्यसिद्धिः ॥
धर्मार्थहानिर्मुथहाव्ययस्था यदातदास्याज्जनतोऽपिवैरम् ॥ १६ ॥

मुंथा बारहवें स्थानमें हो तो व्यय बहुत होवे दुष्टमनुष्योंकी संगति मिले शरीरमें रोग होवे पराक्रम करनेमें परिश्रम व्यर्थ जावे. धर्म और धनकी हानि होवे सज्जनोंसे वैर होवे ॥ १६ ॥

अनु०—क्रूरैर्दृष्टः क्षुतहशा यो भावो मुथहाऽत्रचेत् ॥
शुभं तद्भावजं नश्येदशुभं चापि वर्द्धते ॥ १७ ॥

मुंथाफल विशेष कहते हैं कि जो भाव पापयुक्त हो वा जिसपर क्रूरग्रहकी शत्रु दृष्टि हो उसीमें मुंथा हो तो शुभस्थानगतभी हो तौ भी उस भावका शुभ फल नहीं देती है, प्रत्युत अशुभ फल बढता है ॥ १७ ॥

भुजंगप्रयात०—शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्ययुक्चेंथिहास्वामिसौम्येत्थशालंप्रपन्ना ॥ शुभंभावजंवर्द्धयन्नाशुभंसान्यथात्वेन्यथाभाव ऊह्यो विमृश्य ॥ १८ ॥

जो मुंथा स्वस्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा स्वामी बलवान् हो अथवा अपने स्वामी यद्वा शुभ ग्रहसे इत्थशालिनी हो तो जिस भावमेंहै उस भावसंबंधी शुभ फलको बढातीहै अन्यथा शुभ फलको नहीं बढाती तथा अन्यथामें अन्यथा जैसे शुभ ग्रह स्वस्वामीसे युत दृष्ट न होनेसे निर्बल हो यद्वा पापग्रहसे इसराफ करती हो तो उस भावसम्बंधी शुभ फलको नाशकर अशुभ फलको बढातीहै ऐसे भावसम्बंधी फलका शुभाशुभ मुंथाके बलसे विचारके कहना ॥ १८ ॥

भु०प्र०—जनुर्लग्नतोऽस्तांत्यषण्मृत्युबंधुस्थिताद्देहता क्रूरखेटैस्तुताचेत् ॥ विनश्येत्सयत्रेंथिहाभाव एवं शुभः स्वामिदृष्टो ननाशःशुभंच ॥ १९ ॥

मुंथा जन्मलग्नसे छठे आठवें वा चौथे स्थानमें हो तथा वर्षमें पापयुक्त वा पापाक्रांत हो तो जिस भावमें मुंथा है उस भावको नाश करती है. जैसे द्वितीयमें धनका तृतीयमें भाईका इत्यादि परन्तु वर्षमें स्वस्वामी शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो यह फल नहीं होता प्रत्युत शुभ फल देती है ॥ १९ ॥

अनु०—यदोभयत्रापिहता भावो नश्येत्ससर्वथा ॥
उभयत्रशुभत्वेतुभावोऽसौवर्द्धतेतराम् ॥ २० ॥

मुंथा जन्मलग्नसे तथा वर्षलग्नसे शुभ स्थानमें हो पापाक्रांत न हो तो उस भावसम्बंधी शुभ फल, अर्थात् वह भाव बढताहै जैसे जन्मलग्नसे

वर्षलग्नसे मुन्था पंचम शुभ ग्रह स्वस्वामियुक्त दृष्ट हो तो पुत्रवृद्धि करती है इत्यादि जो जन्म तथा वर्षलग्नसे अनिष्ट स्थानमें हो तथा पापयुत दृष्ट वा पापेत्थशालिनी हो वह भाव अवश्य नष्ट होगा ॥ २० ॥

अनु०-वर्षेप्यनिष्टगेहस्था यद्भावे जनुषिस्थिता ॥
क्रूरोपघातात्तंभावंनाशयेच्छुभयुक्छुभा ॥ २१ ॥

जन्मलग्नसे ४। ६। ८। १२ दुष्ट भावमें तथा वर्षमें ऐसेही अनिष्ट स्थानोंमें हो तो तथा पापग्रहयुक्त वा दृष्ट स्वामीके अस्तंगतादिसे निर्बल हो तो उस भावको नाश करतीहै और स्वस्वामियुक्त दृष्ट वा इत्थशालसे शुभ फल देती है ॥ २१ ॥

भुजंगप्रयात०-जनुर्लग्नतस्तुर्यगासौम्ययुक्तान्दवेशोपितुर्द्रव्य-लाभंविधत्ते ॥ नृपात्भीतिदापापयुक्तातिकष्टाष्टमादावपीत्थंवि-मर्शोविधेयः ॥ २२ ॥

जन्मलग्नसे मुंथा चतुर्थ भावमें शुभग्रहयुक्त हो तो पिताका द्रव्य धन भूम्या-दिलाभ करती है, ऐसेही पापयुक्त हो तो राजासे भय और आजीवन अति कष्टसे होवे, ऐसेही जन्म लग्नसे अष्टमगत शुभयुक्त होतो शुभफल तथा पापयुक्त होनेमें अनिष्ट फल देतीहै ऐसेही षष्ठादि स्थानोंमेंभी बुद्धि विचारसे मुंथाका तारतम्य देखके फल कहना ॥ २२ ॥

शालिनी-यस्मिन्भावे स्वामिसौम्येक्षिताचेद्भावोजन्मन्येषय-स्तस्यवृद्धिः ॥ एवंपापैर्नाशउक्तस्तुतस्येत्यूह्यंनोऽब्दपस्या-स्ति सौख्यम् ॥ २३ ॥

वर्षलग्नमें मुंथा स्वस्वामी शुभग्रह दृष्ट युक्त जिस भावमें हो वह जन्मलग्नसे जो भावमें हो उस भावकी वृद्धि करतीहै, जैसे वर्षमें मुंथा चतुर्थ शुभग्रह वा स्वामियुक्त वा दृष्ट है और जन्मलग्नगणनासे यह भाव तीसरा होता है तो इस वर्षमें भ्रातृसम्बन्धी शुभफल होगा तथा पापग्रहयुक्त वा दृष्ट जिस भावमें हो वह जन्म लग्नसे जो भाव हो उसकी हानि होती है परन्तु वर्षेश बलवान् तथा शुभग्रह हो तो मुंथा पापयुक्तका पूर्वोक्त फल न होगा ॥ २३ ॥

॥ इति मुंथाभावफलम् ॥

अथ ग्रहयुक्तदृष्टमुंथाफलम्।

उपजा०—यदींथिहासूर्य्यगृहे युतावा सूर्य्येणराज्यं नृपसंगमंच॥
दत्तेगुणानांपरमामवाप्तिंस्थानांतरस्येतिफलंदृशोपि ॥ २४ ॥

मुंथाका प्रत्येक ग्रहयुक्तका फल कहते हैं सूर्यकी राशि ५ में हो अर्थात् सूर्यके साथ वा सूर्य्यसे दृष्ट हो तो कुलानुमान राज्य मिले तथा राजाकी संगति मिले, स्त्री वस्त्र भूषणादि श्रेष्ठ भोग मिलें ॥ २४ ॥

उपजा०—कुजेन युक्ता कुजभे कुजेन दृष्टा च पित्तोष्णरुजांविधत्ते ॥
शस्त्राभिघातं रुधिरप्रकोपं सौरीक्षिता सौरिगृहे विशेषात् ॥ २५ ॥

मुंथा मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो मंगलकी राशि १। ८ में हो तो पित्त विकार उष्ण रोग देतीहै, और शस्त्रसे घात रुधिर कोपसे कष्टभी करती है, ऐसी मुंथा शनि से युक्त वा दृष्टभी हो यद्वा शनि राशिमें मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तो पूर्वोक्त फलको विशेष बढाय देती है शनि मंगलका मुन्थाके निमित्त, परस्पर तुल्य फल है ॥ २५ ॥

उपजा०—चंद्रेण युक्तेंदुगृहेथदृष्टेंदुनापि वा धर्मयशोभिवृद्धिम् ॥
नैरुज्यसंतोषमतिप्रवृद्धिं ददाति पापेक्षणतोऽतिदुःखम् ॥२६॥

मुंथा चन्द्रमासे युक्त चन्द्रमाके राशि (४) में अथवा चन्द्रमासे दृष्ट हो तो धैर्य तथा यशकी वृद्धि करतीहै नीरोगिता तथा प्रसन्नताकी तो अतिही वृद्धि देती है और पापग्रहकी दृष्टि भी हो तो अतिदुःख करतीहै ॥ २६ ॥

उपजा०—बुधेनशुक्रेणयुतेक्षितावा तद्भेपिवास्त्रीमतिलाभसौख्यम् ॥
धर्मं यशश्चाप्यतुलं विधत्ते कष्टंच पापेक्षणयोगतःस्यात् ॥ २७ ॥

मुंथा बुध अथवा शुक्रसे युक्त वा दृष्ट अथवा इनके राशि २। ३। ६। ७। में हो तो स्त्री तथा बुद्धिलाभ और सुख होवे तथा अनुपम धर्म और यशभी देती है इसमें पापग्रहकी दृष्टि वा योगभी हो तो कष्ट होताहै ॥ २७ ॥

उपजा०—युतेक्षिता वा गुरुणा गुरोर्भे यदींथिहा पुत्रकलत्रसौख्यम् ॥
ददाति रत्नांबरधर्मसौख्यं शुभेत्यशालादिहराज्यलाभः ॥ २८ ॥

मुंथा बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट तथा गुरु राशि ९ । १२ में हो तो पुत्र तथा स्त्रीका सुख और रत्न वस्त्र धर्मका सुख देती है शुभग्रहसे इत्थशालिनीभी हो तो कुलानुमान राज्य मिलताहै ॥ २८ ॥

उप०—शनेर्गृहेतेनयुतोक्षितावायदीथिहानातरुजांविधत्ते ॥
यानक्षयंवह्निभयंधनस्यहानिंचजीवेक्षणतः शुभानिम् ॥ २९ ॥

मुंथा शनिकी राशि १० । ११ में यद्वा शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो वात संबन्धि रोग उत्पन्न करती है वाहनहानि भी करतीहै जो इसपर बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो शुभ भी फलही देतीहै ॥ २९ ॥

उ० व०—तमोमुखेचेन्मुथहाधनाप्तिर्यशः सुखंधर्मसमुन्नतिश्च ॥
सितेज्ययोगेक्षणतः पदाप्तिःसुवर्णरत्नांबरलब्धयश्च ॥ ३० ॥

मुंथा राहुके मुखसंज्ञक अंशोमें हो तो धनप्राप्ति और यश सौख्य धर्मकी उन्नति होतीहै शुक्र बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्टभी हो तो अधिकार प्राप्ति और सुवर्ण रत्न वस्त्रलाभभी होते हैं ॥ ३० ॥

अनु०—भोग्याराहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठगतालवाः ॥
ततःसप्तमभेपुच्छंविमृश्यैतिफलंवदेत् ॥ ३१ ॥

राहुके मुखपुच्छलक्षण कहते हैं राहुकी वक्रगति स्पष्टही है जो राहुके एक राशिमें भोग्य अंश हैं वह मुख और भुक्तांशको पृष्ठ कहतेहैं किसी २ का मतहै कि मुखपृष्ठ में राहु स्थित अंशसे १५ । १५ अंश पूर्व और पीछेके लेते हैं और इससे सप्तम राशिमें केतु रहताहै यह पुच्छ कहाता है तारतम्य विचारके फल कहना ॥ ३१ ॥

इं०व—तत्पृष्ठभागेनशुभप्रदास्यात्तत्पुच्छभागाद्रिपुभीतिकष्टम् ॥
पापेक्षणादर्थसुखस्यहानिश्चेज्जन्मनीत्थंगृहवित्तनाशः ॥ ३२ ॥

राहुके पृष्ठभाग अर्थात् राहुस्थित अंशसे विपरीत पूर्व पंद्रह वा राश्यंतपर्यन्त अंशके आभ्यंतर मुन्था हो तो शुभ फल नहीं देती और पुच्छगत अर्थात् केतुयुक्त हो तो शत्रुसे भय और कष्ट देती है तथा पापग्रह दृष्टिसे धन सुखकी हानि करती है ऐसेहीं जन्ममें मुंथा हो तो गृह और धनका नाश करती है॥ ३२॥

उपजा०—ये जन्मकाले बलिनोब्दकालेचेद्दुर्बलास्तेऽशुभं समांते ॥
विपर्ययेपूर्वमनिष्टमुक्तं तुल्यंफलंस्यादुभयत्रसाम्ये ॥ ३३ ॥

जो ग्रह जन्मकालमें बलवान् और वर्षाकालमें निर्बल हो वह वर्षके पूर्वार्द्धमें शुभ और वर्षके उत्तरार्द्धमें अशुभफल निर्बलताको देते हैं इनसे विपरीत अर्थात् जो जन्ममें निर्बल और वर्षमें बलवान् हैं वे वर्षपूर्वार्द्धमें अशुभ उत्तरार्द्धमें शुभ फल देते हैं दोनों कालमें तुल्यही हों तो सम्पूर्ण वर्षमें तुल्यही फल देते हैं ॥ ३३ ॥

उपजा०—षष्ठेष्टमेंत्येमुथिवींथिहेशोस्तगोथवक्री शुभदृष्टयुक्तः ॥
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्चभव्योनस्याद्रुजंयच्छतिवित्तनाशम् ॥ ३४॥

मुंथाका स्वामी छठे आठवें बारहवें वा चौथे स्थानमें हो अथवा अस्तंगत हो वा वक्री हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा क्रूर ग्रहसे चौथा व सप्तम अर्थात् शत्रुदृष्टिमें हो तो शुभ फल देनेवाला नहीं होता है और रोगोत्पत्ति धननाशभी करता है ॥ ३४॥

उप०—यद्यष्टमेशेनयुतोथदृष्टःश्रुतात्ययदृष्टयानशुभस्तदापि ॥
योगद्वयेस्यान्निधनंयदैकयोगस्तदामृत्युसमत्वमाहुः ॥ ३५ ॥

जो मुंथेश वर्षलग्नसे अष्टमेश युक्त अथवा १।४।७।१० क्षुत दृष्टिसे दृष्ट हो तोभी शुभफल नहीं देता, एक योग यहहै एक योग पहिले श्लोक (षष्ठेष्टमेंत्ये) इत्यादिमें कहाहै जिस वर्षमें ये दोनों योग होवें तो, मृत्युफल देतेहैं जो एकही हो तो भी मृत्युसमान कष्ट देताहै ॥ ३५ ॥

अनुष्टु०—मुंथहातत्पतिर्वापि जन्मनीक्षितयुक्छुभैः ॥
वर्षारंभेशुभंधत्तेऽब्देचेदंत्येन्यथाशुभम् ॥ ३६ ॥

इति नीलकंठ्यां फलतंत्रेमुंथहाफलाध्यायः ॥ २ ॥

जो जन्मकालमें मुंथा वा मुंथेश शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो पूर्वार्द्धमें शुभ फल देताहै मुन्था मुन्थेश दोनों शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो अतिशुभ फल वर्षपूर्वार्द्धमें देतेहैं तथा वर्षकालमें मुंथा वा मुंथेश शुभग्रह युक्त वा दृष्ट हों तो वर्षके उत्तरार्द्धमें शुभफल देतेहैं तथा मुंथा मुंथेश दोनों शुभ-

ग्रहयुक्त दृष्ट हों तो अति शुभफल वर्षोत्तरार्द्धमें देतेहैं और ऐसेही जन्ममें मुंथा मुंथेशमेंसे एकभी पाप ग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो वर्षपूर्वार्द्धमें अशुभ फल जो दोनों पापयुक्त दृष्ट हों तो अति अशुभ फल देतेहैं. एवं वर्षमें मुंथा मुंथेश मेंसे एकग्रह पापयुक्त दृष्ट हो तो वर्ष उत्तरार्द्धमें अशुभ फल तथा दोनों हों तो अति अशुभ फल देतेहैं ॥ ३६ ॥

इति महीधरकृतायांनीलकंठीभाषाटीकायांफलतंत्रेमुंथाफलप्रकरणंद्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ वर्षारिष्टविचारः ॥

अनुष्टु०-लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशेतनुस्थेवाकुजेक्षिते ॥
ज्ञजीवयोरस्तगयोः शस्त्राघातो विपन्मृतिः ॥ १ ॥

व्याकरणमें 'रुष रिष हिंसायां' इससें रिष धातुसे अनिट् 'क्तः' प्रत्ययका आदान करके रिष्ट पद सिद्ध होताहै, नञ् समाससिद्ध अरिष्ट पदका अर्थ विपरीत जान पडता हैं. परंतु ज्योतिषग्रंथोंमें सर्वत्र रिष्ट और अरिष्ट पद तुल्यार्थवाची होतेहैं अब अरिष्टयोग कहतेहैं कि वर्षलग्नका स्वामी अष्टम स्थानमें हो इसपर मंगल की दृष्टि हो अथवा अष्टमेश लग्नमें भौमदृष्ट हो उपलक्षणसे पापदृष्ट हो अथवा बुध बृहस्पती अस्तंगत हो तो शस्त्रसे चोट लगे, विपत्ति होवे और मृत्यु होवे ये तीन फल निर्बलताके क्रमसे हैं, जैसे प्रथम सामान्य बलमें शस्त्राघात, हीन बलमें विपत्ति, अतिहीन बलमें मृत्यु इस क्रमसे जानना. इस श्लोकमें तीन योगहैं ॥ १ ॥

अनुष्टु०-अब्दलग्नेशरंध्रेशौव्ययाष्टहिबुकोपगौ ॥
मुंथहासंयुतौ मृत्युप्रदौ तद्धातुकोपतः ॥ २ ॥

वर्षलग्नेश वा अष्टमेश मुंथा सहित बारहवें आठवें चौथे स्थानमें हो तो उस ग्रहके पित्तादि धातु उक्तेस मृत्युसमान कष्ट होवे, जो मुंथासहित लग्नेश अष्टमेव दोनों उक्तस्थानाम एकमें हों तो मृत्यु देते हैं ॥ २ ॥

अनुष्टु०-जन्मलग्नाधिपोऽवीर्य्यो मृतीशोलग्नगोयदा ॥
सूर्य्यदृष्टो मृतिं धत्ते कुष्टं कंडूं तथापदः ॥ ३ ॥

जन्मलग्नेश जन्म तथा वर्षमें निर्बल हो और वर्षमें अष्टमेश लग्नमें हो

सूर्य्यकी दृष्टिभी हो तो मृत्यु वा कुष्ठ कंडू (खुजली) और आपत्ति देताहै ॥ ३ ॥

अनुष्टु०-क्रूरमुसरिफोब्देशोजन्मेशःक्रूरितःशुभैः ॥
कंबूलेपि विपन्मृत्युरित्थमन्याधिकारितः ॥ ४ ॥

वर्षेशके साथ क्रूर ग्रहका मुसरीफ हो तथा जन्मलग्नेश क्रूर होगया हो जैसे पापयुक्त बुध क्षीणचंद्रमा शुभभी क्रूर है और चंद्रमादि शुभग्रह कंबूल योगभी करे तो विपत्ति अथवा मृत्यु होवे, ऐसेही जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश मुंथेश आदि पंचाधिकारियोंसे भी यही योग होताहै, जैसे यहां वर्षेश क्रूर मुसरीफी कहा तैसेही मुंथेशादि क्रूर मुसरीफी और कंबूल पूर्वचंद्रमाका ही कहाहै यहां उसी विधिसे सभी शुभ ग्रहोंका विचारना ॥ ४ ॥

अनुष्टु०-अस्तगौ मुथहालग्ननाथौ मंदेक्षितौ यदा ॥
सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधिव्याधिभयं भवेत् ॥ ५ ॥

मुंथेश और लग्नेश अस्तंगत हो इनपर शनिकी दृष्टिभी हो तो धन मूलादि सर्वनाश अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा कुष्ठ और मानसीचिंता शरीरपीडा आदिसे भय होवे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०-क्रूरावीर्य्याधिकाःसौम्या निर्बला रिपुरंध्रगाः ॥
तदाधिव्याधिभीतिःस्यात्कलिर्हानिस्तथा विपत् ॥ ६ ॥

क्रूरग्रह बलवान् अर्थात् पंचवर्गीमें १५ से अधिक बली और३।६।११ स्थानोंमें हो तथा शुभग्रह निर्बल अर्थात् पंचवर्गीमें ५ से न्यून बल हों और ६।८।१२स्थानोंमें हो तो मानसीव्यथा और रोग भय हो तथा कलह धनहानि और विपत्ति होवे ॥ ६ ॥

अनुष्टु०-नीचे शुक्रो गुरुः शत्रुभागे सौख्यलवोपि न ॥
लग्नेशेऽष्टमगेष्टेश तनौ वा मृतिमादिशेत् ॥ ७ ॥

शुक्र नीचराशि ६ में और बृहस्पति शत्रुके अंशकमें हो तो उस वर्षमें सुखका अंशभी न होवे १. और लग्नेश अष्टम अष्टमेश लग्नमें हो तो मृत्यु होवे ये २ योग हैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०--निर्बलौ धर्मवित्तेशौ दुष्टखेटास्तनौस्थिताः ॥
लक्ष्मीश्चिरार्जिता नश्येद्यदि शक्रोपि रक्षिता ॥ ८ ॥

धर्मस्थान ९ का स्वामी तथा धन स्थान २ का स्वामी निर्बल हो और पापग्रह लग्नमें हो तो इंद्र भी रक्षा करने आवें तो भी बहुत दिनोंका संचित धन नष्ट होजावे ॥ ८ ॥

अनुष्टु०--नीचस्थचंद्रेस्तगास्सौम्यावियोगःस्वजनैःसह ॥
शरीरपीडा मृत्युर्वा साधिव्याधिभयं द्रुतम् ॥ ९ ॥

चंद्रमा नीचराशि ८ में हो तथा शुभग्रह अस्तंगत हो तो अपने मनुष्योंके साथ विछोह होवे तथा शरीरपीडा वा मृत्यु अथवा मानसीव्यथा रोगभय शीघ्रही एकसे एक होवे ॥ ९ ॥

अनुष्टु०--अब्दलग्नं जन्मलग्नराशिभ्यामष्टमं यदा ॥
कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥ १० ॥

वर्षलग्न जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम हो तो कष्ट और महारोग क्षयादिका भय होवे, ऐसे अष्टम लग्नपर पापग्रहकी दृष्टि वा पापग्रहका योग होवे तो मृत्यु होवे ॥ १० ॥

अनुष्टु०--जन्मन्यष्टमगः पापो वर्षलग्ने रुगाधिदः ॥
चंद्राब्दलग्नपौ नष्टबलौ चेत्स्यात्तदा मृतिः ॥ ११ ॥

जन्मकालमें जो ग्रह अष्टम है वही वर्षमें लग्नका हो तो रोग तथा मानसीव्यथा देताहै, जो चंद्रमा और लग्नेश दोनों (नष्टबल) ५ से हीन होवें तो मृत्यु होवे ॥ ११ ॥

अनुष्टु०--जन्माब्दलग्नपौ पापयुक्तौ पतितभास्थितौ ॥
रोगाधिदौमृत्युकरावस्तगौ नेक्षितौ शुभैः ॥ १२ ॥

जन्मलग्नेश तथा वर्षलग्नेश भी पापयुक्त होकर अष्टमस्थानमें हों तो रोग और मानसीव्यथा देते हैं और अस्तंगत तथा शुभग्रह दृष्टिरहित भी हों तो मृत्यु करतेहैं ॥ १२ ॥

अनुष्टु०—व्ययांबुनिधारिस्थाजन्मेशाब्दपमुंथहाः ॥
एकर्क्षगास्तदामृत्युः पापक्षुतदृशा ध्रुवम् ॥ १३ ॥

जन्मलग्नेश वर्षेश और मुंथा तीनों बारहवें चौथे आठवें और छठे स्थानोंमेंसे किसीमें साथही हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होवे, जो इनपर पाप ग्रहोंकी क्षुताख्य दृष्टि भी हो जो अवश्य मृत्यु ही होगी ॥ १३ ॥

अनुष्टु०—चंद्रोव्ययेशनियुतः शुक्रः षष्ठोर्थनाशकृत् ॥
चित्तवैकल्यमशुभेसराफान्नशुभेक्षणात् ॥ १४ ॥

शनिके साथ चंद्रमा बारहवाँ हो और शुक्र छठा हो तो धननाश करता है और शनि शुक्रके साथ किसी पापग्रहका ईसराफ योग हो तो चित्त विकल रहे, इनपर शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो धननाश तथा चित्तवैकल्य दोनों फल होवें ॥ १४ ॥

अनुष्टु०—चंद्रोर्कमंडलगतोरिपुरिःफाष्टबंधुगः ॥
त्रिदोषतस्तस्यरुजाविबुधेज्यदृशा शुभम् ॥ १५ ॥

चन्द्रमा अस्तंगत होकर छठे, बारहवें, आठवें, वा चौथे, स्थानमें हो तो (त्रिदोष) वात पित्त कफके विकारसे सन्निपातादि रोग होवें जो इस पर बृहस्पतिकी दृष्टि होजाय तो परिणाममें निरोगी होजायगा ॥ १५ ॥

अनुष्टु०—हद्दाहायनलग्नेशौ सप्ताष्टांत्येखलान्वितौ ॥
स्वदशायां निधनदौ शुभदृष्ट्या शुभं वदेत् ॥ १६ ॥

लग्नमें जिसकी हद्दा तत्काल हो वह और लग्नेश सप्तम अष्टम वा बारहवें पापयुक्त हों तो अपनी दशामें मृत्यु देते हैं इनपर शुभग्रहकी दृष्टि भी हो तो रोग भोगकर परिणाममें सुख होगा कहना ॥ १६ ॥

अनुष्टु०—अब्दलग्नाद्व्यनृजून्व्ययार्थस्थौरुजातदा ॥
एवंवर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपिबंधनम् ॥ १७ ॥

वर्षलग्नसे बारहवां मार्गीग्रह द्वितीय स्थानमें वक्री ग्रह हो तो रोग होताहै इसका नाम कर्त्तरी योग है, ऐसेही जन्मलग्नेश वा वर्षलग्नेश वर्षेशसे कर्त्तरी हो तो बंधन कहना और सप्तम स्थानपर भी कर्त्तरीयोग रोग वा दुष्ट उपद्रवोंसे बंधन देताहै ॥ १७ ॥

अनुष्टु०-नीचे निराशिपे पापदृष्टे कार्य्यं विनश्यति ॥
इंथिहेशेन्दुपे वारिभेस्तंयाते रुजा विपत् ॥ १८ ॥

निराशिपति नीच राशिमें पापदृष्ट हो तो अभिलषित कार्य्यका नाश होता है १ और मुंथेश तथा वर्षेश छठा वा उपलक्षणसे आठवाँ अस्तंगत हों तो रोगोंसे विपत्ति होवे यह २ दो योग हैं ॥ १८ ॥

शार्दूलवि०-चंद्रोरिःफषडष्टभूद्युनगतो दृष्टोऽशुभैर्नोशुभैःसोरिष्टं विदधातिमृत्युमथवाभौमेक्षणादग्निभीः ॥ शस्त्राद्दाशनिराहुकेतुभिररेर्भीतिंरुजां वायुजां दारिद्र्यं रविणाशुभं शुभदृशेज्यालोकनादादिशेत् ॥ १९ ॥

चन्द्रमा बारहवें छठे आठवें प्रथम वा सप्तम स्थानमें हो इसपर पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो शुभ ग्रहोंकी न हो तो अरिष्ट वा मृत्युही देता है, दृष्टिवशसे विशेष फल यह है कि उक्त प्रकारके चन्द्रमा पर मंगलकी दृष्टि हो तो अग्निका भय वा शस्त्रसे भय देता है शनि राहु वा केतुकी दृष्टि हो तो शत्रुभय तथा वातरोगसे पीडा तथा सूर्य्यकी दृष्टि हो तो दरिद्रता देता है, जो शुभग्रहकी विशेष करके बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो उक्तपीडा परिहार उपरांत कल्याण देता है ॥ १९ ॥

व०ति०-क्रूरान्वितेक्षितयुताशानिनेंथिहाधिष्ण्याधिप्रदाजनुषि रिःफसुखारिरंध्रे ॥ द्यूनेच वर्षतनुनेधनगा स्मृतिं सा दत्ते खलेक्षितयुतेत्यपिचिंत्यमार्य्यैः ॥ २० ॥

इति नीलकंठ्यांफलतंत्रेऽरिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

मुंथा क्रूरग्रहसे युक्त हो और शनि उसे देखे अनिष्टस्थान ६। १२। और ८। ४ में हो तो मानसीव्यथा तथा शरीरमें रोग देती है १ यही मुंथा जन्मकालमें अर्थात् जन्मलग्नसे १२। ४। ६। ८। ७। स्थानमें हो तथा वर्षमें अष्टम स्थानगत हो पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देती है इस प्रकार विद्वानोंने विचार करना ॥ २० ॥

इति महीधरकृतायांनीलकंठीभाषाटीकायांफलतंत्रेअरिष्टविचाराध्यायस्तृतीयः ३

अथारिष्टभंगाध्यायः ।

अनुष्टु०—लग्नाधिपोबलयुतःशुभेक्षितयुतोपिवा ॥
केंद्रत्रिकोणगोरिष्टंनाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त अरिष्ट योगोंके परिहारार्थ अरिष्टभंग योग कहते हैं कि वर्षलग्नका स्वामी बलवान् पंचवर्गीमें १५ से अधिक बली हो शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ५ । ९ में हो तो पूर्वोक्त दुष्ट योगोंका अरिष्टफल नाश करके सुख और धन देता है ॥ १ ॥

अनुष्टु०—गुरुःकेंद्रेत्रिकोणेवापापादृष्टःशुभेक्षितः ॥
लग्नचंद्रेंथिहारिष्टंविनाश्यार्थसुखं दिशेत् ॥ २ ॥

बृहस्पति केंद्र वा त्रिकोणमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो और इसपर पापग्रहकी दृष्टि न हो तो लग्न चन्द्रमा और मुन्थाजन्य पूर्वोक्त अरिष्टका नाश और सुखप्राप्ति कहना ॥ २ ॥

अनुष्टु०—सुखंस्वामियुतंसाद्दिर्दृष्टंसौख्ययशोर्थदम् ॥
लग्नेतृतीयेऽथगुरुर्जन्मेट्सौख्यार्थदःसुखे॥ ३ ॥

चतुर्थभाव अपने स्वामीसे युक्त तथा शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो यश और धन देता है और बृहस्पति लग्न वा तृतीय स्थानमें तथा जन्मलग्नेश सुख ४ स्थानमें हो तो सुखपूर्वक धन देता है ॥ ३ ॥

उपजा०—लग्नेद्युनेशस्तनुगः सुरेज्यःक्रूरैरदृष्टःशुभमित्रदृष्टः ॥
रिष्टं निहंत्यर्थयशःसुखानि दिशेत्स्वपाके नृपतिप्रसादम्॥४॥

सप्तमेश लग्नमें बृहस्पतिके साथ हो क्रूरग्रह इसे न देखें शुभग्रह तथा मित्रग्रहोंसे दृष्ट उपलक्षणसे युक्तभी होवे तो अरिष्टको नाशकर धन यश और सुख देता है तथा अपने दशामें राजप्रसादभी देगा कहना ॥ ४ ॥

उपजा०—बलान्वितौधर्मधनाधिनाथौक्रूरैरदृष्टौ तनुगौ यदास्ताम् ॥
राज्यं गजाश्वांबररत्नपूर्णरिष्टस्यनाशोप्यतुलं यशश्च ॥ ५ ॥

नवमेश तथा धनभावेश बलवान् और लग्नमें हों पापग्रह इन्हें न देखें तो हाथी घोडा वस्त्र रत्नोंसे पूर्ण राज्य मिले तथा अरिष्टका नाश हो और अनुपम यशभी होवे ॥ ५ ॥

उ० जा०-त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैः केंद्रत्रिकोणोपगतैश्चसौम्यैः ॥
रत्नांबरस्वर्णयशःसुखानिनाशोप्यनिष्टस्यतनोश्चपुष्टिः ॥ ६ ॥

पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें स्थानोंमें हों तथा शुभग्रह केंद्र वा त्रिकोणमें हों तो रत्न वस्त्र सुवर्ण यश और सुख मिलें और पूर्वोक्त अरिष्टका नाश होवे तथा शरीरमें पुष्टिभी होवे ॥ ६ ॥

उ० जा०-यदासवीर्यौमुथहाधिनाथोलग्नाधिपोजन्मविलग्नपोवा ॥
केंद्रत्रिकोणायधनस्थितास्तेसुखार्थहेमांबरलाभदाः स्युः ॥७ ॥

जो मुंथेश वा लग्नेश अथवा जन्मलग्नेश पूर्ण बली होकर केंद्रत्रिकोण वा ग्यारहवें वा द्वितीय स्थानमेंसे किसीमें हों तो सुख तथा धन सुवर्ण वस्त्र देतेहैं तीनों ऐसे हों तो विशेषतर उक्त लाभ देते हैं ॥ ७ ॥

उपजा०-तुंगेशनिर्वाभृगुजोगुरुर्वाशुभेत्थशालाद्यवनाद्धनानिम् ॥
बलीकुजो वित्तगतोयशोर्थतेजांस्यकस्माच्चसुखानिदद्यात् ॥ ८ ॥

शुभग्रहसे इत्थशाली उच्चराशिका शनि वा शुक्र अथा बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ यवनसे धनलाभ होवे शनियोगसे और शुक्रकृत योग हो तो स्त्रीसे और गुरुकृत योग हो तो ब्राह्मणसे यवनादके माने यवनादि ग्रहानुसार जातियोंसे जो तीनों उक्त ग्रह उच्चवर्ती तथा शुभ ग्रहेत्थशाली हों तो यवन राजासे बहुत धन मिले औरनसे थोडा २ और बलवान् मंगल धनस्थानमें हो तो यश धन और तेज मिलें तथा अकस्मात् सुखभी प्राप्त होवे ॥ ८ ॥

इंद्र०-सूर्येज्यशुक्राभिथइत्थशालंकुर्युस्तदाराज्ययशःसुखार्थाः ॥
सूर्यःकुजोवोपचयेददातिभद्रंयशोमंगलमिंथिहायाः ॥ ९ ॥

सूर्य बृहस्पति शुक्र परस्पर इत्थशाल करें तो राज्य यश सुख और धन मिलें १ तथा सूर्य वा मंगल मुंथासे उपचय ३।६।१०।११ स्थानमें हों तो कल्याण अति और मंगल देते हैं ॥ ९ ॥

अनु०-शुक्रज्ञचंद्राहद्देस्वेपापात्र्यायगतायदि ॥
स्वबाहुबलतोहेमसुखकीर्तिनरोश्नुते ॥ १० ॥

शुक्र बुध और चन्द्रमा अपनी हद्दामें हों और पापग्रह तीसरे ग्यारहवें स्थानमे हों तो मनुष्य अपने बाहुबलसे सुवर्ण सौख्य और कीर्तियोंका भोग करताहै १०

अनुष्टु०–बुधशुक्रौमूसरीफौ गुरुर्विक्रमभावगः ॥
तदाराज्ययशोहेममुक्ताविद्रुमलब्धयः ॥ ११ ॥

बुध शुक्रका मूसरीफ योग हो और बृहस्पति तृतीयस्थानमें हो तो राज्य यश और सुवर्ण मोती मूंगे आदि रत्न मिलें ॥ ११ ॥

अनुष्टु०–भौमोमित्रगृहेऽब्देशः कंबूलीस्वगृहादिगैः ॥
गजाश्वहेमांबरभूलाभंदत्तेसुखाधिकम् ॥ १२ ॥

मंगल वर्षेश होकर मित्रके राशिमें हो और स्वगृहादि पदस्थित किसी ग्रहसे मुथशिली तथा चन्द्रमासे कंबूलीभी हो तो हाथी घोडे सुवर्ण वस्त्र भूमिका लाभ और अधिक सुख देते हैं ॥ १२ ॥

अनुष्टु०–इत्थंजन्मनिवर्षेचयोगकर्तुर्बलाबलम् ॥
विमृश्यकथयेद्राजयोगंतद्भंगमेवच ॥ १३ ॥

इस प्रकार जन्म तथा वर्षमें योग करनेवाले ग्रहोंका बलाबल विचारके राजयोग तथा राजयोगभंग कहना. जैसे योगकर्त्ता ग्रह उच्चादि पदस्थ वा पूर्णबली हो तो राज्यप्राप्ति निर्बल होनेमें राज्यादि हानि इत्यादि ॥ १३ ॥

उ०जा०–अब्देंथिहेशादिखगाःखलैश्चेद्युतेक्षितावास्तगनीचगावा ॥
सौम्याबलोनानृपयोगभंगंतदाभवेद्वित्तसुखक्षयश्च ॥ १४ ॥

वर्षमें मुंथेशादि ग्रह जो पापयुक्त वा पापदृष्ट वा अस्तंगत नीचगत हों तथा शुभग्रह बलरहित हो तो राजयोगभी हो तो भी भंग होगा और धन तथा सुखकाभी क्षय कहना ॥ १४ ॥

शा०वि०–श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥ तत्सूनुःखलुनीलकंठविबुधोविद्वच्छिवानुज्ञयाऽवोचद्वर्षफलंमुथहाफलमथारिष्टादिसद्योगयुक् ॥ १५ ॥

इस श्लोकका अर्थ पूर्वोक्तही है विशेष यह है कि वर्षेश मुंथाफल अरिष्टयोग अरिष्टभंग राजयोग इस अध्यायमें ग्रंथकर्त्ताने कहेहैं ॥ १५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतंत्रे अरिष्टभंगराजयोग-राजयोगभंगकथनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ भावविचारेषु तावत्प्रथमभावविचारः ।

अनुष्टु०—योयोभावःस्वामिसौम्यैर्दृष्टोयुक्तोयमेधते ॥
पापदृष्टयुतेनांशोमिश्रैर्मिश्रफलंवदेत् ॥ १ ॥

जो जो भाव अपने स्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो उस भावकी वृद्धि और जो भाव पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो उसकी हानि होती है, शुभ पाप दोनोंसे युक्त वा दृष्ट वा एक प्रकारसे युक्त दूसरे प्रकारसे दृष्ट हो तो मिश्रफल कुछ शुभ कुछ अशुभ कहना, सभी भावोंमें यह विचार है ॥ १ ॥

इंद्रव०—लग्नाधिपेवीर्य्ययुतेसुखानिनैरुज्यमर्थागमनंविलासः ॥
स्यान्मध्यवीर्य्येल्पसुखार्थलाभःक्लेशाधिकत्वंविपदल्पवीर्य्ये ॥ २ ॥

लग्नेश पूर्वोक्त प्रकारसे बलवान् हो तो सौख्य तथा नीरोगता धनप्राप्ति और हास विलासादि सुख होवे. जो मध्यवीर्य्य हो तो सौख्य और धनलाभ थोडा थोडा होते हैं जो अल्प वा हीनवीर्य्य हो तो अधिक क्लेश और विपत्ति होती है ॥ २ ॥

शार्दूलवि०—जन्माब्दांगपतौथिहापतिसमानाथाद्यधीकारवान्
सूर्य्योनष्टबलस्त्वगक्षिविलयंकुर्य्यान्निरुत्साहताम् ॥
नीचत्वं पितृमातृतोऽप्यभिभवश्चंद्रेक्षिकार्य्यक्षयो
दारिद्र्यंचपराभवोगृहकलिव्याध्यादिभीतिस्तथा ॥ ३ ॥

अधिकारी ग्रहोंके निर्बलतामें प्रत्येकके फल कहते हैं कि जन्मलग्नेश वा वर्षलग्नेश वा मुंथेश अथवा वर्षेश नष्टबली पंचवर्गीमें ५ से न्यून होनेमें यह फल है कि, सूर्य्य हो तो नेत्ररोगसे दृष्टिहानि कुष्ठ दद्रु आदि त्वचारोग उत्साहभंग होवे तथा नीचकर्म करने पडें माता पितासे "पराभव" अधिकारहानि होवे चन्द्रमा हो तो नेत्रक्षय कार्य्यहानि दरिद्र अपमान घरमें कलह मानसीव्यथा रोगभय होते हैं ॥ ३ ॥

अनुष्टु०—भौमेऽबलत्वं भीरुत्वं बुधे मोहपराभवौ ॥
जीवे धर्मक्षयः कष्टफलाजीवनवृत्तयः ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे मंगल बलहीन अधिकारी हो तो शरीरमें निर्बलता और भय

प्राप्त होवे. बुध होतो मूर्च्छा वा अज्ञान और अपमान होवे बृहस्पति हो तो धर्मक्षय और जीविका कष्टसे होवे ॥ ४ ॥

अनुष्टु०–शुक्रे विलाससौख्यानां नाशः स्त्रीभिः समं कलिः ॥
सौरौ भृत्यजनाद्दुःखं रुजो वातप्रकोपतः ॥५॥

ऐसाही शुक्र हो तो हास विलास सुखका नाश और स्त्रियोंसे कलह होवे शनि हो तो भृत्यमनुष्यसे दुःख और वातकोपसे रोग होवे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०–लग्नंपापयुतं सौम्यैरदृष्टंसहितं नृणाम् ॥
विवादंवञ्चनंदुष्टमशनंचापि विंदति ॥ ६ ॥

लग्न पापग्रहसे युक्त हो तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त वा न हो तो मनुष्यों-को कलह होवे कोई ठगलेवे दुष्ट वस्तु खानेको मिले इतने फल होतेहैं ॥ ६ ॥

शार्दूलवि०–जन्माब्दांगपरंध्रपाब्दमुथहानाथाबलाढ्यास्तदा
सम्पूर्णंवर्षमुशांतिसर्वमतुलं सौख्यंयशार्थागमः ॥ षष्ठाष्टांत्यगता
नचेदिहपुनस्तेदुःखभीतिप्रदानिर्वीर्य्यायदिवर्षमेतदशुभंवाच्यं
शुभेक्षांविना ॥ ७ ॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश अष्टमेश वर्षेश और मुंथेश बलवान् हो तथा छठे आठवें बारहवें स्थानोंमें न हों तो सम्पूर्ण वर्षमें दैवज्ञ शुभही फल कहते हैं और अगणित सुख तथा यश और धनागमभी होते हैं जो उक्त ग्रह बलरहित हों और इनपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि भी न हो तो दुःख तथा भय होते हैं और सम्पूर्ण अशुभ फलही देते हैं, यदि निर्बल अशुभदृष्ट ६।८।१२ में भी हों तो उक्त ग्रह मृत्युही देतेहैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०–सूतौधनप्रजःखेटोधनाधीशश्चतौयदि ॥
वर्षेनष्टौवित्तनाशान्यनिक्षेपापवाददौ ॥ ८ ॥

जन्ममें जो ग्रह धन देनेवाला है वह और जन्महीका धनभावेश वर्षमें नष्टबली हो तो धननाश तथा (अपवाद) कि मैंने इसको कुछ धन धरो-हर दियाथा इसने चुरालिया ऐसा कलंक लगे, जो उक्त दोनों बलवान् हों तो धन देते हैं ॥ ८॥

अनु०–एवंसमस्तभावानां सूतौनाथाश्चपोषकाः ॥
अब्देनष्टबलास्तेषां नाशायोह्याविचक्षणैः ॥ ९ ॥

इसी प्रकार सम्पूर्ण भावोंके स्वामी जन्ममें बलवान् वर्षमेंभी बलवान् हों तो उस भावको पालते हैं जो भावेश जन्ममें तथा वर्षमें भी निर्बल हों तो बुद्धिमानोंने उस भावका नाश कहना ॥ ९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषा० वर्षतन्त्रे प्रथमभावफलाध्यायः ॥ १ ॥

अथ धनभावविचारः।

उपजा०-वित्ताधिपोजन्मनिवित्तगोऽब्देजीवोयदालग्नपतीत्थशाली ॥
तदाधनाप्तिः सकलेऽपिवर्षे क्रूरेसराफे धनधान्यहानिः ॥ १ ॥

जो जन्मका धनभावाधीश बृहस्पति वर्षमें धनभावगत हो और लग्नेशके साथ इत्थशाली हो तो सम्पूर्ण वर्षमें धनप्राप्ति होवे, जो उक्त बृहस्पति पापग्रहसे ईसराफी हो तो धन तथा अन्नका नाश करे ॥ १ ॥

अनु०-जन्मन्यर्थावलोकीज्योऽब्देब्देशोबलवान्यदा ॥
तदा धनाप्तिर्बहुलाविनायासेनजायते ॥ २ ॥

जन्ममें धनस्थानको बृहस्पति देखे और वर्षमें वर्षेश होजावे बलवान् भी होवे तो विना परिश्रम बहुत धनप्राप्ति होवे ॥ २ ॥

अनुष्टु०-एवंयद्भावपोजन्मन्यब्देतद्भावगोगुरुः ॥
लग्नेशेनेत्थशालीचेत्तद्भावजसुखंभवेत् ॥ ३ ॥

ऐसेही जन्ममें जिस भावका स्वामी बृहस्पति है वर्षमें उसी स्थानमें हो और उपलक्षणसे वर्षेश हो जावे, लग्नेशसे इत्थशाली हो तो उस भावका सुख होता है जैसे जन्ममें तृतीयेश बृहस्पति वर्षमें तीसरा वा वर्षेश होकर लग्नेशसे इत्थशाली हो तो भ्रातृसुख होगा ऐसेही संपूर्ण भावोंमें विचार करना ॥ ३ ॥

अनुष्टु०-तथाजन्मधियंपश्येद्भावमब्देब्दपोगुरुः ॥
तदातद्भावजंसौख्यमुक्तंताजिकवादिभिः ॥ ४ ॥

जैसे पूर्व कहा गया ऐसेही बृहस्पति वर्षमें वर्षेश हो और जन्ममें वह जिस भावको देखे उस भावजन्य सुख देताहै ताजिकशास्त्र जाननेवालोंका यह मत है ४

अनुष्टु०-जन्मषष्ठाधिपबुधःषष्ठोब्देस्वल्पलाभदः ॥
पापार्दितेगुरौरंध्रेऽर्थेनादंडःपतेद्धनम् ॥ ५ ॥

जन्ममें बुध षष्ठेश हो और वर्षमें छठे स्थानमें हो तो थोडा लाभ देता है. चार प्रकारके ग्रहयुद्धसे पापपीडित बृहस्पति अष्टम वा धनस्थानमें हो तो निश्चय राजासे दंड पडे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०—गुरुर्वित्तेशुभैर्दृष्टोयुतोवाराजसौख्यदः ॥
जन्मन्यब्देचमुथहाराशिंपश्यन्विशेषतः ॥ ६ ॥

बृहस्पति धनस्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो राजासे सुख देता है. जन्म और वर्षमें भी मुंथा राशिको बृहस्पति देखे तो विशेष राजसुख देताहै॥ ६ ॥

अनुष्टु०—एवंसितेब्दपेभूरिद्रव्यंधान्यंचजायते ॥
वित्तलग्नेशसंयोगो वित्तसौख्यविनाशदः ॥ ७ ॥

बृहस्पतिके तरह शुक्र धनस्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो और वर्षेशभी शुक्रही हो तो बहुतसा धन तथा अन्न होता है और धनशे लग्नेश एकही स्थानमें हों तो धन सुखका नाश करते हैं, इसमें भी विचार है कि, इनका इत्थशाल हो तो धनसुख होताहै "ईसराफ हो तो धन सुखका नाश होता है" और इत्थशाल वा ईसराफ न हो केवल संयोगमात्र हो तो भी धन सुख होताहै यह अर्थ बहुत संमत है ॥ ७ ॥

अनुष्टु०—एवंबुधेसवीर्येस्याल्लिपिज्ञानोद्यमैर्धनम् ॥
जन्मलग्नगताःसौम्यावर्षेथैधनलाभदाः ॥ ८ ॥

ऐसेही बुध बलवान् वर्षेश धनस्थानमें शुभ युक्त दृष्ट हो तो लिखनेके काम तथा ज्ञान शास्त्र और उद्यम (व्यवसाय) से धन मिले और जन्ममें जो शुभग्रह लग्नमें हैं वही वर्षमें धनस्थानमें हों तो धनलाभ देते हैं ॥ ८ ॥

अनुष्टु०—मालसह्मानिवित्ते वा बुधेज्यासितरैर्युते ॥
तैर्वादृष्टेधनंभूरि स्वकुलेराज्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

पारसी भाषामें (माल) धनको कहते हैं मालस्थानमें वा मालसहममें बुध बृहस्पति और शुक्र हों वा ये तीनों उसे देखें तो बहुत धन तथा अपने कुलका राज्य मिले ॥ ९ ॥

अनुष्टु०-अर्थार्थसहमेशौ चेच्छुभैर्मित्रदृशीक्षितौ ॥

बलिनौसुखतोलाभप्रदौयत्नादरेर्दृशा ॥ १० ॥

धनमावेश और धनसहमेश पर शुभ ग्रहोंकी मित्रदृष्टि हो तथा बलवान्भी हो तो सुखपूर्वक धनलाभ हो, जो इन्हें शुभ ग्रह शत्रुदृष्टिसे देखें तो यत्नसे धनलाभ देते हैं ॥ १० ॥

अनुष्टु०-मित्रदृष्ट्यामुथशिलेर्थागयोःसुखतोधनम् ॥

तयोर्मूसरिफे वित्तनाशदुर्नयभीतयः ॥ ११ ॥

लग्नेश धनेशका मित्रदृष्टिसे मुथशिल योग हो तो अनायाससे धन मिले जो इनका मुशरिफ योग हो तो धननाश तथा दुर्नय (त्रास) भय होवे॥ ११ ॥

अनुष्टु०-जन्मनीज्योस्थितस्त्रासराशिर्वर्षेलग्नगः ॥

शुभस्वामीक्षितयुतो नैरुज्यस्वाम्यवित्तदः ॥ १२ ॥

बृहस्पति जन्ममें जिस राशिका होवे वह राशि वर्षमें लग्न हो शुभग्रह तथा स्वस्वामियुक्त दृष्ट हो तो नीरोगता अपने देशका स्वामित्व और धन देता है ॥ १२ ॥

अनुष्टु०-सुतौलग्नेरविर्वर्षे धनस्थोधनसौख्यदः ॥

शनौवित्तेकार्यनाशोलाभोल्पोऽथधनव्ययः ॥ १३ ॥

जन्ममें सूर्य्य लग्नका और वर्षमें धनस्थानका हो तो धनका सुख देता है. ऐसाही शनि धनस्थानमें कार्य्यनाश थोडा लाभ बहुत धनहानि करताहै॥ १३॥

अनु०-भ्रातृसौख्यंगुरुयुतेभूतयःस्युः शुभेक्षणात् ॥

क्रूरयोगेक्षणात्सर्वं विपरीतं फलं भवेत् ॥ १४ ॥

परंतु यह उक्त प्रकार शनि बृहस्पतियुक्त तथा शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो ऐश्वर्य और भाइयोंका सुख देता है. क्रूर ग्रहोंके योग तथा दृष्टिसे उक्त शुभ फल संपूर्ण विपरीत होता है ॥ १४ ॥

अनुष्टु०-वित्तेशोजन्मनिगुरुर्वर्षेयद्भावगोभवेत् ॥

यद्भावगस्तमाश्रित्य लाभदोऽब्दआत्मनः ॥ १५ ॥

जन्ममें बृहस्पति धनभावका स्वामी हो और वर्षमें वर्षेश हो जाय तो जिस भावमें बैठा हो उस संबंधी लाभ देता है, जैसे उक्त बृहस्पति लग्नमें हो तो अपने पुरुषार्थसे लाभ देताहै और आत्मनः-शरीरको सुख देताहै ॥ १५॥

अनु०-वित्ते सुवर्णरूप्यादेर्भ्रात्रादेः सहजर्क्षगः।
पितृमातृक्षमादिभ्योवित्तंसुहृदि पंचमे ॥ १६ ॥

उक्त प्रकार बृहस्पति धन स्थानमें हो तो सुवर्ण रौप्यादि लाभ हो तीसरा हो तो भ्रातादिकोंसे, चौथा हो तो पिता माता वा उनके सदृशोंसे 'पंचमे' इसका अर्थ दूसरे श्लोकार्थमें है ॥ १६ ॥

अनु०-सुहृत्तनयतःषष्ठेरिवर्गाद्धानिभीतिदः॥
स्त्रीभ्योद्यूनेऽष्टमेमृत्युरर्थेहेतुस्तथांकगे ॥ १७ ॥

और पंचम होनेमें मित्र वा मित्रपुत्र वा आत्मपुत्रसे धनलाभ और छठा हो तो शत्रुवर्गसे धनहानि और भय देता है. सातवें हो तो स्त्रियोंसे धन देता है, आठवें हो तो मृत्युतुल्य धनक्लेश देता है, नवें हो तो अनेक प्रकारसे धन देता है ॥ १७ ॥

अनु०-खेनृपादेर्नृपकुलादायेंत्येव्ययदो भवेत् ॥
इत्थंविमृश्यसुधियावाच्यमित्यपरेजगुः ॥ १८ ॥

दशवें हो तो राजा मंत्री आदिकोंसे ग्यारहवां हो तो राजकुलसे धन देता है. बारहवां हो तो व्यय देताहै. बुद्धिमानोंने इस प्रकार विचारके फल कहना, ऐसा और आचार्यभी कहते हैं ॥ १८ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतंत्रे धनभावविचाराध्यायः२॥

अथ सहजभावविचारः।

अनु०-अब्देशेकसितवापि सबलेपापवर्जिते ॥
सौख्यंमिथःसोदराणां व्यत्ययाद्व्यत्ययंवदेत् ॥ १ ॥

वर्षेश सूर्य्य अथवा शुक्र बलवान् हो तथा पापग्रहोंसे युक्त न हो तो परस्पर भाइयोंका सुख होवे. जो पापग्रहयुक्त हो तो विपरीत फल कहना अर्थात् भाइयोंके साथ परस्पर कलहादि उपद्रव होवें ॥ १ ॥

वसंतति०-दग्धेकलिः सहजपेऽन्दपतौतयोर्वाजीवेबलेन रहिते सहजेसहोत्थैः ॥ वैरंतृतीयभवनाधिपतौसराफेमांथेकलिंस्व-जनसोदरतश्चविंदेत् ॥ २ ॥

तृतीयस्थानका स्वामी (दग्ध) दुष्टस्थान अस्तंगतादि दोषसहित हो तो भाइयोंके साथ कलह होवे; शुक्र वा सूर्य्य दग्ध हो तो भी यही फल है और बृहस्पति बलरहित तृतीयस्थानमें हो तोभी यही फल होताहै. तथा आकुलता भी उनको होतीहै (बलवान् बृहस्पति तृतीय भ्रातृसुख देता है) और वर्षेश तथा तृतीयेशका ईसराफ योग हो तो भाई तथा अपने मनुष्योंसे कलह और उनके शरीरमें कष्टभी जानना ॥ २ ॥

उपजा०-यदेत्थशालःसहजेश्वरेण गुरुस्तृतीयेसहजात्सुखाप्तिः ॥ सारेविधौस्यात्कलहस्तृतीयेदृष्टोयुतौनोगुरुणायदातौ ॥ ३ ॥

यदि निर्बलभी बृहस्पति तृतीयमें हो पर तृतीयेश से शुभ दृष्टिका इत्थ-शाल करता हो तो भाईसे सुख कहना सबल होके ३ में इत्थशालके विना भी भ्रातृसुख देताहै, यह पूर्वसिद्ध है, मंगलसहित चंद्रमा तीसरे स्थानमें हो तो भाइयोंके साथ कलह होवे परंतु इनपर बृहस्पतिकी दृष्टि न हो तो यह फल है गुरु दृष्टिसे शुभ फल होजाताहै ॥ ३ ॥

अनुष्टु०-सहजेसहजाधीशोधिकारिणिसमापतेः ॥
लग्नपेवामुथशिलेमिथःसौख्यंसहोत्थयोः ॥ ४ ॥

तृतीयेश तृतीय स्थानमें हो और अधिकारयुक्त हो तथा वर्षेश लग्नसे मुथशिली हो तो परस्पर भ्रातृसौख्य होवे ॥ ४ ॥

अनुष्टु०-क्रूरेसराफेकलहःशनौभौमर्क्षगेरुजः ॥
ज्ञर्क्षेभौमेनुजमांद्यंवदेत्सहजगेस्फुटम् ॥ ५ ॥

तृतीयेशसे पापग्रहोंका ईसराफ योग हो तो भाइयोंसे कलह होवे. शनि मंगलकी राशि १। ८ में तीसरा हो तो भाइयोंको रोग उत्पन्न होवे तथा बुधकी राशि ६। ३ में मंगल तीसरा हो तो भाइयोंको क्लेश कहना ॥ ५ ॥

अनुष्टु०-मंदर्क्षगेसृजिबुधेकुजर्क्षेसहजेशुभैः ॥
युतेक्षितेसोदराणांमिथःसौख्यंसुखंबहु ॥ ६ ॥

शनिकी राशि १०। ११ का मंगल तृतीय स्थानमें यद्वा मंगलकी राशि १। ८ का बुध तीसरा हो शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो भाइयोंका परस्पर बहुत सुख होवे ॥ ६ ॥

वसन्तति०–जन्माब्दपौ बुधसितौ सबलौ तृतीये सोदर्यबंधुगण-
सौख्यकरौ गुरुश्च ॥ वीर्यान्वितेंदुगृहगो भृगुजोधिकारी सूत्य-
ब्दयोः सहजबंधुगणस्य वृद्ध्यै ॥ ७ ॥

जन्म तथा वर्षलग्नेश बुध यद्वा शुक्र बलवान् होकर तृतीय स्थानमें हो तो सहोदर भाई तथा और बंधुगणका सुख करते हैं, इस प्रकार बृहस्पतिभी उक्त फल देता है और अधिकारी शुक्र जन्म तथा वर्षमें बलवान् हो तथा चंद्रमाकी राशि ४ में हो तो भाई तथा बंधुगणकी वृद्धि करता है ॥ ७ ॥

वसन्तति०–पापान्वितेतु सहजे सहमेश भावनाथेक्षणेन रहिते
सहजस्य दुःखम् ॥ एवं सहोत्थसहमेपि वदेत्तदीशौ दग्धौ यदा
सहजनाशकरौ विचिंत्यौ ॥ ८ ॥

तृतीय भाव पापग्रह युक्त हो तथा तृतीयेश वा सहजेश सहजसहमेशकी दृष्टि इसपर न हो तो भाईको दुःख मिले, इसी प्रकार सहोत्थ सहममेंभी कहना और तृतीयभावेश तथा सहज सहमेश दग्ध (दुष्ट स्थानगत) अस्तंगतादि दोष सहित हों तो भाइयोंके नाश करनेवाले जानना शुभ युक्त दृष्ट हों तो भाइयोंको शुभ जानना ॥ ८ ॥

उपजा०–तृतीयपाब्दपतौ मुनस्थे लग्नेश्वरे वा सहजे विवादः ॥
तृतीयपो जन्मनि ताहगब्दे शुभेक्षितस्तत्र सहोत्थतुष्ट्यै ॥ ९ ॥

तृतीयभावेशसे वर्षेश वा वर्षलग्नेश सप्तम हो तो भाइयोंसे कलह होवे और जन्म तथा वर्षमेंभी तृतीयेश तृतीयगत हो शुभ ग्रहकी दृष्टिभी इसपर हो तो परस्पर भाइयोंका आनंद देनेवाला होताहै ॥ ९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां वर्षतंत्रे तृतीयभावविचारः॥ ३॥

अथ सुखभावविचारः ।

उपजा०–तुर्येरवीन्दू पितृमातृपीडा पापान्वितौ पापनिरीक्षितौ च ॥
जन्मस्य सूर्य्यक्षगतेर्कपुत्रेऽवमानता वैरकलीचपित्रा ॥ १ ॥

चतुर्थ स्थानमें पापयुक्त वा पापदृष्ट सूर्य्य हो तो पिताको और ऐसाही चंद्रमा हो तो माताको पीडा करता है. जो सूर्य्य चंद्रमा साथही चतुर्थ हों वा सूर्य्य चंद्रमा पापयुक्त दृष्ट हों तो पिताको पीडा देते हैं और जन्ममें सूर्य्य जिस राशिका है वर्षमें उस राशिका शनि हो तो अपमान होवे तथा पिताके साथ कलह वैर होवें ॥ १ ॥

उपजा०—चंद्रेजनन्येवसुशांतिवंचौसुखाधिपे प्रीतिसुखानिपित्रोः ॥
तुर्य्याधिपेलग्नपतीत्थशालेवीर्य्यान्वितेसौख्यसुशांतिपित्रोः ॥२॥

जन्ममें चंद्रमा जिस राशिमें है वर्षमें उस राशिका शनि हो तो मातासे वैर तथा कलह होवे, चतुर्थ स्थानका स्वामी चतुर्थहीमें हो तो मातापिताके साथ प्रीति तथा उनका सुख कहते हैं, उपलक्षणसे पितृ वा मातृ सहम भी चतुर्थ होनेमें यही फल देता है तथा चतुर्थेश चतुर्थभावको देखे तो पितृ मातृसुख देता है और बलवान् चतुर्थेश लग्नेशसे इत्थशाली हो तो पितृ मातृ सुख होवे उपलक्षणसे लग्नेश चतुर्थेशका योगभी उक्तफल देनेवाला होताहै ॥ २ ॥

व०ति०—सौख्याधिपोजनुषिनष्टबलोब्दसूत्योः पित्रोरनिष्टकृद-
थोसहमेशयोस्तु ॥ दग्धेतुरीयगृहगेचयदीथिहायानाशस्तयोः
सहमयोरपिदग्धयोःस्यात् ॥ ३ ॥

जन्मका चतुर्थभावेश वर्ष तथा जन्ममें बलहीन हो तो माता पिताको अशुभ फल करता है ऐसाही मातृपितृसहममें भी विचारना तथा इन सहमोंमें दग्ध पापग्रह हों और मुंथासे चतुर्थ पडे तो पिता माताका नाश होवे तथा मातृपितृ सहमोंके स्वामी नष्टबल वा पापाक्रांत और अस्तंगत हों तो यही फल देते हैं सुखेश वा उक्त सहमेश बली हों तो मातापिताको शुभ फल देतेहैं ॥ ३ ॥

अनुष्टु—जन्मन्यंबुगृहंयच्चतत्पतिस्तत्पदोपगो ॥
शन्यारौक्लेशदौपित्रोर्नचेत्सौम्यानिरीक्षितौ ॥ ४ ॥

जन्ममें चतुर्थभाव और चतुर्थेश के आश्रितराशियोंमें शनि और मंगल बैठे होंय तो माता पिताको क्लेश करते हैं पापदृष्ट भी हों तो अधिक क्लेश करते हैं, शुभ दृष्ट हों तो नहीं क्लेश देते हैं अथवा चतुर्थेशके साथ शनि मंगल

हों तो पूर्वोक्त फल देतेहैं. जो ये शनि मंगल सुखमें वा सुखेशके साथ हों और शुभग्रह भी साथ हों वा देखै तो पिताको कष्टहोकर परिणाममें सुखभी होताहै ४॥

वसन्तति०—मातुः पितुश्च सहमतनुपत्थशालतुर्य्येपिचेत्थमवगच्छसुखानिपित्रोः ॥ चेदष्टमाधिपतिनाकृतमित्थशालंपित्रोर्विपद्भयमनिष्टकृतेसराफे ॥ ५ ॥

मातृपितृसहममें वर्ष लग्नेशका इत्थशाल हो तो माता पिताका सुख जानना ऐसेही चतुर्थभावमें वर्षलग्नके स्वामीके इत्थशालसे भी मातपिताको सुख जानना और मातृ पितृ सहम वा सुखभावमें वर्षलग्नसे अष्टमभावेशका इत्थशाल हो तथा अशुभफल दाता ग्रहसे ईसराफ योग हो तो मातापिताको विपत्ति तथा भय जानना ॥ ५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां वर्षतंत्रे चतुर्थभावविचारः ॥ ४ ॥

अथ सुतभावविचारः।

उपजा०—पुत्रायगोवर्षपतिर्गुरुश्चेत्सूर्य्यारसौम्योशनसोऽथवेत्थम् ॥ सत्पुत्रसौख्यायखलार्दितास्तेदुःखप्रदाःपुत्रतएवचिंत्याः ॥ १ ॥

वर्षेश बृहस्पति पंचम वा ग्यारहवें स्थानमें हो अथवा सूर्य्य मंगल बुध शुक्रमेंसे कोई वर्षेश होकर पांचवां वा ग्यारहवां हो तो सत्पुत्रसे सुख मिले और यही ग्रह उक्त प्रकार होकर पापपीडित भी हों तो पुत्रजनित अस्वास्थ्य कलहादि क्लेश विचारना ॥ १ ॥

वसन्तति०—पुत्रेसुतस्यसहमेसबलेसुताप्तिः सौम्येक्षितेप्यतिसुखंयदितत्रवर्षेट् ॥ सौम्येक्षितःशुभगृहेसकुजोबुधश्चेत्पुत्रायगःसुतसुखंविबलःसुतार्तिम् ॥ २ ॥

पंचमभाव वा पुत्रसहम बलसहित हो तो पुत्रप्राप्ति होती है. शुभग्रहकी दृष्टि भी उसपर हो तो अति सुख पुत्रसंबंधी होता है, जो वर्षेश भी पंचम हो तो फल देता है और शुभ ग्रहोंकी राशिमें मंगलके साथ बुध पंचम वा ग्यारहवाँ हो शुभ ग्रह भी इन्हें देखें तो पुत्रसुख देते हैं ऐसा निर्बल बुध पंचम वा ग्यारहवां हो तो पुत्रको पीडा करता है ॥ २ ॥

अनुष्टु०-जीवोजन्मनियद्राशावब्देसौसुतगोबली ॥
पुत्रसौख्यायभौमोज्ञोवर्षेशोत्र सुतार्तिदः ॥ ३ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिमें है वह राशि वर्षमें पंचम हो तथा बलवान् वह राशि हो तो पुत्रप्राप्ति सौख्य देता है और मंगल वा बुध वर्षेश होकर जन्मकी गुरु राशिमें पंचमस्थानगत हों तो वे भी पुत्रप्राप्ति करते हैं ॥ ३ ॥

प्रहर्षिणी-यत्रेज्यो जनुषिगृहेविलग्नमेतत्पुत्राप्त्यै बुधसितयो-
रपीत्थमूह्यम् ॥ यद्राशौ जनुषिशनिःकुजश्चसोब्दे पुत्रार्तिंत-
नुसुतगःकरोतिनूनम् ॥ ४ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिमें है वह वर्षमें लग्न हो तो पुत्रप्राप्ति करता है ऐसेही बुध शुक्रका फलभी जानना. जैसे बुध और शुक्र जन्मके जिस राशिमें हो वह राशि वर्षलग्नमें होनेसे पुत्रप्राप्ति कहना, और जन्ममें जिस राशिका शनि वा मंगल हो वह राशि वर्षलग्नमें वा पंचम में हो तो पुत्रकष्ट करता है, यहां शनिकी राशि लग्नमें मंगलकी राशि पंचम होनेमें यह योग होता है यह निकृष्टफल है ॥ ४ ॥

अनुष्टु०-पुत्रेसुतस्य सहमेपुत्राप्त्यैशुभदृष्टियुक् ॥
लग्नपुत्रेश्वरौपुत्रेपुत्रदौबलिनौयदि ॥ ५ ॥
चंद्रोजीवोथवाशुक्रःस्वोच्चगःसुतदःसुते ॥
वक्रीभौमःसुतस्थश्चेदुत्पन्नसुतनाशनः ॥ ६ ॥

जो लग्नसे पंचमभावमें तथा पुत्रसहममें शुभ ग्रह हों वा इनकी दृष्टि हो तो पुत्रप्राप्ति करते हैं और लग्नेश पुत्रभावेश बलवान् होकर पंचममें हो तो भी पुत्रप्राप्ति करते हैं तथा चंद्र बृहस्पति वा शुक्र अपनी उच्चराशि उपलक्षणसे उच्चांशकका पंचम वा लग्नमें हो तो पुत्र देते हैं और वक्रगति मंगल पंचम हों तो पुत्रनाश करता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

उ०जा०-सुताधिपोजन्मनिभार्गवोब्देपुत्रेविलग्नाधिपतीत्थशाली ॥
पुत्रप्रदो मंदपदस्थपुत्रे पापाधिकारीक्षितआत्मजार्त्तिः ॥ ७ ॥

जन्मकाल में पंचमेश शुक्र हो वर्षमें बलवान् होकर पंचममें हो तथा लग्ने शसे इत्थशाली हो तो पुत्र देता है और जन्मका शनि जिस राशिमें हो वह वर्षमें पंचम हो तथा कोई अधिकारी पापग्रह उसे देखे वा पंचम हो तो पुत्रको पीडा देता है ॥ ७ ॥

अनुष्टु०—यद्राशिगोग्रहःसूत्तोसराशिस्तत्पदाभिधः ॥
बलीजन्मोत्थसौख्याय वर्षेतद्दुःखदोन्यथा ॥ ८ ॥

जन्मकालमें जो ग्रह जिस राशिका है वह उसका पद कहाता है वह पदसंज्ञक वर्षराशिमें उसी भावमें हो, यद्वा वह ग्रह उसी पदमें हो तथा वह ग्रह उसी भावमें हो तो बलवान् होनेमें तद्भावसंबंधी शुभ फल देता है इसमें विचार बहुत हैं सभी भावोंमें बुद्धिबलसे विचारना ॥ ८ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां०नी०भा०पंचमभावफलानि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावविचारः ।

व०ति०—मंदेब्दपेवक्रगते पतितेरुजार्तिः स्यात्सन्निपातभव-
भीरिरिगेत्रशूलम् ॥ गुल्माक्षिरोगविषमज्वरभीर्गुरौतुपापार्दिते-
निलरुजोपिकंबूलशून्ये ॥ १ ॥

वर्षेश शनि वक्रगति होकर छठे स्थानमें हो तथा पापाक्रांतभी हो तो वातसंबंधी रोगसे पीडा तथा सन्निपात (वात पित्त कफ) तीनोंके साथही कोप होनेसे भय तथा शूलरोग पेटमें गुल्मरोग नेत्ररोग और विषम ज्वरका भय होवे जो बृहस्पति वक्रगति पापाक्रांत छठे स्थानमें हो और चंद्रमासे कंबूल योग न हो तो वातरोग कमलवातादि तथा नेत्ररोगभी होवे ॥ १ ॥

व०ति०—स्यात्कामलाख्यरुगपीत्थमसृज्यसृग्भीः पित्तंचरि-
र्फगरवौद्दशिशूलरोगः ॥ पित्तंपुनारिपुगृहेन्नभृगान्भेरौश्लेष्मा-
भयेक्षितयुतेपिकफोरिगेंदौ ॥ २ ॥

मंगल वक्रगति होकर छठे स्थानमें पापपीडित हो और वर्षेशभी हो तो रुधिरविकारसे रोग होवे. पित्तरोग भी होवे (इस श्लोकमें कामलाख्य रोग पूर्वश्लोकोक्त योगका संबंधी है) और ऐसाही सूर्य्य छठा हो तो नेत्रशूलादि

अक्षिरोग होवें तथा ऐसाही शुक्र छठे स्थानमें हो तो पित्तरोग होवे, जो पुरुष राशिका शुक्र छठा हो और षष्ठेशकी दृष्टीभी इस पर हो तो श्लेष्मरोग होवे और ऐसाही चन्द्रमा छठा हो तो कफसंबंधी रोग होवे ॥ २ ॥

इं०व०—एवं बुधेपापयुतेब्दपेऽरौवातोत्थरोगोजनिलग्ननाथः ॥
पापोब्दपेनक्षुतदृष्टिदृष्टो रोगप्रदोमृत्युकरःसपापः ॥ ३ ॥

जो वर्षेश बुध पापयुक्त वक्रगति होकर छठे स्थानमें हो तो वातप्रधान रोग होवे, जो जन्मलग्नका स्वामी पाप और वर्षेश इसे क्षुतदृष्टिसे देखे तो रोग देने वाला होताहै जो वहि पाप जन्मलग्नेश और पापयुक्त भी हो तो मृत्युतुल्य कष्ट फल देताहै ॥ ३ ॥

अनुष्टु०—मृत्यार्किभेलग्नगतेरूक्षशीतोष्णरुग्भयम् ॥
शनीक्षितेथाप्यतास्यात्सपापेमृत्युमादिशेत् ॥ ४ ॥

जन्ममें जिस राशिका शनि है वह राशि वर्षका लग्न हो तो रूक्ष एवं शीत-पित्तके द्वंद्व व रोगका भय होवे इस पर शनिकी दृष्टिभी होवे तो और निंद्यरोग होवे और वही जन्मकी शनि राशि वर्षलग्नमें हो शनिकी दृष्टि और पापयुक्त भी होवे तो मृत्युभय होवे ॥ ४ ॥

अनु०—एवंभौमेक्षुतदृक्शारक्तपित्तरुजोग्निभीः ॥
ततोन्ये बहुलारोगाःशुभदृष्टौ रुजाल्पता ॥ ५ ॥

ऐसेही जन्मकालीन मंगलकी राशि वर्षलग्नमें हो पापग्रह क्षुतदृष्टिसे देखें तो रक्त एवं पित्तरोग तथा अग्निभय होवे, जो यही जान्मिक मंगल राशिवर्षमें होकर इसीमें मंगलभी पड़ा मंगलकी दृष्टि भी उस पर हो तो उक्तरोग अल्पही होवें ॥ ५ ॥

वसंतति०—लग्नाधिपाब्दपतिषष्ठपतीत्थशालोरोगप्रदःस्वचर-
धातुविकारतः स्यात् ॥ स्मारोगदोजनिसिताश्रितभाजिसू-
र्येषष्ठोसितेपततिरुक्सहमं सपापम् ॥ ६ ॥

लग्नेश वा वर्षेशसे षष्ठेशका इत्थशाल हो तो वातादि धातुमें जो उस ग्रहका

धातु संज्ञाप्रकारणमें कहाहै उसके विकारसे रोग होवे और जन्ममें जिस भावका शुक्रहै उसमें वर्षकालका सूर्य्य हो तो धातुविकारसे रोग होवे, यहां श्लोकमें जन्मकी शुक्रराशिका सूर्य्य ऐसा अर्थ प्रकट होताहै, परंतु जन्ममें सूर्य्य जिस राशिका है वर्षमें भी उसी राशिका होगा शुक्रकी राशिमें कैसे जानना संभवहै, जो सूर्य्य शुक्र एकही राशिमें किसीके साथ हों तब यह सम्भावना है तो उसके नित्यही यह योग होगा इससे यह अर्थ वर्षमें योग्य नहीं है, इसलिये शुक्रभावका सूर्य्य होना प्रमाणहै. जो जन्ममें सूर्य्य शुक्र एक राशिमें हों और वर्षमें शुक्र छठे पडजाय तो स्मारशेग (कामविकार) रोग होताहै रोगसहम सपाप हो तो विशेषसे कहना ॥ ६ ॥

मु०प्र०—सपापेगुरौरंध्रगेलग्नआरेसतंद्रास्तिमूर्च्छांगनाशः सचंद्रे ॥
खलाः सूतिकेंद्रेब्दलग्नेरुगात्यैकफोद्भवंप्रिगैरीक्ष्यमाणेसितेस्यात् ॥ ७ ॥

पापयुक्त बृहस्पति अष्टम और मंगल लग्नमें हों तो तन्द्रा (आलस्य सहित मूर्छा) होवे, जो चन्द्रमायुक्त अष्टम बृहस्पति और लग्नमें मंगल हों तो किसी रोगसे किसी अंगका नाश (अति पीडा) होवे, जो पापग्रह जन्मके केन्द्रमें हों और वर्षमें लग्नके हों तो रोगोत्पत्ति करते हैं. यथा नरराशिमें बैठे हुये पापग्रहोंसे शुक्र श्रुतदृष्टिसे देखाजाय तो वर्षमें कफरोग होताहै ॥ ७ ॥

मु०प्र०—दिनेब्दप्रवेशोविलग्नेब्दसूत्योर्यदार्कक्ष्हद्दागृहाद्योधिकारः ॥
रवेर्वाकुजस्यात्रपीडाज्वरात्स्याद्दशासौम्यखेटोत्थयावैसुखाप्तिः ॥ ८ ॥

दिनका वर्षप्रवेश हो और जन्म तथा वर्षकालके लग्नमें सूर्य्य वा मंगलका स्वगृह हद्दा द्रेष्काण आदि कोई अधिकार हो तो उस वर्षमें ज्वरसे कष्ट होवे, जो लग्नपर शुभ ग्रहकी दृष्टि भी हो तो परिणाममें सुख होगा ॥ ८ ॥

अनु०—निशिसूतौवर्द्धमानेचन्द्रेभौमेत्थशालतः ॥
रुग्नश्येदथतेमंदेत्थशालाद्व्यत्ययोन्यथा ॥ ९ ॥

रात्रिका जन्म हो तथा चन्द्रमा वर्द्धिष्णु (शुक्लपक्षका) हो और वर्षमें मंगलके साथ मुथशिली हो तो रोगनाश होवे और ऐसाही चन्द्रमा शनिसे

मुथशिली हो तो रोग बढताहै, विपरीतमें फलभी विपरीत जानना, जैसे दिनका जन्म हो और कृष्णपक्षका चन्द्रमा मंगलसे मुथशिली हो तो रोग करताहै ऐसाही चन्द्रमा शनिसे मुथशिली हो तो, रोगनाश करताहै ॥ ९ ॥

अनुष्टु०—रवावीदृशिवित्केतुयुतेन्दूंनिखिलंगदाः ॥
अधिकारीबलीसूतावन्देकेतुज्ञयुक्तथा ॥ १० ॥

ऐसाही सूर्य्य मंगल वा शनिके साथ मुथशिली तथा बुध केतुयुक्तभी होवे तो सम्पूर्ण वर्षमें रोग रहे तथा जन्मकालका अधिकारी बुध वर्षमें केतुयुत हो तो वही फल देता है ॥ १० ॥

अनुष्टु०—चतुर्थेस्तेचमुथहाक्षुतदृष्टचाशनीक्षिता ॥
शूलंपापखगैर्दृष्टेतच्छूलंपरिणामजम् ॥ ११ ॥

चतुर्थ वा सप्तम स्थानमें मुंथा हो शनिसे युक्त वा शत्रुदृष्टिसे दृष्ट हो तो शूलरोग होता है तथा चतुर्थ सप्तममें मुंथा किसी पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो किसी कर्म वा किसी रोगसे शूल उत्पन्न होवे ॥ ११ ॥

वसंततिल०—जन्मस्थजीवसितराशिगतेमहीजेसूर्य्याशुगोपिटक-
शीतलिकादिमांद्यम् ॥ शीतोष्णगंडभवरुक्सबुधेचसेंदौकुष्टंभ-
गंदररुजोपि सगंडमालाः ॥ १२ ॥

जन्ममें जिस राशिका बृहस्पति वा शुक्र हो उसी राशिका वर्षमें मंगल अस्तंगत हो तो पिटका (फुन्शी) शीतला, दद्रु आदि रोग तथा शीतपित्त और गंडमाला आदि रोग होवें और जन्मका बृहस्पति शुक्रकी राशिका बुध वर्षमें चन्द्रमा सहित हों तो कुष्ठादि रोग होवें ॥ १२ ॥

अनुष्टु०—जन्मलग्नेथिहानाथौषष्ठौपापान्वितेक्षितौ ॥
निर्बलौज्वरपीडांगवैकल्याद्यातिकष्टदौ ॥ १३ ॥

जन्मलग्नेश एवं मुंथेश छठे स्थानमें पापयुक्त वा पापदृष्ट और निर्बल हों तो ज्वरपीडा तथा किसी अंगकी विकलतासे अति कष्ट देते हैं ॥ १३ ॥

अनुष्टु०—मुथहालग्नतन्नाथाःपापांतःस्थास्तुरोगदाः ॥
षष्ठेशेषष्ठगेसौम्योक्तियःप्राप्तिरितीर्य्यते ॥ १४ ॥

मुंथा और मुंथेश लग्न और लग्नेश ये चारों पापग्रहोंके बीच हों तो रोगोत्पत्ति करते हैं. यहां एक वा दो के पापांतःस्थ होनेमें रोग, चारोंसे मृत्युतुल्य कष्ट जानना, और षष्ठेश शुभग्रह छठेही स्थानमें हो तो स्त्रीप्राप्ति होतीहै, परन्तु कन्या मिथुन तुलाका शुक्र छठे कफरोग करता है यह ताजिकांतर मत है॥ १४ ॥

अनुष्टु०—रोगकर्त्तायत्रराशावंशेस्यादनयोर्बली ॥
तत्स्थानंतस्यरोगस्यवाच्यंराशिस्वरूपतः ॥ १५ ॥

उक्तयोगोंसे रोगकर्त्ता ग्रह जानकर रोगका स्थान जाननेकी यह विधि है कि वह ग्रह जिस राशिमें एवं जिस नवांशकमें है उनमेंसे जो अधिक बली है उसका कालांग राशिस्वरूपमें जो स्थान है उसमें रोग उत्पन्न करता है बुद्धिसे बलाबल विचारके कहना ॥ १५ ॥

अनुष्टु०—जन्मषष्ठाधिपेभौमे वर्षेषष्ठगतेरुजः ॥
कुरेत्थशालेविपुलःशुभदृग्योगतस्तनुः ॥ १६ ॥

जन्मका षष्ठेश मंगल वर्षमें छठाही हो तो रोग करता है, इसमें भी विशेष विचार है कि, इसके साथ पापग्रहका इत्थशाल हो तो रोग बहुत, शुभग्रह का हो तो अल्परोग होता है ॥ १६ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ता० नीलकंठीभाषाटी० षष्ठभावफलाध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावविचारः ॥

उपजा०—बलीसितोब्दाधिपतिःस्मरस्थःस्त्रीपक्षतःसौख्यकरो विचिंत्यः ॥ इज्येक्षितोत्यंतसुखंकुजेनाधिकारिणाप्रीतिकरो मिथःस्यात् ॥ १ ॥

वर्षेश शुक्र बली होकर सप्तमस्थानमें हो तो स्त्रीपक्षसे सुख करता है, और बृहस्पतिकी दृष्टिभी इस पर हो तो अत्यंतही स्त्रीसुख करता है, जो ऐसे शुक्रपर अधिकारी मंगलकी दृष्टि हो तो स्त्रीपुरुषकी परस्पर प्रीति बढाता है, (जो शुक्र सप्तम निर्बल नष्ट दग्ध हो तो स्त्रीसे कष्ट देता है) ॥ १ ॥

अनुष्टु०—बुधेक्षितेजारतास्याल्लघ्व्यामंदेनवृद्धया ॥
गुरुदृष्ट्यानवाभार्या संतातिस्त्वारितंततः ॥ २ ॥

वही वर्षेश शुक्र यदि अधिकारी बुधसे देखा जाय तो (लब्ध्या) थोडी अवस्थाकी परस्त्री वा वारस्त्रीसे जारता उक्त शुक्र अनधिकारी शनिसे देखा जाय तो वृद्धा परस्त्रीसे जारता होवे—उक्त शुक्र पर अधिकारी या अनधिकारी गुरुकी दृष्टि होनेसे विवाहिता नवीन भार्य्यासे संयोग तथा शीघ्र सन्तानोत्पत्ति होती है, इस श्लोकमें 'गुरुदृष्ट्या' यह पाठ प्रमादसे है, क्योंकि पूर्व पद्यमें निरुक्त है यहां 'गुरुयोगात्' ऐसा पाठ होना चाहिये, उक्त भी है ताजिकसुधानिधिमें 'गुरुयुतेऽपि च नूतनवल्लभा भवति तत्र च सन्ततिराशु हि'॥ २॥

अनुष्टु०—जन्मलग्नाधिपेऽस्तस्थेदारसौख्यंबलान्विते ॥
जन्मशुक्रर्क्षमस्तेब्देस्त्रीलाभायसितेब्दपे ॥ ३॥

जन्मलग्नेश वर्षकालमें सप्तम बलवान् हो तो स्त्रीसुख होता है, जन्मकी शुक्रराशि वर्षमें सप्तम हो और शुक्रही वर्षेश हो तो स्त्रीलाभ होवे ॥ ३ ॥

अनुष्टु०—जन्मलग्नाधिपेवर्षे लग्नात्सप्तमगेसति ॥
उदितेसबलेचैवदारसौख्यंप्रजायते ॥ ४ ॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश सप्तम हो और उदित तथा बलवान् हो तो स्त्रीसौख्य होवे ॥ ४ ॥

अनु०—शुक्रोजन्मनियद्राशौवर्षेलग्नेश्वरोयदि ॥
तद्राशौसप्तमस्थेपिपुंसःपरिणयस्तदा ॥ ५ ॥

जन्मका शुक्र जिस राशिमें है उसमें वर्षलग्नेश हो, अथवा वह राशि सप्तममें हो तो पुरुषका इस वर्षमें विवाह होगा, यह योग ताजिकसारमें "शुक्रस्य लग्नपतेर्विवाहः" अर्थात् शुक्रकी राशिका लग्नेश हो ऐसा लिखा है यह भी प्रमाणही है ॥ ५ ॥

अनुष्टु०—नष्टेंदौशुक्रपदगेमैथुनंस्वल्पमादिशेत् ॥
जन्मशुक्रर्क्षगोभौमःस्त्रीसुखोत्सवकृद्बली ॥ ६ ॥

जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षमें क्षीण चन्द्रमा हो तो इस वर्षमें मैथुनसुख थोडा होवे, जो जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षका बलवान् मंगल हो तो स्त्रीसुख उत्सवकारी होवे ॥ ६ ॥

व० ति०-जन्मास्तपेऽब्दपसितेनयुगीक्षितेस्यात्स्त्रीसंगमोबहुवि-
लाससुखप्रधानः ॥ केन्द्रत्रिकोणगगुरौजनिशुक्रभस्थेस्त्रीसौख्य-
मुक्तमितिहद्दविवाहयोश्च ॥ ७ ॥

जन्मका सप्तमेश वर्षमें शुक्रसे युक्त वा दृष्ट किसी स्थानमें हो तो स्त्रीसंगम बहुत विलास हास सुखपूर्वक होवे १, जन्मका शुक्र जिस राशिमें हो उसमें वर्षका बृहस्पति लग्नसे केन्द्र वा त्रिकोण हो तो स्त्रीसुख होवे २, वर्षलग्नकी हद्दाका स्वामी जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षलग्नसे केन्द्र त्रिकोणमें हो तो स्त्रीसौख्य होवे ३, ऐसा ही वर्षका विवाहसहमस्वामी, जन्मके शुक्रराशिका वर्षलग्नसे केन्द्रत्रिकोणमें हो तो स्त्रीप्राप्ति होवे ये चार योग हैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०-अधिकारिपदस्थेर्के स्त्रीभ्योव्याकुलतानिशम् ॥
इंथिहाधिकृतस्थानेगुरुदृष्ट्याविवाहकृत् ॥ ८ ॥

पंचाधिकारियोंमेंसे किसीकी राशिमें सूर्य्य हो तो स्त्रियोंसे नित्य व्याकुलता रहे, एवं मुंथेशकी राशिका बृहस्पति हो वा मुंथाकी राशिमें बृहस्पति हो वा मुंथा राशिको बृहस्पति देखे तो विवाहयोग कहा है ॥ ८ ॥

अनुष्टु०-इंथिहार्कारयुग्द्यूनेक्रूरितेसहमेस्त्रियाः ॥
स्त्रीपुत्रेभ्योभवेत्कष्टं पापदृष्ट्याविशेषतः ॥ ९ ॥

सूर्य्य मंगलके साथ मुंथा सप्तम स्थानमें हो तथा स्त्रीसहम पापाक्रांत होवे तो स्त्रीसे एवं पुत्रसे कष्ट होवे पापग्रहकी दृष्टि भी उसपर हो तो स्त्रीपुत्रोंसे अधिक ही कष्ट होगा ॥ ९ ॥

अनुष्टु०-सूतौद्यूनाधिपः शुक्रोऽब्देद्यूनेबलवान्भवेत् ॥
लग्नेशेनेत्थशालश्चेत्स्त्रीलाभंकुरुतेसुखम् ॥ १० ॥

जन्मका सप्तमेश शुक्र वर्षमें बलवान् होकर सप्तम स्थानमें हो तथा लग्नेशके साथ इत्थशाली भी हो तो सुखपूर्वक स्त्रीप्राप्ति होवे ॥ १० ॥

अनुष्टु०-भौमेऽब्दपेसितदृशाशुक्रेऽब्देशेकुजेक्षया ॥
तद्दृष्टेदारसहमेस्त्रीलाभोभवतिध्रुवम् ॥ ११ ॥

वर्षेश मंगलपर शुक्रकी दृष्टि हो तो स्त्रीलाभ होता है तथा वर्षेश शुक्रपर मंगलकी दृष्टि हो तो यही फल होता है. इन दोनों योगोंके भेद हैं कि शुक्रकी दृष्टिमें मंगल हो तो विवाह होगा १, मंगलकी दृष्टिमें शुक्र हो तो भी विवाह होगा २, और जन्मकी स्त्रीसहम राशिपर वर्षमें मंगल शुक्रकी दृष्टि हो तो निश्चय विवाहयोग होता है ॥ ११ ॥

अनु०-सूतौ वाब्दे स्त्रीसहमे तद्दृष्टे योषिदाप्यते ॥
स्वामिदृष्टे स्त्रीसहमे शुक्रदृष्टे विवाहकृत् ॥ १२ ॥

जन्मके वा वर्षके स्त्रीसहममें मंगल शुक्रकी दृष्टि हो तो विवाहप्राप्ति होती है और स्त्रीसहमपर शुक्र तथा सहमेशकी दृष्टिसे यही फल है ॥ १२ ॥

अनुष्टु०-सूतौ द्यूनाधिपे वर्षे सहमेशे स्त्रियाः सुखम् ॥
जन्मास्तपे थिहानाथवर्षेशाः स्वेद्युनेतथा ॥ १३ ॥

जन्मका सप्तमेश वर्षमें स्त्रीसहमका स्वामी हो तो स्त्रीसे सुख मिले और जन्मका सप्तमेश मुंथेश तथा वर्षेशभी स्वभव वा सप्तम हो तो स्त्रीसे सुख होवे ॥ १३ ॥

अनु०-मुथहातो द्यूनसंस्थः स्वगृहोच्चगतः शशी ॥
विदेशगमनं कुर्यात्क्लेशः पापेक्षणाद्भवेत् ॥ १४ ॥

चंद्रमा अपने गृह वा अपने उच्चका मुंथासे सप्तम हो तो विदेशगमन करता है, इसपर पापग्रहकी दृष्टि हो तो विशेष कष्टसे गमन अन्यथा सुखसे होता है ॥ १४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां सप्तमभावफलाध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावविचारः ।

अनु०-भौमेऽब्दपे क्रूरहतेऽस्रपाताच्छस्त्रतो झिते ॥
अग्निभीरग्निभे क्ररनरांघ्रिपदभेऽन्मृतिः ॥ १ ॥

वर्षेश मंगल बलरहित और पापपीडित हो तो लोहाके शस्त्रसे किसी अंगपर क्षत होवे, अंगकी निश्चयता द्रेष्काणवशसे संज्ञाध्यायमें कही है तथा अग्निराशि मेष सिंह धन १ । ५ । ९ में यह होवे तो अग्निभय होवे-

और यही मंगल द्विपद मिथुन कन्या तुला और धनके पूर्वार्द्धमें हो तो चौरादि दुष्ट मनुष्यसे मृत्यु होवे ॥ १ ॥

अनु०-वियत्यवनिपामात्यरिपुतस्करतोभयम् ॥
तुर्य्येमातुःपितृव्याद्वामातुलात्पितृतो गुरोः ॥ २ ॥

इसी प्रकार वर्षेश मंगल निर्बल तथा पापपीडित होकर दशम स्थानमें हो तो राजा वा राजमंत्री वा शत्रु वा चोरसे भय होवे और ऐसा ही मंगल चतुर्थस्थानमें हो तो माता वा ताऊ वा चाचा वा मामा वा पितासे भय होवे ॥ २ ॥

व० ति०-लग्नेथिहापतिसमापतयोमृतीशाश्चेदित्थशालिनइमे निधनप्रदाःस्युः ॥ चेत्पाकरिष्टसमये मृतिरेव तत्र सार्केकुजे नृपभयं दिवसेऽब्दवेशे ॥ ३ ॥

लग्नेश मुंथेश और वर्षेश अष्टमेश इत्थशाली हों तो मृत्युफल कहा है, परंतु जिस वर्षमें यह योग है उससे मारक दशा वा दशारिष्ट किसी प्रकार-कामी हो तो मृत्यु होती है. केवल उक्त इत्थशाल ही हो तो मरणतुल्य कष्टमात्रही होताहै और दिनके वर्षप्रवेशसे वर्षेश मंगल सूर्य्यसहित हो तो राजासे भय होवे ॥ ३ ॥

शार्दूलवि०-सूर्य्येमूसरिफेसितेनजननेवर्षेधिकारीतथा केन्द्रेरा जगदाढ्यंचरुगसृक्स्थानेधिकारींदुजे ॥ सौम्येक्रूरदृशाकुज-स्यरुगसृक्दोषादिनांशुस्थिते दग्धेबंधमृतीविदेशतइतिप्राहुर्बुधे तादृशे ॥ ४ ॥

जन्ममें सूर्य्य शुक्रसे मूसरिफ कर्त्ता हो तथा वर्षमें पंचाधिकारियोंमेंसे किसी अधिकारवाला होकर केंद्रमें हो तो राजरोग (क्षयरोग) का भय होवे १ और जन्मके भौमराशिस्थितमें अधिकारी बुध वर्षमें हो तो यही फल देता है २ तथा अधिकारी बुधपर मंगलकी क्रूर दृष्टि हो तो रुधिर दोषसे रोग होवे ३ तथा अधिकारी बुध अस्तंगत और मंगलयुत दग्ध हो तो विदेशमें बंधनसे मृत्यु होवे ॥ ४ ॥

अनु०-भौमस्थानेऽधिकारींदौगुप्तंनृपभयंरुजः ॥
मंदोधिकारीखेलोहहतेर्पीडाकरःस्मृतः ॥ ५ ॥

जन्मकी मंगलस्थित राशिमें वर्षका अधिकारी चंद्रमा हो तो गुप्त (अनजाने) में राजभय होवे एवं रोगभय भी होवे १. और अधिकारी शनि दशम स्थानमें हो तो लोहाके प्रहारसे पीडा करनेवाला कहा है ॥ ५ ॥

अनु०-भौमेष्टमे भयं वह्नेः प्रहारोवानृपाद्भयम् ॥
आरेखस्थेचतुष्पद्भ्यःपातोदुःखंरुजोसृजा ॥ ६ ॥

अधिकार सहित मंगल अष्टम हो तो अग्निका भय अथवा शस्त्रादिसे चोट और राजासे भय होवे, और अधिकारी मंगल दशम हो तो घोडा आदि चौपाया से पतन तथा क्लेश और रुधिरसंबंधि रोग होवे ॥ ६ ॥

अनु०-वित्तघ्नगेज्योध ाद्वा यव्यन्देशोऽशुभेक्षितः ॥
मंदेद्यूनेदुर्वच ः वादकलिभर्त्सनम् ॥ ७ ॥

वर्षेश बृहस्पति पापग्रहदृष्ट द्वितीय तथा अष्टम हो तो धननाश होवे और शनि सप्तम हो तो बुरे वचन झूठाकलंक कलह और झिडकन मिले ॥ ७ ॥

अनु०-पतितेज्ञेक्रूरदृ शाऽऽरेत्थशालेमृतिंवदेत् ॥
कुजहद्दास्थिते नाशःसौम्यदृष्ट्याशुभं वदेत् ॥ ८ ॥

बुध पापाक्रांत हो और मंगलके साथ क्रूर दृष्टिसे इत्थशाल करता हो तो मृत्यु होवे तथा बुध मंगलकी हद्दामें पापदृष्ट हो तो अश्व आदि द्रव्यका नाश होवे और इसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो शुभफल देताहै ॥ ८ ॥

अनु०-लग्नाधिपेनष्टदृग्धेयोषिद्वादोऽशुभान्विते ॥
जन्मन्यष्टमगोजीवोनाधिकारीकलिःपृथुः ॥ ९ ॥

लग्नेश पापयुत बलहीन और अस्तंगत हो तो किसी स्त्रीसे कलह होवे, और जन्ममें बृहस्पति अष्टम हो वर्षमें अधिकाररहित हो तो बडा कलह होवे ॥ ९ ॥

अनु०-जयःशुक्रेक्षणाद्युक्तःअत्युत्तरवशेनतु ॥
भौमेंत्यगेधनेसूर्य्येवादात्क्लेशंविनिर्दिशेत् ॥ १० ॥

जन्मका बृहस्पति अष्टम वर्षमें अधिकाररहित हो शुक्र इसे देखे तो विवादमें प्रत्युत्तर देनेसे जय होवे और मंगल बारहवें स्थानमें सूर्य्य द्वितीय स्थानमें हों तो विवादसे क्लेश होगा कहना ॥ १० ॥

अनु०–रिपुगोत्रकलिर्भीतिः संख्येकुजहतेऽब्दपे ॥
दग्धोजन्मांगपोवर्षेष्टमोरोगकली दिशेत् ॥ ११ ॥

वर्षेश भौमसे पीडित हो तो शत्रुवोंसे और अपने कुलकेभी शत्रुवोंसे कलह होवे तथा संग्राममें भय होवे और जन्मलग्नेश अस्तंगत हो वर्षमें अष्टम हो तो रोग तथा कलह होवे कहना ॥ ११ ॥

अनु०–सूत्यब्दयोरधिकृतौभौमस्थानेगुरुर्हतः ॥
पापैर्वादःस्फुटोप्येवंताहशींदौशनेःपदे ॥ १२ ॥

बृहस्पति जमन्काल और वर्षकालका अधिकारी होके जन्मकालिक मंगलके आक्रांत राशिमें हो पापग्रहसे हत होय तो लोगोंके साथ बहुत कलह होगा और जन्मकालिक शनिराशिके जन्म और वर्षकालका अधिकारी चंद्र पापग्रहसे हत होय तो ऐसाही फल जानना ॥ १२ ॥

अनु०–सूत्यब्दयोरधिकृतेचंद्रेबुधपदेहते ॥
क्रूरैर्विदेशगमनंवादःस्याद्विमनस्कता ॥ १३ ॥

जन्म तथा वर्षका अधिकारी चंद्रमा जन्मके बुधकी राशिमें पापपीडित हो तो विदेशगमन कलह और मानसी क्लेश होवे ॥ १३ ॥

अनु०–मेषसिंहधनुष्यारेऽब्दपेरंध्रेऽसितोभयम् ॥
मृत्योर्मृतीशलग्नेशौमृत्युदौपापदृग्युतौ ॥ १४ ॥

मेष सिंह धनका मंगल वर्षेश होकर अष्टममें हो तो तलवारसे भय होवे और अष्टमेश एवं लग्नेश अष्टम स्थानमें पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देते हैं ॥ १४ ॥

अनु०–यत्रर्क्षेजन्मनिकुजःसोऽब्दलग्नोपगोयदा ॥
बुधोवर्षपतिर्नष्टबलस्तत्र नशोभनम् ॥ १५ ॥

जिस राशिमें जन्मका मंगलहै वही वर्षका लग्न हो और वर्षेश बुध भी नष्टबल होवे तो वह वर्ष अच्छा नहीं होगा ॥ १५ ॥

अनु०-सार्केशनौभौमयुतेखाष्टस्थेवाहनाद्भयम् ॥
सार्केभौमेष्टमस्थे तु पतनं वाहनाद्भवेत् ॥ १६ ॥

शनि सूर्य्य मंगल सहित दशम वा अष्टममें हो तो वाहन (सवारी) से भय होवे और सूर्य्य सहित मंगल अष्टम हो तो वाहनसे पतन होवे ॥ १६ ॥

अनु०-सारेब्दपेष्टमेमृत्युश्चंद्रेंत्यारिमृतौमृतिः ॥
उदितेमृतिसद्मेशेनिर्बलेजीवितेमृतिः ॥ १७ ॥

वर्षेश मंगल सहित अष्टम हो तो मृत्यु फल देता है तथा चन्द्रमा भौम युक्त छठा आठवां बारहवां हो तो भी मृत्यु देताहै और मृत्युसहमेश उदय हो जीवितसहमेश निर्बल हो तो मृत्यु होता है ॥ १७ ॥

अनु०-पुण्यसद्मेश्वरःपुण्यसहमादष्टमोयदा ॥
मृत्यष्टमेशःपुण्यस्थो मृतिदःपापहग्युतः ॥ १८ ॥

पुण्यसहमेश पुण्यसहमसे अष्टम हो पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट भी हो तथा जन्मका अष्टमभावेश पुण्यसहम राशिमें पापयुक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देताहै ॥ १८ ॥

अनु०-मृत्यष्टमगतोराशिःपुण्यसद्मनिनाथयुक् ॥
अब्दलग्नाष्टमर्क्षेवाचेदित्थंस्यान्मृतिस्तदा ॥ १९ ॥

जन्मकी अष्टमभावराशि वर्षमें पुण्यसहम होके निजनाथसे युक्त हो तथा वर्षलग्नसे अष्टमेश अष्टमगत हो तो मृत्यु होताहै ॥ १९ ॥

अनु०-पुण्यसद्माशुभाक्रांतंमृतीशोंत्यारिरंध्रगः ॥
मुथहेशोदब्पोवापिमृत्युंतत्रविनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

पुण्यसहममें पापग्रह हो और अष्टमेश त्रिकस्थान ६ । ८ । १२ में हो तो मृत्यु होवे और वर्षेश वा मुंथेश पापाक्रांत त्रिकस्थान ६ । ८ । १२ में हो तो मृत्यु देताहै कहना ॥ २० ॥

अनु०-सक्रूरेजन्मपेमृत्यौमृतिश्चेदिंथिहार्कियुक् ॥
भौमक्षुतेक्षणेतत्रमृत्युःस्यादात्मघाततः ॥ २१ ॥

जन्मलग्नेश वा जन्मराशीश पापग्रहयुक्त वर्षलग्नसे अष्टम हो तौ मृत्यु होतीहै और मुंथा भी कहीं बैठी होय पर शनैश्चरके साथ होय और जो इसपर मंगलकी शत्रुदृष्टि भी हो तो आत्मघात (अपनेही हाथसे) मृत्यु होवे ॥ २१ ॥

अनु०-मंदोष्टमोमृतीशेत्थशालान्मृत्युकरःस्मृतः ॥
शुभेत्थशालात्सर्वेपियोगानांशुभदायकाः ॥ २२ ॥

अष्टम शनि अष्टमेशसे इत्शाली हो तो मृत्यु देनेवाला कहा है और जो ग्रह उक्त योगोंमेंसे मृत्युफल करनेवाले हैं वे किसी शुभग्रहसे इत्थशाल करते हों तो मृत्यु नहीं होती प्रत्युत शुभफल देते हैं ॥ २२ ॥

अनु०-मृतिरंध्रपतिर्मंदोष्टमोब्देलग्नपेनचेत् ॥
इत्थशालीक्रूरदृशातत्कालेमृत्युदायकः ॥ २३ ॥

जन्मका अष्टमेश शनिवर्षमें अष्टम हो तथा लग्नेशसे क्रूरदृष्टिका इत्थशाल करता हो तो वर्षप्रवेशहीमें मृत्यु देताहै ॥ २३ ॥

रथोद्धता-पुण्यसद्मनिविधुस्तनौतथास्तेखलोमृतिरथार्थरिःफगौ ॥
मृत्युदौखलखगावथोजनुर्वर्षप्रवेशतनुपौमृतौमृतिः ॥ २४ ॥

पुण्यसहममें वा लग्नमें चन्द्रमा और इससे सप्तम पापग्रह हो तो मृत्युतुल्य कष्ट देताहै तथा लग्नसे दूसरे बारहवें पापग्रह हों तो भी यही फल देते है, पुण्य सहम और चन्द्रराशिसे भी द्वितीय द्वादश पापग्रह होनेमें यही फल है, इसमें पापकर्त्तरी विशेषहै. और ऐसाही विचार जन्मलग्न वर्षलग्न पुण्यसहम चन्द्रराशिका भी करना और वर्षलग्नेश वा वर्षेश और अष्टमेश अष्टम हो तो मृत्यु देताहै ॥ २४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायामष्टमभावाध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नवमभावविचारः ।

अनु०-भौमेन्द्वपेत्रिनवगेक्रूरायुक्तेबलान्विते ॥
गुणावहस्तदामार्गेश्वरंकार्य्यंस्थिरंततः ॥ १ ॥

वर्षेश मंगल तृतीय वा नवम स्थानमें बलवान् हो और पापयुक्त न हो तो मार्ग अर्थात् सफर गुणदायक होवें. चरकार्य्य भी स्थिर होजावे अर्थात् जल-कर्म नहर आदिसे शुभत्व होवे ॥ १ ॥

अनु०–त्रिधमस्थेऽब्दपः सूर्य्यः कंबूलीमार्गसौख्यदः ॥
अन्यप्रेषणयानं स्यात्सचेन्नाधिकृतो भवेत् ॥ २ ॥

वर्षेश सूर्य्य तृतीय वा नवम स्थानमें अधिकारयुक्त हो और चन्द्रमासे कंबूली भी हो तथा स्वगृहोच्चादिमें होवे तो अपनी इच्छासे मार्ग चलना पडे, मार्गमें सुखभी हो, जो वह सूर्य्य स्वग्रहादि अधिकारयुक्त न हो तो दूसरेके प्रेषणसे गमन होवें मार्गमें सुख भी न होवे ॥ २ ॥

अनु०–शुक्रेऽब्दपे त्रिनवगे मार्गसौख्यं विलोमगे ॥
अस्ते वा कुगतिः सौम्ये देवयात्रा तथाविधे ॥ ३ ॥

वर्षेश शुक्र तीसरे वा नवम स्थानमें क्रूररहित हो बलवान् भी हो और वक्रग-तिमें हो तो गमन होनेमें मार्गमें सौख्य होवे, जो यह अस्तंगत होकर उक्तस्थानोंमें हो तो कुगति इच्छासे विरुद्ध गमग होवे, और वर्षेश बुध पापरहित बलवान् तीसरे नवम स्थानमें वक्री हो तो तीर्थ वा देवतासंबंधी यात्रा होवे ॥ ३ ॥

अनु०–क्रूरार्दितेऽकुयानं स्याद्बुधवद्वा विचिंतयेत् ॥
इत्थशाले लग्नधर्मपत्योर्यात्रास्त्यचिंतिता ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त बुधके सदृश वर्षस्वामी बृहस्पति पापग्रहरहित ३ । ९ स्थानोंमें होनेसे तीर्थदेव संबंधी यात्रा देताहै. जो हीनबली वा क्रूर पीडितादि हों तो कुयान अनि-ष्टगमन देताहै, और लग्नेश नवमेशका परस्पर इत्थशाल हो तो अकस्मात् गमन होवे जहांका स्मरण नहीं गमन संभावनाभी नहीं गमन ऐसा होता है ॥ ४ ॥

अनु०–लग्नेशो धर्मपं यच्छन्स्वं महः श्चिंतिताध्वदः ॥
एवं लग्नाब्दयोर्योगे मुथहांगपयोरपि ॥ ५ ॥

लग्नेश अपना तेज नवमेशको देवे अर्थात् लग्नेश शीघ्रगति अल्पांश और नवमेश अधिकांश मंदगति हो, दोनों दीप्तांशोंके भीतर हों तो पूर्वनिश्चित यात्रा

होवे और नवमेश अपना तेज लग्नेशको देतां हो तो अचिंतित यात्रा होवे, ऐसे ही वर्षलग्नेश वर्षेशका तथा लग्नेशका मुंथेशका योग भी फल देताहै ॥ ५ ॥

अनु०—गुरुस्थानेकुजेधर्मेसद्यात्राभृत्यवित्तदा ॥
ज्ञस्थाने लग्नपाद्दौमोदृष्टः सद्यानसौख्यदः ॥ ६ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिका है उसीमें वर्षका मंगल नवमस्थानमें हो तो गमनमें मृत्यु और धनकी प्राप्ति होवे, और जन्मका बुध जिस राशिमें है इसी राशिमें वर्षका मंगल हो और लग्नेशकी दृष्टि उसपर हो तो गमन में सौख्य होवे ॥ ६ ॥

अनु०—स्वस्थानगोवाबलवाँल्लग्नदर्शीसुयानदः ॥
जन्माधिकारीज्ञोमंदस्थाने क्रूरयुतोयदा ॥ ७ ॥
पंथारिपोझकटकाद्गुरुरप्येवंदुजीवयोः ॥
धर्मेशनिर्नोधिकारीपंथानमशुभंवदेत् ॥ ८ ॥

जन्मका मंगल अपनी राशि १ । ८ में हो वर्षमेंभी अपनी राशिका नवमस्थानमें हो और सावयव दृष्टि स्पष्टसे भावानुसार लग्नको देखता हो तो गमनमें खुशी होवे, शुभकार्य्यसंबंधी गमन होवे १ और जन्मका अधिकारी बुध शनिकी राशिमें होवे और वर्षमें पापयुक्त नवम स्थानमें हो तो शत्रुकलह सम्बन्धी मार्ग चलना हो. ऐसेही चन्द्रमा और बृहस्पतिका भी जन्ममें शनि सहित और वर्षमें पापयुक्त नवम स्थानमें हो तो विना प्रयोजन दीर्घमार्ग चलना होवे, मंगलसे भी ऐसा योग होताहै, और अधिकार रहित शनि वर्षमें नवम स्थानगत हो तो चौरादि उपद्रवयुक्त मार्गमें गमन होवे ॥ ७ ॥ ८ ॥

अनु—इत्थंगुरौदूरयात्रानृपसंगस्ततोगुणः ॥
कुजेऽब्दपेनष्टबलेस्वजनाद्दूरतोगतिः ॥ ९ ॥

ऐसेही बृहस्पति अधिकार रहित नवम स्थानमें हो तो दूरगमन और राजाका संग तथा द्रव्यलाभादि गुण होवें तथा वर्षेश मंगल बलरहित होकर नवम स्थानमें हो तो अपने बन्धुजनोंसे दूर गमन होवे ॥ ९ ॥

अनुष्टु०-द्यूनेथिह्मधर्मेइंदौ सबलेऽध्वाविदेशजः ॥
वर्षेशोबलवान्पापायुतःकेंद्रेधिकारवान् ॥ १० ॥

जो मुन्था सप्तम और चन्द्रमा बलवान् होकर नवस्थानमें हो तो विदेश-संबंधी मार्ग चलना होवे और वर्षेश बलवान् किसी पापसे युक्त न होके केंद्रमें हो तो परदेशमें अधिकार मिलनेसे गमन होवे अथवा सेनापति होकर विदेशगमन करे ॥ १० ॥

अनु०-अधिकारेगतिःसंख्येसेनापत्येपिवावदेत् ॥
एवंबुधेकुजे जीवयुतेकाेन्निर्गते पुनः ॥ ११ ॥

पूर्वार्द्धश्लोकका अर्थ पूर्वश्लोकके अर्थमें लिखागया है, उत्तरार्द्धका प्रयोजन यह है कि, बृहस्पतिके तरह बुध वा मंगल केंद्रवर्ती बलवान् अधिकारवान् और उदयी तथा बृहस्पति युक्त हो तो जय यश और सुख देनेवाली यात्रा होवे ॥ ११ ॥

अनु०-परसैन्योपरिगतिर्जयख्यातिसुखावहा ॥
जीवान्नवमगेभौमेशुभायात्रानृणांभवेत् ॥ १२ ॥

इस श्लोकके पूर्वार्द्धका प्रयोजन सम्बन्धवशसे पूर्व ११ वें श्लोकके साथ लिखाहै उत्तरार्द्धसे यह है कि बृहस्पतिसे नवम मंगल बलवान् हो तो मनुष्योंकी शुभ यात्रा होवे ॥ १२ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां नवमभावफलाध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमभावविचारः ।

अनु०-सबलेब्दपतौखस्थेराज्यार्थसुखकीर्तयः ॥
स्थानांतराप्तिरन्यस्मिन्केन्द्रेगृहसुखाप्तयः ॥ १ ॥

बलवान् वर्षेश दशम स्थानमें हो तो कुलानुमान राज्य तथा धन सुख और कीर्त्ति मिले जो अन्य केंद्र लग्न चतुर्थ सप्तममें हो तो गृहसम्बन्धी सुख मिले ॥ १ ॥

अनु०-इत्थंबलीरविर्भूस्थःपूर्वार्जितपदाप्तिकृत् ॥
एकादशेस्मिन्सख्यंस्यान्नृपामात्यगणोत्तमैः ॥ २ ॥

वर्षेश सूर्य्य बलसहित चतुर्थ स्थानमें हो तो पितृपितामहादिकोंके उपार्जित राज्य वा कोई अधिकार मिले, जो ऐसाही सूर्य ग्यारहवाँ हो तो राजाके उत्तम अमात्य (वजीर) आदिकोंसे मैत्री होवे ॥ २ ॥

अनु०—रविस्थानेंथिहालग्नेखेवाराज्यातिसौख्यदा ॥
नीचर्क्षःपापसंयुक्तोभूपाद्वधवधंदिशेत् ॥ ३ ॥

जन्मके सूर्यस्थित राशिकी मुन्था वर्षके लग्न वा दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति और सुख देतीहै और वर्षेश सूर्य्य नीच राशिका दशम स्थानमें पापयुक्त हो तो राजासे मृत्यु वा बंधन कैद होना कहना ॥ ३ ॥

अनु०—सिंहेरविर्बलीखस्थःस्थानलाभोनृपाश्रयः ॥
स्थानांतराधिकप्राप्तिरिन्दुरारपदेबली ॥ ४ ॥

जन्मका सूर्य्य सिंहराशिमें हो और वर्षमें बलवान् होकर दशम स्थानमें हो तो नवीन स्थानप्राप्ति और राजाका आश्रयभी होवे और जन्मकी मंगल स्थित राशिका वर्षमें चन्द्रमा हो तो अन्य स्थानमें अधिकारप्राप्ति वा राज्यप्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

अनु०—खेशलग्नेशवर्षेशेत्थशालोराज्यदायकः ॥
वर्षेशोराजसहमेऽर्केत्थशालोमहानृपः ॥ ५ ॥

दशमेश लग्नेश और वर्षेशका परस्पर इत्थशाल हो तो राज्य देताहै और वर्षेश राजसहममें होकर सूर्य्यसे इत्थशाली हो तो महाराजा होवे ॥ ५ ॥

अनु०—शनिस्थानेकुजःपश्यन्मुथहांपापकर्मतः ॥
नृपभीतिंवित्तनाशंदद्याद्दशमगोयदि ॥ ६ ॥

जन्मकी शनिस्थित राशिमें वर्षका मंगल दशमस्थानमें हो और मुन्थाको देखे तो कुकर्मसे राजभीति और धननाश होवे ॥ ६ ॥

अनु०—ईदृशेत्रिनवस्थेस्मिन्दग्धनष्टेऽघसंचयः ॥
मन्दोऽब्दपोऽधिकारीत्रिधर्मगोधर्मवृद्धिदः ॥ ७ ॥

जन्मकी शन्याक्रांत राशिमें वर्षका मंगल तीसरे वा नवम स्थानमें नष्टबल दग्ध वा अस्तंगत हो तो पुण्यनाशद्वारा पापवृद्धि होवे और

वर्षेश शनि अधिकारी होकर तीसरे वा नौवें स्थानमें हो तो पापनाशद्वारा धर्मवृद्धि होवे ॥ ७ ॥

अनुष्टु०-अस्मिन्दग्धेऽपिनष्टेचपापकृद्धर्मनिंदकः ॥
ईदृशीदृक्फलंसूर्य्येगुरावित्थंनयार्थभाक् ॥ ८ ॥

तथा अधिकारी वर्षेश शनि दग्ध वा नष्ट हो तो इस वर्षमें पाप करनेवाला तथा धर्मकी निंदा करनेवाला होवे ऐसा ही वर्षेश सूर्य्य अधिकारी वर्षमें तीसरे वा नवम स्थानमें हो तो ऐसाही फल होताहै, और ऐसेही वर्षेश बृहस्पति अधिकारवान् ३। ९ स्थानमें नष्ट वा दग्ध हो तो न्यायसे द्रव्यप्राप्ति होती है ॥ ८ ॥

अनुष्टु०-तत्रस्थामुथहा पुण्यागमंपापंखलाश्रयात् ॥
सूतौखेशेरवौस्वस्थेवर्षेमुथशिलंयदि ॥ ९ ॥

मुंथा तीसरे नववें स्थानमें पुण्यागम करती है और इन्हीं स्थानोंमें पापयुक्त मुंथा हो तो पापकी प्राप्ति करती है और जन्मका दशमेश सूर्य्य वर्षमें दशम हो बलवान् भी हो तथा (मंदगामी) लग्नेशसे इत्थशाली भी हो तो अपने बलके अनुसार राज्यप्राप्ति करता है ॥ ९ ॥

अनुष्टु०-लग्नाधिपेनराज्याप्तिरुक्तावीर्य्यानुमानतः ॥
धर्मकर्माधिपौदग्धौधर्मराजक्षयावहौ ॥ १० ॥

लग्नेश बलवान् होनेमें इसके बलानुसार राज्यप्राप्ति होती है और नवमेश एवं दशमेश दग्ध वा पापपीडित हो तो धर्म तथा राज्यको क्षय करते हैं. यहां दशमभाव राज्यसहम कर्मसहम और लग्न तथा इनके स्वामी बलवान् और शुभग्रहोंके साथ होनेमें शुभ फल तथा वक्रदग्धादि निर्बल और पापयुक्त होनेसे अशुभ फल देतेहैं यह विचार विशेष है ॥ १९॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां दशमभावफलाध्यायः ॥ १०॥

अथ लाभभावविचारः।

अनुष्टु०-अब्दपेऽर्थेलाभो वाणिज्याच्छुभदृग्युते ॥
सेंथिहेस्मिँल्लग्नगते लाभःपठनलेखनात् ॥ १ ॥

वर्षेश बुध धनस्थानमें शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो अन्नादि द्रव्यके व्यापारसे धनलाभ होवे जो यही बुध मुंथासहित लग्नमें हो तो पढने लिखनेसे लाभ होवे ॥ १ ॥

अनु०—अस्मिन्षष्ठाष्टांत्यगतेसक्रूरेनीचकर्मकृत् ॥
क्रूरेक्षणेनलाभोस्तंगतेनालिखनादितः ॥ २ ॥

वर्षेश बुध छठे आठवें वा बारहवें स्थानमें पापग्रहसहित हो तो नीच कर्म करताहै, जो इस पर पापग्रहकी दृष्टि हो तो श्रम करनेमें भी लाभ न होवे जो यह अस्तंगत हो तो लिखने पढनेमें व्यर्थ श्रम होवे लाभ न होवे ॥ २ ॥

अनु०—लग्नेब्दपेक्रूरहते लग्नेहानिर्भयंनृपात् ॥
अस्मिन्नधिकृतेघूनेव्यवहाराद्धनागमः ॥ ३ ॥

लग्नेश वा वर्षेश पापपीडित होकर लग्नमें हो तो राजासे भय होवे यही अधिकारी सप्तम स्थानमें हो तो व्यवहारसे धनप्राप्ति होवे ॥ ३ ॥

अनु०—लग्नायेशेत्थशालेस्याल्लाभः स्वजनगौरवम् ॥
सर्वेलाभेच वित्ताप्त्यै सबला निर्बला न तु ॥ ४ ॥

लाभेश लग्नेशका इत्थशाल हो तो बडा लाभ होवे, अपने मनुष्योंसे गौरवता भी मिले तथा कोई भी ग्रह ग्यारहवें स्थानमें बलवान् हो निर्बल न हो तो धनप्राप्ति करते हैं ॥ ४ ॥

अनु०—सवीर्योज्ञःसमुथहोलग्नेर्थसहमे शुभाः ॥
तदाखानितद्रव्यस्यलाभःपापदृशानतु ॥ ५ ॥

बलवान् बुध मुथाके साथ लग्नमें हो और अर्थसहममें शुभग्रह हो तथा लग्नपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो खान (धात्वादि भूमि) संबंधी द्रव्यका लाभ होवे लग्नमें पापदृष्टि हो तो उक्तलाभ नहीं होगा ॥ ५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां लाभभावफलाध्यायः ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावविचारः।

वसन्तति०—लग्नाब्दपौहतबलौव्ययषण्मृतिस्थौयद्राशिगौतदनु-
सारिफलंविचित्यम्॥षष्ठेब्दपेभृगुसुतेथविनष्टवीर्येदृष्टेखलैःक्षुतद

शाद्रिपदर्क्षसंस्थे ॥ १ ॥ भृत्यक्षतिस्तुरगहाचतुरंघ्रिभस्थेन्यास्मिन्नपीदमुदितंफलमब्दनाथे ॥ खस्थेकुजेश शियुतेतुरगादिनाशः स्याद्व्याकुलत्वमशुभोपहतेव्ययेवा ॥ २ ॥

लग्नेश तथा वर्षेश बलहीन छठे आठवें बारहवें स्थानमें चतुष्पदादि जैसी राशिमें हो उसके सदृश फल देते हैं. चतुष्पदराशि उक्त स्थानोंमें हो तो चौपायाका वा उससे नाश होवे यह इस भावका सामान्य विचार है. और विशेष शुक्र नष्ट बल छठे स्थानमें पापग्रहोंसे क्रूरदृष्टि दृष्ट हो तथा मनुष्यराशिमें हो तो सेवकोंकी हानि होवे तथा ऐसाही शुक्र चतुष्पदराशिमें हो तो हाथी घोडे आदि चौपायोंकी हानि करताहै ऐसेही वर्षेशके अष्टम द्वादश स्थानगत होनेमें फल कहना और वर्षेश मंगल चंद्रमा सहित दशम स्थानमें हो तो घोडे आदिकोंका नाश करताहै तथा मनमें व्याकुलता भी करता, तथा पापपीडित मंगल छठे होनेसे भी यही फल देताहै ॥ १ ॥ २ ॥

व०ति०—षष्ठेरवौकलहते चतुरंघ्रिभस्थेभृत्यैःसमंकलिरथाष्टमरिःफगेपि ॥ मंदेब्दपेबलयुतेरिपुरिष्फसंस्थेभूवासनंद्रुमजलाशयनिर्मितिश्च ॥ ३ ॥

वर्षेश सूर्य्य छठे स्थानमें पापपीडित और चतुष्पदराशिमें हो तो अपने नौकरोंके साथ कलह होवे तथा आठवाँ और बारहवाँ होनेमें भी यही फल होता है. और वर्षेश शनि बलयुक्त छठा वा बारहवाँ हो तो त्याग करीहुई भूमिमें नवीन वसती बनानेसे आजीवन होवे तथा वृक्षारोपण, जलस्थान, कूप, तलाव, धारा आदिकोंका निर्माण होवे ॥ ३ ॥

उपजा०—स्वर्क्षोच्चगेकर्मणिसूर्य्यपुत्रेनैरुज्यमर्थागमश्चजीवे ॥
सूर्येनृप द्वाहुबल स्कुजेर्थोबुधेभिषग्ज्योतिषकाव्यशिल्पैः ॥४॥

वर्षेश शनि अपनी राशि १० । ११ का वा उच्च ७ का दशमस्थानमें हो तो शरीर नीरोग रहे तथा धनागम भी होवे जो ऐसाही बृहस्पति वर्षेश अपनी राशि ९ । १२ वा उच्च ४ का दशम हो तो यही फल देता है तथा वर्षेश सूर्य्य स्वराशि ५ वा उच्च १ का दशम हो तो राजासे धन मिले तथा वर्षेश मंगल स्वराशि १ । ८ वा उच्च १० का दशम हो तो अपने बाहुबलसे

धनागम होवे, तथा वर्षेश बुध स्वराशि ३ । ६ उच्चका दशम हो तो वैद्यक ज्योतिष और शिल्प (कारीगरी) में लाभ होवे ॥ ४ ॥

अनु०—मंदेब्दपेगतबलेनैराश्यंदौस्स्थ्यमादिशेत् ॥
सूर्य्येब्देशेशशिस्थानेमंदेब्दजनुषोर्हते ॥ ५ ॥

वर्षेश शनि निर्बल पापाक्रांत हो तो नैराश्य (आशाका) नाश होवे तथा एकजगह स्थिति न होवे जो वर्षेश सूर्य्य हो और जन्मके चन्द्रमाकी राशिका वर्षमें शनि हो तथा जन्मकाल वर्षकालमें पापाक्रांत निर्बल शनि हो तो संपूर्ण शुभ कर्मोंमें विकलता (असिद्धि) होवे. और ऐसाही शनि वक्र वा अस्तंगत हो तो उक्तफलही होताहै ॥ ५ ॥

अनु०—सर्वकर्मसुवैकल्यंवक्रेस्तेचतथापुनः ॥
कर्मकर्मेशसहमनाथाःशनियुतेक्षिताः ॥ ६ ॥

इस श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ पूर्व ५ श्लोकोंमें लिखाहै उत्तरार्द्धका यह है दशमस्थान तथा दशमेश और कर्मेश और कर्म सहमेश शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो (कर्मवैकल्य) कार्यहानि व्यर्थपरिश्रम होवे ॥ ६ ॥

अनु०—षडष्टव्ययगेब्देशे कर्मेशेचबलोज्झिते ॥
सूतावब्देचनशुभंतत्राब्देमृतिपेतथा ॥ ७ ॥

वर्षेश छठा आठवां वा बारहवाँ होवे तथा जन्म और वर्षका दशम भावेश निर्बल हो वर्षका अष्टमेशभी ६ । ८ । १२ स्थानमें हो तो इस वर्षमें शुभ फल नहीं होगा ॥ ७ ॥

अनु०—यत्रभावेशुभफलोदुष्टोवाजन्मानिग्रहः ॥
वर्षेतद्भावगस्ताहक्तत्फलंयच्छतिध्रुवम् ॥ ८ ॥

जन्ममें जो ग्रह जिस भावमें शुभ वा अशुभ देनेवालाहै वर्षमेंभी वह ग्रह उसी स्थानमें हो तो निश्चय वही फल विशेषतासे देताहै ॥ ८ ॥

इंद्रव०—येजन्मनिस्युःसबलाविवीर्यावर्षेसुखंप्राक्चरमेत्वनिष्टम् ॥
दद्युर्विलोमंविपरीततायांतुल्यंफलंस्यादुभयत्रसाम्ये ॥ ९ ॥

जो ग्रह जन्ममें बलवान् और वर्षमें निर्बल है वह वर्षके पूर्वार्धमें शुभफल

और उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देते हैं जो जन्ममें निर्बल और वर्षमें बलवान् हैं वे वर्षके पूर्वार्द्धमें अशुभ उत्तरार्द्धमें शुभ फल देते हैं दोनों कालमें (तुल्य) बली हों तो समान फल देते हैं ॥ ९ ॥

इति श्रीमही० व्ययभावफलाध्यायः ॥ १२ ॥

शार्दू०—श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोऽनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥ तत्सूनुःखलुनीलकंठविबुधोविद्विच्छिवाप्तुज्ञयासन्तुष्टयैव्यदधाद्विवेचनमिदं भावेषुसत्ताजिकात् ॥ १० ॥

इति ताजिकनीलकंठ्यां द्वादशभावविचारः ।

यह श्लोक अध्यायका है इसका अर्थ पूर्ववतही है इतना विशेष है कि अच्छे ताजिकग्रन्थोंके मतसे भावफलविवेचना इस अध्यायमें रक्खी है ॥ १० ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां भावफलप्रकरणं पंचमम् ॥ ५ ॥

अथ वर्षदशाक्रमविचारः ।

उपजा०—स्पष्टान्सलग्नान्खचरान्विधायराशीन्विनात्यल्पलवंतुपूर्वम् ॥ निवेश्यतस्मादधिकाधिकांशक्रमाद्दयस्याद्दशाक्रमोऽब्दे ॥ १ ॥

पात्यांशी दशाका क्रम कहते हैं. प्रथम लग्नसाहित सभी ग्रहोंको स्पष्ट करके राशियोंको छोड देना अंशादि दशाक्रमसे स्थापन करना उसका क्रम यह है कि सबसे अल्प अंशवाला ग्रह पाहिले और उससे अधिकांश उससे आगे फिर अधिक अधिक अंशवाले का क्रमसे आगे आगे स्थापन करतेजाना, अन्तमेंसबसे अधिकांश ग्रह आवेगा, यह दशाका स्थापनक्रम है उदाहरण चक्रमें है ॥ १ ॥

स्पष्टाः							
र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	९	८	४	३	४	३	४
१	२८	११	२	११	१६	२१	८
३६	१६	५७	१८	२३	४४	५७	५७
५७	३१	८	२८	३७	२६	३	२
५७	३२४	७५	८	१३	७	७	०
५	३१	३०	३५	३६	३३	५७	०

अंशादयः							
र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	२८	११	२	११	१६	२१	९
३६	१६	५७	१८	२३	४४	५७	५७
५७	३१	८	[illegible]	३७	२६	३	२

हीनांशादिक्रम								
बु.	ल.	सू.	शु.	बृ.	मं.	श.	चं.	०
२ १८ २८	८ ५७ ०२	९ २६ ५७	१६ ४४ २६	१९ २३ ३७	१९ ५७ ८	२१ ५७ ३	२८ १६ ३१	० ।

उ० जा०—न्यूनंविशोध्याधिकतःक्रमेणांशाद्यंविशुद्धांशकशेषकैक्यम् ॥ सर्वाधिकांशोन्मितमेवतत्स्यादनेनवर्षस्यामितिस्तुभाज्या ॥ २

सबीसे न्यूनांश जो ग्रह है वह उससे अधिकांशमें घटावना, पुनः वह अधिकांशभी उससे अधिकांशमें घटावना, ऐसेही सभी घटायके अंत्यमें जो ग्रह सबीसे अधिकांश है उसके तुल्य सब हीनांशोंका योग होगा, तब ठीक समझना. उदाहरण—सबसे हीनांश बुध २ । १८।२८ अंशादि है यह यथा स्थित रहा, इसके आगे इससे अधिकांश लग्न ८ । ५७ । २ है इसमें बुध घटाया तो ६ । ३८ । ३४ यह लग्नके पात्यांश हुये, अब इसके आगे सूर्य्य ९ । २६ । ५७ है इसमें लग्नांश ८।५७।२ घटाया, शेष० । ३९ ५५ यह सूर्य्य हुआ, ऐसेही सभीको पात्यांश करके अंत्यमें सर्वाधिकांश चन्द्रमा २८ । १६ । ३१ है इतनाही सभीका योगभी है, यह निश्चयार्थ युक्तिहै—हीनांश करके भी चन्द्रमा सर्वाधिकांशही रहता है और पात्यांश करके सब अंशादिकोंके योगसे सर्वाधिकांशही होताहै, अंत्यके सर्वाधिकांशसे वर्षकी मिति सौरकी ३६० वा सावनकी ३६५ । १५ । ३१ ३० से भाग देना जो लाभ हो वह वर्षमें लब्ध ध्रुवांक होगा ॥ २ ॥

पात्यांशाः							
बु	ल	सू.	शु.	बृ	मं	श.	च.
२	६	०	७	२	०	१	६
१८	३८	३९	७	३९	३३	५९	१९
२८	३४	५५	२९	११	३१	५५	२८

उपजा०—शुद्धांशकाँस्तान्गुणयेदनेनलब्धध्रुवांकेनभवेद्दशायाः ॥ मानंदिनाद्यंखलुतद्ग्रहस्यफलान्यथासानिगदत्तुशास्त्रात् ॥ ३ ॥

उक्त प्रकारके लब्ध ध्रुवांकसे प्रत्येक ग्रहके पात्यांशादि गोमूत्रिका क्रमसे वा हीनजाति पिंड करके गुणना, दिन घटी पलात्मक ३ अंक

रखना यह उसी ग्रहके नीचे स्थापन करना दिनादि दशा होतीहै ऐसेही सभी ग्रहोंकी दशा दिनादि निश्चय करके प्रथमवाले ग्रहके दिनादि सूर्य्यके अंशादिकोंमें जोडकर आगेके ग्रह यथाक्रम जोडने और उसके नीचे लिखते जाना अन्त्यमें अगले वर्षका सूर्य्य स्पष्ट ठीक मिल जायगा अथवा वर्षप्रवेशके दिनघटीपलाओंमें प्रथम दशामान जोडके क्रमसे सभी जोडने अंत्यमें अगले वर्षके दिन घटी पला ठीक मिलेगीं, ऐसेही सावनक्रम तिथ्यादि जोडनेसे अग्रिम वर्षके तिथ्यादि मिलते हैं, उदाहरण—सब पात्यांशोंका जोड २८। १६। ३१ यही अंत्यवाले चंद्रमाके अंशादि हैं, अब इससे वर्षकी मितीमें भाग लेनाहै. प्रथम योगको एकजाति करना, जैसे २८ को ६० से गुना १६८० कला १६ जोडदी १६९६ हुवा, इसे भी ६० से गुना १०१७६० हुवा विकला ३१ जोडदिया १०१७९१ यह सवर्णित भाजक हुवा, इसीप्रकार भाज्य ३६० को भी दोवार ६० से गुनाकर १२९६००० यह सवर्णित भाज्य हुवा, इसमें उक्त भाजकसे लब्ध १२ मिला, फिर शेष ७४५०८ को ६०से गुनाकर भाजकसे भाग लिया ४३ मिला, फिर ऐसाही करनेसे ५५ मिला यह ११। ४३। ५५ ध्रुवांक हुवा इससे सभी ग्रहोंके अंशादि गोमूत्रिका क्रमसे प्रत्येक गुणके प्रत्येकके दिनादि दशा होतीहै, उपरांत प्रथम दशावालेके दिनादि वर्षप्रवेश समयके सूर्य्य स्पष्टमें जोडने; फिर उसमें उसके आगेवाली दशा जोडना ऐसे क्रमसे सभोंको जोडकर अंत्यमें अगले वर्षप्रवेशसमयका सूर्य्य स्पष्ट मिलेगा अथवा प्रथम दशावालेके दिनादिकोंमें वर्षप्रवेशसमयके गत दिन पैंठ वा प्रविष्टा और घटी पला जोडके फिर उक्तक्रमसे सभोंको जोडना, अंत्यमें अगले वर्षप्रवेशका दिन घटी पला आवेंगे. उदाहरण—वर्षप्रवेशमें सूर्य्य स्पष्ट ३। ९। ३६। ५७ इसी समयमें बुधकी दशा प्रारंभ हुई, बुधके पूर्वक्रमसे दिन २९ घटी २२ पला ६ हैं सूर्य्य स्पष्टमें जोडकर ४। ८। ५९। ३ इतने सूर्य्यस्पष्ट पर्य्यंत बुधकी दशा पहुँची, उपरांत दूसरे लग्नकी दशा प्रवेश हुई, विशेष उदाहरणार्थ पाकदिनादि और सूर्य्यस्पष्ट चक्रमें लिखेहैं, ऐसे संक्रांतिस्थानके दिनादि जोडनेसे संक्रांतिक्रम दिनादि मिलते हैं ॥ ३ ॥

बु	ल	सू	शु	बृ	मं	श	चं	योग	ग्रह
२९	८३	९	९०	३३	७	२९	८०	३६०	दशापाकदिन
२२	४४	१९	४२	४६	६	२६	३१	०	घटी
६	२८	३४	१७	४३	४४	४६	२२	०	पल

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सूर्यः
३	४	७	७	१०	११	११	०	३	
९	८	२	१२	१२	१८	२३	१९	९	स्पष्ट
२६	६१	४२	३	४५	३२	२८	९	३६	
५८	३	३१	८	२२	८	४१	३८	८१	राश्यादि

उपजा ०— शुद्धांशसाम्येबलिनोदशाद्याबलस्यसाम्येल्पगतेस्तुपूर्वा ॥
साम्येविलग्नस्यखगेनचिंत्या बलादिकालग्नपतेर्विचिंत्या ॥ ४ ॥

दशाक्रमहीनांश प्रथम उससे अधिक उसके आगे लिखना कहाहै, यदि अंशादि दो आदियोंके तुल्य ही हों तो उनमेंसे जो अधिक बलीहै वह प्रथम दशेश होगा, यहां 'शुद्धांशसाम्ये' यह पाठ अनुचितहै किंतु 'हीनांशसाम्ये' यह पाठ उचित है; जब बलभी समान हो तो मन्द गतिवाला प्रथम शीघ्र गतिवाला उपरांत लिखना, ग्रह और लग्नके अंशादि साम्य होनेपर लग्नेशसे बलादिकका विचार करके जिसकी प्रथम हो उसकी दशा प्रथम लिखनी, यही क्रम है॥ ४ ॥ अन्तर्दशाके लिये ग्रन्थान्तरका श्लोक है कि, "शुद्धांशयोगेन भजेत्स्वकीयद- शादिनाद्यं स्वलवैर्निहन्यात् ॥ शुद्धांशकांशाप्तिजतः क्रमेण चांतर्दशाथो विद- शापि चैव ॥ १ ॥

अर्थात् जिस ग्रहकी अन्तर्दशा करनीहै उसके शुद्धांशको पहिले उसीके शुद्धांशसे गुणना फिर जिन २ की अन्तर्दशा लानी हैं उन्हउन्हके शुद्धांशसे गुणना तथा सर्वाधिकांशसे भाग लेना लब्धभाजक जात्यनुसार अन्तरदशा- मान होताहै अथवा (प्रकारांतर) उसके मासादिसे जिसकी दशामें अन्त- र्दशा करनी हो उसके मासादि गुन देने और हीनांशयोग जो सर्वाधिकांशहै उससे भागदेना, लब्धिदिनादि अन्तर्दशा होतीहै, ऐसेही प्रत्येक ग्रहमें सभीकी

अंतर्दशा होती है उदाहरण--लग्नकी दशादिनादि ८३ । ४४ । २८ इसमें सबग्रहोंकी अंतर्दशा करनीहै प्रथम बुध है इसके दिनादि २१ । २२ । सभी ग्रहोंके दशाका योग दिनादि ३६० । ० । ० है तो गोमूत्रिका क्रम करके बुधसे लग्न गुनदिया २५०९ । २० । १३ हुआ इसमें ३६० से भाग दिया तो ६ । ५८ । १३ दिनादि लग्नदशामें बुधकी अंतर्दशा हुई ऐसेही और ग्रहोंकीभी अंतर्दशा लेनी सबका योग जिसकी अंतर्दशा है उसके दिनादि पर ठीक मिले तो सत्य जानना, मासप्रवेशमेंभी दशाका यही क्रमहै, जैसे " पात्यांशयोगेन भजेद्धतैष्यमासांतरंस्याद्गुणकोत्थितेन ॥ पात्यांशकाः संगुणितादशाःस्युरुक्तक्रमान्मासफले दशानाम् ॥ १ ॥ " मासमिति ३० ग्रह पात्यांशोंसे गुनाकर पात्यांश योगसे भाग लेना प्रत्येक ग्रह पात्यांशसे ऐसेही रीतिसे प्रत्येककी दशा होती है. गौरीमतसे प्रथम दशेशके लिये मासप्रवेशदिननक्षत्रमें जो ग्रह दशेश आवे कृत्तिका उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढसे आ० चं० कु० रा० जी० श० बु० के० शु० ये तीन आवृत्तिसे हैं. यही प्रथम दशाधीश होगा इन सबके दिनादिमान यह है ऐसेही दिन

सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
१॥	२॥	२।॥	४॥	४	४।॥	४।	१।॥	६

प्रवेशमें दिननक्षत्रसे जानना, और जैसे जातककी मुख्यदशा दश हैं ऐसेही वर्षकीभी पात्यांश १ तारांश २ भावतारांश ३ स्थलभावतारांश ४ कालहोरादशा ५ हद्दादशा ६ नैसर्गिकदशा ७ तनुभावदशा ८ मुद्दादशा ९ बलराश्यंशदशा १० दश दशा हैं. यहां ग्रन्थभूयस्त्वभयसे ग्रंथकर्त्ताने मुख्य पात्यांशीही स्थित करीहैं तथापि सर्व साधारणमें जैसे जातककी महादशा ऐसे वर्षमें भी उसी छायासे मुद्दादशा प्रमाण प्रचलित और फलमें अनुभव करीहै, इसलिये इस दशाका क्रम लिखताहूं. " जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा द्व्यूनितानंदहतावशेषाः ॥ आ. चं. कु. रा. जी. श. बु. के. शु. पूर्वा ग्रहा दशास्वामिन इत्थमब्दे ॥ १ ॥ " जन्मनक्षत्रमें गतवर्ष जोडके दो घटायदेना शेष ९ से भाग देकर जो शेष रहें वह आ. चं. कु. आदि क्रमसे दशेश जानना.

जैसे जन्मनक्षत्र रोहिणी ४ गतवर्ष ८ जोडके १२ हुये दो घटाये १० रहे ९ से भाग देकर १ शेष रहा तो सूर्य्यकी दशा प्रथम हुई २ शेषमें चंद्रमा ३ में मंगल ४ में राहु ५ में बृहस्पति ६ में शनि ७ में बुध ८ में केतु ९ में शुक्रकी दशा होतीहै उपरांत ग्रहोंके जोजातकी दशावर्ष सू. ६ चं. १० मं. ७ राहु. १८ बृ. १६ श. १९ बु. १७ के. ७ शु. २० हैं इन्हें तीनसे गुनाकर वर्षके दिन होतेहैं. जैसे सूर्य्यके १८ चंद्रमाके ३० मंगल २१ रा. ५४ बृ. ४८ श. ५७ बु. ५१ के. २१ शु. ६० दिन होतेहैं. अब इसकी अन्तर्दशाके लिये सुगम रीति है कि "वेदा४ नागाः ८शराः ५ सप्त७दिक् १० रसां६ क ९ शरा ५रसाः ६ ॥ सूर्य्यादीनां च गुणकास्तैर्निघ्नास्वदशामितिः ॥ १ ॥ षष्ट्याप्तांतर्दशास्तस्य जायते-

मुद्दादशाक्रमः ।

सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रहाः
कृ	रो	मृ	आ	पु	ति	श्ले	म	पू	नक्षत्र
उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	नक्षत्र
उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	नक्षत्र
आ ३	श्ले ३	उ ३	स्वा ३	ज्ये ३	उ ३	श ३	रे ३	कृ ३	आर्द्रादिक्रमः
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०	दिनयो ३६०
१॥	२॥	१॥।	४॥	४	४॥।	४।	१॥।	५	योग ३०
३	५	३॥	९	८	९॥	८॥	३॥	१०	योग ६०

तिपरिस्फुटा ॥ यस्य वर्षे भवेत्तस्य प्रथमांतर्दशा भवेत् ॥ २ ॥ अन्यास्तद्ग्रिमस्थानाज्जायंतेंतर्दशाअपि ॥ ३ ॥ " इन क्षेपकोंसे प्रत्येक ग्रहके दशादिन गुननेसे प्रत्येककी अंतर्दशा होतीहै ॥ जैसे गु० सूर्य्यके दिन १८ से गुने ७२ साठसे भाग दिया १ ।१२ यह सूर्य्यकी दशामें सूर्य्यका अंतर हुवा उपरांत चंद्रमाका गुणक ८ से सू० १८ गुना १४४ हुवा ६० से भाग दिया तो २।२४ यह सूर्य्यमें चंद्रमाकी अंतर्दशा दिनादि हुई ऐसेही सभी ग्रहोंको जानना प्रकटताको चक्रमें लिखेहैं ॥ ४ ॥

अन्तर्दशाक्रमः ।

सू १८	चं ३०	भौ २१	रा ५४	बृ ४८	श ५७	बु ५१	के २१	शु ६०	ग्रहाः
१८	४८	६९	१२३	१७१	२२८	२७९	३००	३६०	योग
४	८	५	७	१०	६	१	५	६	गुणक

सू २।१२	चं १।१२	भौ ४।०	रा २।४९	बृ ६।१८	श ८।०	बु ७।४२	के ७।३१	शु २।४५	ग्रहः गुणक
चं २।२४	भौ २।३०	रा २।२७	बृ १।०	श ४।४८	बु ८।३३	के ४।१२	शु २।६	आ ४।१२	०
भौ १।३०	रा ३।२०	बृ ३।३०	श ५।२४	बु ७।१२	के ४।१५	शु ५।६	आ २।२४	चं ८।०	०
रा २।	बृ ५।०	श २।६	बु ८।६	के ४।०	शु ४।४८	आ ३।४८	चं ३।४८	भौ २।४५	०
बृ ३।०	श ३।०	बु ३।४	के ४।३०	शु ४।४८	आ ३।४८	चं ६।४८	भौ २।४५	रा ७।०	०
श २।४	बु ४।३०	के २।४५	शु ५।२४	आ ३।१२	चं ६।२४	भौ ५।१५	रा २।२७	बृ १०।०	०
बु २।४२	के २।३०	शु २।६	आ ३।३६	चं ६।२५	भौ ४।४७	रा ५।५७	बृ ३।२०	श ६।०	०
के १।३०	शु ३।०	आ २।२४	चं ७।१२	भौ ४।०	रा ६।३०	बृ ८।३०	श २।६	बु २।०	०
शु २।४८	आ २।०	चं २।४८	भौ ४।३०	रा ५।३६	बृ २।३१	श ५।६	बु ३।२	के ५।०	०

अथ दशाफलानि ।

अनु०—हेममुक्ताफलद्रव्यलाभमारोग्यमुत्तमम् ॥
कुरुतेस्वामिसम्मानंदशालग्नस्यशोभना ॥ ५ ॥

लग्नकी उत्तम दशाका फल—सुवर्ण, मोती, द्रव्य इनका लाभ उत्तम आरोग्य और स्वामीसे सन्मान देती है ॥ ५ ॥

लाभंदिष्टेनवित्तस्यमानहीनस्यसेवनम् ॥
मनसोविकृतिंकुर्यांद्दशालग्नस्यमध्यमा ॥ ६ ॥

लग्नकी मध्यम दशाका फल ऐसा है कि लग्नकी मध्यम दशा दिष्टेन

(भाग्यसे) अन्नका लाभ मानहीनकी सेवा मनका और विकार करती है "
दैवं भागधेयमित्यमरः " ॥ ६ ॥

विदेशगमनंक्लेशबुद्धिनाशंकदव्ययम् ॥
मानहानिंकरोत्येवंकष्टालग्नदशाफलम् ॥ ७ ॥

कष्टालग्नदशाका फल-विदेशमें जाना क्लेश बुद्धिका नाश युद्ध व्यय और
मानकी हानि कष्टालग्नदशा करतीहै यह कष्टालग्नदशाका फल है ॥ ७ ॥

क्रूरलग्नदशामध्यासौख्यंस्वल्पंधनव्ययम् ॥
अंगपीडांतनुपुष्टिंचकुरुतेमृत्युविग्रहम् ॥ ८ ॥

क्रूर लग्नकी दशा मध्यम रहती है. वह स्वल्प सौख्य धनका व्यय
अंगमें पीडा कशता मृत्यु और झगडा ये करती है ॥ ८ ॥

उपजा०-दशारवेःपूर्णबलस्यलाभं गजाश्वहेमांबररत्नपूर्णम् ॥
मानोदयंभूमिपतेर्ददाति यशश्चदेवाद्विजपूजनाद्यैः ॥ ९ ॥

अब ग्रहदशाका फल कहते हैं-पूर्णबली सूर्य्यकी दशा हो तो हाथी घोडे
सुवर्ण रत्नादिसे पूर्ण लाभ होवे तथा राजासे मानोदय और देवता ब्राह्मण
पूजनादिसे यश देताहै ॥ ९ ॥

उपजा०-दशारवेर्मध्यबलस्यसर्वमिदंफलंमध्यममेवदत्ते ॥
ग्रामाधिकारव्यवसायधैर्यैःकुलानुमानाच्चसुखादिलाभः ॥ १० ॥

जो सूर्य्य मध्यबली हो तो अपनी दशामें पूर्वोक्त फल मध्यम और कुला-
नुमान मानादियोंका अधिकार व्यवसाय धीरतासे सुखादिलाभ देताहै ॥ १० ॥

उपजा०-दशारवेरल्पबलस्यपुंसांददातिदुःखंस्वजनैर्विवादात् ॥
मतिभ्रमंपित्तरुजंस्वतेजोविनाशनंधर्षणमप्यरिभ्यः ॥ ११ ॥

अल्पबली सूर्य्य अपनी दशामें अनेक प्रकार दुःख तथा अपने मनुष्योंके
साथ विवाद बुद्धिभ्रम पित्तरोग धनहानि और शत्रुसे पराभव (हार) भी देताहै ११

उपजा०-दशारवेर्नष्टबलस्यपुंसांनृपाद्रिपोर्वाभयमर्थनाशम् ॥
स्त्रीपुत्रमित्रादिजनैर्विवादं करोतिबुद्धिभ्रममामयंच ॥ १२ ॥

नष्टबली सूर्य्य अपनी दशामें पुरुषोंको राजासे भय धननाश स्त्रीपुत्रमित्रोंसे वनसंबंधी विवाद बुद्धिभ्रम और रोगभी करता है ॥ १२ ॥

उपजा०—लग्नाद्रविः षट्त्रिदशायसंस्थो निर्बीयोपि दत्ते शुभमर्द्धमेव ॥
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यो यातीत्थमत्यंतशुभः शुभः स्यात् ॥ १३ ॥

जो सूर्य्य लग्नसे ६।३।१०।११ स्थानमें हो तो निर्बलभी हो तोभी आधा फल शुभ देताहीहै और हीनबली होके पूर्वोक्त स्थानोंपर हो तो मध्यत्वका बल देता है और मध्यबली होके होय तो पूर्णबलका फल देता है तथा उत्तमबली होके होय तो अत्यंत शुभ फल देताहै ॥ १३ ॥

उपजा०—इंदोर्दशा पूर्णबलस्य दत्ते शुक्लांबरस्रङ्मणिमौक्तिकाद्यम् ॥
स्त्रीसंगमं राज्यसुखं च भूमिलाभं यशः कांतिबलाभिवृद्धिम् ॥ १४ ॥

पूर्णबली चंद्रमाकी दशामें श्वेत वस्त्र माला मणि मोती आदिकोंका लाभ होवै और स्त्रीसंगमसे तथा राज्यसे सुख भूमिलाभ और यश कांति बल बढै ॥ १४ ॥

इंदोर्दशा मध्यबलस्य सर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ॥
वाणिज्यमित्रांबरगेहसौख्यं धर्मे मतिं कर्षणतोन्नलाभम् ॥ १५ ॥

मध्यबली चंद्रमा अपनी दशामें पूर्वोक्त संपूर्ण फल मध्यम देताहै तथा व्यापारसे लाभ मित्र वस्त्र घरका सुख धर्मकी वृद्धि और कृषिकार्यमें लाभ होताहै ॥ १५ ॥

इंदोर्दशा स्वल्पबलस्य दत्ते कफामयं कांतिविनाशमाहुः ॥
मित्रादिवैरं जननं कुमार्य्या धर्मार्थनाशं सुखमल्पमत्र ॥ १६ ॥

अल्पबली चंद्रमाकी दशा कफरोग तथा शरीरकी कांतिका नाश मित्रादिकोंसे वैर कन्याका जन्म धर्म धनका नाश और सुख अल्प देताहै ॥ १६ ॥

इंदोर्दशा नष्टबलस्य लोकापवादभीतिं धनधर्मनाशम् ॥
शीतामयं स्त्रीसुतमित्रवैरं दौःस्थ्यं च दत्ते विरसान्नभुक्तिम् ॥ १७ ॥

नष्टबली चंद्रमाकी दशा शीतरोग पुत्रमित्रोंसे वैर और शरीरका अस्वास्थ्य स्वादरहित अन्नके भोजन झूठा कलंक और धन तथा धर्मका नाश करतीहै १७

षष्ठाष्टमांत्येतरराशिसंस्थो निर्वीयोपि दत्तेर्द्धसुखं दशायाम् ॥
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यो यातीत्थमिंदुः शुभगः शुभः स्यात् ॥ १८ ॥

जो चंद्रमा ६।८।१२ स्थानोंमें न हों तो हीनबलभी आधा शुभ फल देता

है, हीन बल उक्त भिन्न स्थानोंपर हो तौ मध्यबलका फल देताहै और मध्य बली हो तो शुभ फल देताहै और उत्तमबली हो तो अत्यंत शुभफल देताहै १८

दशापतिःपूर्णबलोमहीजःसेनापतित्वंतनुतेनराणाम् ॥
जयंरणेविद्रुमहेमरत्नवस्त्रादिलाभंप्रियसाहसत्वम् ॥ १९ ॥

दशापति मंगल पूर्ण बली हो तो मनुष्योंको सेनापतित्व, बहुतोंका अग्रगण्य करताहै तथा संग्राममें जय मूँगा सुवर्ण रत्न वस्त्रोंका लाभ और साहसभी देता है ॥ १९ ॥

दशापतिर्मध्यबलोमहीजः कुलानुमानेनधनंददाति ॥
गजाधिकारोप्यथतत्परत्वं तेजस्वितांकांतिबलाभिवृद्धिम् ॥ २० ॥

दशापति मध्यबली मंगल कुलानुमान धन देताहै तथा हाथियोंका अधिकार और हाथीकी सवारीमें प्रसन्न रहै तथा तेजस्वित्व कांति और बलकी वृद्धि देताहै ॥ २० ॥

उपजा०–दशापतिःस्वल्पबलोमहीजोददातिपित्तोष्णरुजंशरीरे ॥
रिपोर्भयंबंधनमास्यतोसृक्स्रवंचैवरंस्वजनैश्चशश्वत् ॥२१॥

दशापति मंगल अल्पबली हो तौ अपनी दशामें पित्त और गरमीके विकारसे शरीरमें रोग देताहै तथा शत्रुभय यद्वा बंधन तथा मुखसे रुधिरस्राव और अपने मनुष्योंके साथ निरंतर वैर होवै ॥ २१ ॥

उपजा०–दशापतिर्नष्टबलोमहीजोविवादमुग्रंजनयेद्रणंवा ॥
चौराद्भयंरक्तरुजंज्वरंचविपत्तिमल्पस्वहातिंचखर्जूम् ॥ २२ ॥

दशापति मंगल नष्टबल हो तो उत्कट कलह अथवा रणही करदेताहै तथा चोरसे भय रुधिरसंबंधि रोग, विपत्ति, थोडी धनहानि और खुजलीका रोग करताहै ॥ २२ ॥

अनु०–त्रिषष्ठायगतोभौमोनष्टवीर्यःशुभार्द्धदः ॥
मध्योहीनः शुभोमध्यः शुभोत्यंतशुभावहः ॥ २३ ॥

मंगल दशापति ३।६। ११ स्थानमें नष्टबली हो तो शुभफल आधा देता है, हीनबली हो तो मध्यबलीका फल देताहै और मध्यबली होके शुभ फल देता है और उत्तम बली हो तो अत्यंत शुभ फल देता है और भावोंका उक्तही जानना ॥ २३ ॥

उपजा ०-दशापतिःपूर्णबलोबुधश्चेद्यशोभिवृद्धिर्गणितात्सुशिल्पात् ॥
तनोतिसेवांसफलांनृपादेर्दूत्यंचवैदूष्यगुणोदयंच ॥ २४ ॥

दशापति बुध पूर्णबली हो तो गणित एवं शिल्पविद्यासे यश बढे राजादिकोंकी सेवा सफल होवे दूतत्व मिले और निर्दोष गुणोंका उदय होवे ॥ २४ ॥

उपजा०-दशापतिर्मध्यबलोबुधश्चेद्गुरोस्सुहृद्भ्योलिपिकाव्यशिल्पैः ॥
धनाप्तिदोथोसुतमित्रबंधुसमागमान्मध्यममेवसौख्यम् ॥ २५ ॥

दशापति बुध अल्पबली हो तौ गुरुजन मित्रजन एवं लिखने पढने और शिल्पविद्यासे धनप्राप्ति होवे, और पुत्र मित्र बंधुजनोंका समागम होवे सुख मध्यम होवे ॥ २५ ॥

उपजा०-दशापतावल्पबलेबुधेस्यान्मानस्यनाशःस्वजनापवादः ॥
अकार्य्यकोपस्खलनाद्यनिष्टंधनव्ययंरोगभयंचविद्यात् ॥ २६ ॥

दशापति बुध अल्पबली हो तो माननाश अपने जनोंसे झूठा कलंक विना प्रयोजनका कोप अपनी वाणी चकजानेसे बुरा धन खर्च और रोगभय भी जानना ॥ २६ ॥

उपजा०-दशापतौहीनबलेबुधेस्यात्स्वबुद्धिनाशोवधबंधभीतिः ॥
दूरेगतिर्वातकफामयार्त्तिर्निखातवित्तस्यचनापिलाभः ॥ २७ ॥

हीनबली बुधके दशापति होनेमें अपनी बुद्धिका नाश और बंधन, वा वध, कार्य्यसंबंधी भय, दूरगमन वातकफसंभव रोगसे पीडा होवे और अपना ही स्थापित द्रव्य नहीं मिले ॥ २७ ॥

अनु०-षडष्टांत्येतरर्क्षस्थोनष्टोर्द्धशुभप्रदः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोत्यंतसुखावहः ॥ २८ ॥

दशापति बुध ६ । ८ । १२ स्थानोंसे रहित और किसी स्थानमें हो तो नष्टबलीभी आधा शुभ फल देताहै. जो षडष्टांत्य भिन्नस्थानोंमें नष्टबल बुध मध्यमबलका फल और मध्यबली शुभ फल देताहै, उत्तमबली अत्यंत शुभफल देता है ६ । ८।१२ स्थानोंमें उत्तमबली भी अशुभ हीनबली अत्यंत अशुभ फल देताहै ॥ २८ ॥

उपजा०-गुरोर्दशापूर्णबलस्यदत्तेमानोदयंराजसुहृद्गुरुभ्यः ॥

कांत्यर्थलाभोपचयंसुखानिराज्यंसुतार्तिरिपुरोगनाशम् ॥ १२ ॥

पूर्णबली बृहस्पतिकी दशा राजा मित्र और गुरुजनोंसे मान देतीहै तथा कांति बढतीहै धनलाभ बहुत राज्यका सुख पुत्रप्राप्ति शत्रु और रोगका नाश होता है ॥ २२ ॥

उपजा०—गुरोर्दशामध्यबलस्यधर्मंमतिसाक्षित्वंनृपमान्त्रवर्गैः ॥

तनोतिमानार्थसुखाभिलाभंसिद्धिंसदुत्साहबलातिरेकाम् ॥ ३० ॥

मध्यबली बृहस्पतिकी दशामें राजासे मित्रता पुत्र स्त्री सुख और मित्र वस्त्रधर्मके लाभ होतेहैं ॥ ३० ॥

दशागुरोरल्पबलस्यदत्तेरोगंदरिद्रत्वमथारिभीतिम् ॥

कर्णामयंधर्मधनप्रणाशंवैराग्यमर्थंचगुणंचकिंचित् ॥ ३१ ॥

अल्पबली बृहस्पतिकी दशा रोग दरिद्रत्व और शत्रुभय देती है तथा कानोंमें रोग धर्म तथा धनका नाश होताहै परंच चित्तमें वैराग्य और थोडा धनागम और स्वल्प गुणभी देती है ॥ ३१ ॥

उपजा०—दशागुरोर्नष्टबलस्यपुंसांददातिदुःखानिरुजंकफार्तिम् ॥

कलत्रपुत्रस्वजनादिभीतिंधर्मार्थनाशंतनुपीडनंच ॥ ३२ ॥

अल्पबली बृहस्पतिकी दशा पुरुषोंको अनेक दुःख एवं रोग कफविकारसे कष्ट और स्त्री पुत्र एवं अपने मनुष्यादिकोंको भय धर्म और धनका नाश तथा शरीरपीडा देतीहै ॥ ३२ ॥

अनु०—षडष्टरिष्फेतरगोगुरुर्नष्टोर्द्धसत्फलः ॥

मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोत्यंतशुभावहः ॥ ३३ ॥

दशापति बृहस्पति ६ । ८ । १२ भावोंसे अन्य स्थानोंमें हो तो नष्टबली भी शुभफल आधा देताहै और हीनबली मध्यफल और मध्यबली शुभ फल देताहै और पूर्णबली अत्यंत शुभफल देताहै ६ । ८ । १२ स्थानोंमें उत्तमबली भी शुभफल पूर्ण नहीं देता ॥ ३३ ॥

उपजा०—दशाभृगोःपूर्णबलस्यसौख्यंस्रग्गंधवेश्मांबरकामिनीभ्यः ॥

हयादिलाभःसुतकीर्तितोषानैरुज्यगांधर्वरतिः पदातिः ॥ ३४ ॥

पूर्णबली शुक्रकी दशा, माला सुगंधी वस्तु गृह वस्त्र स्त्रीजनोंसे सुख दे-

तीहै तथा घोडा आदि वाहनलाभ पुत्रसुख कीर्ति नीरोगता गायनादि आनंद और पदलाभ देतीहै ॥ ३४ ॥

उपजा०—दशाभृगोर्मध्यबलस्यदत्तेवाणिज्यतोर्थागमनंकृषेश्च ॥
मिष्टान्नपानांबरभोगलाभंमित्राणियोषित्सुतसौख्यलाभम् ॥ ३५ ॥

मध्यबली शुक्रकी दशामें व्यापारसे तथा कृषिकर्मसे धनलाभ और मीठा अन्न सवारी वस्त्रादि भोगलाभ और मित्र पुत्र स्त्रीसे सुख मिले ॥ ३५ ॥

उपजा०—दशाभृगोरल्पबलस्यदत्तेमतिभ्रमंज्ञानयशोधनाशम् ॥
कदन्नभोज्यंव्यसनामयार्त्तिस्त्रिपक्षवैरंकलिमप्यरिभ्यः ॥ ३६ ॥

अल्पबली शुक्रकी दशा बुद्धिभ्रम ज्ञान यश और धनका नाश करतीहै तथा जुंवार बाजरा आदिका अन्न भोजन व्यसनवृद्धि रोगपीडा स्त्रीपक्षसे वैर शत्रुसे कलह होताहै ॥ ३६ ॥

उपजा०—दशाभृगोर्नष्टबलस्यदत्तेविदेशयानंस्वजनैर्विरोधम् ॥
पुत्रार्थभार्याविपदोरुजश्चमतिभ्रमोपिव्यसनंमहच्च ॥ ३७ ॥

नष्टबली शुक्रकी दशा विदेशगमन अपने मनुष्योंसे विरोध पुत्र धन स्त्री आदिकी विपत्ति और रोग बुद्धिभ्रम तथा बडा व्यसन देतीहै ॥ ३७ ॥

अनु०—षडष्टरिःफेतरगोभृगुर्नष्टोर्द्धसत्फलः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोत्यंतशुभावहः ॥ ३८ ॥

दशापति शुक्र ६ । ८ । १२ से अन्य स्थानोंमें नष्टबलीभी शुभ फल आधा देताही है और हीनबली मध्य फल मध्यबली शुभ फल देता है, उत्तमबली अत्यंत शुभ फल देताहै ६।८।१२ स्थानोंमें शुभभी अशुभ देताहै॥ ३८ ॥

उपजा०—दशाशनेःपूर्णबलस्यदत्तेनवीनवेश्मांबरभूमिसौख्यम् ॥
आरामतोयाश्रयनिर्मितिश्चम्लेच्छातिसंगान्नृपतेर्धनाप्तिः ॥ ३९ ॥

पूर्णबली शनिकी दशा नये घर वस्त्र भूमिका सुख देती है वा जलस्थान निर्माण और म्लेच्छसे तथा राजासे धनप्राप्ति होतीहै ॥ ३९ ॥

उपजा०—दशाशनेर्मध्यबलस्यदत्तेखरोष्ट्रपाखंडजतोधनाप्तिम् ॥
वृद्धांगनासंगमदुर्गरक्षाधिकारचिंताविरसान्नभोगः ॥ ४० ॥

मध्यबली शनिकी दशा गधा ऊंट एवं उडद आदि अन्न और (पाखंडज)

मिथ्या धर्मसंचारसे धनप्राप्ति होवे तथा वृद्धास्त्रीका संगम होवे किल्ला आदिकी रक्षा अधिकारकी चिंता होवे रसरहित अन्न भोजनको मिले ॥ ४० ॥

उपजा०-दशाशनेःस्वल्पबलस्यपुंसांतनोतिदुःखंरिपुतस्करेभ्यः ॥
दारिद्र्यमात्मीयजनापवादंरोगंचशीतानिलकोपमुग्रम् ॥ १४ ॥

अल्पबली शनिकी दशा पुरुषोंको शत्रु और चौरोंसे दुःख देतीहै तथा दरिद्रता अपने मनुष्यसे झूठा कलंक और शीत तथा वातके कोपसे उग्ररोग उत्पन्न होवे ॥ ४१ ॥

उपजा०-दशाशनेर्नष्टबलस्यपुंसामनेकधादुर्व्यसनानिदत्ते ॥
स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधंरोगादिवृद्धिंमरणेनतुल्याम् ॥ ४२ ॥

नष्टबली शनिकी दशा पुरुषोंको अनेक व्यसन देती है तथा पुत्रमित्रादि अपने मनुष्योंसे विरोध रोगादिकोंकी वृद्धि मरणतुल्य करती है ॥ ५२ ॥

अनु०-त्रिषष्ठलाभोपगतोमंदोनिंद्योऽर्द्धसत्फलः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोत्यंतशुभावहः ॥ ४३ ॥

शनि ३ । ६ । ११ स्थानोंमें नष्टबली भी आधा शुभफल देताही है तथा हीनबली मध्य मध्यबली शुभ फल देताहै उत्तमबली अत्यंतही शुभ फल देताहै ॥ ४३ ॥

उपेन्द्रव०-दशातनोःस्वामिबलेनतुल्यंफलंददातीत्यपरोविशेषः ॥
चरेशुभामध्यफलाधमाचद्विमूर्त्तिभेस्याद्विपरीतमूह्यम् ॥ ४४ ॥

लग्नकी दशा अपने स्वामिबलके सदृश फल देतीहै. जैसे उदित स्वगृहादिगत लग्नेश हो तो उसका उत्तमबली दशोक्तफल और अस्त नीच होनेमें हीनबलोक्त स्वदशा फल देताहै इसमें यह विशेष है कि चरलग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो दशा शुभ दूसरे द्रेष्काणमें मध्यबलोक्त और तीसरे द्रेष्काणमें हीनबलोक्त दशा फल देतीहै द्विस्वभाव राशिमें चरसे विपरीत अर्थात् प्रथम द्रेष्काणमें अधम द्वितीयमें मध्यम तृतीयमें उत्तम बलीका फल देतीहै ॥ ४४ ॥

उपें०व०-अनिष्टमिष्टंचसमंस्थिरर्क्षेक्रमाद्दृकाणैःफलमुक्तमाद्यैः ॥
सत्स्वामियोगेक्षणतःसुखंस्यात्पापेक्षणात्कष्टफलंचवाच्यम् ॥ ४५ ॥

स्थिरराशिमें प्रथम द्रेष्काण हो तो हीनबलीका दूसरा हो तो उत्तमबली-

का तीसरा हो तो मध्यमबलीका फल देताहै. इस प्रकार पूर्वाचार्योंने लग्नदशा का फल द्रेष्काणवशसे कहाहै तथा लग्नपर लग्नेशकी दृष्टि हो वा लग्नमें लग्नेश हो तो सुख और पापयोग पापदृष्टिसे कष्टफलभी कहना ॥ ४५ ॥

अथांतर्दशाप्रकारः । अ०—दशामानंसमामानंप्रकल्प्योक्तेनवर्त्मना ॥
अंतर्दशाःसाधनीयाःप्राक्पात्यांशवशेनतु ॥ ४६ ॥

अंतर्दशाकी रीति कहते हैं कि, पहिले जिस विधिसे पात्यांशी दशा कही वही इसकीभी है और सावनवर्षमितिका जहां काम है तहां दशेशकी दश दिनादि लेलेने यही विशेष है, जैसे पहिले हीनांशवशसे पात्यांश लियेहैं तहां पात्यांशयोगसे सौर वा सावन दिनादि दशामिति भाजनेसे मिलेहैं, वही अंतर्दशामेंभी ध्रुवक जानना उसीसे सभी पात्यांश गुनाकर प्रत्येककी अंतर्दशा

शुक्रान्तर्दशादिनोदाहरणम् ।

गु.	बु.	मं.	श.	चं.	शु.	ल.	सू.	या.	ग्र.
२२	७	१	६	२०	७	२१	३	१०	सौरसावनमिति
२१	५१	४७	२४	१७	२४	१८	४७	४२	
१६	३७	३०	३१	१४	१	३०	१७	१७	
१८	२२	५०	४७	४१	३३	४८	२५	००	
७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	सौराःसंवत्सराः
१२	४	१२	१४	२०	११	१८	९	१२	
३	५४	४५	३३	५८	१५	३२	५८	४५	
५	२१	५८	२९	९	२४	३३	४	२२	
०	१८	४७	३७	३४	१५	४८	३६	००	

मिलतीहै. उदाहरण-शुक्रदशादिनादि १०।४२।१७ सवर्ण करके पहिलोंका साधा सवर्णित पात्यांश योगसे भाग लिया तो लब्धि ३ । १२ । २८ध्रुवक हुवा इससे प्रत्येकके पात्यांश गुनाकरके प्रत्येककी अंतर्दशा होतीहै उपरांत सूर्य्य स्पष्ट वा संक्रांतिदिनोंसे पूर्ववत् जोडकरना ॥ ४६ ॥

अनु०—अदावंतर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोपराः ॥
शुभेक्षणान्वयान्मैत्र्यात्तत्फलंपरिकल्पयेत् ॥ ४७ ॥

अंतर्दशामें प्रथम दशापति अर्थात् जिसका अंतर है तदनंतर जिसक्रमसे उक्त दशाका न्यास है वैसेही सभी ग्रह लिखने अंतर्दशा स्वामीकाभी चार प्रकारका बल देखके फल कहना, जैसे अंतर्दशापतिसे शुभग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो उसके अनुसार स्थान उच्चनीचास्तोदयमें दशेशका फल शुभाशुभ कहना ऐसेही पापयोग दृष्टिसेभी अंतर्दशाका फल जानना ॥ ४७ ॥

अनु०—चंद्रारजीवाःसौम्येज्यशुक्रोराशीविधुस्तथा ॥
मंदेज्यशुक्राःसूर्येन्दुभौमाःसौम्येज्यसूर्य्यजाः ॥
जीवज्ञशुक्राः सूर्य्यादेः शुभाअंतर्दशाइमाः ॥
अन्येशमशुभाज्ञेया इति वामनभाषितम् ॥ ४९ ॥

सूर्य्यकी दशामें चंद्रमा मंगल बृहस्पति चंद्रमाकीमें बुध बृहस्पति शुक्र, मंगलमें सूर्य्य चंद्रमा बुधमें शनि बृहस्पति शुक्र बृहस्पतिमें सूर्य्य चंद्रमा मंगल शुक्रमें बुध बृहस्पति शनि और शनिमें बृहस्पति बुध शुक्रकी अंतर्दशा शुभ फल देतीहै. यह वामनाचार्य्यने कहाहै, परंतु ऐसा फल वर्त्तमानमें यथार्थ मिलता नहीं है, शुभाशुभ ग्रहोंका बलाबल विचारसे फल यथार्थ मिलता है॥ ४८॥ ४९॥ इति महीधरकृतायां नीलकंठीभा०दशाफलाध्यायः ॥ १२॥

अथ ग्रहाणां भावफलानि ।

उपजा०—सूर्य्यारमंदास्तनुगाज्वरार्तिंधनक्षयंपापयुगिंदुरित्थम् ॥
शुभान्वितःपूर्णतनुश्चसौख्यंजीवज्ञशुक्राधनराज्यलाभम् ॥ ५० ॥

अब ग्रहोंके भावफल कहतेहैं कि सूर्य्य मंगल शनि प्रत्येक वा सभी लग्नमें हों तो ज्वरसंबंधी पीडा धनहानि करते हैं. पापयुक्त चंद्रमाभी लग्नमें यही फल देताहै जो पूर्ण और शुभयुक्त हो तो सुख देताहै पर अल्पमें अल्प अधिकमें अधिक ऐसा बुद्धिसे समझ लेना तथा बृहस्पति बुध शुक्र लग्नमें धन और कुशलानुमान राज्यसुख देते हैं, बुध लग्नका केवल वा सशुभ हो तो हर्ष देताहै ॥ ५० ॥

उपजा०—चंद्रज्ञजीवास्फुजितोधनस्थाधनागमंराज्यसुखंचदद्युः ॥
पापाधनस्थाधनहानिदाःस्युर्नृपाद्भयंकार्य्यविघातम किंः॥ ५१ ॥

धनस्थानमें चंद्रमा बुध बृहस्पति और शुक्र धनागम तथा राज्यसुख

देते हैं पूर्ण चन्द्रमा शुभयुक्त भी यही फल देता है और पापग्रहयुक्त चन्द्रमा धनस्थानमें धनहानि देता है विशेषतः शनि तो राजासे भय और कार्य्यनाशभी करता है ॥ ५१ ॥

वसन्तति०—दुश्चिक्यगाः खलखगा धनधर्मराज्यलाभप्रदा बलयुताः क्षितिलाभदाः स्युः ॥ सौम्याः सुखार्थवसुलाभयशो-विलासलाभाय हर्षमतुलं किल तत्र चन्द्रः ॥ ५२ ॥

तृतीयभावमें पापग्रह धन धर्म और राज्यसुख देते हैं बलवान् हों तो भूमि-लाभभी करते हैं शुभग्रह सुख धनलाभ कार्य्यसिद्धि यश विलासादि सौख्य करतेहैं और चन्द्रमा अनुपम हर्ष देता है पूर्ण क्षीणका यहां उपचय होनेसे अपेक्षा नहीं है ॥ ५२ ॥

वसन्तति०—चन्द्रः सुखेखलयुतोव्यसनंरुजंचपुष्टःशुभेनसहितः सुखमातनोति ॥ सौम्यःसुखंविविधमत्रखलाःसुखार्थनाशंरुजं व्यसनमप्यतुलंभयं वा ॥ ५३ ॥

चतुर्थभावमें चंद्रमा सुख देताहै पापयुक्त हो तो द्यूतादि व्यसन और रोग करताहै शुभयुक्त पूर्ण हो तो सुख देताहै और शुभग्रह अनेक प्रकार सुख देतेहैं, पापग्रह सुख और धनका नाश तथा रोग व्यसन अनुपम भय देतेहैं ॥ ५३ ॥

रथोद्ध०—पुत्रवित्तसुखसंचयंशुभाः पुत्रगा भृगुसुतोतिहर्षदः ॥ पुत्रवित्तधनबुद्धिहारकास्तस्करामयकलिप्रदाः खलाः ॥ ५४ ॥

पंचम भावमें शुभग्रह पूर्ण चन्द्रमा पुत्र धन और सुख बढाते हैं शुक्र तो अतिही हर्ष देता है पापग्रह पुत्र मित्र धन तथा बुद्धिहरण और चौरसंबंधी व्यसन रोग कलह करतेहैं ॥ ५४ ॥

शालिनी—षष्ठेपापावित्तलाभंसुखाप्तिंभौमोत्यंतंहर्षदः शत्रुनाशम् ॥ सौम्याभीतिंवित्तनाशंकलिंचचंद्रोरोगंपापयुक्तः करोति ॥ ५५ ॥

छठे भावमें पापग्रह धनलाभ सुखप्राप्ति करते हैं मंगल अतिहर्ष तथा शत्रुनाश करताहै शुभग्रह भय धननाश कलह करते हैं पापयुक्त चन्द्रमा रोगोत्पत्ति करताहै ॥ ५५ ॥

भुजंगप्र०—सपापः शशीसत्तमोव्याधिभीतिंखलाः स्त्रीविना-
शंकलिंमृत्यभीतिम् ॥ शुभाःकुर्वतेवित्तलाभं सुखाप्तियशो-
राजमानोदयंबंधुसौख्यम् ॥ ५६ ॥

सप्तमभावमें पापयुक्त चन्द्रमा रोग भय तथा पापग्रह स्त्रीहानि कलह मृत्यसंबंधी भय करते हैं, शुभग्रह धनलाभ सुखलाभ यश राजमान अभ्युदय और बंधुसुख करते हैं ॥ ५६ ॥

वसन्तति०—चंद्रोष्टमेनिधनदः खलखेटयुक्तः पापैश्चतत्रनृ-
तितुल्यफलं च विद्यात् ॥ सौम्याःस्वधातुवशतो रुजमर्थनाशं
मानक्षयंमुथशिलेशुभजेशुभंच ॥ ५७ ॥

अष्टमभावमें पापयुक्त चन्द्रमा मृत्यु पापग्रह मृत्युतुल्य कष्ट फल देतेहैं शुभग्रह अपने उक्त धातुके वशसे रोग तथा धननाश मानहानि करतेहैं ॥ ५७ ॥

द्रुतविलंबि०—तपसिसोदरभीःपशुपीडनंखलखगेतिमुदोरविरत्रचेत् ॥
शुभखगाधनधान्यविवृद्धिदाःखलखगेपिशुभान्यपरेजगुः ॥ ५८ ॥

नवमभावमें पापग्रह भाइयोंको क्लेश तथा पशुसंबंधी पीडा देतेहैं परन्तु सूर्य्य तो अति हर्षही देताहै तथा शुभग्रह धन अन्न बढातेहैं किसी आचार्यके मतसे पापग्रह भी शुभ फल देते हैं, यह बलाधीन है ॥ ५८ ॥

द्रुतविलंबि०—गगनगोरविजः पशुवित्तहारविकुजौव्यवसायपराक्रमौ ॥
धनसुखानिपरेचधनात्मजावनिपसंगसुखानिवितन्वते ॥ ५९ ॥

दशमभावमें शनि पशु धननाश करताहै सूर्य्य मंगल व्यवसाय तथा पराक्रमसे अनेक सुख करतेहैं शुभग्रह धन पुत्र और राजसंबंधी सुख करतेहैं ॥ ५९ ॥

वसन्तति०—लाभेधनोपचयसौख्ययशोभिवृद्धिसन्मित्रसं-
गपुष्टिकराश्चसर्वे ॥ क्रूराबलेनरहिताःसुतवित्तबुद्धिना
शंशुभास्तुशुभतांस्वफलस्यकुर्य्युः ॥ ६० ॥

ग्यारहवें भावमें सभी ग्रह यशकी वृद्धि भले मित्रोंका संग शरीरमें बल पुष्टि करते हैं, बलहीन पापग्रह पुत्र धन बुद्धिसंबंधी हानि और शुभग्रह अपने उक्त शुभ फलकी शुभता बढाते हैं ॥ ६० ॥

इंद्रव०—पापाव्ययेनेकरुजांविवादंह्यानिंधनानांनृपतस्करादेः ॥
सौम्याव्ययंसद्व्यवहारमार्गे कुर्युःशनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥ ६१ ॥
व्ययभावमें पापग्रह अनेक रोग कलह धनहानि राजा तथा चौरादिसे करते हैं
शुभग्रह शुभव्यय यद्वा शुभ मार्गमें धनव्यय और शनि हर्षवृद्धि करताहै॥ ६१ ॥

शार्दूल०—श्रीगर्गान्वयभूषणोगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥ तत्सूनुः खलुनीलकंठविबुधोविद्वच्छिवातुज्ञयाभावस्थग्रहपाकदौस्स्थ्यसुखताशुभंफलंसोव्यधात्॥ ६२ ॥इति भावफलाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

इस श्लोकका अर्थ पूर्ववतही है विशेष इतना है कि दशाका शुभाशुभ फल और ग्रहभावफल इस अध्यायमें आचार्यने कहे ॥ ६२ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां ग्रहभावफलाध्यायः ॥ १४ ॥

अथ मासदिनप्रवेशानयनं तत्फलानि च।

अनु०—मासार्कस्ययदासन्नपंक्त्यर्केणसहांतरम् ॥
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येनयुतोनितम् ॥ १ ॥
तत्पंक्तिस्थंवारपूर्वंमासार्काधिकहनिके ॥
तद्वाराद्येमासवेशाद्युवेशोप्येवमेवहि ॥ २ ॥

अब मासप्रवेश दिनप्रवेशकी रीति कहतेहैं कि, जन्मकालका तात्कालिक स्पष्ट सूर्य्य सबही वर्षप्रवेशमें तुल्यही होता है जितने मासका प्रवेश करना है उतनी संख्यामें १ घटायके वर्षप्रवेशकी राशिमें जोड देना जैसे दूसरे मासप्रवेशमें १ तीसरेमें २ इत्यादि जोडके मासप्रवेशका लीन सूर्य्य स्पष्ट होता है ऐसेही दिन प्रवेशमें १ अंश जोडना इस सूर्य्य स्पष्टके समीपकी स्पष्टावधि पंचांगमें देखके उस अवधिमें जो सूर्य्य स्पष्ट है वह पंक्त्यर्क हुआ. मासप्रवेशका जो सूर्य्य स्पष्ट है वह मासार्क हुआ इन दोनोंका अंतर करना उपरांत कला करके गतिसे भाग देना वारादि ३ अंक लेने इस लब्धिको मासार्ककालीन वार घटी पलाओंमें न्यूनाधिक करना. जैसे मासार्कमें पंक्त्यर्क घटाया हो तो अवधिस्थ वारादिमें यह जोडदेना पंक्त्यर्कमें मासार्क घटाया हो तो घटाय देना यह मासप्रवेशका वार घटी पला मिलेंगी ऐसेही

दिनप्रवेशभी जानना इसकी युक्ति इसी तंत्रके प्रथमाध्याय तीसरे श्लोककी टीकामेंभी लिखीहै,—उदाहरण—पूर्वलिखित जन्मकालीन सूर्य्यस्पष्ट ०। १८। ४२। ३१। है संवत् १९४३ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३। ५४ वर्षप्रवेश ३८ में भी सूर्य स्पष्ट ०। १८। ४२। ३१ मासप्रवेशके लिये इसमें एक जोडके १। १८। ४२। ३१ मासप्रवेशकालीन सूर्य्य स्पष्ट हुआ इसीका नाम मासार्क है, दूसरे महीने ज्येष्ठकी कृष्णद्वादशीके समीप ज्येष्ठकृष्णषष्ठी सोमवारके दिन पंचांगमें अवधि उदयकालकी है यह यह हाल २। ०। ० वारादि जानना इस दिन उदयकालिक सूर्य्य र[illegible] १। १०। ३५। ३ गति ५७। २७ है यह पंक्त्यर्क हुआ, इनका अन्तर करना है मासार्क १। १८। ४२। ३१ अधिक होनेसे इसमें पंक्त्यर्क १। १०। ३५। ३ घटायके ०। ८। ७। २८ रहा इसकी कला ४८७। २८ हुई, गति ५७। २७है ५७ को ६० से गुनाकर २७ जोड दिये ३४४७ हुये ये कला ४८७ को ६० से गुनाकर २८ जोडदिये २९२४८ हुये गतिपिंड ३४४७ से कलापिंड २९२४८ में भाग लिया लब्धि८दिन हुये शेष१६७२ को ६० से गुनाकर१००३२० भागहार ३४४७ से भाग लिया लाभ २९ घटी हुई शेष ३५७ को ६० से गुनाकर २१४२० भागहार से भागलिया लाभ ६। यह ८। २९। ६ वारादि पंक्त्यर्क कालिक वारादि २। ०। ० में न्यूनताधिक करना है यहां मासार्कमें पंक्त्यर्क घटाया गया इस लिये ८। २९। ६ वारको ७ से शेष करके १। २९। ६ पंक्ति वारादिमें जोडदिया तो मासप्रवेशका वारादि हुआ ३। २९। ६ ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशीको मंगलवार है इस दिन २९ घटी ६ पलोंमें द्वितीय मासप्रवेश हुआ ऐसेही दिनप्रवेशभी जानना इसकी कल्पित रीति उदाहरण सहित इसी तंत्रके प्रथमाध्याय तीसरे श्लोककी टीकामें लिखीहै दोनों प्रकार सिद्ध हैं विशेष बोधके लिये जगह २ लिखाहै ॥ १ ॥ २ ॥

अनु०—मासप्रवेशकालेपिग्रहान्भावांश्वसाधयेत् ॥
तत्रमासतनोर्नाथोमुन्थेशोजन्मपस्तथा ॥ ३ ॥
त्रिराशिपोदिननिशोरवींदुभपतिस्तथा ॥
अब्दप्रवेशलग्नेश एषांवीर्य्याधिकस्तनुम् ॥ ४ ॥

अनु०-पश्यन्मासपतिर्ज्ञेयस्ततोवाच्यंशुभाशुभम् ॥
अपरेमासलग्नेशंमासाधिपतिमूचिरे ॥ ५ ॥

जैसे वर्षप्रवेशमें वर्षेशके लिये पंचाधिकारी हैं तैसेही मासप्रवेशमें मासेशके लिये षडधिकारी ये हैं कि प्रथम मासप्रवेशके तत्कालीन ग्रह स्पष्ट करके प्रथम मासलग्नेश १ उससे उपरांत माससंख्या ढाई २।३० अंशसे गुनाकर वर्षकी मुंथा स्पष्टमें योग करनेसे मासकी मुंथा होतीहै इसका स्वामी २ जन्मराशि-स्वामी ३ त्रिराशीश "त्रिराशिपाःसूर्य्यसितार्किशुक्राः" इत्यादिसे पूर्वोक्तही ४ दिनमें सूर्य्य राशिस्वामी रात्रिमें चंद्रराशिस्वामी ५ वर्षप्रवेश लग्नस्वामी ६ ये षडधिकारी होते हैं इन छहोंमेंसे जो बलाधिक और लग्नको देखता हो वह मासाधिपति होताहै. कोई कोई आचार्य्य मासप्रवेश लग्नेशकोही मासेश मानते हैं उनके मतसे षडधिकारियोंकाभी प्रयोजन नहीं है स्वामीका निर्णय पूर्ववत् वही है ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

अनु०-दिनेशं दिनलग्नेशं तथा प्रोचुर्विचक्षणाः ॥
मासवत्प्रवेशयोर्वाच्यंफलं वर्षेशवद्बुधैः ॥ ६ ॥

दिनेश दिनप्रवेशके लग्नेशकोही बुद्धिमान् कहते हैं. फल इसका वर्षेशके समान बलाबल विचारसे शुभाशुभ बुद्धिमानोंने कहना ॥ ६ ॥

शार्दूलवि०-लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेनमैत्रीदृशादृष्टोवा सहितः शशीच यदितौ मैत्रीदृशालोकते ॥ तस्मिन्मासितनौ सुखं बहुविधं नैरुज्यमित्थंफलंतावद्यावदिमेस्फुरित्थमथता न्संचार्य्यवाच्यंफलम् ॥ ७ ॥

मासप्रवेश लग्नके नवांशका स्वामी लग्नेशसे वा उसके स्थित नवांशस्वामीसे मित्रदृष्टि हो वा दोनों एक साथ हों तथा चंद्रमा उन दोनोंको मित्रदृष्टिसे देखे तो उस महीनेमें मासप्रवेशवालेके शरीरमें बहुत प्रकारके सुख और नीरोगता जबलौं यह मासप्रवेश है तबलौं रहे ऐसेही गणितवशसे ग्रहोंका बलाबल दृष्टि-योग विचारके फल कहना ॥ ७ ॥

शार्दूलवि०-तौचेच्छत्रुदृशा मिथश्चशशिना दृष्टौ मनोदुःखदौ रोगाधिक्यकरौच कश्चिदनयोर्नीचेस्तगोवायादि ॥ कष्टात्सौख्यमिहद्वयं यदिपुनर्नीचास्तगंस्यान्मृतिः सृत्यब्दोद्भवरिष्टतो मृतिसमंस्यादन्यथेत्यूचिरे ॥ ८ ॥

जो वही लग्नांशेश और लग्नेश्वरांशेश परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखते हों वा चंद्रमाभी शत्रुदृष्टिसे देखे तो मानसी दुःख देते हैं जो लग्नेश और लग्नेश्वरांशेशमेंसे कोई नीच वा अस्तंगत हो तो बडा कष्ट भोगकर सुख पावे जो लग्नांशनाथ लग्नेश्वरांशनाथ नीच एवं अस्तंगत हों और चंद्रमा शत्रुदृष्टिसे देखे तो मृत्यु देते हैं, परन्तु इसी महीनेमें जन्म तथा वर्षकाभी अरिष्ट हो तो मृत्यु होतीहै अन्यथा मृत्युतुल्य कष्ट होताहै जो जन्मका अरिष्ट जिस महीनेमें हो वर्षका न हो तो मासपूर्वार्द्धमें मृत्युतुल्य कष्ट और वर्षका अरिष्ट हो जन्मका उस महीनेमें न हो तो मासोत्तरार्द्धमें उक्त अरिष्ट मिलताहै यह कोई आचार्य कहते हैं ॥ ८ ॥

शार्दूलवि०-भावांशाधिपतिः स्वभावपनवांशेशेनमैत्रीदृशा दृष्टोवासहितः शशीचयदितौ मैत्रीदृशालोकते ॥ तद्भावोत्थसुखंविलोममथतद्व्यत्यासतः कीर्तितं नीचास्तादिफलं चलग्नवदिदंविद्वद्भिरूह्यंधिया ॥ ९ ॥

ऐसेही संपूर्ण भावोंका विचार है कि जिस भावका नवांशस्वामी तथा भावनाथनवांशस्वामी परस्पर मित्रदृष्टिसे देखें तथा चंद्रमाभी इन्हें मित्रदृष्टिसे देखे तो इस महीनेमें उस भावसंबंधी शुभफल मिलताहै जो उक्त ग्रह परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखें अथवा युक्त हों तथा चंद्रमाभी इन्हें शत्रुदृष्टिसे देखे तो तद्भावसंबंधी कष्टफल अवश्य मिलताहै ऐसेही नीच वा अस्तंगत एक वा दोनों हों तोभी कष्टफल मिलताहै विद्वानोंने लग्नके सदृश सबही भावोंमें ऐसा विचार करना ॥ ९ ॥

इंद्रव०-लग्नेशमासेशसमेश्वरांशनाथायदंशाधिपमित्रदृष्ट्या ॥ दृष्टायुतावाशशिनाचतद्भावोत्थसौख्यायनचेदनिष्टम् ॥ १० ॥

लग्नेश मासेश वर्षेश और लग्नांशनाथ ये चारो वा इनमेंसे कोई जिस भावनवांशस्वामीसे मित्रदृष्टिसे देखे वा युक्त हों तथा चंद्रमाभी मित्रदृष्टिसे देखे वा युक्त हो तो उस भावसंबंधी सुख देताहै. ऐसे योगमें जो जन्मकाल योग उससे उस भावसंबंधी अनिष्ट फल हो तो यहां मध्यम फल जानना. जो जो जन्मसेभी शुभफली हों तो यहां अधिक शुभ जानना ऐसेही निर्बल और शत्रुदृष्टिसे अनिष्ट फल होताहै फल तारतम्यसे कहना ॥ १० ॥

अनु०-निर्बलाव्ययषष्ठाष्टपतयः शुभदायकाः ॥
अन्येसवीर्य्याःशुभदाव्यत्ययेव्यत्ययः स्मृतः ॥ ११ ॥

बारहवें छठे आठवें भावके स्वामी तथा इनके नवांशस्वामी निर्बल और भावोंके स्वामी सबल हों तो शुभ फल देतेहैं और ६।८।१२ भावोंके स्वामी सबल और भावोंके अबल कष्टफल देतेहैं ॥ ११ ॥

उपजा०-लग्नेशमासेशसमेशमुंथाधिपाः षडष्टोपगताःसपापाः ॥
दृष्टाःखलैःशत्रुदृशात्रमासेव्याध्यादिविड्भयदुःखदाःस्युः ॥१२॥

लग्नेश मासेश वर्षेश और मुंथेश ६ । ८ । १२ भावोंमें हों पापयुक्भी हों और शत्रुदृष्टिसे देखते हों तो इस मासमें रोगादि क्लेश तथा शत्रुवातादि दुःख देतेहैं ॥ १२ ॥

इंद्रव०-केंद्रत्रिकोणायगतास्तुलग्नमासाब्दपावीर्य्ययुतानराणाम् ॥
नैरुज्यशत्रुक्षयराज्यलाभमानोदयाद्भुतकीर्तिदाःस्युः ॥ १३ ॥

लग्नेश मासेश और वर्षेश बलवान् हों तथा केंद्र त्रिकोण और ग्यारहवें हों तो नीरोगता शत्रुक्षय कुलानुमान राज्यलाभ मान उदय अद्भुत कीर्ति देतेहैं ॥ १३ ॥

अनु०-इत्थिहालग्नयोराशियोंबलीतत्रदृदपाः ॥
दशेशाःस्वांशतुल्याहेरित्युक्तंकैश्चिदागमात् ॥ १४ ॥

यह सामान्य मासफल कहेहैं इसमें भी सूक्ष्म दशा और अंतर्दशासे जानना पात्यांशी दशाकी विधि पूर्ववतही है, जहां सौर वा सावन दिन ३६० क-

कार्य्य है तहां मासदिन ३०से कार्य्य करना अन्यत् उसी रीतिसे मास प्रवेशकी दशा होतीहै, इसका प्रकट विवरण दशाविधिमें प्रथम लिखाहै. तैसेही अंतर्दशा गिननी चाहिये इनके अनुसार उच्च नीचादि बलाबल विवेकसे फल कहना दशाभी अनेक प्रकारकी हैं, जैसे पात्यांशी १ मुद्दा २ देवकीर्तिमत हद्ददशा ३ अनेक भेदसहित तासीरदशा ४ निसर्गदशा ५ कालहोरा ६ लग्नादि राश्यादि ग्रहदशा ७ भोग्यांशदशा ८ महादेवमतदशा ९ बलभद्रमताख्या १० गौरीमताख्या ११ राममताख्या १२ इनका विशेष विस्तार ताजिक मुक्तावलीमें है. यहां ग्रंथभूयस्त्व भयसे केवल प्रधान अंशदशाही आचार्य्यने कही है। मासदशादिनादिज्ञानार्थ उपाय यह है कि मुंथा और मासलग्नमेंसे जो बलवान् हो उस राशिमें जो भौमादि हद्दास्वामी हैं वे अपने अपने अंशतुल्य दिन पाते हैं, जैसे वर्षलग्न स्पष्ट देखना 'मेषेंगतर्का०' इत्यादिसे जो हद्देश हैं वह प्रथम दशास्वामी तदनंतर क्रमसे होंगे, जैसे राशिके ३० अंश हैं इन्हें १२ से गुनाकर ३६० होते हैं ये सौरदशादिन हैं तद्वही जितने हद्दांश हों उन्हें १२ से गुनाकर भौमादिकोंको दशादिनादि होते हैं प्रथम दशेशके भुक्तांश और भोग्यांश पृथक् १२ से गुनाकर भुक्त और भोग्य दशादिनादि होते हैं भुक्तदिनादि दशाके अंत्यम आवेंगे यह देवकीर्तिमतसे हद्दादशा प्रकार है इसी रीतिसे दिनप्रवेशमेंभी करना पात्यांश दशा उसीके उक्तप्रकारसे है ॥ १४ ॥

अनु०–रवींद्वोरसमावेशान्नैतद्युक्तंपरेजगुः ॥
दशांतरदशाब्देशफलमाब्देतु युज्यते ॥ १५ ॥

जो किसीके मतसे सूर्य्य चंद्रमा और लग्नकी छोड दीहै यह प्रमाण नहीं है दशांतरदशाओंका फल वर्षोक्तही है तो यह भी दशामें होनेही चाहिये इसलिये पात्यांश मुद्दही मुख्य है ॥ १५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां मासप्रकरणम् ॥ १५ ॥

अनु०–दिनप्रवेशकालेपिग्रहान्भावांश्वसाधयेत् ॥
चंद्रलग्नांशकाभ्यांतुफलंतत्रवदेद्बुधः ॥ १६ ॥

दिनप्रवेशके लिये वर्षके तात्कालिक सूर्य्य स्पष्टमें जितना संख्याक दिनका

दिनप्रवेश हो उसमें १ न्यून करके जोडदेना, कला विकला वही रहैंगी यहां दिनप्रवेशका सूर्य्य स्पष्ट होगा इष्टकाल निकालनेकी युक्ति पूर्वोक्त ही है. उपरांत इस समयके ग्रहस्पष्ट भावस्पष्ट करके चंद्रमा और लग्नके नवांशवशसे मासप्रवेशतुल्य फल पंडितोंने कहना ॥ १६ ॥

अनु०–चतुष्कमिंथिहेशादिदिनमासाब्दलग्नपाः ॥
एषांबलीतनुंपश्यन्दिनेशः परिकीर्तितः ॥ १७ ॥

मुंथेश १ त्रिराशीश २ जन्मलग्नेश ३ दिनका सूर्य्यराशीश रात्रिका चंद्रराशीश ४ दिनलग्नेश ५ मासलग्नेश ६ वर्षलग्नेश ७ ये दिनप्रवेशमें अधिकारी हैं इनमेंसे लग्न देखनेवाला दिनेश होताहै विचारके पूर्वोक्तही फल कहना ॥ १७ ॥

उपजा०–त्रिकोणकेन्द्रायगताःशुभाश्चेच्चंद्रात्तनोर्वाबलिनःखलास्तु ॥
षट्त्र्यायगास्तत्रदिनेसुखानिविलासमानार्थयशोयुतानि ॥ १८ ॥

दिनप्रवेशके फल कहते हैं कि, शुभ ग्रह बलवान् लग्न वा चंद्रमासे केंद्र १ । ४ । ७।१० वा त्रिकोण ५।९ में हों तथा पापग्रह ३ । ६ । ११ स्थानोंमें हों तो इस दिनमें विलास सन्मान धन और यशसहित सुख होवे ॥ १८ ॥

उपजा०–षडष्टरिःफोपगतादिनाब्दमासोंथिहेशाःखलखेटयुक्ताः ॥
गदप्रदामानयशोहराश्च केंद्रत्रिकोणायगताःसुखाप्त्यै ॥ १९ ॥

दिनेश वर्षेश मासेश और मुंथेश पापयुक्त ६ । ८ । १२ स्थानोंमें हों तो इस दिन रोग देते हैं मान तथा यशकी हानि करते हैं जो केंद्र त्रिकोण और ग्यारहवें हों तो सुख देते हैं ॥ १९ ॥

इंद्रव०–लग्नांशकःसौम्यखगैःसमेतोदृष्टोपिवामित्रदृशेंदुनापि ॥
नैरुज्यराज्यादिशरीरपुष्टिर्मासोक्तिवद्दुःखमतोन्यथात्वे॥ २० ॥

लग्नका अंश वा उसका स्वामी शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तथा चंद्रमा उसे मित्रदृष्टिसे देखे तो नीरोगता राजप्रबंधादि सुख शरीरकी पुष्टि होवे जो वे निर्बल वा ६।८।१२ स्थानोंमें हों तो मासोक्त तुल्य दुःख होवे ऐसेही सभी भावोंके अंशोंसे प्रत्येक भावोक्त शुभाशुभ कहना ॥ २० ॥

इंद्रव०-यद्भांशकः सौम्ययुतोक्षितोवाख्रिग्धेक्षणाद्भावजसौख्यकृत्सः ॥
दुःखप्रदः प्रोक्तवदन्यथात्वेभावेषुसर्वेष्वियमेवरीतिः ॥ २१ ॥

यहां नवांशविचार सभी भावोंमें तुल्य है जिस भावमें जो भाव स्पष्टका नवांश है वह शुभग्रह वा मित्रग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट तथा चंद्रमासे भी मित्रदृष्टिसे देखाजावे तो उक्त भावसंबंधी सुख होवे यदि वह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट तथा चंद्रमासे शत्रुदृष्टि करके देखा जावे तो उक्तभावसंबंधी क्लेश देताहै यही रीति सभी भावोंकी है ॥ २१ ॥

अनु०-षष्ठांशकः सौम्ययुतो रोगदः पापयुक्छुभः ॥
व्ययांशे शुभयुग्दृष्टे सद्व्ययः पापतस्त्वसत् ॥ २२ ॥

किसी भावोंमें विचार और तरहभी है जैसे छठे भावका नवांश शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो रोग करता है पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शुभ अर्थात् नीरोगता देताहै ऐसेही बारहवें भावका अंश शुभ युक्त दृष्ट हो तो (सद्व्ययः) देवता ब्राह्मण आदिके कार्य्यमें व्यय और पापयुक्त दृष्टसे चोरी दंड आदिसे व्यय होवे ॥ २२ ॥

अनु०-जायांशः सौम्ययुग्दृष्टः स्वस्त्रीसौख्यविलासकृत् ॥
पापग्रहैः कलिर्दुःखं पापांतःस्थे मृतिं वदेत् ॥ २३ ॥

सप्तम भावांश शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो अपनी स्त्रीसे विलासादि सौख्य करता है पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो स्त्रियोंसे कलह, स्त्रीबंधी दुःख होवे. जो वह नवांश पापोंके बीच हो तो स्त्रीमरण होवे, जो पाप ग्रह सप्तमभावमें होवें तो अन्यस्त्रीसंगम होवे शुभग्रहोंसे बहुत स्त्रीसौख्य होवे ॥ २३ ॥

अनु०-शुभमध्यस्थितेऽयंशे बहुलं कामिनीसुखम् ॥
स्वस्यांरातिर्गुरावन्यखगेन्यासुरतिं वदेत् ॥ २४ ॥

सप्तम भावांश जो शुभग्रहोंके बीच हो तो कामिनीसुख बहुत होवे बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट हो तो अपनी स्त्रीसे, अन्य शुभग्रहोंसे हो तो अन्यस्त्रियोंसे रति होवे ॥ २४ ॥

अनुष्टु०-मृत्यंशे मृत्युगे सौम्यैर्युग्दृष्टेमरणंरणे ॥
मिश्रैर्मिश्रंखलैःसौख्यंवर्षफलमनुसारतः ॥ २५ ॥

अष्टमभाव वा अष्टमभावनवांशकमें जो शुभ ग्रह हों वा देखें तो संग्राममें मरण देतेहैं जो शुभग्रह तथा पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो युद्धमें जय वा नीरोगता होवे जो केवल पापग्रह अष्टमभाव तथा अष्टमभावनवांशमें हों तो युद्धभी न होवे मरणभी न होवे अर्थात् नैरुज्य रहे ॥ २५ ॥

अनुष्टु०-द्विद्वादशेखलाहानिंव्ययेसौम्याःशुभंव्ययम् ॥
कर्त्तरीपापजारोगंकरोतिशुभजाशुभम् ॥ २६ ॥

दूसरे बारहवें स्थानमें पापग्रह हानि और धन स्थानमें शुभ ग्रह धनलाभ बारहवें शुभव्यय करते हैं यदि लग्नमें पापग्रहोंकी कर्त्तरी हो तो रोगादि दुःख देतीहै शुभ ग्रहोंकी कर्त्तरी हो तो शुभ फल देतीहै ॥ २६ ॥

अनुष्टु०-लग्नेऽष्टमेवाक्षीणेंदुर्मृत्युदःपापदृग्युतः ॥
रोगोवाग्रहणंवापिरिपुतःशस्त्रभीरपि ॥ २७ ॥

लग्नसे अष्टम स्थानमें क्षीण चन्द्रमा पापयुक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देताहै अथवा रोग वा बंधन और शत्रुसे शस्त्रका भय होवे ॥ २७ ॥

उपजा०-चंद्रेसभौमेनिधनारिसंस्थेनृणांभयंशस्त्रकृतंपशोर्वा ॥
पापैःसुखस्थैःपतनंगजाश्वयानात्तनौस्याद्बहुलाचपीडा ॥ २८ ॥

चंद्रमा मंगल सहित छठा वा आठवां हो तो मनुष्योंको शस्त्रसे वा (पशु) व्याघ्रादिसे भय होवे जो पापग्रह चतुर्थस्थानमें हों तो हाथी घोडा पालकी आदि वाहनसे पतन होवे तथा शरीरमें बहुतसी पीडाभी होवे ॥ २८ ॥

अनुष्टु०-शुभाद्यूनेविजयदाद्यूतादथसुखावहाः ॥
नवमेधर्मभाग्यार्थराजगौरवकीर्त्तिदः ॥ २९ ॥

शुभग्रह सप्तम स्थानमें जय करते हैं जुवामें धनलाभ तथा सुखभी करतेहैं नवम स्थानमें शुभग्रह ऐश्वर्य धन राजासे गुरुता और कीर्ति बढातेहैं ॥ २९ ॥

अनु०-दिनप्रवेशोऽस्तिविधुरवस्थायांतुयादृशि ॥
तदवस्थातुल्यफलमसौदत्तेनसंशयः ॥ ३० ॥

दिनप्रवेशमें चन्द्र जिस प्रकारकी प्रवासादि अवस्थामें होवे उसी अवस्थाके तुल्य फल देताहै मासप्रवेशमेंभी निस्संदेह ऐसाही विचार करना ॥ ३० ॥

अनुष्टु०-विहायराशींश्चंद्रस्वभागाद्विघ्नाःशरोद्धृताः ॥
ऊर्ध्वंगताअवस्थाःस्युर्भोग्यायाःफलमादिशेत् ॥ ३१ ॥

अवस्थाके लिये तत्काल चन्द्रमाके स्पष्ट राशिको छोडकर शेष अंशादिको दोसे गुनाकर पांचसे भागलेना जो मिले वह भुक्त अवस्था हुई उससे आगेकी भोग्या जो हो उसके अनुसार फल कहना अवस्थाओंके नाम प्रवास, नाश, मरण, जय, हास्य, रति, क्रीडित, सुप्त, भुक्ति, ज्वराख्य, कंप, स्थिर, यह १ २ हैं मेषके प्रवाससे वृषके नाशसे मिथुनके मरणसे ऐसेही मीनके स्थिरसे गिनतीका क्रम है अवस्था बारहही हैं यहां इनमेंसे प्रत्येक राशिके पांचपांच ही लिये हैं कोई सभी राशियोंमें प्रवासहीसे गिनतेहैं सो पक्षांतर है ॥ ३१ ॥

भुजंग०-प्रवासःप्रवासोपगेरात्रिनाथेऽर्थनाशस्तुनष्टोपगेमृत्युभीतिः ॥
मृतावस्थितेस्याज्जयायांजयस्तुविलासस्तुहास्योपगेकामिनीभिः ॥ ३२ ॥

चंद्रमाकी अवस्थाओंका फल कहते हैं कि प्रवास अवस्थामें चंद्रमा प्रवासही करताहै तथा नाशमें धननाश मरणमें मृत्युभय जयामें विजय हास्यमें स्त्रियोंसे विलास देताहै ॥ ३२ ॥

भु०-रतौस्याद्रतिःक्रीडितासौख्यदात्रीप्रसुप्तापिनिद्रांकलिंदेहपीडाम् ॥
भयंतापहानीसुखंस्युस्तुभुक्ताज्वराकंपितासुस्थितासुक्रमेण ॥ ३३ ॥

रतिमें (प्रीति) प्रसन्नता क्रीडितमें सुख सुप्तामें निद्रा और कलह और देहपीडा भुक्तामें भय और ज्वरामें संताप और कंपामें हानि स्थिरामें सुख ये क्रमसे अवस्थाओंके फल हैं यथार्थ मिलते हैं परन्तु चन्द्रमा अष्टम हो तो विपरीत फल देताहै ॥ ३३ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां दिनप्रवेशप्रकरणम् ॥ १६ ॥

अथ मृगयाविचारः ।

भु० प्र०—सवीर्य्यौकुजज्ञौनृपाखेटसिद्ध्यैनसिद्ध्यैयदावीर्य्यहीनाविमौस्तः ॥ जलाखेटमाहुःसवीर्य्यैर्ग्रहर्क्षैर्जलाख्यैर्नगाख्यैर्नगाखेटमाहुः ॥ ३४ ॥

दिनप्रवेश लग्नसे जो मंगल बुध बलवान् विहित स्थानमें हों तो इस दिन प्रष्टा राजाकी सिकार खेलनेमें कार्य्यसिद्धि होगी जो उक्त ग्रह बलहीन हों तो सिकार नहीं मिलेगी पूर्व संज्ञाप्रकरणमें जलचर, पर्वतचर, राशि और ग्रहभी कहेहैं उनके अनुसार फल कहना जैसे जलचर राशि एवं ग्रह बलवान् हों तो जलचर जीवोंकी सिकार होगी जो पर्वतचर राशिग्रह बलवान् हों तो वनचरमृगया होगी विशेषतः दिनप्रवेश लग्न जलचर राश्यादि जैसे स्वभावका हो तथा जैसे स्वभावके ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों वैसी ही मृगया मिलतीहै, मिश्रितमें फलभी मिश्रितही कहना ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०—लग्नास्तनाथौकेन्द्रस्थौनिर्बलौक्लेशदायिनी ॥
मृगयोक्ताशुभफलाबलाढ्यौयदितौपुनः ॥ ३५ ॥

लग्नेश सप्तमेश केंद्रमें हों तथा बलवान् हों तो सुखसे और उक्त ग्रह निर्बल हों तो क्लेश देनेवाली मृगया होगी ॥ ३५ ॥

अथ भोजनचिन्ता ।

अनु०—लग्नाधिपोभोज्यदातासुखेशोभोज्यमीरितम् ॥
बुभुक्षामदपःकर्मपतिर्भोक्तेति चिंतयेत् ॥ ३६ ॥

दिनप्रवेश लग्नसे वा प्रश्नलग्नसे लग्नस्वामी भोजन देनेवाला चतुर्थेश भोजन योग्य अन्न सप्तमेश भोजनकी इच्छा अर्थात् भूख वा रुचि और दशमेश भोजन करनेवाला जानना इनके बलाबलसे उक्त कामोंकी प्राप्ति अप्राप्ति कहनी जैसे लग्नेश शुभस्थानगत बलवान् हो तो भोजन देनेवाला भोजन श्रद्धासे देवे निर्बल हो तो वह (अश्रद्धा) कोपादिसे देवे ऐसेही चतुर्थेश बलवान् हो तो भोज्य अन्न अच्छा मिलेगा निर्बल होनेमें न मिले वा निंद्य अन्न मिले

सप्तमेश बलवान् हो तो रुचि भोजनमें अच्छी होगी, निर्बल हो तो क्षुधा मंद अरुचि आदि होंगी, दशमेश बली हो तो खानेवाला प्रसन्नतापूर्वक भोजन करेगा निर्बल हो तो भोजनमें किसी प्रकारका विघ्न होजायगा ॥ ३६ ॥

अनु०-लग्नेलाभेचसत्खेटयुतदृष्टे सुभोजनम् ॥
जीवेलग्नेसितेवापिसुभोज्यंदुःस्थितावपि ॥ ३७ ॥

लग्न तथा लाभस्थानमें शुभग्रह हों अथवा इन्हें देखें तो सुभोजन दूध दही घृत मीठा आदि मिलेंगे तथा लग्नमें बृहस्पति वा शुक्र हों तो क्लेशनिवासमें भी सुभोजन मिले ॥ ३७ ॥

अनु०-मंदेतमसिवालग्ने सूर्य्येणालोकितेयुते ॥
लभ्यतेभोजनंनात्र शस्त्राद्भीतिस्तदा क्वचित् ॥ ३८ ॥

शनि वा राहु लग्नमें हो सूर्य्यकी दृष्टि भी हो तो यत्न करनेसे भी भोजन इस दिन प्राप्त न होवे कहीं शस्त्रका भय तो होवे ॥ ३८ ॥

अनु०-रविदृष्टंयुतंवापि लग्नंयदिनतत्रहि ॥
उपवासस्तदावाच्योनक्तं वाविरसाशनम् ॥ ३९ ॥

जो लग्न सूर्य्यसे युक्त वा दृष्टभी न हो तो प्रथम तो निराहारही होवे अथवा रात्रिको नीरस भोजन रूखा सूखा मिले ॥ ३९ ॥

अनु०-चन्द्रे कर्मगतेभोज्यमुष्णंशीतंसुखेकुजे ॥
तुर्यस्थखेटवशतोभोज्यान्नरसमादिशेत् ॥ ४० ॥

जो दिन वा पृच्छा लग्नसे चन्द्रमा दशम हो तो (उष्ण) गर्मागर्म भोजन मिले जो मंगल दशम हो तो (शीत) ठंढाबासी भोजन मिले और चतुर्थस्थानमें जो ग्रह हो उसके उक्त रसानुसार मिले जैसे सूर्य्यसे कडुआ चन्द्रमासे सलोना, मंगलसे तीखा, बुधसे मिलाहुआ, बृहस्पतिसे मीठा, शुक्रसे खट्टा, शनिसे (कषाय) क्वाथ कांजी सिरका आदि बहुत दिनका संपादित मिलतेहैं ॥ ४० ॥

अनु०-स्निग्धमन्नंसितेतुर्य्येतैलसंस्कृतमर्कजे ॥
नीचोपगेक्कदशनंविरसान्नमसंस्कृतम् ॥ ४१ ॥

शुक्र चतुर्थ हो तो घीके पकवान शनि चतुर्थ हो तो तेलके पकवान तथा सरस मिलें, जो चतुर्थमें नीचगता ग्रह हों तो निकम्मा स्वादरहित कच्चा पदार्थ भोजन मिले ॥ ४१ ॥

उपजा०–सूर्य्यादिभिर्लग्नगतैः सवीर्य्यै राजादिगेहे भुजिमामनंति ॥
सुखेसुखेशेसबलेसुभोज्यं चरादिकेस्यादसकृत्सकृद्विः ॥४२॥

सूर्य्यादिकोंमें जो उच्चादि बलयुक्त लग्नगत हो उसके जातिअनुसार राजादिके घरमें भोजन होवे जैसे सूर्य्यसे राजगृह चंद्रमासे वैश्य मंगलसे क्षत्रिय बुधसे शूद्र बृहस्पतिसे ब्राह्मण शुक्रसेभी ब्राह्मण और शनिसे शूद्रके, जो चतुर्थेश बलवान् चतुर्थहीमें हो तो अनेक पकवान युक्त भोजन मिले जो चतुर्थमें दुष्ट ग्रह हो तो कष्टसे मिले जो लग्नमें चरराशि हो तो अनेकवार, स्थिरराशि हो तो एकवार मिले द्विस्वभाव हो तो दोवार ॥ ४२ ॥

अनु०–मूलत्रिकोणगेखेटेलग्नेपितृगृहेशनम् ॥
मित्रालये मित्रभस्थे शत्रुगेहारिगेहगे ॥ ४३ ॥

लग्नगत ग्रह अपने मूलत्रिकोणमें हो तो पिताके वा अपने घरमें मित्रराशिका हो तो मित्रके शत्रुराशिका हो तो शत्रुके घरमें भोजन होवे लग्नमें कोई ग्रह न हो तो जिसकी पूर्ण दृष्टि लग्नपरहो उसके अनुसार भोजनगृह कहना ४३॥

शुभेक्षितेयुतेलग्नेबलाढ्ये स्वगृहेभुजिः ॥
ग्रहराशिस्वभावेन यत्नादन्यत्रचिंतयेत् ॥ ४४ ॥

लग्न शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो बलवान् भी हो तो अपने घरमें भोजन होवे ऐसेही ग्रहकी राशि स्वभावके अनुसार यत्नसे औरघरभीभोजनके कहना ४४॥

उपजा०–तिलान्नमर्के हिमगौसुतंडुलाभौमे मसूराश्चणकाश्चभोज्यम् ॥
बुधे समुद्गाः खलु राजमाषा गुरौ सगोधूमभुजिः सवीर्य्ये ॥ ४५ ॥

लग्नगत जो बलवान् हो तथा लग्नमें न हो तो दृष्टिवालेसे अन्न कहना जैसे सूर्य्यसे तिल चंद्रमासे चावल मंगलसे मसूर और चना, बुधसे मूंग तथा राजमाष (रवांश) बृहस्पतिसे गेहूं ॥ ४५ ॥

उपजाति०–शुक्रेयवाबाजरिकायुगंधराःशनौकुलित्थादिसमाषमन्नम् ॥
भोज्यंतुषान्नंशिखिराहुवर्य्याच्छुभग्रहालोकनतःसहर्षम् ॥ ४६ ॥

शुक्रसे जौ, बाजरा आदि शनिसे कुलत्थ कैथ मक्का खिसरी उडद आदि राहु केतुसे कोदों कांगनी समा आदि भूसी सहित (वेछाँटे अन्न) मिले ये प्रधान अन्न हैं. उक्तान्न आदि भोजन मिलेंगे कहना. उस ग्रहपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो खुशीसे पापयुत दृष्टि हो तो सकोप (कलहादिसे) भोजन होवे ॥ ४६ ॥

सूर्य्येमूलंपुष्पमिन्दौकुजेस्यात्पत्रंशाखाचापिशाकंसवीर्य्ये ॥
शुक्रेज्यज्ञेव्यंजनंभूरिभेदंमन्देनेत्थंसामिषंराहुकेत्वोः ॥ ४७ ॥

भोज्यरूप सूर्य्य हो तो मूल (जडका) शाक चन्द्र हो तो पुष्प कुज हो तो पत्ता और डार शुक्र गुरु निष्पाप बुध हों तो अनेक तरहके व्यंजन शनि राहु केतु हो तो मांस वा तेलकी बनी तरकारी मिलै ॥ ४७ ॥

अथ स्वप्नचिन्ता ।

शालिनी०-लग्नांशगेर्के तनुगेपिवास्मिन्दुःस्वप्नमीक्षेतयथार्कबिंबम् ॥
रक्तांबरं वह्निमथापि चंद्रे शुभ्राश्वरत्नांबरपुष्पवस्त्रम् ॥४८॥

अब स्वप्नविचार दिनप्रवेश वा प्रश्नलग्नसे कहते हैं कि जो सूर्य्य लग्न वा लग्न नवांशकमें हो तो इस दिन दुःस्वप्न देखेगा जैसे स्वप्नमें सूर्य्यबिंब रक्त वस्त्र अथवा अग्नि देखे चंद्रमा हो तो श्वेत रंग घोडा वस्त्र पुष्प हीराआदि देखे ॥ ४८ ॥

उपजा०-स्त्रियः सुरूपाश्च कुजे सुवर्णं रक्तांबरस्रक्पशुविद्रुमाणि ॥
बुधेहयः स्वर्गतिधर्मवार्ता गुरौरतिर्धर्मकथा सुरेक्षा ॥ ४९ ॥

चंद्रमा हो तो सुरूप स्त्री भी देखे. मंगल हो तो सुवर्ण रक्तवस्त्र रक्तपुष्प सुर्ख रंगके पशु और मूंगा आदि. बुध हो तो घोडा और स्वर्गगमन वा स्वर्गसम सुख तथा धर्मसंबंधी वार्त्ता बृहस्पति हो तो अपने प्रीत्यनुसार वस्तु धर्मसंबंधी कथा और देवताओंका दर्शन देखे ॥ ४९ ॥

उपजा०-सद्बंधुसंगश्च सितेजलानां पारंगतिर्देवरतिर्विलासः ॥
शनावरण्याद्रिगतिश्चनीचैः संगश्च राहौ शिखिनीत्थमेव ॥ ५० ॥

शुक्र हो तो सुबांधवोंका संगम तथा जलोंको तिरके पारगति देवताओंसे प्रीति विलासादि सुख देखे. शनि हो तो वन पर्वत गमन नीचजन संगति होवे राहु केतुकाभी ऐसाही फल है ॥ ५० ॥

सहजधीमदनायरिपुस्थितो यदि शशी गुरुभानुसितेक्षितः ॥
नवमकेन्द्रगतेषुशुभेषुचस्वबलयामनुजोरमतेतदा ॥ ५१ ॥

चन्द्रमा ३ । ५ । ७ । ११ । ६ । इन स्थानोंमें हो और बृहस्पति सूर्य्य शुक्रसे देखा जाताहो और ९।१।४।७।१० इन स्थानोंमें सबमें वा कोईमेंभी शुभ ग्रह हों तो मनुष्य स्वप्नमें अति सुन्दरीस्त्रीसे रमण करता है ॥ ५१ ॥

वसंतति०—आसीदसीमगुणमंडितपंडिताग्र्यो व्याख्यद्भुजंगपग-वीश्रुतिवित्सुवृत्तः ॥ साहित्यरीतिनिपुणोगणितागमज्ञश्चिंताम-णिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥ ५२ ॥

आचार्य स्वनामधेय प्रकट करता है कि अगणित गुणोंसे भूषित पंडितोंमें मुख्यतम भुजंगपगवी अर्थात् शेषभाष्यको पढावनेवाला वेदका जानने-वाला साहित्यशास्त्र परिपाटी निपुण गणितादि समस्त ज्योतिषशास्त्र पारंगम, गर्गकुलमें उत्पन्न चिंतामणि दैवज्ञ हुए ॥ ५२ ॥

उपजा०—तदात्मजोनंतगुणोस्त्यनंतो योऽधोक्त सदुक्तिं किल काम-धेनुम् ॥ संतुष्टयेजातकपद्धतिंचन्यरूपयहुष्टमतंनिरस्य ॥५३॥

चिंतामणि दैवज्ञका पुत्र असंख्यगुणयुक्त अनंतनामा हुवा जिसने काम धेनु गणितकी टीका करी तथा सद्दैवज्ञोंको संतुष्ट करनेके लिये जन्मपद्धति संप्रदायानभिज्ञोंका दुष्टमत निराकरण करके जिसने जातकपद्धति बनाई॥ ५३॥

उपजा०—पद्मांबयासावितनो विपश्चिच्छ्रीनीलकंठःश्रुतिशास्त्रनिष्ठः ॥
विद्वच्छिवप्रीतिकरंव्यधात्सितसमाविवेकंमृगयावतंसम् ॥ ५४ ॥
शाके नन्दा १५०९ प्रमाणेन्दुमित आश्विनमासके॥शुक्लेऽष्टम्यांसमाप्तं
त्रंनीलकंठबुधोऽकरोत्॥५५॥इतिश्रीगर्गवंशो०नील०वर्षतंत्रंसमाप्तम् ॥

अनन्त दैवज्ञका पुत्र जिसकी माताका नाम पद्मावती है विद्वान् वेदशा-स्त्रज्ञ श्रीनीलकंठ दैवज्ञ हुआ जिसने समाविवेकनामक ज्योतिषका एक प्रकरण-वर्षफल सूचक शिवप्रीतिकारक बनाया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतन्त्रे दिनप्रवेश-भोजनस्वप्नचिंताकथनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ नीलकंठीप्रश्नतंत्रः प्रारभ्यते ।

भूमिका ।

नीलकंठदैवज्ञकृत नीलकंठी तीन तंत्रकी प्रथा है परन्तु तीसरा प्रश्नतन्त्र केवल नीलकंठाचार्य्यकृत सांप्रतमें समयप्रभावके कारणांतरोंसे दुष्प्राप्य है, जन्मविचारवैषयिक ग्रंथ बृहज्जातक एवं वर्षवैषयिक ताजिकनीलकंठी दो तंत्रोंके भाषाटीका सर्वसाधारणके प्रसन्नतानिमित्त यथामति बनाये उपरांत तदनुगामी प्रश्नप्रकरण जो कि, जातक ताजिक ग्रन्थ देखनेवालोंको अवश्यही उपयोगी है. यद्यपि उक्तजातक ताजिकोंमें बहुधा यही विचार प्रश्नमें भी करना लिखनेसे प्रश्नग्रंथका अंतर्भाव अर्थात् प्रश्नग्रंथका प्रयोजन उन्हींमें आलिया, तथापि पूर्वाचार्योंमें शिष्टाचार एवं प्रकटताके लिये अनेकानेक ग्रन्थ नीलकंठमतानुसारी होनेसे नीलकंठीनाम भयाहै, चमत्कारी प्रश्नग्रंथकी भाषाटीका यथामति करताहूं सज्जनजन स्वीय सौजन्यतासे अंगीकार करें, संस्कृत विद्या अद्वितीय है कोई वस्तुमात्र इससे रहित नहीं है जो रहित हो वह चतुर्दश भुवनमें हैही नहीं परन्तु भारतवर्षमें विद्याके नाश होनेका मुख्य कारण यही है कि जो लोग कोई अनूठी विद्या वा कला एवं औषधि मन्त्र आदि चमत्कृत जानते हैं वे दूसरेको सिखलानेमें मत्सरी होकर प्रकट नहीं बतलाते, उनके देहांत समयमें वह उन्हींके साथ गई आगे विद्या कहांसे बढे ! इस बातको विचार मैंने बृहज्जातक एवं नीलकंठी तीनहूं तंत्रोंमें ज्योतिषशास्त्रमें जो बहुधा संकेत रहते हैं वे यथाप्रकाश प्रकटही करदियेहैं ।

अनुष्टु०—दैवज्ञस्यहि दैवेन सहसत्फलवांछया ॥
अवश्यं गोचरे मर्त्यैः सर्वः समुपनीयते ॥ १ ॥

प्राक्तन कर्मको दैव कहतेहैं जैसा मनुष्यने कर्म किया वैसेही फलभी अवश्य पावेगा उसके शुभाशुभ परिपाकके जाननेकी इच्छा दैवज्ञकी हो तो ग्रह गोचर अर्थात् ग्रहचारसे सम्पूर्ण कहसकताहै ॥ १ ॥

अनु०-अश्रौषीच्च पुराविष्णोर्ज्ञानार्थे समुपस्थितः ॥
वचनं लोकनाथोपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ॥ २ ॥

पहिले किसी कालमें लोकनाथ ब्रह्मा कर्मपरिपाकके जाननेके लिये विष्णुके पास गये उनसे प्रश्न स्वर शकुनादिकोंके निर्णयवचन सुनकर संसारमें ज्योतिषद्वारा प्रकटकिया ॥ २ ॥

वसन्त०-तस्मान्नृपः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः प्रातः प्रणम्य
वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः॥ होरांगशास्त्रकुशलान्हितकारिणश्च
संहृत्यदैवगणकान्सकृदेव पृच्छेत् ॥ ३ ॥

तस्मात् प्रश्न पूछनेवाला राजा [यहां राजा उपलक्षणार्थ कहा गया] पुष्प रत्न फल आदि मंगल वस्तु दाहिने हाथमें लेकर प्रातःकाल प्रणामपूर्वक ज्योतिषीका वरण प्रश्ननिमित्त करे; तदनन्तर होरानामक ज्योतिषशास्त्रांगीभूतके जाननेवाले हितकारी गणकोंको इकट्ठा करके स्वल्पाक्षरोंसे एकहीवार प्रश्न पूछे ॥ ३ ॥

आर्या-दशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ॥
यः कथयति शुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ ४ ॥

प्रश्न पूछने उपरांत जो गणक दश प्रकार स्पष्टभाव बलाबलस्थानादि ग्रहगणित एवं जातकमत सम्पूर्ण देखकर शुभाशुभ फल कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती ॥ ४ ॥

अथादौ प्रष्टुः परीक्षा।

आर्या-ऋजुरयमनृजुर्वायंप्रष्टा पूर्वं परीक्ष्य लग्नबलात् ॥
गणकेन फलं वाच्यं दैवं तच्चित्तगं स्फुरति ॥ १ ॥

पूछनेवालेका चित्त सरल वा वक्र कैसाहै इस विचारमें गणकने लग्नबलसे प्रथम परीक्षा करके फल कहना. प्रष्टाके चित्तानुवर्ती दैव प्राक्तन कर्मपाक लग्नविचार द्वारा गणकको स्फुरण होजाताहै ॥ १ ॥

आर्या-लग्नस्थे शशिनि शनौ केंद्रस्थेज्ञे दिनेशरश्मिगते ॥
भौमज्ञयोः समदृशा लग्नगचंद्रेऽनृजुः प्रष्टा ॥ २ ॥

जैसे लग्नमें चन्द्रमा केंद्रमें शनि और बुध अस्तंगत हो तथा लग्नमें चन्द्रमा

मंगल बुधकी पूर्ण दृष्टिसे दृष्ट हो तो प्रष्टा कुटिल जानना ॥ २ ॥

आर्या-लग्नेशुभग्रहयुते सरलःक्रूरान्विते भवेत्कुटिलः ॥
लग्नेस्ते सौम्यदृशा विधुगुरुदृष्ट्या च सरलोयम् ॥ ३ ॥

लग्नमें शुभग्रह हों तो सरल और पापग्रह हों तो कुटिल तथा लग्न और सप्तम स्थानमें शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो वा चन्द्रमापर बुध बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो सरलचित्त जानना ॥ ३ ॥

आर्या-यदिगुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपंचरिपुदृष्ट्या ॥
तत्कुटिलः प्रष्टा खल्वनयोः सौम्यदृष्टितः साधुः ॥ ४ ॥

जो बुध बृहस्पति सप्तमेशको शत्रुदृष्टिसे देखें तो कुटिल और इनकी उस-पर मित्रदृष्टि हो तो सरलचित्त प्रष्टा जानना ॥ ४ ॥

आर्या-सम्यग्विचार्य्यलग्नंब्रूयात्प्रश्नंसकृद्यथाशास्त्रम् ॥
यस्त्वेकंब्रूतेसौतस्यनमिथ्याभवेद्वाणी ॥ १ ॥

ज्योतिषी भले प्रकार लग्नविचारके थोडे प्रश्नको शास्त्रकी आज्ञानुसार जो एक प्रश्न कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती अर्थात् लग्नमें बहुत प्रश्न सत्योत्तर नहीं होते ॥ १ ॥ बहुप्रश्नविषये-

अनु०-बहून्प्रश्नानथो प्रष्टा युगपद्यदि पृच्छति ॥
तत्रतेषांविधिंवक्ष्येशास्त्रतोलोकतुष्टये ॥ २ ॥

जब प्रष्टा एकहीवार बहुत प्रश्न पूछताहै तो उनके उत्तरके कहनेकी विधि लोकोंकी तुष्टिको शास्त्रसे कहताहूं ॥ २ ॥

आर्या-आदिमंलग्नतोज्ञानं चन्द्रस्थानाद्द्वितीयकम् ॥
सूर्य्यस्थानात्तृतीयंस्यात्तुर्य्यंजीवगृहाद्भवेत् ॥ ३ ॥
बुधभृग्वोर्बलीयः स्यात्तद्गृहात्पंचमंपुनः ॥
राश्यानुरूपंकथयेत्संज्ञाध्यायोक्तबुधः ॥ ४ ॥

पहिला प्रश्न लग्नसे, दूसरा चन्द्रस्थानसे, तीसरा सूर्य्य स्थानसे, चौथा बृहस्पतिकी राशिसे, पांचवां बुध शुक्रमेंसे जो बलवान् हो उसकी राशिके अनुसार जो राशियोंका धातु रूप रंग आकार गुण संज्ञाध्यायमें कहे हैं उनके प्रभावसे प्रश्न कहना, वह विस्तार आगे लिखा जायगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

अथावस्था।

अनु०-दीप्तोदीनोथमुदितः स्वस्थःसुप्तोनिपीडितः ॥
मुषितःपरिहीनश्चसुवीर्य्यश्चाधिवीर्यकः ॥ १ ॥

ग्रहोंके दश भेदोंके नाम दीप्त, दीन, मुदित, स्वस्थ, सुप्त, पीडित, मुषित, परिहीन, सुवीर्य और अधिवीर्य ये दशभेद हैं ॥ १ ॥

अनु०-स्वोच्चेदीप्तःसमाख्यातोनीचेदीनःप्रकीर्तितः ॥ मुदितोमित्रगेहस्थःस्वस्थश्च स्वगृहे स्थितः ॥ २ ॥ शत्रुगेहे स्थितःसुप्तोजितोन्येननिपीडितः ॥ नीचाभिमुखगोहीनोमुषितोऽस्तंगतोग्रहः ॥ ३॥ सुवीर्यःकथितः प्राज्ञैः स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ॥ अधिवीर्य्यो निगदितः सुरश्मिः शुभवर्गगः ॥ ४ ॥

अपने उच्चराशिका ग्रह दीप्त, नीचका दीन, मित्रराशिका मुदित, अपनी राशिका स्वस्थ, शत्रुराशिका सुप्त,अन्यपापसे आक्रांत पीडित, नीचाभिलाषी हीन, अस्तंगत मुषित, उच्चाभिलाषी सुवीर्य्य और रश्मि अधिक तथा शुभांशकमें अधिक अधिवीर्य्य कहाताहै ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

अनु०-दीप्तेसिद्धिश्चकार्य्याणां दीनेदुःखसमागमः ॥ स्वस्थेकीर्त्तिस्तथालक्ष्मीरानंदोमुदितेमहान् ॥ ५ ॥ सुप्तेरिपुभयंदुःखंधनहानिर्निपीडिते ॥ मुदितेपरिहीनेचकार्य्यनाशोर्थसंक्षयः ॥ ॥ ६ ॥ गजाश्वकनकप्राप्तिःसुवीर्य्येरत्नसंपदः ॥ अधिवीर्येराज्यलब्धिर्ग्रहैर्मित्रार्थसंगमः ॥ ७॥

अवस्थाओंके फल कहते हैं कि दीप्त अवस्थामें ग्रह कार्य्यसिद्धि करताहै, तथा दीनमें दुःखागम, स्वस्थमें कीर्ति और लक्ष्मी, मुदितमें बडा आनंद, सुप्तमें शत्रुभय तथा दुःख पीडितमें धनहानि, मुषित और परिहीनमें कार्य्यनाश धननाश, सुवीर्यमें हाथी घोडे सुवर्ण और रत्नोंकी संपत्ति, अधिवीर्य्यमें राज्यलाभ, तथा मित्र और धनका संगम होताहै ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ ग्रहस्वरूपम्।

अनु०-पूर्वःसत्वंनृपस्तातःक्षत्रंग्रीष्मोऽरुणश्चलः ॥
मध्युहृत्पैत्तिकोधातुःशूरःसूक्ष्मकचोरविः ॥ १ ॥

पूर्वदिशाका स्वामी, सत्वगुण, राजा, पिता, क्षत्रिय जाति, ग्रीष्मऋतु, रक्तवर्ण, चपलस्वभाव, शहतके रंग सदृशनेत्र, पित्तधातु शूरमा और बारीक केश ये रूप गुण सूर्य्यके हैं ॥ १ ॥

कफोवर्षामृदुर्मातापयो गौरश्चसात्विकः ॥
जीवेवैश्यश्चरोवृत्तोमारुताशोविधुः सुदृक् ॥ २ ॥

कफ धातु, वर्षा ऋतु कोमल शरीर, मातास्थान; जलतत्त्व, गौरवर्ण, सत्त्वगुण, प्राणदाता, वैश्यजाति, चरस्वभाव, गोलाकार, वायव्य दिशाका स्वामी, सुहावने नेत्र ये रूप गुण चंद्रमाके हैं ॥ २ ॥

ग्रीष्मःक्षत्रतमोरक्तोयाम्यःसेनाग्रणीश्चरः ॥
युवाधातुश्चपिंगाक्षःक्रूरःपित्तंशिखिकुजः ॥ ३ ॥

ग्रीष्मऋतु क्षत्रियजाति तमोगुण रक्तवर्ण दक्षिण दिशाका स्वामी सेनापति चरस्वभाव, युवावस्था शुक्रधातु पीले नेत्र क्रूरप्रकृति पित्तप्रधान अग्नि ये रूप गुण मंगलके हैं ॥ ३ ॥

शरदीशोहरिर्दीर्घःषंढोमूलंकुमारकः ॥
लिपिज्ञउत्तरेशश्चशूद्रःसौम्यस्त्रिधातुकः ॥ ४ ॥

शरदऋतु हरितरंग लंबा शरीर नपुंसक मूलवस्तुका स्वामी कुमार अवस्था लिपि (शिल्पविद्या जाननेवाला) उत्तरदिशाका स्वामी शूद्रजाति सौम्य प्रकृति वातादि तीनों धातु ये रूप गुण बुधकेहैं ॥ ४ ॥

सत्वंपीतोहिमःश्लेष्मादीर्घोमंत्रीद्विजोनरः ॥
मध्वैशानकफोजीवोमधुपिंगलदृक्तथा ॥ ५ ॥

सत्त्वगुण, पीलारंग, हिमस्वभाव, श्लेष्मप्रकृति, लंबा शरीर, मंत्रज्ञ ब्राह्मण जाति, पुरुष, मधुरप्रिय, ईशानदिशाका स्वामी, कफधातु, शहतसे नेत्रोंका रंग ये गुण बृहस्पतिके हैं ॥ ५ ॥

अनु०–शुक्रःशांतो द्विजोनारीवैश्यो मंत्री चरः सितः ॥
आग्नेयीदिक्कफश्चाम्लः कुटिलासितमूर्द्धजः ॥ ६ ॥

शांतस्वभाव ब्राह्मणजाति स्त्रीवेषधारी मंत्रज्ञ चरस्वभाव श्वेतरंग आग्नेयदिशापति कफप्रधान खट्टारस श्याम और कुंचित केश ये गुण शुक्रके हैं॥ ६॥

कृष्णस्तमःकृशोवृद्धः षंढोमूलांत्यजोऽलसः ॥
शशिरःपवनःक्रूरःपश्चिमो वातुलः शनिः ॥ ७ ॥

कृष्णरंग तमोगुण कृशअंग वृद्धावस्था नपुंसक मूलवस्तु चांडालेश आलसी शिशिरऋतुका स्वामी वायुधातु क्रूरस्वभाव पश्चिमदिशाका स्वामी वाचाल ये रूप गुण शनिके हैं ॥ ७ ॥

राहुधातुःशिखीमूर्खं शेषमन्यच्चमंदवत् ॥
चिंतनीयं विलग्नेशात्केंद्रगाद्वाबलाधिकात् ॥ ८ ॥

राहु धातुप्रधान जटाधारी मलवस्तु है, शेष गुण शनिके तुल्य जानना, केतु भी ऐसाही जानना. लग्न वा लग्नेश अथवा जो ग्रह सर्वोत्तम बली है उसके अनुसार प्रश्नमें लक्षण कहने विशेष गुण तथा राशियोंके गुण प्रथमसंज्ञाध्यायमें चक्रन्यास सहित प्रकट लिखे हैं ॥ ८ ॥

अथ भावनिर्णयः ।

सौख्यमायुर्वयोजातिरारोग्यंलक्षणंगुणम् ॥
क्लेशाकृतीरूपवर्णस्तनोश्चिंत्यं विचक्षणैः ॥ १ ॥

सुख, आयु, अवस्था, जाति, नैरुज्य, शरीरलक्षण, गुण, क्लेश, आकृति, रूप और रंग इतने विचार लग्नभावमें विचक्षणोंको विचारणीय हैं ॥ १ ॥

मुक्ताफलंचमाणिक्यंरत्नधातुधनांबरम् ॥
हयकार्य्याध्वविज्ञानं वित्तस्थानाद्विलोकयेत् ॥ २ ॥

मोती माणिक आदि रत्न, सुवर्णादि धातु वस्त्र अश्वकार्य मार्गसंबंधी ज्ञान इतने वस्तुके विचार दूसरे भावसे करना ॥ २ ॥

भगिनीभ्रातृभृत्यानांदासकर्मकृतामपि ॥
कुर्वीतवीक्षणं विद्वान् सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मतः ॥ ३ ॥

बहिन भाई नौकर दास और कार्य्य करनेवाला उपलक्षणसे व्यापार पराक्रम भी विद्वानोंके तीसरे भावसे विचार करना योग्य है ॥ ३ ॥

वाटिकाखलकक्षेत्रमहौषधिनिधीनापि ॥
निवरादिप्रवेशं च पश्येत्पातालतोबुध ॥ ४ ॥

बावडी खरिहान खेती औषधी अन्नादि निधि (उत्तमवस्तु) भूमिगत कूपादि और रंध्र कंदरा सुरंग आदिकोंमें प्रवेश, इतने चतुर्थभावसे देखने ॥ ४ ॥

गर्भापत्यविनेयानां मन्त्रसन्धानयोरपि ॥
विद्याबुद्धिप्रबंधानां सुतस्थाने विनिर्णयः ॥ ५ ॥

गर्भधारण, सन्तान, नम्रता, बुद्धि, मन्त्रका सन्धान, मसौदा आदि विद्या तथा बुद्धिका प्रबन्ध इत्यादि पंचम भावसे विचारना ॥ ५ ॥

अनुष्टु०-चौरभीरिपुसंग्रामखरोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ॥
मातुलातंकभृत्यानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः॥ ६ ॥

चौरभीति, शत्रु ,संग्राम, और खर, ऊंट तथा क्रूरकर्म, मातुलपक्ष, रोग, चाकर इनका विचार छठे स्थानसे करना ॥ ६ ॥

वाणिज्यं व्यवहारंच विवादंचसमंपरैः ॥
गमागमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञःकलत्रतः ॥ ७ ॥

व्यापार वाणिग्वृत्ति अन्यके साथ विवाद वा संधि तथा गमन आगमन स्त्री इतने विचार सप्तमभावसे करने ॥ ७ ॥

नद्युत्तारेध्ववैषम्ये दुर्गे च शस्त्रसंकटे ॥
नष्टेदुष्टेरणेव्याधौछिद्रेछिद्रंनिरीक्षयेत् ॥ ८ ॥

नद्यादितारण, मार्गविचार, विषमस्थान, किला, शस्त्रसंकट आदि कठिनाई, तथा नष्टता, दुष्टता, रणरोग, छिद्रता, गृहच्छिद्र वा विवरादि इतने विचार अष्टम भावसे देखना ॥ ८ ॥

वापीकूपतडागादि प्र दे वगृहाणिच ॥
दीक्षांयात्रांमठंधर्मं धर्मान्निश्चित्यकीर्त्तयेत् ॥ ९ ॥

बावडी, कूप, तालाव आदि जलाशय, तथा प्रपा (पाउ) देवमंदिर, उपदेश, यात्रा, मठ और धर्मकार्य्य नवमस्थानसे विचारके कहना॥ ९ ॥

राज्यंमुद्रांपरंपुण्यस्थानंतातं प्रयोजनम् ॥
वृष्ट्यादिव्योमवृत्तांतंव्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ १० ॥

राज्य, मुद्राआदिचिह्न और पुण्य, निवासस्थान, पिता तथा प्रयोजन, वर्षाआदि आकाशका वृत्तांत, दशमभावसे देखना ॥ १० ॥

गजाश्वयानवस्त्राणि सस्यकांचनकन्यकाः ॥
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभभावतः ॥ ११ ॥

हाथी घोडे डोली आदि सवारी वस्त्र अन्न सुवर्ण कन्या विद्या तथा धनका लाभ पांडित्य ग्यारहवें स्थानसे देखना ॥ ११ ॥

त्यागभोगविवादेषु दानेदुष्कृषिकर्मसु ॥
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्व्ययं व्ययात् ॥ १२ ॥

त्याग भोग कलह दान दुष्टवस्तु कृषिकर्म, व्ययके सबस्थान विद्वान् व्ययभावसे जानैं ॥ १२ ॥

षट्पंचाशिकायाम् ।

इं०व०योयोभावःस्वामिदृष्टोयुतोवासौम्यैर्वास्यात्तस्यतस्यास्तिवृद्धिः॥
पापैरेवंतस्यभावस्यहानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतोवा ॥ १३ ॥

जो जो भाव अपने स्वामीसे वा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों उन २ की वृद्धि और जो पापोंसे युक्त दृष्ट हो उसकी हानि होतीहै यह विचार प्रश्न तथा जन्ममें भी सर्वत्र विचारना ॥ १३ ॥

उपजा०—सौम्येविलग्नेयदिवास्ववर्गेशीर्षोदयेसिद्धिमुपैतिकार्य्यम् ॥
अतो विपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥ १४ ॥

सौम्यराशि लग्नमें हो यद्वा अपने अंशपर हो वा शीर्षोदय हो तो कार्य्य सिद्धि होतीहै, इससे विपरीत अर्थात् क्रूर लग्न सत्वादि अंश पृष्ठोदय लग्न हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती. जो कुछ शुभ कुछ अशुभ मिश्रित हो तो बड़े श्रमसे कार्य्यसिद्धि होवे ॥ १४ ॥

भुवनप्रदीपे ।

आर्या—लग्नपतिर्यदिलग्नंकार्य्याधीशश्चवीक्षतेकार्य्यम् ॥
लग्नाधीशःकार्य्यंकार्य्येशःपश्यतिविलग्नम् ॥ १५ ॥

लग्नेशः कार्य्येशं विलोकयेल्लग्नपं तु कार्य्येशः ॥
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्य्यसंसिद्धिः ॥ १६ ॥

जो लग्नेश लग्नको देखे १ कार्य्येश कार्य्यस्थानको देखे २ लग्नेश कार्य्य स्थानको देखे ३ कार्य्येश लग्नको देखे ४ लग्नेश कार्य्येशको देखे ५ कार्य्येश लग्नेशको देखे ६ ये छः प्रकार हैं; इनमें यदि चंद्रमाकी दृष्टि हो तो एकही योग पूर्ण कार्य्य सिद्धि करलेताहै ॥ १५ ॥ १६ ॥

आर्या०–कथयति पादयोगं पश्यति सौम्येन लग्नपो लग्नम् ॥
लग्नाधिपं च पश्यति शुभग्रहश्चार्द्धयोगोऽत्र ॥ १७ ॥

जो लग्नेश तो लग्नको न देखे किंच शुभ ग्रह देखे तो चौथाई योग कहाताहै तथा केवल लग्नेशको शुभ ग्रह देखे और छहोंमेंसे कोईभी योग न हो तो आधा योग होताहै फल भी ऐसाही जानना ॥ १७ ॥

आर्या–एकः शुभग्रहो यदि पश्यति लग्नाधिपं विलग्नं वा ॥
पादोनयोगमाहुस्तदा बुधाः कार्य्यसंसिद्ध्यै ॥ १८ ॥

एक शुभ ग्रह जो लग्न वा लग्नेशको देखे तो उसे बुधजन पादोन योग कहते हैं यह कार्य्यसिद्धि करता है ॥ १८ ॥

आ०–लग्नपतौ दर्शने सति शुभग्रहौ द्वौ त्रयो थवा लग्नम् ॥
पश्यंति यदि तदानीमाहुर्योगं त्रिभागोनम् ॥ १९ ॥

लग्नेशको दो वा तीन शुभग्रह देखें अथवा लग्नको देखें तो इस योगको त्रिभागोन कहतेहैं कार्य्यसिद्धि देताहै ॥ १९ ॥

क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चंद्रः सौम्यो वा लग्नपं च लग्नं च ॥
पश्यंतः पूर्णतद्योगं कार्य्यस्य संसिद्ध्यै ॥ २० ॥

पापग्रहदृष्टिरहित चन्द्रमा और शुभ ग्रह लग्न तथा लग्नेशको देखें तो पूर्ण योग कार्य्यसिद्धि देनेवाला होताहै ॥ २० ॥

अनुष्टु०–क्रूराक्रांतः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः ॥
विरश्मितां प्रपन्नश्च सोऽनिष्टफलदायकः ॥ २१ ॥

जो कार्य्यकर्त्ता ग्रह पापाक्रांत वा पापयुक्त पापदृष्ट हो वा रश्मिरहित हो तो अनिष्ट फल कार्य्यनाश करताहै ॥ २१ ॥

समरसिंहे ।

आर्य्या–अमुकंवदेतिकार्य्यंकदाभविष्यत्यमुत्रपृच्छायाम् ॥
लग्नंलग्नाधिपतिःकार्य्यंकार्य्याधिपःपश्येत् ॥ २२ ॥
लग्नस्थःकार्य्येशःपश्यतिचेल्लग्नपंतदेवभवेत् ॥
तत्कार्य्यंयद्यन्यःस्थितःसत्वरंतदानस्यात् ॥ २३ ॥

जब कोई पूछे कि हमारा अमुक कार्य्य कब होगा तो इस प्रश्नके लग्नमें कार्य्येश कार्य्यको देखे अथवा लग्नेश लग्नको देखे तो कार्य्य शीघ्र होगा कहना जो कार्य्येश लग्नमें हो लग्नेशको देखें तौभी शीघ्र होगा, जो लग्नेश अन्यत्र हो तो शीघ्र न होगा ॥ २२ ॥ २३ ॥

पश्यतियदाचलग्नंद्रक्ष्यतिचंद्रोविलग्नपंचयदा ॥ लग्नेकार्य्येचयदा द्वयोश्चयोगेतदासिद्धिः ॥ २४ ॥ यदिलग्नपोनपश्यतिकार्य्याधीशोवि- लग्नमथतस्य ॥ कार्य्यस्यहानिरुक्तालग्नमृतेकिमपिनोवाच्यम् ॥ २५ ॥

जो चन्द्रमा लग्नको तथा लग्नेशको देखे अथवा लग्नेश कार्य्येश एकही स्थानोंमें हों तो कार्य्यसिद्धि होगी । जो लग्नेश कार्य्येशको न देखे यद्वा कार्यस्थानको भी न देखे तो कार्य्यहानि कही है, लग्नको छोडकर और भावोंसे कुछ भी विचार न कहना ॥ २४ ॥ २५ ॥

ग्रन्थान्तरे प्रकीर्णकम् ।

अनु०–लग्नपोमृत्युपश्चादिमृत्यौस्यातामुभौयदि ॥
स्थितौद्रेष्काणएकस्मिन्प्रष्टुर्लाभस्तदाध्रुवम् ॥ २६ ॥

जो लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टम स्थानमें एकही द्रेष्काणमें हों तो पूछनेवालेको निश्चय लाभ होगा ॥ २६ ॥

एवंद्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेवकेवलम् ॥
बुधोविनिश्चयंब्रूयाद्योगेष्वन्येषुनिस्पृहः ॥ २७ ॥

ऐसेही समस्त भावोंका विचार केवल द्रेष्काणोंसे पंडितने निश्चय करके कहना और योगोंसे यही बली रहताहै ॥ २७ ॥

अनु०–प्रश्नकालेसौम्यवर्गो लग्नेयद्यधिकोभवेत् ॥
ग्रहभावानपेक्षेण तदाख्येयंशुभंफलम् ॥ २८ ॥

प्रश्नकालमें जो लग्नमें शुभवर्ग अधिक हो तो ग्रहभावफलकी अपेक्षा न कर शुभ फलही कहना, भावफलसे वर्गफल बली फलमें होताहै ॥ २८ ॥

लग्नाधिपश्चलाभस्याधीशश्चदायकोभवेत् ॥
लग्नाधिपस्ययोगोवालाभाधीशेनलाभदः॥ २९ ॥

लग्नेश और लाभेश धनदाता हैं इनका योग लाभ देनेवाला होताहै॥ २९॥

आर्य्या-भवतिपरमलाभकरस्तद्दैवसयदिचंद्रदृग्लाभे ॥
योगाःसर्वेष्वफलाश्चंद्रमृतेव्यक्तमेवच ॥ ३० ॥

जो लग्नेश वा लाभेश ग्यारहवें स्थानमें चन्द्रमासे दृष्ट हों तो परमलाभ करतेहै चंद्रमाके दृष्टि वा योगविना सभी योग निष्फल होतेहैं यहतो प्रकटही है ३०

आर्य्या-कर्माधीशेनैवंकर्माधीशेनवृत्त्यधीशेन॥
मृत्युपतिनाचयोगेलाभाधीशस्यवक्तव्यम्॥ ३१ ॥

ऐसेही दशमेशकाभी विचार करना, क्योंकि वह आजीवन भाव है. और लाभेश अष्टमेशयुत हो तो लाभ न होवे ॥ ३१ ॥

तत्तत्स्थानेक्षणतःपुण्यविवृद्धिश्चकर्मवृद्धिश्च ॥
विबुधैस्तदा निवृत्तिर्मृत्युभावापरेष्वेवम् ॥ ३२ ॥

चन्द्रमा जिस स्थानको देख उसकी वृद्धि जैसे नवममें पुण्यवृद्धि दशममें कर्मवृद्धि करता है जो अष्टम भाव वा अष्टमेशपर चन्द्रमाकी दृष्टि वा योग हो तो विपरीत फल कहना ऐसेही सभी भावोंमें विचारना ॥ ३२ ॥

लग्नेशोयदिषष्ठः स्वयमेवरिपुर्भवत्यात्मा ॥
मृत्युकृदष्टमगोसौव्ययगःसततंव्ययं कुरुते॥ ३३ ॥

लग्नेश छठा हो तो अपनी आत्मा भी शत्रु होतीहै अन्योंकी क्या कथा ? जो लग्नेश अष्टम हो तो मृत्यु और बारहवां हो तो बहुतव्यय करताहै॥ ३३॥

लग्नस्थं चंद्रजंचंद्रः क्रूरोवायदिपश्यति ॥
धनलाभोभवत्याशुकिंत्वनर्थोपिपृच्छतः ॥ ३४ ॥

लग्नस्थित बुधको चंद्रमा वा पापग्रह देखें तो धनलाभ तो शीघ्र होवे किंच प्रष्टाको कोईप्रकार अनर्थभी होवे ॥ ३४ ॥

सामान्यभाव विचारे ।

अनु०-इंदुःसर्वत्रबीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम् ॥
फलेनसदृशोंशश्चभावःस्वादुसमप्रभः ॥ ३५ ॥

ग्रह विचारमें सर्वत्र चंद्रमा बीजके लग्न पुष्पके अंश फलके और भाव स्वाद-के समान है ॥ ३५ ॥

आर्या-उदयोपगतराशितत्कालीकृत्यलिप्तिकांगुणयेत् ॥
छायांगुलश्चकुर्य्याद्धत्वामुनिभिस्ततः शेषः ॥ ३६ ॥
गणयित्वैवंप्राग्वद्धत्वासौम्यस्यभवेदुदयः ॥
कार्य्यप्राप्तिःप्रष्टुर्वक्तव्यानेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥ ३७ ॥

लाभादि समस्त प्रश्नोंमें समय जाननेके लिये तत्काल लग्नका लिप्तापिंड करके उस समयमें द्वादशांगुलकी छायाके अंगुलोंसे गुनाकर चौदहसे भागदेना जो शेष रहै वह मेषादि राशि जाननी, वह जो शुभग्रहकी राशि हो तो कार्य्य प्राप्ति और पापकी हो तो कार्य्यहानि कहनी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

ग्रहगुणकाराज्ञेयोदैवविदा पंच ५ विंशतिः सैकः २१ ॥
मनवो १४ ङ्का ९ ष्टौ८त्रितयं३भवाः ११ सूर्य्यादितोज्ञेयः॥३८॥
गुणकारैक्याविभक्तःसूर्य्यादिगुणकसंशुद्धः ॥
यस्यनशुद्ध्यतिवर्गोविज्ञेयस्तद्वशात्कालः ॥ ३९ ॥

सूर्य्यके ५ चंद्र २१ मं० १४ बु० ९ बृ०८ शु०३ शनिके ११ ये ग्रहोंके गुणक हैं इनका योग७१ से पूर्वोक्त जो तत्काल लग्नका कलापिंड छायांगुलों-से गुणाहै उसमें भागलेना लब्धिमें सूर्य्यादिकोंके गुणक सूर्य्यसे लेकर एकएक करके घटावैं जहांतक घटें घटाते जाना जिसका गुणकांक न घटै उससे समय कहना वह आगे कहते है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

आरदिवाकरशेषेदिवसापक्षाश्चभृगुशशिनोः ॥ गुर्वंवशेषे मासौ ऋतवःसौम्येशनैश्चरेब्दाःस्युः ॥४०॥ आधानेथआतोगमनागमने पराजयेविजये ॥ रिपुनाशेवाकालंपृच्छायांनिश्चितंब्रूयात्॥ ४१ ॥

उक्त क्रमसे जो सूर्य्य वा मंगलका गुणक न घटै तो उतने दिन. शुक्र

चंद्रमाके पक्ष बृहस्पतिसे महीने, बुधसे ऋतु, शनिसे वर्ष जानने. आधानके प्रसव वा धनादिप्राप्ति तथा गमन आगमन जयपराजय, शत्रुनाशादि कार्यको इस प्रकार समय निश्चय करके कहना ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अकचटतपयशवर्गारविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ॥ चंद्रस्य चनिर्दिष्टास्तैःप्रथमोद्भवैर्वर्णैः ॥ ४२ ॥ ज्ञात्वातस्माल्लग्नं विज्ञायशुभाशुभंचवदेत् ॥ वर्गादिमध्यांत्यैर्वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमराशिः ॥ ४३ ॥ लग्नाज्ञानेप्रवदेत्पृच्छायुग्मंकुजज्ञजीवानाम् ॥ सितरविजयोश्चनैकंरविशशिनोरेकराशित्वात् ॥४४॥ तस्मात्प्रवदेत्पृच्छासमयेशुभाशुभंसर्वम् ॥ कालस्यच विज्ञानादेतच्चिंत्यंबहुप्रश्ने ॥ ४५ ॥

अवर्णका स्वामी सूर्य्य एवं क का मंगल, च का शुक्र, ट का बुध, त का बृहस्पति प का शनि य का चंद्रमा, श काभी चंद्रमा ये वर्गके स्वामीहैं; जहां लग्नज्ञान न होसके वा २ । ३ आदि बहुत प्रश्न एक ही लग्नसे हों तो वर्गेशसे लग्न इस प्रकार लेना कि, प्रश्नसे प्रथमाक्षर वर्गके जो स्वामीहैं उनकी राशिलग्न जानना. उस लग्नसे उक्तप्रकार योगादि विचारके शुभाशुभ फल कहना. प्रत्येक ग्रहकी २ । २ राशि हैं इनमें विषमराशि जानना जैसे मंगल वर्गेश हो तो मेष समझना. चंद्रमाकी एकही है वह वही जानना जहां बहुत प्रश्न हों तो प्रथम प्रश्नमें प्रश्नाक्षरके प्रथम वर्ण दूसरेमें मध्यवर्ण तीसरेमें अंत्यवर्ण से लग्न जानना तथा मंगल बुध बृहस्पतिके राशि लग्न हों तो दो प्रश्न जानना. शुक्रशनिसे अनेक और सूर्य्य चन्द्रमासे एक राशि होनेसे एकही प्रश्न जानना बहुत प्रश्नोंमें इस प्रकार लग्नसे शुभाशुभ फल तथा वर्गेश ग्रहके गुणकसे पूर्वोक्त क्रमसे विचारकर सभी कहना ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

प्रश्नवस्तुज्ञाने ।

स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशस्थितःपश्यतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरोतिजीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ४६ ॥

मुष्टि वा मूकप्रश्नमें जो लग्नेश वा चन्द्रमा अपने अंशमें वा लग्नमें त्रिकोण ९ । ५ में हो अथवा और किसी स्थानमें हों किंतु अपने अंशमें होकर लग्नको देखे तो धातुचिंता तथा शत्रु वा समांशकमें होकर लग्न चन्द्रमाको देखे तो जीवचिंता और परांशकमें बैठकर परांशकी ग्रहोंको देखे वा लग्नेश चंद्रमा परांशकी हों लग्नमें कोइ ग्रह परांशकी हो तो मूलवस्तुसंबंध प्रश्न कहना ॥ ४६ ॥

धातुर्मूलंजीवमित्योजराशौयुग्मेविद्यादेतदेवप्रतीपम् ॥
लग्नेयोंशस्तत्क्रमाद्गण्यएवंसंक्षेपोयंविस्तरात्त प्रभेदाः ॥ ४७ ॥

विषम राशि लग्नमें हो तो प्रथम नावांशमें धातु दूसरेमें मूल तीसरेमें जीव चौथेमें धातु पांचवेंमें मूल छठेमें जीव सातवेंमें धातु आठवेंमें मूल नववेंमें जीव चिंताकहनी, जो समराशि लग्नमें हो तो विपरीत, जैसे १ । ४ । ७ में जीव २ । ५ । ८ में मूल ३ । ६ । ९ में धातुचिंता कहनी ॥ ४७ ॥

बलिनौकेंद्रोपगतौरविभौमौधातुकरौप्रश्ने ॥
बुधसौरीमूलकरौशशिगुरुशुक्राःस्मृताजीवाः ॥ ४८ ॥

जो सूर्य्य वा मंगल बलवान् और केंद्रगत हों तो धातु, बुध, शनि हों तो मूल, चन्द्रमा बृहस्पति शुक्र हों तो प्रश्नमें जीवचिंता जाननी ॥ ४८ ॥

मेषालिसिंहलग्नेकुजार्कयुक्तोनिरीक्षितेप्यथवा ॥
धातोश्चितांप्रवदेद्युगघटकन्यागतेलग्ने ॥ ४९ ॥
बुधरविजयुतेमूलंवृषतुलाहरिमीनचापकर्कटके ॥
चन्द्रगुरुशुक्रयुतेदृष्टेजीवोविनिर्देश्यः ॥ ५० ॥

लग्नमें १।८।५ राशि हो और मंगल वा शनिसे युक्त वा दृष्ट हों तो धातु तथा ३ । ११ । ६ राशि बुध शनियुक्त दृष्ट हों तो मूल और २। ७।५।१२ ९ । ४ राशि चन्द्रमा बृहस्पति शुक्रसे युक्त दृष्ट हों तो जीवप्रश्न कहना ॥ ४९ ॥ ५० ॥

भावप्रश्नज्ञानम् ।

लग्नलाभपयोःप्राणीतयोर्यद्भावगः शशी॥ तस्यभावस्ययाचिंताप्रष्टुः साहृदिवर्तते ॥ ५१ ॥ एवंलग्नाधिकाच्चंद्राल्लग्ननाथोयतः स्थितः॥ दैवज्ञेनविनिर्णेयःप्रश्नस्तद्भावसंभवः ॥ ५२ ॥

लग्नेश वा लाभेशमें जो बलवान् हो अथवा इनके अंशेशोंसे जितने भावमें चन्द्रमा हो उस भावसंबंधी प्रश्न जानना जिस भावमें जो विचार चाहिये वह प्रथम कहा गयाहै, ऐसेही बलाधिक चन्द्रमासे लग्नेश जितनेमें हो उसके संबंधी प्रश्न पूछनेवालेके हृदयमें ज्योतिषीने जानकर आद्य विचार करना ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

आत्मसमंलग्नगतैस्तृतीयगैर्भ्रातरःसुतंसुतगैः ॥ मातावाभगिनी वाचतुर्थगैःशत्रुगैः शत्रुः॥५३॥ जायासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्माश्रितो गुरुर्दशमे ॥ स्वांशः पतिमित्रशत्रुषुतथैववाच्यंबलयुतेषु ॥ ५४ ॥

सर्वोत्तम बलीग्रह वा तत्काल लग्नका नवांशेश लग्नमें हो तो अपने शरीरसंबंधी तीसरा हो तो भ्रातृसंबंधी एवं पंचममें पुत्र संबन्धी, चतुर्थमें माता बहिनके विषय, छठा हो तो शत्रुसंबंधी सप्तममें स्त्रीसंबंधी नवममें धर्मसंबन्धी दशममें गुरु वा राजसंबंधी, प्रश्न कहना, तथा बली ग्रहका बल लग्नका अंशेश मित्र राशिमें हो तो मित्रसंबंधी, शत्रुराशिमें हो तो शत्रुसंबंधी जानना इतनोंमें जो बलवान् हो उससे प्रश्न कहना ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

चरलग्ने चरभागे मध्याद्भ्रष्टे प्रवासिचिंतास्यात् ॥
भ्रष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तो यदि न वक्री ॥ ५५ ॥

पूर्वोक्त ग्रह चरराशि चरनवांशकमें दशम स्थानसे ऊपर १०।११।१२ में हो तो प्रवासिसंबंधी प्रश्न कहना तथा चरराशिनवांशमें सप्तमाधिक ७।८।९ में हो तो उसका निवृत्तिके (लौटने) विषयमें जानना यदि वह वक्री न हो जो वक्री हो तो उक्तसे विपरीत जानना ॥ ५५ ॥

अस्तेरविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ॥
चंद्रेचवयः शशिवत् प्रवदेत्सौरेंत्यजातीयाम् ॥ ५६ ॥

सप्तम स्थानमें सूर्य्य शुक्र वा मंगल बली हों तो परस्त्री बृहस्पती हो तो अपनी स्त्री बुध हो तो वेश्या चन्द्रमा हो तो वेश्या तत्काल चन्द्रमाके सदृश अवस्था कहना और शनि हो तो हीन जाति स्त्री प्रष्टाके मनमें चिंतितहै५६॥

कुमारिकांबालशशीबुधश्ववृद्धांशनिःसूर्य्यगुरूप्रसूताम् ॥
स्त्रींकर्कशांभौमसितौचधत्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ५७ ॥

बाल चन्द्रमा वा बुध हो तो कुमारी कन्या शनिसे वृद्ध स्त्री सूर्य्य तथा बृहस्पतिसे प्रसूतवती मंगल शुक्रसे कठोर स्वभावकी स्त्री प्रश्नसंबन्धी कहनी तथा पुरुषकी अवस्थादिभी ऐसेही विचारसे कहनी ॥ ५७ ॥

इति महीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां संज्ञाप्रकरणम् ॥ ३ ॥

यह प्रकरण समस्त आर्य्याछंदमें है ॥

प्रथमलग्नभावप्रश्न कहते हैं।

भूतंभवद्भविष्यन्मम किं कथयेतिजातपृच्छायाम् ॥ लग्नपतेः
शशिनोवाबलमन्वेष्यंबलाभावे ॥ १ ॥ दृक्त्वानवांशकबलंशुभ-
दृग्योगंचसर्वकार्य्येषु ॥ प्रष्टुःशुभमादेश्यंविपरीतंव्यत्ययादेव ॥२॥

जो कोई पूछे कि मेरा भूत वा भविष्य क्या हुवा वा होगा तो इस प्रश्नमें लग्नेश तथा चन्द्रमाका बल देखना. जो ये बली न हों तो नवांश बल देखना बलाधिक्य और शुभग्रह दृष्टि योगसे प्रष्टाके समस्त कार्य्योंमें शुभ इससे विपरीत हो तो अशुभ कहना ॥ १ ॥ २ ॥

लग्नेशोमूसरिफो यस्मात्तस्माद्गतीतमाख्येयम् ॥
येनयुतस्तस्माद्भवद्दृष्ट्येयेनेक्ष्यते तस्मात् ॥ ३ ॥

लग्नेशका जिस ग्रहसे मूसरिफ हो उसके अनुसार भूत कहना जैसे मूसरिफ होकर ईसराफ होगया हो तो कार्य होगया और इत्थशाल हो तो कार्य्य होताहै कहना और दृष्टिसे होनेवाला कहना, इत्थशालोंके भेद पहिले कहदियेहैं ॥ ३ ॥

यदिलग्नेलग्नपतिःसौम्ययुतोवाविलोकितः सौम्यैः ॥
तत्प्रष्टुर्व्याकुलताशरीरदोषाविनश्यंति ॥ ४ ॥

जो लग्नेश लग्नमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो प्रष्टाके मन व्याकुलता और शरीरके समस्त दोष नाशहोते हैं ॥ ४ ॥

पापोयदिलग्नपतिस्तदाकलिव्याधिधननाशाः ॥
सौम्यनिर्वृतिबुद्धिद्रव्याप्तिःसौख्यमतुलंच ॥ ५ ॥

जो लग्नेश पापग्रह हो वा लग्नमें पाप हो तो कलह रोग धनहानि हो; जो

शुभग्रह हो तो बुद्धि निर्मल धनलाभ और अतुल सुख मिलै ॥ ५ ॥
इति श्रीमहीधरकृतायांनीलकंठीभाषाटीकायां लग्नभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीयभावफलम् ॥

धनलाभस्यप्रश्नेलग्नेशेनेंदुनाथधननाथौ ॥
कुरुतोयदीत्थशालंशुभयुतिदृग्भ्यांभवेल्लाभः ॥ ६ ॥

धनलाभप्रश्नमें लग्नेशसे चन्द्रराशी तथा धनभावेश इत्थशाल करें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्टभी हो तो धनलाभ होगा ॥ ६ ॥

क्रूरग्रहैर्धनस्थैर्दूरेलाभोऽन्यदप्यशुभम् ॥
क्रूरमुथशिलेधनेशेप्रष्टाम्रियतेथवाविलग्नेशे ॥ ७ ॥

जो पापग्रह धनस्थानमें हो तो लाभ बहुत कालमें हो और कुछ अशुभ भी होवे धनेश वा लग्नेश पापसे इत्थशाली हो तो प्रष्टा अरिष्ट पावे ॥ ७ ॥

धनधनपेपथेत्थशालोमंदगतिर्यत्रभावानाम् ॥
तनुधनसहजादीनांप्रभुस्तद्द्वारतोलाभः ॥ ८ ॥

धनेश मंदगामी तनु धन सहजेशादिकोंमेंसे जिससे इत्थशाली हो उस भावसंबंधी जनके द्वारा धनलाभ होवे ॥ ८ ॥

अनु०—प्रश्नेचतुर्थाधिपतिस्तत्रस्थोवावलोकते ॥
अवश्यंवर्ततेतत्रधनंचंद्रेथवावदेत् ॥ ९ ॥

स्थापित वा चौरादि धनकी भ्रांतिमें चतुर्थेश चतुर्थभावमें हो वा उसे देखे अथवा चन्द्रमा चतुर्थ हो तो धन अवश्य तहां होगा यह कहना ॥ ९ ॥

वित्तेशेधनगेबंधौवास्तितत्रधनंबहु ॥
पापेतुर्यगतेद्रव्यंस्थितंतूर्णंनलभ्यते ॥ १० ॥

धनेश धनभावमें चतुर्थ हो तो प्रश्नस्थानमें बहुत धन है. जो पापग्रह भी चतुर्थ हो तो धन तो है किंतु शीघ्र नहीं मिले ॥ १० ॥

भौमेसप्ताष्टराशिस्थेधनमन्यत्रनाप्यते ॥ लग्नेतमोराविच्छिद्रेत-
दृद्रव्यंनलभ्यते ॥ सप्ताष्टदशपातालेधनदाचन्द्रमोगुरुः ॥ ११ ॥

जो मंगल सप्तम वा अष्टम हो तो धन औरस्थानमें है नहीं मिलेगा, जो

लग्नमें राहु अष्टम सूर्य्य अव्य नहीं मिले; ७।८।१०।४स्थानोंमें चन्द्र-मा और बृहस्पति हों तो चिंतित धन देतेहैं ॥ ११ ॥

लग्नेश्वरेद्यूनगतेविलग्नेजायेश्वरेनष्टधनस्यलाभः ॥
जायेशलग्नाधिपतीत्थशालेद्यूनेविनष्टंधनमेतिमर्त्यः ॥ १२ ॥

लग्नेश सप्तम सप्तमेश लग्नमें हों वा लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल हो तो नष्ट वा विस्मृत धन प्राप्त पावे ॥ १२ ॥

लग्नेशजायाधिपतीत्थशालेलग्नेश्वरंयच्छतितस्करोर्थम् ॥
सूर्य्येविलग्नेस्तमितेशशांकेनलभ्यतेयद्द्रविणंविनष्टम् ॥ १३ ॥

लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल हो तो चोर आपही धन देवेगा, जो सूर्य्य लग्नमें चन्द्रमा सप्तममें हों तो नष्टधन न मिले ॥ १३ ॥

ख्नेशलग्नाधिपतीत्थशालेचौरःस्वमादायपुरात्पलायते ॥
चंद्रेस्तपेचार्ककरप्रविष्टेतल्लभ्यतेनष्टधनंसतस्करम् ॥ १४ ॥

दशमेश और लग्नेश इत्थशाली हों तो चोर धन लेकर नगरसे भागगया; चन्द्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हों तो धनसहित चोर पकडा जायगा ॥ १४ ॥

अस्तेश्वरेकेंद्रगतेस्तिचौरस्तत्रैवनान्यत्रपुराद्विनिर्गतः ॥
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशालेजायेश्वरेन्यत्रगतःसचौरः ॥ १५ ॥

सप्तमेश केन्द्रमें हो तो चोर तहांही है नगरमें अन्यत्र नहीं गया, नवमेश दशमेशसे इत्थशाली सप्तमेश हों तो अन्यत्र चलागया ॥ १५ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशालेतल्लभ्यतेराजकुलाच्चचौर्य्यम् ॥
त्रिधर्मद्यूनपतीत्थशालेत्वन्यत्रदेशाद्गमनेतदाप्तिः ॥ १६ ॥

दशमेश लग्नेशका इत्थशाल हो तो राजकुलसे चोर पकडा जावे; तृतीय नवमके स्वामी सप्तमेशसे इत्थशाली हों तो और देशमें पकडा जावेगा ॥ १६ ॥

शुभेत्थशालेहिमगौविलग्नेखस्थेथवानष्टधनस्यलाभः ॥
सुस्नेहदृष्ट्याखविणाशुभेनदृष्टेविलग्नेहिमगौचलाभः ॥ १७ ॥

चन्द्रमा शुभग्रहसे इत्थशाली लग्न वा दशममें हो तो नष्टधन मिले; जो लग्नगत चन्द्रमाको सूर्य्य तथा शुभग्रह मित्र दृष्टिसे देखें तौभी वही फल कहना ॥ १७ ॥

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेपिवा ॥
स्थितंतत्रैवतद्द्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १८ ॥

लग्नमें स्थिर राशि वा स्थिर नवांश अथवा वर्गोत्तमांश हो तो वह धन वहीं है किन्तु अपनेही मनुष्यने चोरी करी ॥ १८ ॥

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥
द्वारदेशेथवामध्येगृहान्तेचवदेद्धनम् ॥ १९ ॥

लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो घरके द्वारसमीप वस्तु है, मध्य द्रेष्काण हो तो घरके बीचमें और तीसरा द्रेष्काण हो तो घरके पीछे होगा ॥ १९ ॥

पतितधनस्यप्रश्नेमिथोगृहस्थौविलग्नसप्तेशौ ॥
यदिमुथाशिलंतयोःस्यात्तदाशुतत्रैववदंतिधनम् ॥ २० ॥

नष्ट द्रव्यके प्रश्नमें लग्नेश सप्तम सप्तमेश लग्नमें वा इनका मुथशिल हो तो वह धन वहांही है शीघ्र मिलेगा ॥ २० ॥

नष्टंक्वदिशिप्राप्यंपृच्छायांलग्नगोविधौप्राच्याम् ॥
स्वस्थानेयाम्यायामस्तेवारुण्यांवाम्बुव्युदीच्याम् ॥ २१ ॥

नष्टवस्तु कहां मिलेगी ऐसे प्रश्नमें चन्द्रमा लग्नका हो तो पूर्वदिशामें दशम हो तो दक्षिण, सप्तम हो तो पश्चिम, चतुर्थ हो तो उत्तरमें मिलेगी ॥ २१ ॥

यदिनेंदुःकेन्द्रेतच्चत्वारिंशांशकैश्चपंचयुतैः ॥
भागोदिक्क्रमउक्तोवह्न्यवनीवायुवारिराशौवा ॥ २२ ॥

जो चन्द्रमा केन्द्रमें न हो तो चन्द्रस्थित अंशकसे ४५ वें अंशमें जो राशि है उसकी जो दिशा वा उपदिशा अथवा अग्नि, पृथ्वी, वायु, जलमेंसे जो उस राशिका तत्त्व है उसमें नष्ट द्रव्य कहना ॥ २२ ॥

नष्टहृतवित्तलब्धेःपृच्छायांचौरसप्तमततोलाभः ॥
हिबुकंद्रव्यस्थानंलग्नंचंद्रश्चधननाथः ॥ २३ ॥

नष्ट वा चोरित धनलाभ प्रश्नमें सप्तम स्थानसे चोर चतुर्थसे उसकी प्राप्ति लग्नसे द्रव्य और चन्द्रमा धनका स्वामी जानना ॥ २३ ॥

लग्नेशोस्तेस्तपतिनाचेन्मुथशिलीततोलाभः ॥
यद्यष्टेशोलग्नेतदास्वयंतस्करोर्ऽपयति ॥ २४ ॥

लग्नेश सप्तममें जो सप्तमेशसे मुथशिली हो तो हृतद्रव्यका लाभ होवे. जो अष्टमेश लग्नमें हो तो चोर आप ही धन देदेवे ॥ २४ ॥

रविरश्मिगेधनेशेवास्तमितेतस्करस्यलाभःस्यात ॥ लग्नेश-
दशमपत्योर्मुथशिलतः प्राप्यतेर्थवांश्चौरः ॥ लग्नेशदृष्टच-
भावेचौरःसहमानयाय ति ॥ २५ ॥

धनेश सूर्य्यके साथ वा अस्तंगत ही हो तो चोर पकडा जावे, लग्नेश दशमेशका इत्थशाल हो तो धनसहित चोर मिले जो लग्नेशकी दृष्टि सप्तम पर न हो तो चोर धनसहित आवेगा ॥ २५ ॥

अस्ताधिपतौ रवेरविरश्मिगतेथलभ्यतेचौरः ॥
लग्नपक्कृतेत्थ लेराजभयाद्धनमिदंस्वयंदत्ते ॥ २६ ॥

सप्तमेश दग्ध वा अस्तंगत हो तो चोर पकडा जावे, लग्नेशसे सप्तमेश इत्थशाली हो तो राजाके भयसे चोर आपही धन देदेवे ॥ २६ ॥

लग्नास्तपयोर्नस्य च दृष्टिर्लग्नपस्तथाविकलः ॥
तत्तस्करःस्वहस्तं ददातिचौर्य्यंहिराजकुले ॥ २७ ॥

लग्नेश सप्तमेशकी दृष्टि न हो तो तथा लग्नेश कलाहीन हो तो चोर अपने हाथसे राजसभामें धन चोरीका देदेवे ॥ २७ ॥

लग्नपमध्यपयोगेराजकुलंप्राप्यलभ्यतेचौर्य्यम् ॥
रंध्रंचोरस्यधनंधनपेतत्राथसप्तमेनाप्तिः ॥ २८ ॥

लग्नेश दशमेश साथही हों तो राजद्वारसे चोरी मिले. अष्टमस्थान चोरका धन होताहै धनेश इसमें वा सप्तम हो तो धन न मिले ॥ २८ ॥

रंध्रपतौधनपस्यतुमुथशिलयोगेतुप्राप्यतोवित्तम् ॥
रंध्रपतौदशमपतेर्मुथशिलयोगेचौरपक्षकृद्भूपः ॥ २९ ॥

अष्टमेश धनेशका इत्थशाल हो तो धन मिले अष्टमेश दशमेशका मुथशिल हो तो राजा चोरका पक्षपात करे ॥ २९ ॥

चौरस्थानज्ञानम् ।

चौरज्ञानप्रश्नेलग्नेरविशशिदृशास्वगृहचौरः ॥
अनयोरेकदृशागृहसमीपवर्त्तीवसत्येषः ॥ ३० ॥

चौर कहां है ऐसे प्रश्नमें लग्नपर सूर्य्य चंद्रमाकी दृष्टि हो तो प्रष्टाके घरहीमें और इनमेंसे एककी दृष्टि हो तो पडोसमें रहताहै ॥ ३० ॥

लग्नस्थेलग्नपतावस्तपयुक्तेचगृहगतश्चौरः ॥
अस्ताधिपतावंत्येसहजेवास्वीयभृत्यायम् ॥ ३१ ॥

लग्नेश लग्नमें सप्तमेशयुक्त हो तो चोर प्रष्टाके घरहीमें रहताहै, जो सप्तमेश बारहवां वा तीसरा हो तो चौर अपनाही नौकर है ॥ ३१ ॥

अस्तेशेतुंगस्थेस्वगृहेवातस्करःप्रसिद्धःस्यात् ॥ लग्नदशमास्तभावःक्रमेणवीक्ष्याःस्वतुंगभवनादौ ॥ ३२ ॥ यःखेटःस्याद्बलवान्सज्ञेयस्तस्करस्यबली ॥ लग्नादिषुयोग्रहः स्वोच्चादिबलीसयज्जातिः ॥ एवंयोगंतुविनाद्यूनेशस्यैवबलमभिग्राह्यम् ॥ ३३ ॥

सप्तमेश उच्चमें वा स्वगृहमें हो तो वह चोर नामी है कहना तथा १।१०।७ भाव क्रमसे देखने इनमें जो कोई उच्चादि बली हो वह चोरका बल जानना और उनके अनुसार फल कहना. जब ये योग न हों तो सप्तमही केवल लेना, बली ग्रहकी जातिरूपवाला चोर होगा वा चोरको सहाय करेगा ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

इत्थंचौरज्ञानेचौरःसूर्य्येगृहेश्वरस्यापिता ॥ चंद्रेमाताशुक्रेभार्य्यामंदेसुतोभवेन्नीचे ॥ ३४ ॥ जीवेगृहप्रधानंभौमेपुत्रोथवा भ्राता ॥ ज्ञेस्वजनोमित्रंवाज्ञात्वेत्थंपुण्यसहममावेक्ष्यम् ॥ ३५ ॥

उक्त प्रकारोंसे चोर जाननेके और ज्ञान है कि वह योगकर्त्ता सूर्य्य हो तो उस घरके स्वामीका पिता चोर है; एवं चन्द्रमासे माता, शुक्रसे स्त्री, शनिसे पुत्र वा दास बृहस्पतिसे घरका श्रेष्ठ मंगलसे पुत्र भाई बुधसे मित्र होगा ऐसा जानकर पुण्यसहम देखना ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

तस्मिन्क्रूरादृष्टेपुरानचौरोस्तपेपुरापिस्यात् ॥
अस्तेशान्मूसरिफभौमेचौरः पुरापिनिगृहीतः ॥ ३६ ॥

पुण्यसहम क्रूरदृष्ट न हो तो यह पहिले चोर नहीं था, सप्तमेश पाप-

दृष्ट हो तो पहिले भी चोर था. सप्तमेशसे मंगलका मूसरीफ हो तो यह चोर पहिले भी चोरीमें पकडा गया था ॥ ३६ ॥

सप्तमगेरविपुत्रेचंद्रदृष्टेतस्करोहिपाखंडी ॥
जीवोविलोक्यलोकंभौमेखातेनतालकंभंक्त्वा ॥ ३७ ॥

शनि सप्तम चंद्रदृष्ट हो तो चोर पाखंडी होगा. बृहस्पति उसे देखे तो चोर लोकविदित होवे, सप्तम मंगल चन्द्रदृष्टहो तो कुल्हल ताला जंजीर आदि तोड-कर चोरने चोरी करी है॥ ३७ ॥

प्रतिकुंचिकयापहृतंसितेतिथिर्ज्ञेप्रपञ्चकरः॥चौरस्यवयोज्ञानेसितेयुवा
ज्ञेशिशुर्गुरौमध्यः ॥ तरुणोभौमेमंदेवृद्धोर्केस्यादतिस्थविरः ॥३८॥

सप्तममें शुक्र चंद्रदृष्ट हो तो दूसरी कूंची (चावी) से खोलकर चोरी भई तथा बुध हो तो अपूर्व मनुष्य प्रपंची चोर है और चोरकी अवस्थाके ज्ञानमें शुक्रसे युवा, बुधसे बालक, बृहस्पतिसे मध्य अवस्था, मंगलसे तरुण, शनिसे बूढा, सूर्य्यसे अतिबूढा जानना ॥ ३८ ॥

तनुनभसोःस्वमंदिरेस्मरभूम्योर्भूमिलाभयोर्मध्यम् ॥
चरतिरवौनवमध्यमवृद्धवयोतीतकाः क्रमशः ॥ ३९ ॥

सूर्य्य १ । १० स्थानके बीच अपनी राशिमें हो तो नया जवान ७ । ४ स्थानोंके बीच स्वराशिका हो तो मध्यमावस्थ, ४ । ११ के बीच हो तो बूढा, इतनी अवस्था क्रमसे व्यतीत जाननी ॥ ३९ ॥

नष्टस्थानेप्रश्नेतुर्य्येभूम्यग्निवायुजलमध्यात् ॥
योभवतिराशिरस्मात्स्थानंज्ञेयंगतधनस्य ॥ ४० ॥

चोरीका द्रव्यस्थानके प्रश्नमें चतुर्थ स्थानमें भूमि वायु जलमेंसे जिस तत्त्वकी राशि हो उसका विशेष स्थान कहना ॥ ४० ॥

अथचतुर्थगृहेतुर्य्येश्वरोथयःस्याद्ग्रहस्ततोज्ञेयम् ॥
मंदेमलिनस्थानेचंद्रेतुनिगोष्पतोसुरारामे ॥ ४१ ॥
भौमेवह्निसमीपेरवौगृहाधीश्वरासनस्थाने ॥
तल्पेशुक्रेसौम्येपुस्तकवित्तान्नयानपार्श्वेच ॥ ४२ ॥

चतुर्थमें चतुर्थेश वा जो ग्रह बली हो उससे चोरी द्रव्यका स्थान कहना। जैसे शनिसे मैलास्थान चंद्रमासे जलाशय वा हाथ पैर धोवनेके स्थान, बृहस्पतिसे देवसमीप वा बगीचा, मंगलसे अग्निसमीप, सूर्य्यसे गृहपतिके बैठनेके स्थान, शुक्रसे शयनस्थान, बुधसे पुस्तक धन अन्न वा डोली आदि सवारीके समीप कहना ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

चौरोयमथनवेतिक्रूरैर्द्रोमुथशिलेचचौरःस्यात्॥
सौम्यशशिमुथशिलेखलुनभवतिचोरःप्रवक्तव्यम् ॥ ४३ ॥

यह चोर है वा नहीं ऐसे प्रश्नमें चंद्रमा पापग्रहमें मुथशिली हो तो चोर होगा. जो शुभसे मुथशिली हो तो चोर नहीं है कहना ॥ ४३ ॥

किमनेनतस्करत्वंकदापिविहितंनवेतिपृच्छायाम् ॥
लग्नपशशिनोरकस्मादपिमूसरिफेस्तपेविहितम् ॥ ४४ ॥

इसने कभी चोरी करी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चंद्रमासे सप्तमेश मूसरिफी हो तो पहिले भी चोर है ॥ ४४ ॥

चोरःस्त्रीपुरुषोवापृच्छायामस्तपेस्त्रियोराशौ ॥
स्त्रीखेटेस्त्रीदृष्टेचोरःस्त्रीव्यत्ययात्पुरुषः ॥ ४५ ॥

चोर स्त्री वा पुरुष कौन होगा ऐसे प्रश्नमें सप्तमेश स्त्रीराशिमें और स्त्रीग्रह वा स्त्रीग्रहदृष्ट हो तो चोर स्त्री होगी जो पुरुष राशिमें सप्तमेश पुरुषदृष्ट हो तो पुरुष चोर होगा ॥ ४५ ॥

लग्नेशे नवमांशतोवयःप्रमाणंजायतेज्ञेयः ॥
चौरोयमिहानंतंशास्त्रं कथितोयमुद्देशः ॥ ४६ ॥

लग्न वा लग्नेशके नवांशवशसे चोरकी अवस्थाका प्रमाण जातिरंग आदि और द्रेष्काणसे उसका रूप कहना. शेष विचारको शास्त्र अनंत है यह बुद्धिमानोंको उद्देशमात्र कहाहै ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नील० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायांधनभावप्रश्ननि० ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावप्रश्नः ।

सहजपतिर्यदि सहजं पश्यतिचेद्वयंशुभैर्दृष्टम् ॥
तद्भ्रातरो गतरुजःस्वस्थाः क्रूरोक्षितेवामम् ॥ १ ॥

तृतीयेशतृतीय भावको देखे तथा तृतीयभाव और तृतीयेशको शुभग्रह देखैं तो भाई सुखी सावधान और पाप दृष्टि योगसे रोगी वा अस्वस्थ कहना ॥ १ ॥

यदि सहजपतिः षष्ठेतत्पतिना मुथाशिलेऽथतन्मांद्यम् ॥
षष्ठेशे सहजस्थे सहजपतौक्रूरिते वापि ॥
सूर्य्यस्यरश्मिसंस्थेभयावहं प्रष्टुरादेश्यम् ॥ २ ॥

तृतीयेश छठा वा आठवां होकर षष्ठेशसे इत्थशाली हो तो भाई मांदे कहने, वा षष्ठेश तीसरा वा तृतीयेश पापयुक्त हो तो भी यही फल है, जो अस्तंगत हो तो प्रष्टाको भय देताहै ॥ २ ॥

षष्ठाष्टमभावेशौ यद्भावेशेनेत्थशालिनौस्याताम् ॥
पीडांतस्य प्रवदेत्षष्ठाष्टमभावगे वापि ॥ ३ ॥

छठे आठवें भावके स्वामी जिस भावेशके साथ इत्थशाली हों वा जिस भावमें हों अथवा जिस भावका स्वामी ६ । ८ स्थानमें हो उस भावसंबंधी पीडा कहनी ॥ ३ ॥

एवं सर्वोपि यथापित्रोस्तुर्य्येसुतानांच ॥
पञ्चमभावे भृत्यचतुष्पदास्त्रियाःसुहृदकःसतमे ॥ ४ ॥

ऐसे सभी भावोंमें विचार करना जैसे चतुर्थेश षष्ठेशसे वा अष्टमेशका इत्थशाल हो, यद्वा इन भावोंके स्वामी चतुर्थ वा चतुर्थेश इन भावोंमें हो तो माता पिताको पीडा होवे, ऐसा पंचम भावसे पुत्रोंको सप्तमसे भृत्य, स्त्री चतुष्पद इत्यादि जानना ॥ ४ ॥

अथ क्रयविक्रयौग्रन्थान्तरे ।

अनु०–क्रेता लग्नपतिर्ज्ञेयो विक्रेतायपतिःस्मृतः ॥
गृह्णाम्यहमिदंवस्तुप्रश्न एवंविधेसति ॥ ५ ॥
बलशालि विलग्नंचेद्गृह्णातेतत्क्रयाणकम् ॥
तस्मात्क्रयाणकाल्लाभःप्रष्टुर्भवति निश्चितम् ॥ ६ ॥

मैं यह सौदा करताहूं इसमें लाभ हानि क्या होगी ऐसे प्रश्नमें लेनेवाला लग्नेश बेचनेवाला लाभेश होता है, इनके बलाबलसे विचार कहना, जैसे लग्न लग्नेश बलवान् हों तो यह द्रव्य लेना इसमें प्रष्टाको निश्चयलाभ होगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

विक्रीणाम्यमुकं वस्तुप्रश्न एवंविधेसति ॥
आयस्थाने बलवति विक्रेतव्यं क्रयाणकम् ॥ ७ ॥

मैं यह वस्तु बेचताहूं कैसा होगा ऐसे प्रश्नमें आयस्थान वा तत्स्वामी बलवान् हो तो इस विक्रीमें लाभ अन्यथा हानि होगी ॥ ७ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां तृतीयभावप्रश्ननिरूप० ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थस्थानप्रश्नः ।

लग्नपतींदु चतुर्थपतिमुथशिलमथवागृहे गमनम् ॥
प्रष्टुः पृथ्वीलाभदमसौख्यदृग्योगतोनैव ॥ १ ॥

लग्नेश चन्द्रमा और चतुर्थेश परस्पर इत्थशाली वा एकही स्थानमें हों तो प्रष्टाको भूमिलाभ होवे पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो लाभ नहीं होगा, विशेष बलाबलसे फल कहना ॥ १ ॥

यदि पृच्छति कृपिकोमेक्षेत्राल्लाभो भवेन्नवा ॥
लग्नंकृषिकस्तुर्यं भूमिर्द्यूनंच कृषिस्तरुर्दशमम् ॥ २ ॥

खेतीवाला जो पूछे कि मेरी खेतीसे लाभ होगा वा नहीं तो लग्न कृषि-कर्त्ता चतुर्थ भूमि सप्तम कृषि दशम अन्न वृक्षादि होते हैं इन भावोंके बलाबल निरूपण करके उक्त कामोंमें शुभाशुभ कहना ॥ २ ॥

लग्नेक्रूरोपगते स्याच्चौरोपद्रवस्तुकृषिकर्तुः ॥
वक्रातिचारवर्ज्येक्रूरे चौरस्यकृषिलाभः ॥ ३ ॥

लग्नमें पापग्रह हों तो कृषिकर्त्ताको चौरादि उपद्रव होंगे जो वह पापग्रह वक्री वा अतिचारी न हों तो चौरसे फिरभी लाभ होवे ॥ ३ ॥

लग्नस्थे शुभखेटेसाफल्यंकर्षकस्य कृषितः स्यात् ॥
तुर्य्येच क्रूरगते त्यक्त्वा भूमिं प्रयात्येषः ॥ ४ ॥

लग्नमें शुभग्रह हों तो खेतीवालेको खेतीमें अच्छा लाभ होगा जो चौथा पापग्रह हो तो समयपर खेती छोडकर भागजायगा ॥ ४ ॥

द्यूने च शुभोपगते शुभंकृषेस्त्वन्यथातुविपरीतम् ॥
दशमे दशमपतौ वा शुभयुतदृष्टेशुभा वृक्षाः ॥ ५ ॥

सप्तम स्थानमें शुभग्रह हो तो कृषि अच्छी होगी पापग्रह हो तो अन्नादि अच्छा नहीं लगेगा तथा दशमेश दशममें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो वृक्ष अन्न आदि अच्छे होंगे ॥ ५ ॥

भूभाटकपृच्छायां लग्नं भ्रष्टा च भाटकं द्यूने ॥
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथावसानं चतुर्थे स्यात् ॥ ६ ॥

भूमिसंबंधी महसूल किराया किस्त आदिके प्रश्नमें लग्नसे भ्रष्टा सप्तमसे किराया उसकी उत्पत्ति दशमसे और उसका परिणाम वा क्षय चतुर्थ स्थानसे विचारके कहना ॥ ६ ॥

लग्नस्य लग्नपस्यच शुभयोगेशुभमशोभनंवामे ॥
द्यूनेक्रूरोपगते यस्मादपि भाटकस्ततोनर्थः ॥ ७ ॥

लग्न तथा लग्नेश शुभग्रह युक्त दृष्ट हों तो भाडाविषयक समस्त शुभ, पापग्रहयोग दृष्टि हों तो सर्व अशुभ फल जानना, जो सप्तममें भी पापग्रहही हों तो भाडामें किसी प्रकार अनर्थ होगा ॥ ७ ॥

दशमेक्रूरोपगते नोत्पत्तिर्बहुतराभवेत्स्रष्टुः ॥
क्रूरार्दितेतु तुर्येस्यादवसाने शुभंनास्य ॥ ८ ॥

दशमस्थानमें पापग्रह योग दृष्टि हो तो भ्रष्टाको भाडा बहुत न मिले, चतुर्थ स्थानमें पाप हो तो भाडेका परिणाममें कारखाना डूबजायगा ॥ ८ ॥

ग्रन्थांतरे नौकाप्रश्नः ।

नौर्लाभदास्यान्नवनेतिप्रश्ने केंद्रेशुभाश्चेदितरेषुपापाः ॥
बलोज्झिताक्षेमजयार्थदानौ भावीतिवाच्यं विदुषा विमृश्य ॥ ९ ॥

नाव (जहाज) आदिके काममें लाभ होगा या नहीं ऐसे प्रश्नमें केंद्रोंमें बलवान् शुभग्रह अन्यस्थानोंमें निर्बल पापग्रह हो तो नाव लाभ देगी, विशेष तारतम्यसे विद्वानोंने विचारकरके फल कहना ॥ ९ ॥

लग्नाधिपेवक्रिणिचास्यनाथेव्यावृत्यनौरेतिच मार्गतःस्यात् ॥
चेत्सौम्यदृष्टःकुशलेन पापैर्दृष्टस्तदावस्तुविनेति वाच्यम् ॥ १० ॥

लग्नेश वक्रगति और उसके स्थानका स्वामी वा चतुर्थेश शुभयुक्त दृष्ट हो तो नाव मार्गसे कुशलपूर्वक हटी आवेगी; जो पापग्रहसे युत वा दृष्ट हो तो वस्तु विनाही लौट आवे ॥ १० ॥

विलग्नरंध्राधिपतीस्वगेहेप्रवेक्ष्यतश्चेद्व्यवहारलाभः ॥
यदाष्टमेसौम्यखगा बलाढ्यास्तदातरीलाभसुखप्रदास्यात् ॥ ११ ॥

लग्नेश और अष्टमेश अपने २ राशिमें हों वा अपने भावोंको देखें तो नावव्यवहारमें लाभ होवे. जो बलवान् शुभग्रह अष्टम हो तो नाव लाभ और सुख देगी ॥ ११ ॥

कुशलायातिपृच्छायांमृत्युयोगेसमागते ॥
तदानौरेतिशीघ्रेणलाभाद्यंचान्ययोगतः ॥ १२ ॥

नाव कुशलसे आवेगी, ऐसे प्रश्नमें जो मृत्यु फल देनेवाला योग प्रश्न लग्नमें हो तो नाव शीघ्र अपने स्थानमें आवेगी जो कोई अरिष्टदायक योग हो तो लाभ अच्छा होगा, जो और काममें बुरे योग हैं उनमेंसे कोईभी हो सो यहां शुभदायक हैं ॥ १२ ॥

लग्नेशंचंद्रनाथंवाचंद्रंवामृत्युपोयादि ॥ तदायानस्यवक्तव्यंनि-
श्चितंमज्जनंबुधैः ॥ तावुभौसप्तमस्थौचेन्मलेवापतितांवदेत् ॥ १४ ॥

लग्नेश वा चंद्रराशीश वा चंद्रमाको अष्टमेश देखे वा युक्त हो विशेषतः इत्थशाली हो तो नाव द्रव्यसहित डूबजायगी ऐसा निश्चय कहना, जो वे दोनहूं सप्तमस्थानमें हों तोभी नावका द्रव्य डूब जायगा नाव मात्र बचेगी कहना ॥ १३ ॥

लग्नचंद्रपतीक्रूरदृष्ट्यान्योन्यंयदीक्षितौ ॥
तदापोतजनानांचमिथःकलहमादिशेत् ॥ १४ ॥

लग्नेश और चन्द्रमा परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखें तो नाववाले मनुष्योंका परस्पर कलह होवे ॥ १४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां चतुर्थभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमस्थानप्रश्नः ।

यदिपृच्छत्येतस्याःस्त्रियांभवेन्मेप्रजानवाकाचित् ॥
लग्नेशेंद्वोःसुतपतिनामुथशिलभावेप्रसूतिःस्यात् ॥ ॥ १ ॥

जो प्रष्टा पूँछे कि, मेरी स्त्री प्रसूती होगी वा नहीं तो लग्नेश चंद्रमा पंचमेश परस्पर इत्थशाली हों तो संतति होगी ॥ १ ॥

यदिसुतपतिर्विलग्नेलग्नपचंद्रौसुतेथवास्यातान् ॥
सत्वरितमेववाच्यासविलंबंनक्तयोगेन ॥ २ ॥

जो पंचमेश लग्नमें वा लग्नेश और चंद्रमा पंचममें हों तो शीघ्र संतति होगी जो इनका नक्तयोग हो तो विलंबसे होगी ॥ २ ॥

द्विशरीरेचविलग्नेशुभयुतपुत्रेद्वयपत्ययोगोस्ति ॥
यदिलग्नपपुत्रपतीपुंराशौतत्सुतोगर्भे ॥ ३ ॥

लग्नमें द्विस्वभाव राशि शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो गर्भमें दो अपत्य होंगे, जो लग्नेश पुत्रेश पुरुषराशिमें हों तो गर्भमें पुत्र होगा स्त्रीराशिमें हो तो कन्या होगी ॥ ३ ॥

अथचंद्रःपुंराशौपुंग्रहकृतमुथशिलस्तदापिसुतः ॥
अथवाविधुरपराह्णेसूर्य्यात्पृष्ठेतदास्त्रीस्यात् ॥ ४ ॥

जो चंद्रमा पुरुष राशिमें पुरुष ग्रहसे युक्त वा मुथशिली हो तो गर्भमें पुत्र होगा अथवा चंद्रमा अपराह्ण समयका वा कृष्णपक्षका तथा सूर्यसे पीछे हों तो गर्भमें स्त्री होगी ॥ ४ ॥

होरास्वामीपुरुषःपुंराशौचेत्तथापिसुतगर्भः ॥
तुंगेंदुसौम्ययुक्तंगर्भेदीर्घायुःपुत्रसंभूतिः ॥ ५ ॥

लग्नेश पुरुषग्रह पुरुष राशिमें हो तोभी गर्भमें पुत्र होगा जो उच्चका चंद्रमा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट पंचम हो तो दीर्घायु पुत्र होगा ॥ ५ ॥

एषागर्भवतीकिल नवा प्रमाणं प्रयाति गर्भोयम् ॥
प्रश्नेलग्नपशशिनोः सुतस्थयोर्गर्भवत्येव ॥ ६ ॥

जो प्रश्न हो कि यह स्त्री गर्भवती है या नहीं तो प्रश्नमें लग्नेश और चंद्रमा पंचम हो वा उसे देखे तो गर्भवती है ॥ ६ ॥

यद्येतयोर्मुथशिलं केंद्रसुतपेन गर्भिणी तदपि ॥
आपोक्लिमेत्थशालादनीक्षणाल्लग्नपुत्रयोर्नैवम् ॥ ७ ॥

जो लग्नेश और चंद्रमाका केंद्रमें मुथशिल हो तोभी गर्भिणी है जो इत्थशाल आपोक्लिममें हो यद्वा लग्नेश पुत्रभाव वा पुत्रेश परस्पर न देखें तो गर्भवती नहीं है ॥ ७ ॥

चरलग्ने क्रूरेंद्वोर्मुथशिलभावे विनश्यति हि गर्भः ॥
लग्नपशशिनोस्तत्पतितत्रस्थे वक्रमुत्थाशिलेपि तथा ॥ ८ ॥

चरलग्नमें पापग्रह चंद्रमासे मुथशिली हो तो गर्भ नष्ट हो जायगा लग्नेश तथा चंद्रमाका नीचादि पतित वा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तोभी गर्भ नष्ट होगा ॥ ८ ॥

जीवितमरणप्रश्ने बालानामंत्यपे शुभैर्दृष्टे ॥
केंद्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्तेंत्ये विधौ जीवेत् ॥ ९ ॥

बालकके जीवित और मरण प्रश्नमें जो व्ययेश केंद्रमें शुभ ग्रहदृष्ट हो तथा शुक्लपक्षका चंद्रमा शुभ युक्त बारहवां हो तो बालक बचेगा ॥ ९ ॥

क्रूरैश्चेदंत्यपतिर्दग्धश्चापोक्लिमे युतः क्रूरैः ॥
दृष्टश्च जातमात्रो म्रियते बालोऽथवा गर्भे ॥ १० ॥

जो व्ययेश पापग्रह दग्ध तथा आपोक्लिम स्थानमें पापयुक्त दृष्ट हो तो बालक जन्ममें वा गर्भहीमें मरजावे ॥ १० ॥

प्रसवज्ञानप्रश्ने भुक्तांल्लग्नांशकान् परित्यज्य ॥
भोग्याद्विचिंत्य शेषाननुमित्यैवं वदेद्दिवसान् ॥ ११ ॥

प्रसवदिन ज्ञान प्रश्नमें लग्नके भुक्तांशकोंके तुल्य गर्भके भुक्त मास भोग्यांशोंसे शेषदिन अनुमान करके कहना ॥ ११ ॥

लग्नाद्यतमे स्थाने शुक्रस्तावद्वदेन्मासम् ॥
यदि धर्मादूर्ध्वस्थस्तद्वदेत्पंचमस्थानात् ॥ १२ ॥

लग्नसे शुक्र जितनेवें स्थानमें हो उतने महीनेका गर्भ है कहना जो नवम स्थानसे ऊपर शुक्र हो तो पंचम भावसे शुक्रपर्यंत भाव गिनके गर्भ मास कहना ॥ १२ ॥

लग्नांतर्दिनराशिर्दिवाग्रहो लग्नपश्चदिनराशौ ॥
तद्दिवसे जन्मस्याद्विपरीतेऽत्ययश्चैषाम् ॥ १३ ॥

जो लग्न दिवाबली और लग्नेश भी दिवाबली राशिमें हों तो दिनमें और ये रात्रिमें बली हों तो रात्रिमें जन्म होगा ॥ १३ ॥

तत्कालेद्विरसांशश्चन्द्रमसस्तत्समेचन्द्रे ॥
गर्भस्यप्रसवःस्यादनुपातःशास्त्रतःकार्य्यः ॥ १४ ॥

प्रश्न वा आधानकालमें चन्द्रमा जिस द्वादशांशमें हो उसीके तुल्यराशिस्थ चन्द्रमामें नवम वा दशम महीनेमें जन्म होगा. इसका अनुपात अन्य शास्त्रोंमें विशेष प्रकट कहाहै, बृहज्जातक महीधरीभाषामेंभी विशेष विस्तार है ॥ १४ ॥

अस्मिन्वर्षेऽपत्यंभवितावलग्नपंचमाधीशौ ॥
भजतो यदीत्थशालंतत्रैवाब्दे भवेन्नूनम् ॥ १५ ॥

इस सालमें मेरे संतान होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें जो लग्नेश पंचमेश इत्थशाली हों तो निश्चय संतान होगी. ईसराफसे न होगी ॥ १५ ॥

यदिवा मिथोगृहगतौस्यातामेतौचसंततिस्तदपि ॥
वाच्या तस्मिन्वर्षे शुभयोगादन्यथानपुनः ॥ १६ ॥

अथवा लग्नेश पंचमेश एकही स्थानमें वा एककी राशिमें दूसरा दूसरेकीमें एक हो तथा शुभयुक्त हो तो संतान होगी. इतनेमें कोईभी योग न हो तो संतान नहीं होगी ॥ १६ ॥

सूताप्रसूतयुवतिज्ञानेसुतपोथषष्ठपःसूर्य्यात् ॥ निर्गत्योदयमायात्ततः प्रसूतेचनारीयम् ॥ अथजीवभौमशुक्राआकाशउदयिनस्तथाप्येवम् ॥ १७ ॥

यह स्त्री प्रसववती होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें पंचमेश वा षष्ठेश सूर्य्यके साथसे उदय होगया हो अथवा बृहस्पति मंगल शुक्र दशम स्थानमें हों तो प्रसूति होगी ॥ १७ ॥

ग्रन्थांतरे ।

लग्नेश्वरेणाथनिशाकरेणयदीत्थशालंकुरुतेसुतेशः ॥
शुभःशुभैःसंयुतईक्षितः यातसंततिंप्रचुरसौविदध्यात् ॥ १८ ॥

जो पंचमेश लग्नेश वा चन्द्रमासे इत्थशाल करे तथा पंचमेशशुभग्रह हो शुभग्रहसे युक्त वा दृष्टभी हो तो प्रष्टाको संतति देताहै ॥ १८ ॥

पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहं विलग्नात्पश्यंतियावंतइहातिवीर्य्याः ॥
तत्संख्यकाःस्युस्तनयाश्चकन्याःशुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः १९॥

जितने पुरुष ग्रह अतिबली होकर पंचम भावको देखें उतने पुत्र तथ जितने स्त्रीग्रह अतिबली होकर देखें उतनी कन्या होगी वा पंचममें जितने भुक्त नवांशक हों उतने होंगे किंतु ये संख्या पूर्वोक्त इत्थशाल हुयेमें और स्वस्वामी शुभयुक्त पंचम होनेमें होती हैं ॥ १९ ॥

लग्नेशपुत्राधिपतीपरस्परंनपश्यतश्चेदुदयंचपंचमम् ॥
पापेत्थशालौसुतलग्नपौचप्रष्टुस्तदासंततिनास्तितांवदेत् ॥ २० ॥

लग्नेश और पंचमेश परस्पर न देखें तथा लग्न और पंचमकोभी न देखें वा लग्नेश पंचमेश पापेत्थशाली हों तो संतति नहीं है कहना ॥ २० ॥

पुत्रालयेसिंहवृषालिकन्याःप्रश्नोदयाज्जन्मभतस्तथेंदोः ॥
अल्पप्रजःसंततिपृच्छकःस्यात्पापैःसुतर्क्षेसहितेक्षितेवा ॥ २१ ॥

पंचमेश ५ । २ । ८ । ६ राशि प्रश्न वा जन्मलग्न अथवा चन्द्रमासे हों तो प्रष्टाको अल्प संतान होगी, पापग्रहोंसे पंचमस्थान युक्त दृष्ट होनेमेंभी यही फल है ॥ २१ ॥

स्वर्क्षस्थितौरंध्रगतौयमार्कौप्रष्टुस्त्रियंसंदिशतश्चवंध्याम् ॥
छिद्रस्थितौचंद्रबुधौसदोषांवाकाकवन्ध्यांतनयाप्रसूतिम् ॥ २२ ॥

अष्टम स्थानमें शनि सूर्य्य ५ । १० । ११ राशिमें हो तो प्रष्टाकी स्त्री वंध्या है जो चन्द्रमा बुध अष्टम हों तो उसपर किसी देवताभूतप्रेतादिका दोष है अथवा १ संतान होकर वंध्या होवे वा कन्याही होवे इसमें विशेष विचार यह है कि, उनमेंसे चन्द्रमा बली हो तो कन्याप्रजा होगी यदि उसपर पुरुष ग्रहकी दृष्टि हो तो काकवंध्या, जो बुध बली हो तो वंध्या होवे ॥ २२ ॥

मृतप्रजाछिद्रगयोःसितज्ययोर्गर्भस्रवाभूमिसुतेष्टमर्क्षे ॥
छिद्रेश्वरेछिद्रगतेतिवीर्येपुष्पंनविंदत्यबलासुतप्रदम् ॥ २३ ॥

जो शुक्र बृहस्पति अष्टम हों तो मृतप्रजा अर्थात् जितने संतान हो मरतेही रहें मंगल अष्टम हो तो गर्भ गलते रहे जो अष्टमेश अष्टम भावमें बलवान् हो तो पुत्र देनेवाला पुष्प (रज) भी उस स्त्रीका न होवे ॥ २३ ॥

शुक्रार्कयोरष्टमसंस्थयोर्वाक्रूरैर्द्वितीयांत्याष्टमराशिसंस्थैः ॥
जातापुरस्तान्म्रियतेप्रजावैपश्चान्नचाप्रेशुभसंततिः स्यात् ॥ २४ ॥

शुक्र सूर्य्य अष्टम हों तथा दूसरे और बारहवें पापग्रह हों तो सन्तान होतेही मरजाया करें, आगेभी शुभ सन्तति न होवे ॥ २४ ॥

रिष्फेश्वरेकेन्द्रगतेचसौम्यैर्युतेक्षितेजीवतिबालकश्च ॥
आपूर्णमासेशुभयुक्तइंदौकेन्द्रेशिशुर्जीवतिदीर्घकालम् ॥ २५ ॥

अष्टमेश शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट केन्द्रमें हो तो बालक बचजायगा, शुक्ल पक्षका चन्द्रमा शुभयुक्त केन्द्रमें हो तो पुत्र दीर्घायु होगा ॥ २५ ॥

पंचमेशोथलग्नेशोविषमस्थानगौयदा ॥
पुत्रजन्मप्रदौज्ञेयौ कन्यानां समराशिगौ ॥ २६ ॥

पुत्रवान् योग प्राप्त हुयेमें विशेष विचार है कि पंचमेश वा लग्नेश विषम स्थानमें हो तो पुत्र और सम राशिमें हो तो कन्या देताहै ॥ २६॥

युग्मराशिगते लग्ने यदातत्रशुभग्रहाः ॥
गर्भपत्यद्वयं वाच्यं दैवज्ञेन विपश्चिता ॥ २७ ॥

लग्न द्विस्वभाव राशि हो उसमें शुभग्रह हो तो चतुरज्योतिषीने गर्भमें दो बालक कहने ॥ २७॥

विषमोपगतो लग्नाच्छानिः पुत्रसुखप्रदः ॥
समभेयोपितांजन्मविशेषोजातकोक्तिवत् ॥ २८ ॥

लग्नसे शनि विषम स्थानमें पुत्र और समममें कन्या देता है विशेष विचार जातकोक्तही यहांभी जानना ॥ २८ ॥

विषमर्क्षे विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलग्नार्काः ॥
पुंजन्मकराः समभेषु योषितां नृराश्यंशाः ॥ २९ ॥

बृहस्पति चन्द्रमा लग्न और सूर्य्य विषम राशि विषम नवांशमें पुत्र और समराशि नवांश अर्थात् पुरुषराशि नवांशकोंमें कन्या देते हैं ॥ २९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ता० नी० भा० पञ्चमस्थानप्रश्ननिरूपणम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठस्थानप्रश्नः ।

रोगादयमुत्थास्यति नवेति लग्नं भिषग्धूनम् ॥
व्याधिर्दशमं रोगी हि तुर्यं भेषजमिहाहुराचार्य्याः ॥ १ ॥

रोगी मनुष्य रोगसे आराम होगा वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें लग्नसे वैद्य सप्तमसे रोग दशमसे रोगी चतुर्थस औषधी आचार्य्य कहते हैं ॥ १ ॥

क्रूरार्दिते विलग्ने वैद्यान्नगुणात्तदौषधाद्रोगः ॥
वृद्धिमुपयाति दशमे क्रूरैर्निजबुद्धितोप्यगुणः ॥ २ ॥

लग्न पापाक्रांत हो तो वैद्यसे गुण न होवे उसकी औषधिसे रोग बढेगा दशममें पापग्रह हो तो अपनीही चूक (गलती) से रोग बढे ॥ २ ॥

अस्ते च क्रूरयुते मांद्यान्मांद्यं तथौषधाद्बंधौ ॥
सौम्यैरेषु गतैरेतैररोगिता रोगिणो भवति ॥ ३ ॥

सप्तममें पाप ग्रह हों तो रोगमें रोग खडा होवे, चतुर्थमें हों तो औषधीसे रोग वृद्धि होवे. इन १ । १० । ७ । ४ स्थानोंमें शुभग्रह हों वा ये भाव बली हों तो नीरोगता होगी ॥ ३ ॥

लग्नेशेंद्वोः सौम्येत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम् ॥
वक्रे तु तत्र खेटे भूयोपि गदः समुपयाति ॥ ४ ॥

लग्नेश तथा चन्द्रमाका शुभग्रहसे इत्थशाल हो तो रोगनाश होवे ईसराफ हो वा वक्रगति हो तो फेर फेर रोग उत्पन्न होवे ॥ ४ ॥

भूमिस्थे लग्ननाथे शशिमुथशिले भवेन्मृत्युः ॥
लग्नस्थेरंध्रपतौ लग्नपशशि नाशिनाशे वा ॥ ५ ॥

लग्नेश चतुर्थ हो चंद्रमाके स. मुथशिली हो तो मृत्यु होवे, वा लग्नमें अष्टमेश और लग्नेश एवं चन्द्रमा अष्टम हों तौभी मृत्यु होवे ॥ ५ ॥

लग्नाधिपतिः सूर्य्यश्चंद्रः सप्तेशमुथशिलविधायी ॥
सप्तेशे षष्ठस्थे तन्मरणं रोगिणो वाच्यम् ॥ ६ ॥
लग्नेश चतुर्थ हो तथा चन्द्रमा सप्तमसे मुथशिली हो वा सप्तमेशसे छठा हो तो रोगीकी मृत्यु होगी ऐसा कहना ॥ ६ ॥

रंध्रेशे न विनष्टे नास्तमिते नापि केन्द्रस्थे ॥
लग्नेशस्यमुथशिले मृत्युःस्याद्रोगपृच्छायाम् ॥ ७ ॥
अष्टमेश अस्त वा नष्ट बली होकर केंद्रमें हो लग्नेशसे मुथशिल करता हो तो रोगप्रश्नमें मृत्यु होगी कहना ॥ ७ ॥

अथवातयोश्चकेन्द्रे मुथशिलतःक्रूरपीडितेमरणम् ॥
यदिकेन्द्रे क्रूरग्रहस्तदापिपीडाष्टमेशेपि ॥ ८ ॥
जो लग्नेश अष्टमेशका केंद्रमें मुथशिल हो क्रूर पीडितभी हो तो मृत्यु होवे जो केंद्रमें पापग्रह वा अष्टमेश हो तो रोगपीडा होवे ॥ ८ ॥

सूर्य्यद्वादशभागे प्रविष्टेलग्नेश्वरेप्येवम् ॥
तनुमृत्युभावनाथावन्योन्याश्रयगतौमरणम् ॥ ९ ॥
लग्नेश सूर्य्यके द्वादशांशमें हो तो मृत्यु होवे वा लग्नेश अष्टम अष्टमेश लग्नमें वा परस्पर दृष्ट हों तौभी मृत्यु होवे ॥ ९ ॥

लग्नेचरेचरोगीक्षणेक्षणेस्यादरुक् सरुक्चापि ॥
द्विशरीरे पररोगः स्थिरेगदस्यैकरूपत्वम् ॥ १० ॥
लग्न चरराशि हो तो क्षणमें सुखी क्षणमें दुःखी होतारहै, द्विस्वभाव हो तो एक रोगसे दूसरा रोग होवे, स्थिर हो तो आद्य अंतमें एकही रोग रहै॥ १०॥

शशिनो वक्रमुथशिले स्थिररोगोमंदमुथशिलेपूर्वम् ॥
मूत्रनिरोधाद्रोगोत्पत्तिर्ज्ञेयाकृतेप्रश्ने ॥ ११ ॥
चन्द्रमा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तो रोग स्थिर रहै, शनिसे मुथशिली हो तो अपूर्व रोग होवे तथा मूत्रके बंद होनेसे रोगोत्पत्ति होवे ॥ ११ ॥

अथ पृच्छायाः पूर्वं सप्ताहानिच विलोक्यचत्वारि ॥
यदितेषुशशांकरवी शुभयुतदृष्टौसदाशस्तम् ॥ १२ ॥

प्रश्नके पहिले ७ वा ४ दिनमें सूर्य्य चन्द्रमा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हों तो रोगीको शुभ होगा ॥ १२ ॥

मंदोयमथनवेति प्रश्नेलग्नेश्वरोथचंद्रोवा ॥
षष्ठेशमुथशिलीस्यादस्तमितोवातदामंदः ॥ १३ ॥

यह रोगी होगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चन्द्रमा षष्ठेशसे मुथशिली हों वा अस्तंगत हों तो रोगी होगा ॥ १३ ॥

स्वामिभृत्यचतुष्पदप्रश्ने ।

ईशोन्यो ममभवितानवेतिलग्नेश्वरेस्ययदिकेन्द्रे ॥
नोभवतिमुथशिलंषष्ठांत्यपतिभ्यां तदानान्यः॥ १४ ॥

मेरा और स्वामी होगा या नहीं अर्थात् और जगह नौकरी लगेगी वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें जो लग्नेशका केंद्रमें षष्ठेश तथा व्ययेशसे मुथशिल न हो तो और स्वामी नहीं होगा ॥ १४ ॥

वक्रीवान्येनसमंलग्नपतिः सहजनवमसंस्थेन ॥
कुरुते यदीत्थशालं तदान्यनाथो भवेत्प्रष्टुः ॥ १५ ॥

जो लग्नेश वक्री और किसी तृतीयनवमस्थानस्थ ग्रहसे इत्थशाली हो तो और स्वामी होगा ॥ १५ ॥

लग्नपतौकेन्द्रस्थे रिपुदृष्टयाक्रूरवीक्षितेसुखपे ॥
रविरश्मिगतेथभवेद्यावज्जीवंनचान्यपतिः ॥ १६ ॥

लग्नेश केन्द्रमें हो तथा चतुर्थेश पर पापग्रहकी शत्रुदृष्टि हो एवं लग्नेश अस्त हो तो जीवितपर्यंत और पति नहीं होगा ॥ १६ ॥

अयमीशोभद्रोमे पृच्छायां लग्नपस्यकंबूले ॥
स्वामीसएवभव्योद्यूनेशस्यचशुभोन्यशः ॥ १७ ॥

यही स्वामी अच्छा होगा वा अन्य ऐसे प्रश्नमें लग्नेश शुभ ग्रहसे कंबूली हो तो उसी स्वामीसे शुभ होगा, जो सप्तमेशका कम्बूल शुभ ग्रहसे हो तो अन्य स्वामीसे शुभ होगा ॥ १७ ॥

गृहभूमिस्थानानां चलनप्रश्ने पुरोक्त एवविधिः ॥
सम्यग्विचार्य्यवाच्यं शुभमशुभं पृच्छतःस्वधिया ॥ १८ ॥

गृहभूमि जगहके स्थिर रहने वा चलायमान होनेमें भी ऐसाही विचार अच्छे प्रकारसे करके अपनी बुद्धिसे शुभाशुभ प्रष्टाको कहना ॥ १८ ॥

भृत्यचतुष्पदलाभप्रश्नेलग्नेशशीतिमपष्ठे ॥
षष्ठेशमुथशिलो वा लग्नेपष्ठेश्वरोथतल्लाभः ॥ १९ ॥

भृत्यु तथा चौपायेके लाभमें लग्नेश एवं चन्द्रमा छठे हों वा षष्ठेशसे मुथशिली हों अथवा षष्ठेश लग्नमें हो तो उनका लाभ होगा ॥ १९ ॥

भृत्यस्यवाहनस्य च यद्वाप्रश्नेचलग्नलग्नपती ॥
अर्थीदातासप्तमसप्तपौतद्बलात्प्राप्तिः ॥ २० ॥

भृत्य और सवारीके प्रश्नमें लग्न और लग्नेश लेनेवाले तथा सप्तम और सप्तमेश देनेवाले, इनके बलाबलसे प्राप्ति अप्राप्ति कहनी. जैसे लग्नेशका सप्तमेशसे, सप्तमेशका लग्नेशसे, वा लग्नेश सप्तमेशका परस्पर मुथशिल वा संबंध हो तो भृत्य वाहनकी प्राप्ति, इनके ईसराफ वा असंबंधसे निर्बलतासे अप्राप्ति होगी ॥ २० ॥

अथांतरे कलहः ।

क्रूरःखचरोलग्ने विवादपृच्छासुजयातिविवादंतम् ॥
सर्वावस्थासुपरंनीचस्तेजयतिनाद्विषतः ॥ २१ ॥

विवादप्रश्नमें क्रूर ग्रह लग्नमें बलवान् हो तो विवादमें प्रष्टा जीतेगा जो नीच वा अस्तंगत हो तो विवादमें शत्रुसे जीत नहीं सकेगा ॥ २१ ॥

लग्नद्यूनेतुयदापरस्परंक्रूरयोर्झकटदृष्टी ॥
विवदेत्तद्वादियुगं तच्छुरिकाभ्यांप्रहरतितदैवम् ॥ २२ ॥

लग्न तथा सप्तममें क्रूरग्रह शत्रुदृष्टिदृष्ट होनेमें वादी प्रतिवादी परस्पर विवादमें छूरी आदि चलाय बैठेंगे ॥ २२ ॥

लग्नेद्यूनेचयदिक्रूरःखचरोविवादिनोनतदा ॥
कलहनिवृत्तिःकालेजयतिहिबलवान्गतबलंतु॥ २३ ॥

लग्नमें तथा सप्तममें पापग्रह हों तो लडनेवालोंका झगडा निवृत्त नहीं होवे

इनमें जो बलवान् हो वह निर्बलको दाबलेताहै यहा लग्न प्रष्टा सप्तम प्रतिवादी जानना ॥ २३ ॥

लग्नेशःसुतगःसौम्याःकेंद्रेसंधिर्नचान्यथा ॥
लग्नद्यूनेशषष्ठेशारित्वेप्यन्योन्यविग्रहः ॥ २४ ॥

पंचममें लग्नेश और केंद्रोंमें शुभग्रह हों तो वादी प्रतिवादियोंका मेल होगा अन्यथा न होगा. लग्न सप्तम छठे भावोंके स्वामी परस्पर तत्काल वा नैसर्गिक शत्रु हों तो कलह बढेगा ॥ २४ ॥

गृहमागतोनयदासौकिंबद्धः किमथवाहतः प्रश्ने ॥
मूर्तौक्रूरोयदिसनिहतोबद्धोथवापुरुषः ॥ २६ ॥

कलही वा कोई अन्य घरमें नहीं आया, मारागया वा कहीं बंधनमें पड-गया, ऐसे प्रश्नमें लग्नमें पाप ग्रह हो तो मारागया वा बंधनमें पडगया ॥ २५ ॥

त्रिकोणचतुरस्रास्तस्थितःपापग्रहोयदि ॥
ग्रहैर्निरीक्षितःपापैर्नूनंबंधनमादिशेत् ॥ २६ ॥

पापग्रह ९ । ५ । ८ । ७ में हों तथा लग्नेशकोभी पापग्रह देखे तो निश्चय बंधन होगया कहना ॥ २६ ॥

सप्तमगोष्टमगोवाचेत्क्रूरस्तद्धतोपिवाबद्धः ॥
मूर्तौचसप्तमेवायद्वालग्नेष्टमेपिभवेत् ॥ २७ ॥

सप्तम वा अष्टम पापग्रह हों तो हत वा बद्ध कहना और लग्नमें वा सप्तममें तथा लग्न और अष्टम पापग्रह युगपत् हों तौभी वही फल है ॥ २७ ॥

बद्धमोक्षे ।

बद्धोस्तितत्किंभवतीतिप्रश्नेविमुच्यतेसौखलमृत्युयोगे ॥
कदाविमुंचेदितिपृच्छ्यमानेशुभंकदाभाविचतैर्मृतिःस्यात्॥ २८ ॥

बँधाहुवा मनुष्य कैसा होगा कब छूटेगा, ऐसे प्रश्नमें जो मृत्युदायक योग कोईभी हो तो बंधनसे छूट जायगा. उक्त योगका परिणाम समय जब हो तब छूटनेका समय कहना, दीर्घायु योग हो तो नहीं छूटेगा वा बंधनहीमें मरजायगा ॥ २८ ॥

मुक्तिप्रश्नेयदाकेंद्रेकेंद्रेशाःस्युर्नमोक्षदाः ॥ तस्मिन्वर्षेथलग्ने
शःपातितःकेंद्रगेनच ॥ २९ ॥ संबधेप्सुःसचेत्क्रूरोमृतीशः
स्यात्तदामृतिः ॥ लग्नेशस्तामितिंबुस्थेकुजदृष्टेतदामृतिः ॥ ३० ॥

बद्धमोक्ष प्रश्नमें केंद्रेश केंद्रोंमें हों तो बंधनसे न छूटे, जो केंद्रगत पतित ग्रहसे संबंधी लग्नेश हो तो इसी वर्षमें छूटेगा और अष्टमेश क्रूर, लग्नेश क्रूर, क्रूरसे संबंधी हों तो मृत्यु होवे ॥ २९ ॥ ३० ॥

चन्द्रश्चांबुगपापेनमृत्युनाथेनयोगकृत् ॥
तदागुप्त्यांमृतिश्चेंद्रःकेंद्रेमंदयुगीक्षितः ॥ ३१ ॥

अष्टमेश पापग्रह चतुर्थ होकर चन्द्रमासे युक्त वा संबंधी इत्थशाली हो वा केंद्रगत चन्द्रमा शनिसे युक्त दृष्ट हो तो कैदहीमें मृत्यु होवे ॥ ३१ ॥

दीर्घपीडाथभौमेनयुग्दृष्टेबंधताडने ॥
दृश्यार्द्धेलग्नपश्चेत्स्याद्व्ययपेनेत्थशालनात् ॥ ३२ ॥

केंद्रगत चन्द्रमा मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तथा लग्नेशके दृश्यार्धमें व्ययेशसे इत्थशाली हो तो बंधनमें होगा और ताडन हो(बेत कुर्रा आदिकी लगें)॥ ३२॥

पलायतेतदाबद्धो व्ययगेलग्नगेपिवा ॥
तृतीयनवमस्वामीव्ययगोलग्नपेनच ॥
यदीत्थशालयोगेप्सुस्तदापिचपलायते ॥ ३३ ॥

लग्नेश व्ययभावमें हो तो बद्ध मनुष्य भाग जावे अथवा ३।९भावोंका स्वामी बारहवां होकर लग्नेशसे इत्थशाल चाहताहो तौभी भाग जायगा ॥ ३३ ॥

दृश्यार्द्धेंद्रुपचारेण चन्द्रोमुथशिलस्तदा ॥
बंधमोक्षस्त्रिधर्मेशःसग्रहःशीघ्रमोक्षकृत् ॥ ३४ ॥

लग्नेशके दृश्यार्द्धमें चन्द्रमा मुथशिली हो तो शीघ्र बद्धमोक्ष करताहै तथा तृतीयेश वा नवमेशसेभी चन्द्रमा मुथशिली हो तो शीघ्र बद्धमोक्ष करताहै॥ ३४॥

पतितेंदुस्त्रिधर्मस्थग्रहसंबंधकृत्तदा ॥
केंद्रस्थत्रिभवेशेनयोगेप्सुश्चेत्तदाचिरात् ॥ ३५ ॥

तीसरे वा नवम स्थानगत ग्रहसे क्षीण चन्द्रमा संबंधी हो ३ वा ११

भावका स्वामी जो केंद्रमें हो उसको मिलना चाहता हो तो बंधनसे शीघ्रही छूट जावे ॥ ३५ ॥

यावच्छुक्रोबलीलग्नेतावत्कर्त्ता बलाधिकः ॥ ३६ ॥
अस्तंगतेतनौशुक्रेबद्धमोक्षादिसंभवः ॥
म्रियतेयेनयोगेनतेनयोगेनमुच्यते ॥ ३७ ॥

शुक्र लग्नमें हो तो वह शुक्र गोचरमें जबलौं उस राशिमें रहे इतनेही बीच छूट जावे जो शुक्र लग्नमें अस्तंगत हो तो बद्धमोक्ष होना संभव है वा जिस योगसे मृत्यु होती है उससे बद्ध भी मोक्ष होताहै ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मेषेतुलेचशीघ्रंस्यात्कर्केनक्रेसकष्टता ॥
स्थिरेचिराद्विदेहस्थेमोक्षोमध्यमकालतः ॥ ३८ ॥

लग्नमें शुक्र १ । ७ का हो तो शीघ्र तथा ४ । १० का हो तो कष्टसे स्थिर राशिका हो तो बहुत दिनोंमें द्विस्वभावका हो तो मध्यकालमें छूटे शुक्र न हो तो लग्नहीसे यह फल कहना ॥ ३८ ॥

रोगिप्रश्ने विशेषः ।

विलग्नेषष्ठपःपापोजन्मराशिंनिरीक्षते ॥
रोगिणस्तस्यमरणं निश्चयेनवदेद्बुधः ॥ ३९ ॥

षष्ठेश पापग्रह लग्नमें होकर जन्मराशिको देखे तो रोगीकी मृत्यु निश्चय पंडितने कहनी ॥ ३९ ॥

चतुर्थाष्टमगेचन्द्रेपापमध्यगते पिवा ॥
मृतिःस्याद्बलसंयुक्तेसौम्यदृष्ट्याचिरात्सुखम् ॥ ४० ॥

चन्द्रमा ४ वा ८ में हो तथा पापग्रहोंके बीच हो तो रोगीकी मृत्यु हो वे जो उसे बली शुभग्रह देखें तो शीघ्र सुखी होजावे ॥ ४० ॥

विधौलग्नेस्मरेभानौरोगीयातियमालयम् ॥
प्रश्नेक्रूरग्रहेलग्नेरोगवृद्धिश्चिकित्सकात् ॥ ४१ ॥

चन्द्रमा लग्नमें सूर्य्य सप्तम हों तो रोगी यमालय पहुँचे जो प्रश्नम पापग्रह लग्नमें हो तो वैद्यसे रोग बढे ॥ ४१ ॥

तथालग्नगतेसौम्येवैद्योक्तममृतंवचः ॥
लग्नंवैद्योद्युनंव्याधिःखंरोगीतुर्य्यमौषधम् ॥ ४२ ॥

जो लग्नमें शुभग्रह हो तो वैद्यका वचन अमृततुल्य होवे, लग्नसे वैद्य सप्तमसे रोग दशमसे रोगी चतुर्थसे औषधी जाननी ॥ ४२ ॥

रोगिणोभिषजोमैत्रीमैत्रेभेषजरोगयोः ॥
व्याधेरुपशमोवान्यःप्रकोपःशात्रवेतयोः ॥ ४३ ॥

रोगी और वैद्य अर्थात् दशमेश लग्नेशकी तथा औषधी और रोग अर्थात् ४।७ भावोंके स्वामी परस्पर मित्र हों वा अन्योन्य इत्थशाली हों तो रोग शांत होवे, जो उक्तग्रहोंकी परस्पर शत्रुता वा इसराफ हो तो रोग औरभी कोपको प्राप्त होगा ॥ ४३ ॥

लग्ननाथेचसबलेकेन्द्रसंस्थेशुभग्रहे ॥
उच्चगेवात्रिकोणेवारोगीजीवातिनिश्चयम् ॥ ४४ ॥

लग्नेश बलवान् हो केंद्रमें शुभग्रह उच्चका हो अथवा त्रिकोणमें हो तो निश्चय रोगसे बचजायगा ॥ ४४ ॥

एकःशुभोबलीलग्नेत्रायतेरोगपीडितम् ॥
सौम्याधर्मारिलाभस्थास्तृतीयस्थागदापहाः ॥ ४५ ॥

एकभी बलवान् शुभग्रह लग्नमें हो तो रोगीकी रक्षा करता है, शुभग्रह ९।६।११।३ स्थानोंमें हो तो रोग नाश करते हैं ॥ ४५ ॥

देवदोषज्ञानम् ।

वक्तुचंकद्वादशेषष्ठेलग्नात्पापग्रहोयदि ॥
हृतांगदेजलैश्शस्त्रैस्तस्यदोषःकुलोद्भवः ॥ ४६ ॥

रोगीके वा संततिबाधादिमें देवदोष ज्ञानमें लग्नसे ३। ९। १२। ६ स्थानोंमें जो पापग्रह हों तो रोगी वा जलशस्त्रादिसे पीडितको अपने कुलपूजित देवताका दोष कहना. उसके पूजनेसे नीरोग होगा ॥ ४६ ॥

देवस्यमेषेगविपितृपक्षआकाशदेव्यामिथुनेथकर्के ॥ स्याच्छाकिनी क्षेत्रपतिस्तुसिंहेस्त्रियांकुलाहाचतुलेतुमातुः ॥ ४७ ॥

नागस्त्वलेयक्षपतिर्धनुष्येनक्रेंबुदेव्यास्तुघटेतुयक्षी ॥ झषेकु-
लोपासितदैवतस्यदोषंभवेद्धर्मबहिष्कृताय ॥ ४८ ॥

जो मनुष्य धर्मी नहीं है उन्हें ये दोष लगते हैं कि मेष लग्न प्रश्नका हो तो अपना इष्ट देवताका एवं वृषसे पितरोंका, मिथुनसे आकाशदेवी मातृका परी आदियोंका, कर्कसे शाकिनी डाकिनी आदि, सिंहसे भूमिपाल देवता, कन्यासे कुलपूजित देवता, तुलासे मातुलपक्षका देवता, वृश्चिकसे नाग देवता, धनसे यक्षपति महादेव नारसिंह भैरव आदि मकरसे जलदेवी, कुंभसे यक्षिणी, पिशाच आदि, मीनसे कुलदेवताका दोष जानना ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

प्रेताश्चराहौपितरः सुरेज्येचंद्रेंबुदेव्यास्तपनेपिदेव्यः ॥
स्वगोत्रदेव्यश्चशनौबुधेच भवंतिभूता व्ययरंध्रसंस्थे ॥ ४९ ॥

राहु ८ । १२ स्थानोंमें हो तो प्रेतदोष, तथा बृहस्पति हो तो पितरोंका, चंद्रमा हो तो जलदेवी, सूर्य्य हो तो देवी, शनि बुधसे अपने कुलकी पूज्य देवीका दोष कहना ॥ ४९ ॥

शाकिन्यआरेभृगुजेंबुदेव्योगृह्णंतिमर्त्यंविमुखंमुकुंदात् ॥
स्वर्क्षोच्चगेर्वीर्य्ययुतेचसाध्याश्चंद्रेचनीचेविबलेनसाध्याः ॥ ५० ॥

मंगल ८ । १२ में हो तो शाकिनी डाकिनी और शुक्र हो तो जलदेवीका दोष होवे. जो मनुष्य ईश्वरसे विमुख हैं उनको ये दोष होतेहैं उक्तग्रह जिससे दोष ज्ञात भया वह यदि अपनी राशि वा उच्चादिमें हो तो उपायोंसे दोष साध्य होगा. जो चन्द्रमा बृहस्पति निर्बल हों तो असाध्य जानना ॥ ५० ॥

केंद्रस्थैर्बलिभिः पापैरसाध्यादेवतागणाः ॥
सौम्यग्रहैश्चकेंद्रस्थैःसाध्यामंत्रस्तवार्चनैः ॥ ५१ ॥

केंद्रमें बलवान् पापग्रह हों तो वे देवता असाध्य और शुभ ग्रह केंद्रमें हों तो मंत्र स्तोत्र पूजनादिसे साध्य जानना ॥ ५१ ॥

कंटकाष्टत्रिकोणस्थाशुभाऽपध्वयेशशी ॥
लग्नेचशुभसंदृष्टेरोगीरोगाद्विमुच्यते ॥ ५२ ॥

केंद्र त्रिकोण और अष्टममें शुभग्रह तथा चंद्रमा उपचयमें हों और लग्नको शुभग्रह देखें तो रोगी रोगसे छूटे ॥ ५२ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां षष्ठभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ६ ॥

अथ सप्तमस्थानप्रश्नः ।

स्त्रीलाभस्यप्रश्नेऽस्मराधिपेलग्नपेनशशिनावा ॥
कृतमुथशिल्येयुवत्याअयाचितायाभवेल्लाभः ॥ १ ॥

स्त्रीलाभके प्रश्नमें सप्तमेशका लग्नेश वा चंद्रमासे इत्थशाल हो तो स्त्री विना मांगेभी मिले ॥ १ ॥

यदिलग्नपोविधुर्वाद्यूनेतदयाचितांस्त्रियंलभते ॥
लग्नेशान्मूसरिफेचंद्रस्तपमुथशिले स्वयंलाभः ॥ २ ॥

जो लग्नेश वा बलवान् चंद्रमा सप्तम हो तथा लग्नेशका सप्तम भावसे मूसरिफ और चंद्रमाका सप्तमेशसे मुथशिल हो तौ भी विना ही प्रयास स्त्री-लाभ होवे ॥ २ ॥

येनसमंमुथशिलंतत्रविनष्टेचपापयुतदृष्टे ॥
निकटीभूतंतदाकिलविनश्यतिस्त्रीगतंकार्य्यम् ॥ ३ ॥

जिसके साथ मुथशिल हो वह नष्ट वा पापयुक्त वा दृष्ट हो तथा सप्तममें नष्टबली वा पापग्रह हो तो स्त्रीप्राप्ति संबंधिकार्य्य समीप भी आयगया हो तौभी नष्ट होजायगा ॥ ३ ॥

पापेत्ररंध्रनाथेस्त्रीजातेरेवविघटतेकार्य्यम् ॥ सहजपतौ
भ्रातृभ्यस्तुर्य्येशे पितृभ्यएवनान्येभ्यः ॥ सौम्यकृत-
युक्तिदृग्भ्यांपूर्वोक्तस्थानतःशुभंवाच्यम् ॥ ४ ॥

सप्तममें पापग्रह वा अष्टमेश हो तो स्त्रीसंबंधी कार्य्य, तृतीयेशसे संबंध हो तो भाइयोंसे, चतुर्थेशसे हो तो पितासे ऐसे और जिस भावेशका संबंध हो उसके द्वारा कार्यहानि होवे जो सप्तम वा सप्तमेशपर शुभग्रहका योग वा दृष्टि हो तो उक्त संबंधवान्से स्त्रीलाभ होवे ॥ ४ ॥

जामित्रधनोपचयोपगतःशशीजीववीक्षितः ॥
कुरुते स्त्रीलाभंपापयुतोवलोकितोवापितन्नाशम् ॥ ५ ॥

सप्तम द्वितीय और उपचय ३ । ६ । १० । ११ स्थानोंमें चंद्रमा जो बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो स्त्रीलाभ, पापयुक्त दृष्ट हो तो स्त्रीहानि करताहै ॥ ५ ॥

दुश्चिक्यतनयसप्तमलाभगतः शशीविलग्नर्क्षात् ॥
गुरुरविसौम्यैर्दृष्टोविवाहदःस्यात्तथासौम्याः ॥ ६ ॥

लग्नसे चंद्रमा ३।५।७।११ स्थानमें बृहस्पति सूर्य्य बुधसे दृष्ट हो तो विवाह देताहै तथा शुभग्रह भी ऐसे होनेमें यही फल देते हैं ॥ ६ ॥

केंद्रत्रिकोणसंस्थाः सप्तमभवनंशुभग्रहस्ययदि ॥
शय्यायांलभतेसोपापर्क्षेविगतरूपाच ॥ ७ ॥

केंद्र १।४।७। १० त्रिकोण ९ । ५ और सप्तममें शुभग्रहकी राशि तथा शुभग्रह हो तो शय्यामें स्त्रीप्राप्ति होवे, पापराशि उक्त स्थानोंमें हो तो मिले तो सही परंतु कुरूपा मिले ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीस्नेहः ।

प्रीतिस्थानप्रश्नेस्मरपतिलग्नेशमुथाशिलेस्नेहः ॥
सप्तकटककः शत्रुदृशाशशिकंबूलेतुसापिशुभा ॥ ८ ॥

स्त्रीकी प्रीतिके प्रश्नमें सप्तमेश लग्नेशका मुथशिल हो तो उससे प्रीति शत्रु-दृष्टि उनकी हो तो उससे कलह और चंद्रमा कंबूल भी करता हो तो स्त्री सरल स्वभाव होगी ॥ ८ ॥

यदिमंदोलग्नेशः केंद्रेचस्यात्तदाबलीप्रष्टा ॥
अस्तेश्वरेचमंदेकेंद्रेप्रतिवादिनोस्तिबलम् ॥ ९ ॥

जो लग्नेश और शनि केंद्रमें हों तो स्त्रीविवादमें पूछनेवाला बली रहेगा. जो सप्तमेश और शनि केंद्रमें हो तो प्रतिवादी बली रहेगा ॥ ९ ॥

उभयोरेकस्थितयोर्ज्ञातव्यासप्तकटकंतयोः प्रीतिः ॥
सूर्य्येनशुभंविबलेनरस्यशुक्रेतयोर्द्वितयोः ॥ १० ॥

लग्नेश सप्तमेश पापयुत एकही स्थानमें हों तो स्त्री पुरुष लडाई उपरान्त प्रीतिमान् होंगे जो सूर्य्य युक्त हों तो कलहमात्र होगा जो निर्बल उक्त योगकर्त्ता हों तो दोनहूं रूसही रहेंगे ॥ १० ॥

रुष्टागमने ।

ममगृहिणीरुष्टापुनरेष्यतिवाथभूम्यधःस्थरवौ॥
भृगुपरिगतेचशुक्रेनैतिपुनर्वक्रितेभ्यैति ॥ ११ ॥

मेरी स्त्री रुष्ट होकर गयी फिर आवेगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश चतुर्थ-पर्यंत सूर्य्य वा शुक्र हो तो नहीं आवेगी, शुक्र वक्री हो तो आवेगी, लग्नसे चतुर्थपर्यंत स्त्रीके हर्षस्थान हैं, चतुर्थसे सप्तमपर्यंत पुरुषके हर्षस्थान, इनमें स्त्री पुरुष ग्रहोंके वशसे फल कहना ॥ ११ ॥

सूर्य्यान्निर्गतशुक्रेवक्रेपिसमेतिचान्यथारुष्टा ॥
क्षीणेंदौबहुदिवसैःपूर्णविधौचद्रुतमुपैति ॥ १२ ॥

शुक्र समीपही उदय भयाहो अथवा वक्र हो तो रुष्ट स्त्री आपही लौट आवेगी, जो क्षीण चंद्रमा इससे संबंध करे तो बहुत दिनोंमें, पूर्ण चंद्रमा संबंध करे तो शीघ्रही आवेगी ॥ १२ ॥

अथ कन्यापरीक्षा ।

एषाकुमारिकाकिलनिर्दोषाकिंनवेतिपृच्छायाम् ॥
लग्नेस्थिरेस्थिरर्क्षेलग्नपशशिनोश्चनिर्दोषा ॥ १३ ॥

यह कन्या निर्दोष होगी वा कैसी इस प्रश्नमें लग्न तथा लग्नेश और चन्द्रमा स्थिर राशियोंमें हो तो निर्दोष होगी ॥ १३ ॥

चरराशिगतैरेतैरियंकुमार्य्यपिचजातदोषास्यात् ॥
द्विशरीरस्थेचंद्रेचरलग्नेस्वल्पदोषास्यात् ॥ १४ ॥

जो लग्न लग्नेश और चन्द्रमा चरराशिमें हों तो कन्या सदोषा और चं-न्द्रमा द्विशरीर राशिमें लग्न चरराशिमें हो तो अल्पदोषा होगी ॥ १४ ॥

शनिभौमावेकर्क्षेस्थिरवर्जेतत्परेणगुप्तमियम् ॥
रमिताशनिचंद्रमसोर्लग्नगयोःप्रकटमुपभुक्ता ॥ १५ ॥

जो शनि मंगल एक स्थानमें स्थिरराशिवर्जित हों तो यह कन्या किसीने गुप्त रमीहै, जो शनि चंद्रमा लग्नमें हों तो प्रकट भोगी है ॥ १५ ॥

यदिभौमशनीकेंद्रेविधुदृष्टौवृश्चिकेथशुक्रः स्यात् ॥
तद्द्रेष्काणेऽथतदानिर्भ्रांतंजातदोषैषा ॥ १६ ॥

जो मंगल शनि केंद्रमें चन्द्रमासे दृष्ट हों अथवा शुक्र वृश्चिकका वा वृश्चिक द्रेष्काणमें हो तो निस्संदेह सदोषा होगी ॥ १६ ॥

अथ प्रसूतिज्ञानम् ॥

एषाकिलप्रसूतासितेघटेज्ञेहरौचनोसूता ॥
अनयोरलिवृषगतयोः सूतानारीपरिज्ञेया ॥ १७ ॥

यह स्त्री प्रसूती हुई वा नहीं ऐसे प्रश्नमें जो शुक्र कुंभका वा बुध सिंहका हो तो प्रसूती नहीं भई, जो शुक्र वृश्चिकका वा बुध वृषका हों तो प्रसूती भई है जानली ॥ १७ ॥

भौमबुधशुक्रचंद्राद्विशरीरेचापवर्जितेचेत्स्युः ॥
अग्रेस्तितत्प्रसूतिश्चापेनाग्रेनपृष्ठतः सूता ॥ १८ ॥

मंगल बुध शुक्र और चन्द्रमा धनरहित द्विस्वभाव राशियोंमें हो तो प्रसूति आगे होगई धनका हो तो प्रसूति हुई न होगी ॥ १८ ॥

क्रूरश्चेच्चरराशौपरतः सूतास्थिरेतुनिजपत्युः ॥
मिश्रेतुमिश्रसूतांजातकसंदेहपृच्छायाम् ॥ १९ ॥

प्रसूतीके संदेहमें लग्नेश वा पंचमेश पापग्रह चरराशिमें हो तो परपुरुषसे स्थिर राशिमें हों तो अपने पतिसे प्रसूति होगी. लग्नेश वा पंचमेश पापग्रहसे मुथशिली हो तो भी परपुरुषसे जानना, मिश्रित हो तो व्यभिचारिणी कहना शुभग्रह योग दृष्टि वा मुथशिलसे अपने पतिसे गर्भ जानना ॥ १९ ॥

अथ पातिव्रत्यपरीक्षा ।

कुटिलासतीयमथवेतिलग्नपतिश्चंद्रमाश्चभौमेन ॥
एकांशेमुथशिलकृत्तथैकभवनेभजत्यन्यम् ॥ २० ॥

यह स्त्री पतिव्रता होगी वा नहीं, इस प्रश्नमें लग्नेश तथा चन्द्रमासे मंगल एकांश समीप मुथशिली हो तो परपुरुषरता होगी ॥ २० ॥

यदिनिजगृहगोभौमस्तदान्यदेशं प्रयातिजारकृते ॥
रविणेतिमुथशिलेसत्युपभुक्ताराजपुरुषेण ॥ २१ ॥

जो लग्नेश चन्द्रमासे मुथशिली मंगल अपनी राशिमें हो तो जारके साथ परदेश चली जायगी, जो सूर्यसे मुथशिल उनका हो तो स्त्री राजकीय पुरुषने रमी है ॥ २१ ॥

सौम्येनलेखकवणिङ्निजभेशुक्रेणयोषदवैश्वस्त्री ॥
एतैर्योगैरसतीविपरीतेसुचरितेतिविज्ञेयम् ॥ २२ ॥

पूर्वोक्तप्रकार मंगल बुधसे इत्थशाली हो तो लिखनेवालेसे वा बनियेंसे रमी. जो शुक्रसे हो तो स्त्री समान पुरुषने भोगी है ॥ २२ ॥

लग्नपतिनाथशशिनामूसरिफेभूसुतेभवेज्जारः ॥
त्यक्तःपुनर्गुरुदृशापुत्रभयाद्भानुदृशाचराजभयात् ॥ २३ ॥

लग्नेश वा चन्द्रमासे मंगलका मूसरिफ हो तो जाररता होवै जो उसपर बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो पुत्रके भयसे सूर्य्यकी दृष्टि हो तो राजभयसे जारका त्यागकरे ॥ २३ ॥

सितदृष्ट्यापरनारीभयातिसितज्ञैकराशिगतदृष्ट्या ॥
जारस्यस्थविरत्वाल्लज्जितात्यजतिजारंसा ॥ २४ ॥

जो उक्त मंगलपर शुक्रकी दृष्टि हो तो जारके स्त्रीके भयसे स्त्री जारको त्यागे. जो शुक्र बुधकी एकराशि दृष्टि हो तो जारके बूढे होनेसे लज्जा मानकर स्त्री जारको छोड देवे ॥ २४ ॥

ग्रन्थांतरेसुरतप्रश्नाः ।

शुभेत्थशालेहिमगौचतुष्टयेसौख्यातिरेकःसविलासहासः ॥
क्रूरेत्थशालेहिमगौसरोषःक्रूरान्वितेभूत्कलहोनृवध्वोः ॥ २५ ॥

चन्द्रमा केंद्रमें शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो संभोग विलासहासादियुक्त और पापग्रहसे इत्थशाली हो तो कोपसहित होवे. जो चन्द्रमा पापयुक्त हो तो स्त्री पुरुष कलही होवें ॥ २५ ॥

पीडाथवासीत्सुरतेयुवत्यारजोयथास्तर्क्षमुपैतितद्वत् ॥
लग्नेसुरेज्येभृगुजेकलत्रेतुर्य्येहिमांशौसविलासहासः ॥ २६ ॥

जो पापग्रह सप्तम हो तो सुरतमें स्त्रीको क्लेश रजोदोषादिपीडासे होवे, लग्नमें बृहस्पति सप्तम शुक्र चतुर्थ चंद्रमा हो तो सुरत विलासहाससे होवे, जैसा सप्तम स्थान हो उसके अनुसार सुरत कहना ॥ २६ ॥

शुभग्रहोत्थेचकंबूलयोगेयुतोरजःपुष्पसुगंधियुक्तम् ॥
स्वर्क्षोच्चगेहर्म्यरतंनिगद्यंस्थितेद्विदेहेवनितास्वकीया ॥ २७ ॥

शुभग्रहोंका कंबूल योग लग्नेश वा सप्तमेशसे हो तो रजपुष्पकी सुगंधि युक्त पाप कंबूलसे दुर्गंध होगा, युक्त ग्रह स्वराशि वा उच्चमें हो तो अच्छे घरमें अन्यथा सामान्य स्थानमें तथा नीचादिमें होनेसे मार्ग ऊपर कंटकादि-प्राय स्थानमें सुरत हो, तथा द्विस्वभाव राशिमें हो तो अपनी स्त्रीसे स्थिर हो तो वैश्यादिसे संजोग कहना ॥ २७ ॥

चरोदयेसारमतेपरस्त्रीकेंद्रेशनौसासरजादिवारात्रिम् ॥
निशोदयेरात्रिखगेचरात्रौदिवानिशंतद्विदलेद्विखेटयोः ॥ २८ ॥

चरराशि लग्नमें हो तो परस्त्रीसे भोग होवे, शनि केंद्रमें हो तो रजोवतीसे होवे, लग्न दिवाबली हो तो दिनमें रात्रिबली हो तो रात्रिमें और संध्याबलीसे संध्या कालमें द्विस्वभावसे दिन तथा रात्रिमेंभी सुरत कहना ॥ २८ ॥

इति श्रीमहीधर०नी ०प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां सप्तमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ७ ॥

अथाष्टमस्थानप्रश्नः ।

नृपसंग्रामप्रश्नेविलग्नलग्नेशसंस्थितात्खेटात् ॥
शशिमूसरिफात्प्रष्टास्तास्तपसंस्थेंदुमुथाशिलाच्छत्रुः ॥ १ ॥

राजाके संग्रामप्रश्नमें लग्न तथा लग्नेश प्राप्त ग्रहसे चंद्रमाके मूसरिफादि होनेमें और सप्तम सप्तमेशके चन्द्र मुथशिलसे शत्रुका जय पराजय कहना लग्न लग्नेश संबंधी शुभयोगमें अपना जय सप्तम सप्तमेश संबंधीसे शत्रुजय इत्यादि ॥ १ ॥

अथवाशनिकुजजीवाःशीघ्रेभ्योबलयुताउपरिचराः ॥
बुधासितचंद्रास्तेभ्यश्चदुर्बलाधश्चराश्चसंचिंत्याः ॥ २ ॥

अथवा शनि मंगल बृहस्पति बलवान् अधिकांश तथा बुध शुक्र चन्द्रमा उनसे हीनबली अल्पांश हों अर्थात् "शीघ्रोल्पभागे घनभागमंदे" इत्यादि इत्थशाल हो तो शत्रुसे जय इससे विपरीत ईसराफ हो तो शत्रुकी जय होगी ॥ २॥

लग्नपनावस्तपतेःषट्रिंहोथमुथाशिले द्वयोःस्नेहः ॥
वर्गद्वयमध्याधःपतितःसोन्येन बद्धःस्यात् ॥ ३ ॥

लग्नेश सप्तमेशकी द्रेष्काण दृष्टिसे मुथशिली हो तो अन्योन्य स्नेह हो जावे, जो छठे वा बारहवें हों तो शत्रुको कोई अन्य बांध लेवे ॥ ३ ॥

वर्गद्वयाधिपानांमूसरिफेऽस्तंगतेनरणदैर्घ्यम् ॥
लग्नस्वामिनिमंदेकंबूलऽपरिगेजयःप्रष्टुः ॥ ४ ॥

योद्धा प्रतियोद्धाके वर्गस्वामी मूसरिफी तथा अस्तंगत हो तो दीर्घरण नहीं होणा, लग्नेश मंद अधिकांश और सप्तमेश शीघ्र स्वल्पांश कंबूली हो तो प्रष्टाकी जय होवे ॥ ४ ॥

एवंगुणेतुतस्मिन्विप्रविनष्टेस्तपतितनीचस्थे ॥
केंद्रेस्तेवास्तपतौप्रष्टुर्हानिःप्रवक्तव्या ॥ ५ ॥

जो मंदग्रह अधिकांश शीघ्र अल्पांश चन्द्रमासे मुथाशिली अस्तंगत नीचगत हो. वा सप्तमेश केंद्रमें इसी प्रकार अस्त वा नीचगत हो तो रणमें प्रष्टाकी हानि कहनी ॥ ५ ॥

लग्नादधःशुभेसत्युपरिचमंदेशुभःसहायःस्यात् ॥
लग्नपतौरंध्रस्थेरंध्रपमुथशिलेहातिःप्रष्टुः ॥ ६ ॥

लग्नके अधः अर्थात् दशमसे लग्नपर्यंत शुभग्रह और लग्नसे ऊपर १ से ४ स्थान पर्यंत शनि हो तो युद्धमें सहाय अच्छा मिलेगा. जो लग्नेश अष्टम हो वा अष्टमेशसे मुथाशिली हो तो प्रष्टा हारेगा ॥ ६ ॥

लग्नेशेधनसंस्थेधनेशकृतमुथाशिलेरिपोर्नाशः ॥
लग्नेशदशमपत्योर्मुथाशिलतः पृच्छकस्यजयोवीर्ये ॥ ७ ॥

सप्तमेश धन स्थानमें, धनेशसे मुथशिली हो तो शत्रुनाश होवे, लग्नेश दशमेशका मुथाशिल हो बलीभी हों तो शत्रुसे जय होवे ॥ ७ ॥

तुर्य्यास्तपयोरेवंशत्रोर्योगेजयोज्ञेयः ॥
उभयवर्गेपि केंद्रेतत्पतिकृतमुथशिलेबलंज्ञेयम् ॥ ८ ॥

सप्तमेश चतुर्थेशका मुथशिल हो वा योग हो तो शत्रुकी जय हो, दोनोंके वर्गस्वामीमें जो केंद्रमें स्थानेशसे मुथशिली हो उसका पक्ष बलवान् रहेगा ॥ ८ ॥

चरराशौसबलत्वंजित्वाप्रांतेविनाशस्तु ॥
लग्नपतावंत्यस्थेप्रष्टानश्यतिपरास्तपेषष्ठे ॥ ९ ॥

जिसका वर्गेश चरराशिमें बलवान् हो वह प्रथम शत्रुको जीतकर आपभी क्षय हो जायगा, जो लग्नेश बारहवां हो तो प्रश्न नष्ट होगा. जो सप्तमेश छठा हो तो शत्रुनाश होगा ॥ ९ ॥

खपतौलग्नेप्रष्टुस्तुर्य्येशेस्तेरिपोः सहायबलम् ॥
यन्मुथशिलौरवींदूतस्यबलंमूसरिफेहानिः ॥ १० ॥

दशमेश लग्नमें वा चतुर्थेश छठा हो तो शत्रुकी सेना अपनी सहाय करे सूर्य्य चन्द्रमा मुथशिली वा मूसरिफी जिसके वर्गेशसे हों उसकी सेनाकी हानि होवे ॥ १० ॥

परचक्रागमपृच्छा ग्रंथांतरे ।

मार्गान्निवर्त्तते शत्रुः पापैः शत्रुगृहाश्रितैः ॥
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्त्तते ॥ ११ ॥

शत्रुके आगमप्रश्नमें पापग्रह छठे हों तो शत्रु मार्गसे हट जावेगा जो चतुर्थमें पापग्रह हो तो शत्रु पहुंचभी गया हो तोभी भागकर हटजायगा ॥ ११ ॥

झषालिकुंभकर्कंटरसातलेयदास्थिताः ॥
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायते ॥ १२ ॥

चतुर्थ स्थानमें १२।८।११।४ राशि हों तो शत्रुकी हार होवे और चतुष्पदों सहित वा उनकी सवारीमें भाग जावे ॥ १२ ॥

मेषधनुःसिंहवृषायद्युदगस्थाभवंति हिबुकेवा ॥
शत्रोर्निवर्त्तनकराग्रहयुक्तावावियुक्तावा ॥ १३ ॥

लग्न वा चतुर्थमें १ । ९ । ५ । २ राशी ग्रहसहित वा रहित हों तो शत्रु लौट जावे ॥ १३ ॥

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवनस्थौ ॥
गुरुबुधशुक्राहिबुकेयदाशीघ्रमायाति ॥ १४ ॥

जो सूर्य्य चन्द्रमा चतुर्थ हों तो शत्रुसेना नहीं आवेगी, जो बृहस्पति बुध शुक्र चतुर्थ हों तो शत्रुसेना शीघ्रही आवेगी ॥ १४ ॥

स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेस्थिते गमागमौनैववदेत्तुपृच्छतः॥
त्रिपंचषष्ठारिपुसंगमायपापाश्चतुर्थाविनिवर्त्तनाय ॥ १५ ॥

स्थिर राशि लग्नमें बृहस्पति और शनि हों तो गमन तथा आगमनकी प्रष्टाको न होगा कहना, पापग्रह ३ । ५ । ६ स्थानोंमें हो तो शत्रुसे संगम होगा, चतुर्थमें पाप हों तो शत्रु हट जायगा ॥ १५ ॥

दशमोदयसप्तमगाःसौम्यानगराधिपस्यविजयकराः ॥
आरार्किज्ञगुरुसिताःप्रभंगदाविजयदानवमे ॥ १६ ॥

शुभ ग्रह १० । १ । ७ स्थानोंमें नगरेशकी जय करते हैं और नवममें मंगल शनि उसकी हार बुध बृहस्पति शुक्र जीत करते हैं ॥ १६ ॥

उदयर्क्षाच्चन्द्रर्क्षंभवतिचयावद्दिनैश्चतावद्भिः ॥
आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् ॥ १७ ॥

लग्नसे चन्द्रमा जितने राशिपर हो उतने दिनोंमें शत्रु आवे यदि उनके बीचमें कोई ग्रह न हो ॥ १७ ॥

जयपराजये।

दैत्येज्यवाचस्पतिसोमपुत्रैरेकर्क्षगैर्लग्नगतैर्बलाढ्यैः ॥
द्वाभ्यामथज्येभृगुजेथलग्नेहन्याद्रणेयायिनृपंपुरेशः ॥ १८ ॥

शुक्र बृहस्पति और चन्द्रमा एक राशिमें हों विशेषतः बलवान् वा लग्नगत दोनहूं हों वा बृहस्पति शुक्रमें एकभी हो तो जानेवाला राजाको पुर वा किलेमें बैठा राजा जीते ॥ १८ ॥

सूर्य्येंदुभौमार्कजसैंहिकेयैःसर्वैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेवलग्नगैः ॥
हन्यात्तदास्थायिनमाशुयायीद्यूनास्थितैर्यायिनृपंपुरेशः ॥१९॥

सूर्य्य चन्द्रमा मंगल शनि राहु सभी वा इनमेंसे तीन लग्नमें हों तो अपने स्थानास्थित राजाको गमन करनेवाला राजा मारे, जो उक्त ग्रह सप्तम हों तो स्थानास्थित राजा गमन करनेवालेको मारे ॥ १९ ॥

शुक्रेज्यशीतांशुबुधाःसुरेज्यैःसर्वैस्त्रिभिर्घ्नूनगतैर्बलाढ्यैः ॥
हन्याद्रणेस्थायिनमाशुयायीसुखास्पदस्थैश्चशुभैःसुसंधिः ॥ २० ॥

शुक्र बृहस्पति चन्द्रमा बुध सभी बृहस्पति सहित उक्तोंमेंसे तीन शुभग्रह बलवान् तथा सप्तममें हो तो जानेवाला स्थानस्थ राजाको रणमें मारे, जो उक्त ग्रह चतुर्थ हो तो शीघ्र मिलाप होजावे ॥ २० ॥

कुजेत्थशालेहिमगौविलग्नेबन्धौचमृत्युर्युधिनागरस्य ॥
भौमेत्थशालेचविधौकलत्रेबन्धंमृतिंवालभतेत्रयायी ॥ २१ ॥

चन्द्रमा लग्न वा चतुर्थमें मंगलसे इत्थशाली हो तो युद्धमें स्थायी राजाकी मृत्यु होवे, जो ऐसेही चन्द्रमा सप्तम हो तो यायी राजाका मृत्यु वा बंधन होवे, स्थाई अपने किलामें बैठाहै यायी दूसरेपर जाताहै, ये संज्ञा हैं ॥ २१ ॥

लग्नेशजामित्रपयोश्चमध्येभवेद्ग्रहोयःस्वगृहोच्चसंस्थः ॥
तद्वर्गमर्त्यान्नृपयोश्चसंधिर्ज्ञेयोबुधेलेखकपंडिताभ्याम् ॥ २२ ॥

लग्नेश सप्तमेशसे जो ग्रह स्वगृह वा उच्चमें हो तो उसके पक्षमें मनुष्योंसे संधि (मैत्री) करावेगा, यदि बुध स्वगृहोच्चमें हो तो लेखक या पंडितोंके द्वारा मैत्री होवे, "वर्ग सू० च० राजा, मं० सेनापति, बुध युवराज, बृ०शु० मन्त्री, श० दास" ये जानने ॥ २२ ॥

क्रूरेकलत्रेत्दुदयेशुभग्रहोयच्छेद्धनंयायिनृपायनागरः ॥
विपर्ययाद्यायिनृपःपुरेश्वरंदुर्गाद्विनिष्कास्यददातिवास्पदम्॥ २३ ॥

सप्तममें पाप लग्नमें शुभग्रह हो तो यायी राजाको स्थायीराजा धन देके शांत करावे, जो लग्नमें पाप सप्तममें शुभ ग्रह हों तो यायीराजा स्थायीको किलासे निकालकर फिर स्थान देवे ॥ २३ ॥

रवीत्थशालेशशिजेसुगुप्ताश्चराभवेयुश्चकुजेसराफात् ॥
ग्रहाच्छशाकेनयुताश्चतस्मिन्यथेन्यथेषाश्चभवंतिचाराः॥ २४ ॥

बुध सूर्य्यसे इत्थशाली हो तो चार पुरुष जासूस अति गूढ रहें, जो बुधसे मंगलका ईसराफ हो चन्द्रमासे युक्त भी हो तो वे और वेष रक्खें ॥ २४ ॥

दुर्गप्रश्ने ।

प्रश्नेविलग्नेक्रूरेवादुर्गभंगोनजायते ॥
विशेषतोभूमिपुत्रेराहौवामूर्तिगेसति ॥ २५ ॥

प्रश्नलग्नमें पापग्रह हो विशेषतः मंगल वा राहु हो तो किला नहीं टूटेगा ॥ २५॥

सप्तमेसिंहिकासूनुर्दुर्गंशीघ्रेणलभ्यते ॥ जामित्रोदयगेक्रूरे
रिष्फगेलग्ननायके ॥ २६ ॥ द्वितीयेवाष्टमेषष्ठेतदादुर्गनल
भ्यते ॥ सक्रूरोलग्नपोवक्रीयुद्धदः केंद्रसंस्थितः ॥ २७ ॥

सप्तममें राहु हो तो किला शीघ्र लिया जायगा, जो सप्तम तथा लग्नमें पाप ग्रह और लग्नेश बारहवां हो वा २।६।८ में हो तो किला नहीं लिया जायगा, जो लग्नेश वक्री और पापयुक्त तथा केंद्रमें हो तो युद्धही होवे ॥ २६ ॥ २७॥

षष्ठाधिपेद्यूनगतेपापेवायुद्धमादिशेत् ॥
पृच्छायांकंटकःक्रूरैःकोटेदुर्गेवधोनृणाम् ॥ २८ ॥

षष्ठेश सप्तममें वा पापग्रह सप्तम हो तो युद्ध होवे, तथा प्रश्न लग्नसे केंद्रोंमें पापग्रह हों तो किलामें मनुष्य मारे जावें ॥ २८ ॥

भौमाष्टमेशावेकत्रदद्दृतोनिधनंनृणाम् ॥
स्वायपुत्रस्थितजीवेकोटमध्येभयंनहि ॥ २९ ॥

मंगल तथा अष्टमेश एकही भावमें हों तो प्रष्टाकी सेनामें बहुत मनुष्य मरेंगे २। ११। ५ भावमें बृहस्पति हो तो किलामें भय न होगा ॥ २९ ॥

शनौभौमेचकेंद्रस्थेबहूनांवधबंधनम् ॥ ३० ॥

शनि मंगल केंद्रमें हों तो बहुत मनुष्य मारेजायँगे तथा बांधे जायँगे ॥ ३० ॥

लग्नगतोयदिपापःपापेनयुतोक्षितोजयेद्दात्र ॥
लग्नात्पूर्वापरगोपापौयुद्धंतदाघोरम् ॥ ३१ ॥

लग्नमें पापग्रह पापहीसे युक्त वा दृष्ट हों अथवा दूसरे बारहवें पापग्रह हों तो घोर युद्ध होगा ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायामष्टमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ८ ॥

अथ नवमभावप्रश्नः ।

ममगमनंभवितानवेतिलग्नेश्वरेथवाचंद्रे ॥
नवमेशमुथशिलेसतिनवमेवास्याद्ध्रुवंद्गमनम् ॥ १ ॥

मेरा गमन होगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चन्द्रमासे नवमेशका मुथशि
हो वा लग्नेश नवम हो तो गमन होगा ॥ १ ॥

लग्नस्थेनवमपतौलग्नाधिपमुथशिलेचसंचारात् ॥
रहितोयातिपुनर्नोनवमदृशावर्जितेयोगे ॥ २ ॥

नवमेश लग्नमें लग्नेशसे मुथशिली हो तो चलता फिरता रहे जो लग्नेश
नवमेशका नवमस्थानमें दृष्टि न हो तो गमन भी न होवे ॥ २ ॥

लग्नपतौकेंद्रस्थेसहजेशमुथशिलेचविक्रूरे ॥
गमनंस्यादस्मिन्वाकेंद्रेक्रूरेचनास्तिगतिः ॥ ३ ॥

लग्नेश केंद्रमें तृतीयेशसे मुथशिली निष्पाप हो तो गमन होवे, जो केंद्रों
क्रूरग्रह हों तो गमन नहीं होगा ॥ ३ ॥

अस्तेक्रूरेचयत्कार्येथनिर्यातिविघ्नमतएव ॥
आकाशस्थेपापेराजकुलाज्ज्येष्ठतोनिजाद्वापि ॥ ४ ॥

जो सप्तम स्थानमें पापग्रह हों तो जिस कार्य्यके लिये गमन
उसमें विघ्न होवे जो दशममें पाप हों तो राजकुलसे वा अपने ज्येष्ठसे
अपनेहीसे विघ्न होवे ॥ ४ ॥

नवमेशेमुथशिलगेलग्नाधीशेनपापरिपुदृष्टे ॥
गमनेवसानतःस्यात्प्रष्टुःकष्टंक्षयार्थस्य ॥ ५ ॥

लग्नेशसे नवमेशका मुथशिल हो किंतु पापयुत और शत्रुदृष्ट हो तो गम
तो होवे किंतु अंतमें कष्ट और धनहानि होवे ॥ ५ ॥

लग्नेशेनवमेशेमुथशिलकृतिरंध्रसप्तमेकष्टम् ॥
उदितेस्मिन्वायायाद्विनिःसृतिःस्यात्सुखकरःपंथाः ॥ ६

जो लग्नेश नवमेशका मुथशिल सप्तम वा अष्टमस्थानमें हो तो गमन
कष्ट होवे, जो वह अस्तसे उदय होगया हो तो मार्ग सुखकारी होगा ॥ ६

लग्नान्मार्गानुभवोव्योम्नः कार्य्यंस्मराद्गतिस्थानम् ॥
भूमेः कार्य्यंपरिणतिरेवंलग्नेशरीरसुखम् ॥ ७ ॥

लग्न जैसा दीर्घ वा ह्रस्व हो वैसाही मार्ग कहना, तथा दशमसे कार्य्य, सप्तमसे गति, चतुर्थसे गमनका परिणाम, और लग्नसे शरीरसुख जैसे इनका बलाबल तथा स्वभावादि संज्ञाप्रकरणोक्त हों वैसेही इनके लक्षण कहे ॥ ७ ॥

दशमेशुभेचासिद्धिः कार्य्यस्यास्तिअयातियत्स्थाने ॥
तत्रशुभंचचतुर्थेपरिणामः सुंदरः कार्य्ये ॥ ८ ॥

दशममें शुभग्रह हों तो कार्य्यसिद्धि, सप्तममें हों तो गमन सुखसे, चतुर्थ हो तो कार्यका परिणाम शुभ होगा ॥ ८ ॥

लग्नेशंशशिनंवायः क्रूरस्तुदतितत्रमनुजर्क्षे ॥
मनुजत्रिराशिकेवातदाभयंद्विपदतोगंतुः ॥ ९ ॥

लग्नेश वा चंद्रमाको जो पापग्रह पीडित करे वह पुरुषराशि वा पुरुष द्रेष्काणमें हो तो गमनवालेको दो पैरवालेसे भय होवे ॥ ९ ॥

जलराशौवारिभयंचतुष्पदर्क्षेतथाश्वादेः ॥
घटचापेद्रुमकंटकभयंहरौव्याघ्रसिंहादेः ॥ १० ॥

जो उक्तग्रह जलराशिमें हो तो जलसे, चतुष्पद राशिमें हो तो चतुष्पद घोडा आदिसे, धन कुंभका हो तो वृक्ष कंटकादिसे, सिंहका हो तो व्याघ्र सिंहादिसे भय होवे ॥ १० ॥

नगरप्रवेशतोस्मान्फलमस्तिनवाप्रवेशलग्नमिह ॥
तस्मिन्धनपेवक्रेनोरहणंकार्य्यसिद्धिर्वा ॥ ११ ॥

उक्त जो फल है ये नगरसे गमन और पुनः नगर प्रवेशपर्य्यंत हैं, जो धनेश वक्री हो तो स्थिति न होवे वा कार्य्य साधन न होवे ॥ ११ ॥

अतिचरितेबहुदिवसंरहणंनोकार्य्यसिद्धिरपिदापि ॥
नवमतृतीयगेस्मिन्कार्य्यंकृत्वाशुनिजपुरंयाति ॥ १२ ॥

जो धनेश अतिचारी हो तो बहुत दिन सफरमें रहना पडे कार्य्य सिद्धिभी न होवे जो धनेश नवम वा तृतीय स्थानमें हो तो कार्य्य करके शीघ्र अपने नगरमें आवेगा ॥ १२ ॥

लग्नेकर्मण्यायेधनपयुतेशोभनंज्ञेयम् ॥
सक्रूरसप्तमस्थेपथिविघ्नः क्रटकश्चतुर्थस्थे ॥ १३ ॥

लग्न दशम वा ग्यारहवेंमें नवमेश धनेश युक्त हों तो यात्रा शुभ होगी, जो धनेश वा नवमेश पापयुक्त सप्तममें हों तो मार्गमें विघ्न, तथा चतुर्थमें सपाप हों तो कलह होवे ॥ १३ ॥

अथांतरपांथागमनम् ।

आगमनेपृच्छायांलग्नेशेलग्नमध्यसंस्थेन ॥
कृतमुथशिलेसमेतिहिसुखमस्ततुरीयगेकष्टात् ॥ १४ ॥

पथिकके आगमनप्रश्नमें लग्नेशसे लग्नस्थित ग्रह इत्थशाली हो वह सुखसे तथा ४ । ७ स्थानमें हो तो कष्टसे आवेगा ॥ १४ ॥

स्थानाच्चलितप्रश्नेलग्नपतौसहजनवमगृहसंस्थे ॥
लग्नस्थेनमुथशिलेपंथानंवहतिपथिकोयम् ॥ १५ ॥

स्थानसे मार्गको चला वा नहीं ऐसे प्रश्नमें तृतीयेश २ वा ९ स्थानमें होकर लग्नस्थ किसी ग्रहसे मुथशिली हो तो पांथ मार्गमें है ॥ १५ ॥

रंध्रेथधनेतस्मिन्नाकाशसंस्थेनमुथशिलेप्येवम् ॥
केंद्रस्थितेत्थशालेलग्नेक्षणवर्ज्यमेतिनकदापि ॥ १६ ॥

लग्नेश अष्टम वा धनस्थानमें होकर दशमस्थ किसी ग्रहसे मुथशिली हो तो भी मार्ग चलताहै कहना. केंद्रमें होकर दशमेशसे इत्थशाली हो तोभी यही फल है जो लग्नेश लग्नको न देखे तो पांथ नहीं आवेगा कहना ॥ १६ ॥

लग्नाधिपतौवक्रेलग्नंपश्यत्यमुत्रचंद्रेवा ॥
वक्रगमुथशिलेसातिसमेतिपथिकः सुखंशीघ्रम् ॥ १७ ॥

लग्नेश वक्र होकर लग्नको देखे अथवा चन्द्रमा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तो पथिक शीघ्र आवेगा ॥ १७ ॥

अंत्यस्थितलग्नपतौशशिनाकृतमुथशिलेद्रुतमुपैति ॥
लग्नाद्वापिचतुर्थाच्छुभाद्द्वितीयतृतीयगेवापि ॥ १८ ॥

लग्नेश बारहवां चंद्रमासे मुथशिली हो तो पांथ शीघ्र आवेगा लग्नसे चतुर्थसे दूसरे तीसरे शुभग्रह हों तोभी शीघ्र आवेगा ॥ १८ ॥

कथयंतिनष्टलाभंप्रवासिनश्चागमंत्वरितम् ॥ १९ ॥

इन दो योगोंमे प्रवासीका शीघ्र आगमन तथा नष्टवस्तुका शीघ्र लाभ होताहै पथिकका आगमन वा रोधके योग नष्टद्रव्यके लाभालाभमें भी मिलते हैं ॥ १९ ॥

शुभेषष्ठेथजामित्रेवाक्पतिःकंटकेस्थितः ॥
पथिकागमनंब्रूतेसितेज्ञेवात्रिकोणगे ॥ २० ॥

शुभ छठा सातवां हो तथा बृहस्पति केन्द्रमें हो अथवा शुक्र वा बुध त्रिकोण ९ । ५ में हो तो पथिक शीघ्र आवेगा ॥ २० ॥

षष्ठोदयेपापदृष्टेशुभदृग्वर्जितेबुधः ॥
लग्नात्षष्ठेयदापापायातुश्चनिधनंवदेत् ॥ २१ ॥

षष्ठ तथा लग्नस्थानमें पापग्रहोंकी दृष्टि हो शुभग्रहोंकी न हो तथा लग्नसे छठे स्थानमें पापग्रह हों तो पंडितने जानेवालेकी मृत्यु कहनी ॥ २१ ॥

यदाक्रूरास्तृतीयस्थादेशाद्देशांतरंगतः ॥
चौरेणैवहृतस्वश्चपथिकःकेंद्रगायदि ॥ २२ ॥

जो पापग्रह तीसरे हो तो पथिक एक देशसे दूसरे देशको चलागया जो सभी केन्द्रोंमें पाप हों तो उसे चोरोंने लूट लिया ॥ २२ ॥

पापैःषष्ठत्रिलाभस्थैःकंटकस्थैःशुभग्रहैः ॥
प्रवासीसुखमायातिदूरस्थोपिसुनिश्चितम् ॥ २३ ॥

पापग्रह ६ । ३ । ११ में और शुभग्रह केन्द्रोंमें हो तो पथिक दूर भी हो तोभी निश्चय करके सुखपूर्वक घर आवेगा ॥ २३ ॥

चतुरस्रेत्रिकोणेवापापगेहास्थितःशनिः ॥
पापदृष्टिश्चनियतंबंधनंयातुरादिशेत् ॥ २४ ॥

केन्द्र वा त्रिकोणोंमें पापग्रह तथा पापराशिमें पापदृष्ट शनि हो तो अवश्य पथिक बन्धनमें पडगया है ॥ २४ ॥

शुभयुक्तेस्थिरेलग्नेस्थिरोबंधश्चरेऽन्यथा ॥
द्वितनौसौम्यसंयुक्तेबंधमोक्षौक्रमेणतु ॥ २५ ॥

स्थिर लग्न शुभयुक्त उक्तयोगोंमें हो तो बंधन स्थिर होगा. चरलग्न हो तो नाममात्र और द्विस्वभाव हो तो बन्धनसे छूटगया है ॥ २५ ॥

पापास्त्रिकोणजामित्रेविलग्नेपृष्ठकोदये ॥
शत्रुभिर्वीक्ष्यमाणेचयातुःकष्टंवदेत्सुधीः ॥ २६ ॥

त्रिकोण तथा सप्तममें पापग्रह और लग्न पृष्ठोदय हो शत्रुसे देखा भी जावे तो पांथको बुद्धिमानने कष्ट कहना ॥ २६ ॥

मार्गस्थानगतैःसौम्यैर्मार्गेतस्यशुभंवदेत् ॥
क्रूरैर्दुःखंविलग्नस्थैःपापैःक्लेशमवाप्नुयात् ॥ २७ ॥

मार्गस्थानमें शुभग्रह हो तो पांथको मार्ग सुखकारी और पाप हों तो दुःखकारी होगा, तथा लग्नमें पाप हों तो पांथको क्लेश होगा ॥ २७ ॥

चरलग्नेचरांशेवाचतुर्थेचंद्रमाःस्थितः ॥
प्रवासीसुखमायातिकृतकार्य्यंस्ववेश्मनि ॥ २८ ॥

चरराशि लग्नमें तथा चरराशि चरांशकमें चन्द्रमा चौथा हो तो प्रवासी कार्य्य करके सुखसे अपने घर शीघ्र आवेगा ॥ २८ ॥

कंटकैःसौम्यसंयुक्तैःपापग्रहविवर्जितैः ॥
प्रवासीसुखमायातिनिधनस्थेनिशाकरे ॥ २९ ॥

केंद्रोंमें शुभ ग्रह हों पाप ग्रह न हों अथवा चन्द्रमा अष्टम हो तो प्रवासी सुखसे घरमें आवेगा ॥ २९ ॥

गमागमौपुनस्यातांयोगेदुरुधराकृते ॥
शुभैःशुभकृतोरोधःपापैस्तस्करतोभयम् ॥ ३० ॥

जो दुरुधरा योग अर्थात् चन्द्रमासे दूसरे बारहवें भी कोई ग्रह हों तो गमन तथा आगमनभी न होवे, जो यह योग शुभ ग्रहोंसे हो तो शुभ कार्य्यमें अटकाव पापोंसे चोर आदिसे हानियें होवें ॥ ३० ॥

गमागमौतुनस्यातांस्थिरराशौविलग्नगे ॥
नरोगोपशमोनाशोद्रव्याणांनपराभवः॥ ३१ ॥

स्थिर राशि लग्नमें हो तो गमन रोग, शांति वा वृद्धि और हार जीत द्रव्य नाश वा लाभ कोईभी शुभ एवं अशुभ न होवे ॥ ३१ ॥

विपरीतंचरेवाच्यंफलंमिश्रंद्विमूर्तिषु ॥
स्थिरवत्प्रथमेखंडेपरार्द्धेचरराशिवत्॥ ३२ ॥

चरराशि लग्नमें हो तो पूर्वोक्त फल विपरीत जानना जो द्विस्वभाव हो तो पूर्वार्द्धमें चरराशिके और उत्तरार्द्धमें स्थिरके तुल्य फल कहना ॥ ३२ ॥

प्रवासीसुखमायातिगुरुशुक्रौत्रिवित्तगौ ॥
चतुर्थस्थानगावेतौशीघ्रमायातिकार्य्यंकृत् ॥ ३३ ॥

बृहस्पति शुक्र तीसरे वा दूसरे हों तो प्रवासी सुखसे आवेगा जो यही चतुर्थमें हों तो कार्य्य करके शीघ्रही आवेगा ॥ ३३ ॥

इंदुःसप्तमगोलग्नात्पथिकंवक्तिमार्गगम् ॥
मार्गाधिपश्चरं षष्ठात्परभागेव्यवस्थितः ॥ ३४ ॥

चन्द्रमा लग्नसे सप्तम हो तो प्रवासी मार्गमें है कहना, मार्गस्थान ९ का स्वामी राशिके उत्तरार्द्धमें हो तोभी यही फल कहना ॥ ३४ ॥

शुक्रार्कजीवसौम्यानामेकोपिस्यादायगः ॥
तदाशुगमनंब्रूतेप्रष्टुर्नगमनंव्यये ॥ ३५ ॥

शुक्र सूर्य्य बृहस्पति बुधमेंसे एकभी ग्यारहवां हो तो प्रवासी शीघ्र आवे जो बारहवां हो तो गमागम नहीं होंगे ॥ ३५ ॥

लग्नाद्यावतिथेस्थानेबलीखेटोव्यवस्थितः ॥
ब्रूयात्तावतिथेमासेपथिकस्यनिवर्त्तनम् ॥ ३६ ॥

लग्नसे जितने स्थानमें बलाधिक ग्रह हो उतनी संख्याके महीनोंमें प्रवासी लौटेगा यहां मास स्थानमें दिन वा वर्ष बुद्धिसे देशकाल देखके कहना॥ ३६ ॥

एवंकालंचरांशस्थेद्विगुणंचास्थिरांशके ॥
द्विस्वभावांशगेखेटेत्रिगुणंचिंतयेत्सुधीः ॥ ३७ ॥

यह बली ग्रह चरांशकमें हो तो वह समयही ठीक है जो स्थिरांशकमें हो तो द्विगुण द्विस्वभावमें हो तो त्रिगुण समय कहना ॥ ३७ ॥

यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ॥
करोतिवक्रमावृत्तःकालंतंब्रुवतेपरे ॥ ३८ ॥

गमन करनेवालोंको गमन वा प्रश्न लग्नसे सप्तमेश जब वक्र होवे तब हटनेका समय कहना यह किसीका मत है ॥ ३८ ॥

चतुर्थेदशमेवापियदिसौम्यग्रहोभवेत् ॥
तदानगमनंक्रूरस्तत्रस्थैर्गमनंभवेत् ॥ ३९ ॥

चतुर्थ वा दशममें शुभग्रह हो तो गमन न होवे पाप हो तो गमन होताहै ॥ ३९ ॥

लग्नाद्वालग्ननाथाद्वायत्संख्याःक्रूरखेचराः ॥
नवमेद्वादशेवापितत्संख्याःस्युरुपद्रवाः ॥ ४० ॥

लग्न वा लग्नेशसे नवम वा बारहवें स्थानमें जितने पापग्रह हों उतने उपद्रव गमनमें होवेंगे कहना ॥ ४० ॥

लग्नाद्वालग्ननाथाद्वायावतःसौम्यखेचराः ॥
मार्गेतत्रोदयावाच्याःस्थानेस्थानेविचक्षणैः ॥ ४१ ॥

लग्न वा लग्नेशसे जितने शुभग्रह नवम हों उतने स्थानोंमें पांथका उदय, हर्ष होगा यह विद्वानोंने विचारसे कहना ॥ ४१ ॥

क्रूरयुक्तेक्षितोमंदःशुभदृग्योगवर्जितः ॥
धर्मस्थस्तनुतेव्याधिंप्रोषितस्याष्टगो मृतिम् ॥ ४२ ॥

नवम स्थानमें शनि पापग्रहयुक्त दृष्ट हो शुभग्रहकी दृष्टि वा योग रहित हो तो पथिकको व्याधि और अष्टममें हो तो मृत्यु होवे ॥ ४२ ॥

जामित्रस्यशुभोत्थेयातानायातिदुरुधरायोगे ॥
मित्रस्वामिनिषेधात्पापोत्थेशत्रुरुक्चौरात् ॥ ४३ ॥

सप्तममें शुभ ग्रहोंसे दुरुधरा योग हो तो जानेवाला मित्र अथवा स्वामीके मना करनेसे फिर आवे नहीं जो पापोंसे हो तो शत्रु वा रोग और चौरसे मृत्यु वा मृत्युतुल्य कष्ट पावे ॥ ४३ ॥

चंद्रार्कयोश्छिद्रगयोर्यमेनसंदृष्टयोःस्यात्पथिशस्त्रभीतिः ॥
रंध्रेसितज्ञेचसुखातिरारेमंदेभयंपापयुगीक्षितेध्वनि ॥ ४४ ॥

चन्द्रमा सूर्य्य अष्टम हों शनि उन्हें देखे तो मार्गमें शस्त्रभय होवे, अष्टम स्थानमें शुक्र बुध हों तो सुख मिले, मंगल शनि पापयुक्त वा दृष्ट अष्टम हों तो मार्गमें भय होवे ॥ ४४ ॥

दूरस्थजीवितमृतप्रश्ने ।

लग्नेश्वरेशीतकरेथषष्ठेतुर्य्येष्टमेवाप्यतिनीचगेवा ॥
अस्तंगतेच्छिद्रपतीत्थशालेयुक्तेऽशुभैर्दूरगतोमृतःस्यात् ॥ ४५ ॥

प्रवासी जीवित है वा मरगया ऐसे प्रश्नमें लग्नेश तथा चंद्रमा छठे हों अथवा चतुर्थ अष्टममें अति नीचराशिस्थ अस्तंगत हों और अष्टमेशसे इत्थशाली और पापयुक्त हों तो प्रवासी दूर पहुँचकर मरगया होगा ॥ ४५ ॥

भूमेरधःस्थेनचखगेनयदीत्थशालंकुरुतेशशांकः ॥
सौम्यैरदृष्टमरणंप्रकुर्य्याद्दूरास्थितस्यापिविदेशगस्य ॥ ४६ ॥

लग्नसे चतुर्थके बीच स्थित किसी ग्रहसे चंद्रमा इत्थशाल करे तथा शुभ ग्रह उसे न देखें तो दूरदेशस्थकी मृत्यु होती है ॥ ४६ ॥

सौम्यैःषष्ठांत्यरंध्रस्थैर्विबलैश्वशुभेक्षितैः ॥
पापयुक्तौशशांकार्कौतदादूरस्थितोमृतः ॥ ४७ ॥

शुभग्रह । ६ । ८ । १२ । स्थानोंमें निर्बल शुभ ग्रहोंसे दृष्ट तथा पापग्रहसे युक्त हों और सूर्य्य चंद्रमा पापयुक्त हों तो दूरस्थित जन मरगया है ॥ ४७ ॥

पृष्ठोदयेपापयुतेत्रिकोणकेंद्राष्टषष्ठोपगतैश्वपापैः ॥
सौम्यैरदृष्टैःपरदेशसंस्थोमृतोगदार्त्तोनवमेचसूर्य्ये ॥ ४८ ॥

पृष्ठोदय १ । २ । ४ । ९ राशिमें पापग्रह त्रिकोण केंद्र अष्टम स्थानमें हों शुभग्रह उन्हें न देखें तो परदेशमें रोगी मरगया है, जो नवम सूर्य्य हो तोभी यही फल कहना ॥ ४८ ॥

तुर्य्योपरिस्थेनखगेनचंद्रमायदीत्थशालंकुरुतेशुभेक्षितः ॥
सौम्यैर्युतोवापरदेशसंस्थितःसुखीचजीवेत्पथिसौख्यमेति॥ ४९ ॥

चतुर्थसे सप्तमके भीतर किसीग्रहसे चंद्रमा इत्थशाल करे शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्तभी हो तो परदेशवाला सुखी जीताजागता है मार्गमेंभी सुखसे आवेगा ४९ ॥

इति श्रीमहीधर कृ० ता० नी० भा० नवमस्थान प्रश्न नि० ॥ ९ ॥

अथ दशमस्थानप्रश्नः ।

राज्याप्तिप्रश्नलग्नेलग्नेशोशशिनिवानभःपतिना ॥
कृतमुथशिलेवरदृशाराज्यंकुपक्रमाद्भवति ॥ १ ॥

राज्यलाभ प्रश्नमें लग्नेश वा चंद्रमा दशमेशसे मुथशिली हो मित्रदृष्टि भी हो तो कुलानुमान राज्य सुख मिले ॥ १ ॥

अन्योन्यभवनगमनाःक्रूराभावेथचिंतितप्राप्तिः ॥
लग्नेशेनान्येनचसौम्येनांबरस्थामुथशिलेप्येवम् ॥ २ ॥

लग्नेश दशम दशमेश लग्नमें पापरहित हों तो चिंतित राज्य सुख मिले तथा लग्नेशसे किसी दशमस्थ शुभग्रहका मुथशिल हो तौभी यही फल होगा ॥ २ ॥

मंदग्रहेबलवतिक्रूरवियुक्तोयदाशशीविबलः ॥
मंदेबलिनिभ्रमणाद्राज्यप्राप्तिर्भवेत्प्रष्टुः ॥ ३ ॥

योगकर्त्ताओंमें मन्दगति ग्रह बलवान् पापरहित चंद्रमा भी निर्बल हो शनि बलवान् हो तो भ्रमणसे प्रश्नवालेको राज्यसुख मिले ॥ ३ ॥

लग्नाधिपतौस्वगृहेलाभोराज्यस्यतुंगगेभौमे ॥
लग्नांबराधिपौयादिकंबूलीकेंद्रगेंदुमुथशिलतः ॥ ४ ॥

अपनी राशिमें लग्नेश और अपने उच्चमें मंगल हों तो राज्यलाभ होवे. जो लग्नेश और दशमेश मुथशिली केंद्रमें चंद्रमासे कंबूली हों तो यही फल कहना ४ ॥

उत्तमराज्याप्तिःस्वर्क्षोच्चइंदुतोविपुला ॥
यत्नर्क्षेलग्नेशस्तत्पतिरशुभेगृहेतदाकार्य्यम् ॥ ५ ॥
नस्यादस्तेकष्टाद्दशमदृशाकटुकताकार्य्ये ॥
राज्यप्राप्तौसत्यांयदिपृच्छतिकोपिपरिणतिंचतदा ॥ ६ ॥

लग्नेश दशमेशके इत्थशालमें चंद्रमा स्वराशि वा उच्चगत कंबूली अर्थात् उत्तमोत्तम कंबूल हो तो राज्यप्राप्ति उत्तम और बहुत होवे जिस राशिमें लग्नेश है उसका स्वामी अशुभ राशिमें हो तो राज्यसंबंधी कार्य्य न होवे जो वह अस्तंगत हो तो कष्टसे होगा जो शत्रुदृष्टिसे दृष्ट हो तो कार्य्यमें कोई प्रकार कडवाई आवेगी ॥ ५ ॥ ६ ॥

लग्नेशरीरकार्य्यंगृहकामास्तंनभश्चराज्यार्थम् ॥
लाभोमित्रस्यार्थेचतुर्थकंकर्मणोवसतयेच ॥ ७ ॥

जो कोई राज्यकृत्यप्राप्ति हुयेमें उसका परिणाम पूंछे तो लग्नसे शरीरकार्य्य, सप्तमसे गृहकार्य्य, दशमसे राज्यकृत्य, लाभसे लाभ चतुर्थसे, तथा मित्रसंबंधी कार्य्य और दशमसे निवासके विषयमेंभी विचार करना ॥ ७ ॥

द्रव्यंधनायसहजंभृत्येभ्योरिपुश्चवैरिभ्यः ॥
एतैःशुभैःशुभंस्यादशुभैर्वामंचसर्वकार्य्याणाम् ॥ ८ ॥

दूसरे भावसे धन कार्य्य, तीसरेसे भृत्य, छठेसे वैरी संबंधी कार्य्य विचारना, यदि इनपै शुभग्रह हों वा इनके स्वामी बली हों तो यथोक्त कार्य्य शुभ अन्यथा अशुभ होगा ॥ ८ ॥

वित्तस्वामिनिभौमेऽनौचित्येपारदारिकेव्ययकृत ॥
जीवे धर्मायरवौगुरुपूजायैसितेविलासाय ॥ ९ ॥

धनेश मंगल लग्नेशसे मुथशिली हो तो अनुचितकर्मोंमें तथा परस्त्री संबंधी व्यय करे धनेश बृहस्पति हो तो धर्ममें सूर्य्य हों तो गुरु ब्राह्मणकी पूजामें शुक्र हो तो विलासादि सुखमें धनव्यय होवे ॥ ९ ॥

वाणिज्यायज्ञेपुनरिंदौमुथशिलिनिचान्यथान्यार्थम् ॥
लग्नपतौपतितस्थेविबलेराज्यात्ययस्तुकंबूले ॥
कोपिगुणःस्यात्पापाक्रांतैरशुभंच्युतोभवति ॥ १० ॥

जो उक्त प्रकार बुध हो तो वाणिज्यमें धनव्यय होवे चन्द्रमा मुथशिली भी हो तोभी व्यापारमें व्यय होवे जो मुथशिली लग्नेशसे न हो तो अन्यकेलिये वाणिज्यकरे तथा लग्नेश पतित स्थानमें तथा निर्बल हो तो कंबूलीमें कुछ गुणभी होताहै पापाक्रांत हो तो राज्य नाशही होताहै ॥ १० ॥

नरपतिसचिवस्नेहप्रश्नेकंबूलेलग्नसप्तपयोः ॥
मुथशिलग्नेशःशुभदृष्टचाशुभताराज्येमिथः स्नेहः ॥ ११ ॥

राजा और राजमंत्रीके स्नेहप्रश्नमें लग्नेश सप्तमेशका कंबूलसहित मुथशिल हो तो परस्पर स्नेह रहे शुभदृष्टिभी हो तो राज्यमेंभी शुभता रहे ॥ ११ ॥

राज्यंचरांस्थिरंवालग्नपगगनेशयोः सहयोः ॥
यद्येकोमंदःस्यात्केंद्रेतत्स्थितमथोन्यथावाच्यम् ॥ १२ ॥

यह राज्य चर वा स्थिर कैसा होगा ऐसे प्रश्नमें लग्नेश दशमेश साथही केन्द्रमें हों उनमेंसे एक मन्दगति उपलक्षणसे अल्पांश हो तो राज्य स्थिर होगा अन्यथा अस्थिर कहना ॥ १२ ॥

यदिवास्तवाममार्गेभूमेर्वाग्रच्युतिर्भवेत्पूर्वम् ॥
कंबूलेसतिलभतेशीघ्रमूसरिफेतुनपुनः ॥ १३ ॥

जो उक्तग्रह वक्री हो तो प्रथम राज्यकी हानि पीछे उन्नति होगी, कंबूली हो तो शीघ्र राज्यलाभ और मूसरिफी हो तो लाभ नहीं होवे ॥ १३ ॥

ग्रन्थांतरेस्वामिभृत्यप्रश्नः ।

शीर्षोदयेसौम्ययुतोक्षितेवासौम्यैर्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः
तृतीयलाभारिगतैश्चपापैःसौख्यार्थलाभोनृपसेवकस्य ॥ १४ ॥

स्वामी भृत्य प्रश्नमें शुभग्रह शीर्षोदय राशिमें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट २।८।७ में और ३।११।६ स्थानोंमें पाप हों तो राजसेवीको सुख तथा धनलाभ होवे १४

लग्नाद्द्वितीयेमदनेष्टमर्क्षेवित्तक्षयंसंभ्रममार्तिमृत्युम् ।
कुर्वंतिपापाःक्रमशोनरेंद्राद्भृत्यस्यतस्मात्परिवर्जयेत्तम् ॥ १५ ॥

लग्नसे दूसरे हों तो भृत्यका राजासे धनक्षय होवे. जो सप्तम हों तो संभ्रम और अष्टम हों तो मृत्यु होवे तस्मात् इन स्थानोंमें पाप हों तो स्वामीसेवा न करनी ॥ १५ ॥

लग्नाद्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थाःपापाःप्रणाशंनृपभृत्ययोर्द्वयोः ॥
कुर्वंतितेष्वेवगताश्चसौम्याःकुर्युर्धनारोग्यसुखानिचोभयोः ॥१६॥

लग्नसे २।८।७ स्थानोंमें पापग्रह स्वामी सेवक दोनहूंका नाश और शुभग्रह दोनहूंको धन आरोग्य और सुख करतेहैं ॥ १६ ॥

शशांकसौम्येरुदयास्तभावौदृष्टौयुतौवासबलैर्नपापैः ॥
भक्ष्युस्तदास्तोद्वदिपार्थिवस्यस्नेहप्रसादावकृपाप्रतीपात् ॥ १७ ॥

बलवान् चन्द्रमा और बलवान् शुभग्रह करके लग्न तथा सप्तमभाव देखा जाय और उक्त स्थानोंपर पापग्रहकी युति दृष्टि न हो तो प्रष्टाके लिये राजाके हृदयमें स्नेह तथा कृपा रहे, यही योग विपरीतभी है कि, शुभोंके स्थानमें पाप हों तो विपरीत फल कहना ॥ १७ ॥

अन्यस्वामिप्रश्नः ।

षष्ठेश्वरेणव्ययपेनकेंद्रेयदीत्थशालंकुरुतेविलग्नपः ॥

प्रष्टुस्तदान्यःप्रभुरर्थदःस्यादतःप्रतीपंनभवेत्परःप्रभुः ॥ १८ ॥

षष्ठेश वा व्ययेशसे जो केंद्रमें इत्थशाल लग्नेश करे तो प्रष्टाको स्वामी धन देनेवाल होगा, विपरीतमें अन्य प्रभु न होवे ॥ १८ ॥

लग्नेश्वरेस्वर्क्षगतेस्वतुंगकेंद्रस्थितेशीतकरेत्थशाले ॥

शुभग्रहैर्दृष्टयुतेबलान्वितेप्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः ॥ १९ ॥

लग्नेश अपनी राशि वा उच्चमें केन्द्रस्थित होकर चन्द्रमासे इत्थशाली हो तथा शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो प्रष्टाको अपनेही स्वामीसे अगणित धन मिले ॥ १९ ॥

जायेश्वरेस्वोच्चनिजर्क्षसंस्थेकेंद्रस्थितेशीतकरेत्थशाल्गे ॥

शुभग्रहैर्दृष्टयुतेबलोत्कटैःप्रष्टुस्तदान्यप्रभुरर्थदोभवेत् ॥ २० ॥

सप्तमेश अपनी राशि वा उच्चका केन्द्रगत चन्द्रमासे इत्थशाली हो तथा बलवान् शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो प्रष्टाको अन्य स्वामी धन देवे ॥ २० ॥

इदंगृहंवाशुभमन्यदालयंस्थानंत्विदंवाशुभमन्यदेवमे ॥

ममात्रभद्रंगमनात्तुतत्रवापृष्टोदयेत्थंविधिनाविमृश्य ॥ २१ ॥

प्रष्टा पूँछे कि,मुझको यह घर शुभहोगा वा अन्य, तथा यह स्थान शुभ वा अन्य, और हमको यहां शुभहै या गमनमें वहां शुभ होगा इतने प्रश्नोंमें इतनेही भावोंसे कार्य्येश जानके इत्थशाल इसराफ आदि योगोंसे विचार करना॥ २१ ॥

अथ स्वप्नप्रश्नः ।

लग्नेर्केनृपतिंवह्निंशस्त्रंपश्यंतिलोहितम् ॥

श्वेतंपुष्पंसितंवस्त्रंगंधंनारींचशीतगौ ॥ २२ ॥

लग्नमें सूर्य्य हो तो राजा, अग्नि, शस्त्र और लाल रंग देखे, चन्द्रमा हो तो श्वेत रंगके पुष्प, वस्त्र, चंदन और स्त्री देखे ॥ २२ ॥

रक्तंमांसंप्रवालंचसुवर्णंवरणीसुते ॥
बुधेखेगमनंजीवेधनंबंधुसमागमम् ॥ २३ ॥

मंगल हो तो रुधिर मांस मूंगा सुवर्ण, बुध हो तो आकाश, पर्वतशृंगादिमें गमन, बृहस्पतिसे धन तथा बंधुसंमेलन ॥ २३ ॥

जलावगाहनंशुक्रेशनौतुंगावरोहणम् ॥
लग्नलग्नांशपवशात्स्वप्नोवाच्योथवाबुधैः ॥ २४ ॥

शुक्र हो तो जलक्रीडा शनि हो तो ऊंचे स्थानारोहण होवे अथवा लग्न तथा लग्ननवांश पतिसे पंडितोंने स्वप्न कहना ॥ २४ ॥

सर्वोत्तमबलाद्वापिखेटाद्बुद्ध्याविचिंतयेत् ॥
बलसाम्येफलंमिश्रंदुःस्वप्नोनिर्बलैःखगैः ॥ २५ ॥

अथवा सर्वोत्तम बली ग्रहसे बुद्धिसे विचार करना जो बहुतोंका बल समान हो तो फल मिश्रित और निर्बलसे दुःस्वप्न होवे ॥ २५ ॥

रविर्लग्नेशशिदृष्टेरविशशिसमेतविलग्नाद्वा ॥
स्वप्नंदृष्टंप्रवदेत्प्रष्टुर्लग्नांतरात्कालः ॥ २६ ॥

सूर्य्य लग्नमें चन्द्रमासे दृष्ट हों वा सूर्य्य चंद्रमा लग्नमें हों तो स्वप्न देखाहै और स्थानोंमें हो तो देखेगा कहना ॥ २६ ॥

अथाखेटकः ।

लग्नेशास्तामित्रपतीत्थशालमुत्रहदृष्ट्यातनयोर्द्वयोश्च ॥ आखेटकःस्यात्सफलोरिदृष्ट्यास्यान्निष्फलोवाल्पफलोतिकष्टात् ॥ २७ ॥

लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल मित्रदृष्टिसे हो तो आखेटक (शिकार) सफल होगी उनकी शत्रुदृष्टि हो तो निष्फल वा बहुत कष्टसे अल्पफली होवे ॥ २७ ॥

लग्नेश्वरेद्यूनगतेविलग्नेजायपश्वरेस्यान्मृगयाप्रवृत्ता ॥
शामित्रनाथेहिबुकेनभःस्थेचाखेटकःस्वल्पतरोपिनस्यात् ॥ २८ ॥

लग्नेश सप्तममें सप्तमेश लग्नमें हो तो शिकार बहुत मिले, जो सप्तमेश चतुर्थमें वा दशममें हो तो शिकार थोडाभी न होवे ॥ २८ ॥

ज्ञभौमौसबलौसिद्धिरस्तांशेमृगयाच्युतिः ॥
लग्नद्यूनेतत्पतीचहेतुस्तैर्जलजादिभिः ॥ २९ ॥

बुध मंगल बलवान् हों तो मृगयासिद्धि होवे जो वे सप्तम राश्यंशमें हों तो शिकार हाथसे छूटजावे; लग्न और सप्तम राशि वा उनके पति स्थल जलाकाश जैसी राशियोंमें वा जैसे स्वभावके हों वैसीही शिकार भी कहनी ॥ २९ ॥

क्रूराक्रांतानियावंतिमध्येभानींदुलग्नयोः ॥
तावंतःप्राणिनोवाच्याद्वित्रिघ्नाःस्वांशकादिषु ॥ ३० ॥

लग्न और चन्द्रमाके बीच जितनी राशि पापग्रहोंसे दबी हों उतने प्राणी शिकारमें मिलेंगे जो वे अपने अंश वा उच्च मित्रांशकोंमें हों तो द्विगुण त्रिगुण और वर्गोत्तममें बहुतगुण कहना ॥ ३० ॥

अथ किंवदंती।

श्रुतिस्तुलग्नेश्वरशीतगूदयैःशुभान्वितैःकेंद्रगतैस्तुसत्या ॥
पापान्वितैःपापनिरीक्षितैश्च त्रिकस्थितैर्वाभवतीहमिथ्या ॥ ३१ ॥

लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा शुभयुक्त केन्द्रगत हों तो जनश्रुति सच्ची और पापयुक्त दृष्ट वा त्रिक ६।८।१२ में हों तो मिथ्या कहनी, लोगोंमें अफवाह कहावतको जनश्रुति वा किंवदंती कहते हैं ॥ ३१ ॥

शुभदृग्योगतःसौम्यांवार्त्तासत्यांविनिर्दिशेत् ॥
पापदृग्योगतोदुष्टावार्त्तासत्येतिकीर्त्यते ॥
लग्नेश्वरेभाविवक्रेमिथ्यावार्त्ताभविष्यति ॥ ३२ ॥

लग्न लग्नेश और चन्द्रमापर शुभग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो तो सौम्य वार्त्ता सत्य क्रूरवार्त्ता हो तो असत्य जानना. पापदृष्टि योगसे क्रूर वार्त्ता सत्य, सौम्यवार्त्ता हो तो असत्य जानना और लग्नेश वक्र होनेवाला हो तो सभी वार्त्ता मिथ्या होवें ॥ ३२ ॥

इति श्रीमही० नी० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां दशमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ १० ॥

अथ एकादशस्थानप्रश्नः ।

नृपतेर्गौरवलाभाशादिममस्यान्नवेतिपृच्छायाम् ॥
आयेशलग्नपत्योःस्नेहदृशामुथशिलेद्रुतंभवति॥ १ ॥

राजासे गौरव तथा धनादिलाभ मेरे होंगे वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लाभेश लग्नेशकी स्नेहदृष्टिसे इत्थशाल हो तो शीघ्र लाभ होगा ॥ १ ॥

रिपुदृष्ट्याबहुदिवसैःकेंद्रेचायेशचंद्रकंबूले ॥
वाच्यापूर्णैवाशाचरस्थिरद्विस्वभावगेस्वनामफलम् ॥ २ ॥

जो उनके परस्पर शत्रुदृष्टिसे इत्थशाल हो तो बहुत दिनोंमें लाभ होगा जो लग्नेश लाभेशका इत्थशाल केन्द्र वा लाभस्थानमें चन्द्रमाके कंबूल सहित हो तो आशा पूर्ण होगी कहना, परंतु वह जैसी राशिमें हों वैसा राशि नामसदृश फलभी देते हैं जैसे चरमें चर स्थिरमें स्थिर इत्यादि ॥ २ ॥

लाभेशेक्रूरहतेभूत्वाशाशुप्रणाशमुपयाति ॥
क्रूरायुक्तेशुभयुज्यधिकारवशेनलघ्व्याशा ॥ ३ ॥

जो लाभेश अस्त वा पापपीडित हो तो आशा पूर्ण होकर फिर नष्ट होजावे. पापरहित शुभयुक्त हो तो अधिकारके सदृश लघु वा बृहद् आशापूर्ति कहनी ॥ ३ ॥

मित्रेणसहप्रीतिर्भवितालग्नेश्वरायपत्योश्च ॥
प्रियदृष्ट्यामुथशिलतःप्रीतिर्वान्योन्यगृहयानात् ॥ ४ ॥

मित्रसे प्रीति होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश लाभेशकी मित्र दृष्टि मुथशिल हो अथवा लग्नेश लाभमें लाभेश लग्नमें हों तो प्रीति बढेगी ॥ ४ ॥

केंद्रस्थितयोरनयोर्मैत्रीकिलपूर्वजातेव ॥
पणफरगतौपुरस्तादापोक्लिमतोमहाप्रीतिः ॥ ५ ॥

लाभेश लग्नेश केन्द्रमें हों तो ,मैत्री उनकी पाहिलेहीसे होरही है, जो पणफर २ । ५ । ८ । ११ में हों तो आगे होगी आपोक्लिम ३।६।९।१२ में हों तो प्रीति बहुत बढेगी ॥ ५ ॥

शुभंकार्य्यमिदंमेसिद्ध्यतिलग्नेश्वरेथचन्द्रमासि ॥
शुभसुथशिलेगेकेंद्रेतन्निकटेवाथसिद्धिःस्यात् ॥ ६ ॥

मेरा शुभ कार्य्य सिद्ध होगा वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें लग्नेश तथा चंद्रमा शुभ ग्रहसे मुथशिली केंद्रमें वा उनके समीप हों तो शुभ कार्य्य सिद्ध होगा ॥ ६ ॥

ग्रन्थांतरेसमर्घचिंता।

मेषेवृषेवामिथुनेशुभयुक्तदृष्टेनग्रैष्मिकंतुसुलभंभवतिपृथिव्याम् ॥
सौम्यैर्धनुर्मृगघटेषुचशारदीयंकुर्यात्समर्घमशुभैःसहितोमहर्घम् ॥७॥

शुभग्रह युक्त दृष्ट १।२।३ राशि हों तो ग्रीष्म ऋतुकी फसल, और ९।१०।११ में हों तो शरद् ऋतुकी फसल अच्छी होगी. लग्न लग्नेश और चंद्रमा शुभयुक्त दृष्ट हों तो सुकाल (समय अच्छा) होगा और अशुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो महर्घता होवे ॥ ७ ॥

लग्नेबलाढ्येनिजनाथसौम्यैर्युक्तेक्षितेकेंद्रगतैःशुभैश्च ॥
सर्वैःसमर्घं विबलैर्विलग्नेकेंद्रेषुपापैःसकलंत्वनर्घम् ॥ ८ ॥

लग्न बलवान् स्वस्वामि शुभयुक्त दृष्ट हो केंद्रोंमें शुभ ग्रह हों तो सुकाल, जो लग्न निर्बल केंद्रोंमें पाप हों तो अन्नका काल होवे इस भावमें लाभविषय-विचार विशेष है वह धनभावमें कहा है वही यहां भी जानना ॥ ८ ॥

इति श्रीमही० नीलकण्ठज्ञा० लाभभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ११ ॥

अथ द्वादशस्थानप्रश्नः।

रिपुविग्रहपृच्छायांबलवतिषष्ठेरिपुःसबलः ॥
द्वादशपेशुभदृष्टेबलवतिवाच्यंशुभंप्रष्टुः ॥ १ ॥

शत्रुसे युद्धके प्रश्नमें छठा स्थान बलवान् हो तो शत्रु बलवान् होवे जो व्ययेश शुभदृष्ट तथा बलवान् हो तो प्रष्टाको शुभ होगा ॥ १ ॥

शुभयुतदृष्टेसद्व्ययोऽशुभेक्षणयोगतोव्ययमनर्थात् ॥
एवंभावेष्वखिलेषूह्यंसदसत्फलंसुधिया ॥ २ ॥

व्ययेश शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो शुभकार्य्यमें पापयुक्त दृष्ट हो तो अशुभ कार्य्यमें अनर्थ व्यय होगा. इसी प्रकार सद्बुद्धिवालोंने समस्त भावोंका शुभा-शुभ फल कहना ॥ २ ॥

अथ ग्रन्थांतरे भोजनचिंता ।

कटुकोलवणस्तिक्तोमिश्रितोमधुरोरसः ॥
आम्लःकषायःकथितःसूर्य्यादीनांक्रमाद्रसाः ॥ ३ ॥

सूर्य्यका कडुवा चंद्रमाका सलौना मंगलका तीता बुधका मिश्रित बृहस्पतिका मीठा शुक्रका खट्टा शनिका कषाय(क्वाथ कांजिकादि) रसहै ॥ ३ ॥

लग्नंपश्यतियःखेटस्तस्ययःकथितोरसः ॥
भोजनेसोरसोवीर्य्यक्रमाद्वाच्याःपरेरसाः ॥ ४ ॥

जो ग्रह लग्नको देखे वा सबसे बलवान् जो ग्रह हो उसका जो रस है वह भोजनप्रश्नादिमें कहना ॥ ४ ॥

चंद्रस्ययेनमुथशिलस्तस्यविशेषंवदेद्बुक्तौ ॥
भोजनविधौविशेषंकथितंस्पष्टंद्वितीयतंत्रेस्य ॥ ५ ॥

चंद्रमा जिससे मुथशिली हो उसका रस भोजनमें विशेष कहना और भोजन प्रश्नका विचार विशेष स्पष्टतर इस ग्रंथ (नीलकंठीके दूसरे तंत्र) में कहाहै ॥ ५ ॥

इति श्रीमही० नी० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायांव्ययभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ १२ ॥

ग्रन्थांतरेविशेषेणसमर्घादिचिंता ।

महर्घस्यविचारंतुह्यादौसर्वैर्विचार्यते ॥
तस्मान्मयाविशेषात्रकथ्यतेशास्त्रचोदितः ॥ १ ॥

महर्घ समर्घका विचार पहिले सब लोग विचारते हैं तस्मात् विशेष विचार शास्त्रोक्त यहां कहा जाताहै ॥ १ ॥

राकाकुहूशशपभास्वदजप्रवेशेलग्नेश्वराः शुभखगैर्युतवीक्षिताश्चेत ॥ तद्वत्सरेजगतिसौख्यमलंप्रकुर्य्युः पापाद्दितागदनरेंद्रभयंप्रजानाम् ॥ २ ॥

जिस वर्षमें प्रथम पूर्णा प्रथम अमावास्याके प्रवेशकालके लग्नेश्वर तथा चन्द्रमाके प्रथम मेष प्रवेशकालके लग्नेश्वर और मेषार्क प्रवेश समयके लग्नेश्वर यदि शुभग्रह युत दृष्ट हों तो उस वर्षमें प्रजाको पूर्ण सुख होताहै जो पापयुत दृष्ट हों तो रोग और राजाका भय होताहै ॥ २ ॥

भानोर्मेषप्रवेशोदयभवनपतिःसद्ग्रहः स्वोच्चसंस्थःस्वर्क्षस्थोवा-
पिकेंद्रेशुभगगनचरैर्दृष्टयुक्तोबलाढ्यः ॥ तस्मिन्वर्षेविदध्यात्स-
गतिशुभसुखंभूरिसस्यंसुवृष्टिः क्रूरः क्रूरार्दितोवादिशतिनृपभयं
कष्टमन्नंमहर्घम् ॥ ३ ॥

सूर्य्य मेषप्रवेश लग्नका वा प्रश्नलग्नका स्वामी शुभग्रह हो तथा उच्च वा स्वरा-
शिका केंद्रमें शुभग्रहोंसे दृष्टयुक्त और बलवान् हो तो इस सालमें संसारमें संपूर्ण
सौख्य शुभ अन्न बहुत उत्तम वर्षा होवे जो उक्त लग्नेश पापग्रह पापाक्रांत
बलरहित हो तो राजभय अन्न थोडा भाव महँगा (अकरा) होवे ॥ ३ ॥

भानोरजप्रवेशेकेंद्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रांतैः ॥
बलवद्भिःसौम्यैर्वानिरीक्षितैर्ग्रैष्मिकावृद्धिः ॥ ४ ॥

सूर्य्यके मेषप्रवेशमें वा प्रश्नलग्नमें केंद्रोंमें बलवान् शुभग्रह शुभदृष्ट हो तो
ग्रीष्म ऋतुका अन्न बहुत होवे ॥ ४ ॥

अष्टमराशिगतेर्केगुरुशशिनोःकुंभसिंहसंस्थितयोः ॥
सिंहघटस्थितयोर्वानिष्पत्तिर्ग्रीष्मसस्यस्य ॥ ५ ॥

उक्त लग्नसे सूर्य्य अष्टम हो तथा बृहस्पति कुंभका चन्द्रमा सिंहका वा
बृहस्पति सिंहका चंद्रमा कुंभका हो तो ग्रीष्मकी फसल अच्छी होवे ॥ ५ ॥

अर्कात्सितेद्वितीयेबुधेथवायुगपदेवसंस्थितयोः ॥
व्ययगतयोर्वातद्वन्निष्पत्तिरतीवगुरुदृष्ट्या ॥ ६ ॥

सूर्य्यसे शुक्र वा बुध अथवा दोनहूं दूसरे स्थानमें वा बारहवें अथवा
दोनहूं स्थानोंमें हों बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो फसल अच्छी होवे ॥ ६ ॥

शुभमध्येलिनिसूर्य्याद्गुरुशशिनोःसप्तमेपरासंपत् ॥
अल्पाद्विस्थेसवितरिगुरौद्वितीयेर्द्धनिष्पत्तिः ॥ ७ ॥

मेषार्क वा प्रश्नलग्नसे सूर्य्य शुभग्रहोंके बीच हो तथा सूर्य्यसे सप्तम बृहस्पति
चंद्रमा हों तो फसल बहुत और सूर्य्य पाप शुभ दोनोंके मध्य हो तो अल्प तथा
बृहस्पति भी दूसरा हो तो आधी फसल हाथ आवेगी ॥ ७ ॥

लाभहिबुकार्थयुक्तैःसूर्य्यादथवासितेंदुज्ञशिपुत्रैः ॥
सस्यस्यपरासंपत्कर्मणिजीवेथवाचापे ॥ ८ ॥

प्रश्नलग्नसे वा सूर्य्यसे ११ । ४ । २ । स्थानोंमें शुक्र चंद्रमा बुध हों तो अन्न अच्छे होवें धनका बृहस्पति दशम हो तो भी यही फल है ॥ ८ ॥

कुंभेगुरुर्गविशशीसूर्य्योलिमुखेकुजार्कजौमकरे ॥
निष्पत्तिरस्तिमहतीपश्चात्परचक्ररोगभयम् ॥ ९ ॥

कुंभका बृहस्पति वृषका चंद्रमा वृश्चिकका सूर्य्य और मंगल शनि मकरके हों तो अन्न अच्छे हों परंतु पीछेसे परचक्र वा रोगोंका भयभी होवे ॥ ९ ॥

मध्येपापग्रहयोःसूर्य्यःसस्यंविनाशयत्यलिगः ॥
पापःसप्तमराशौजातंजातंविनाशयाति ॥ १० ॥

वृश्चिकका सूर्य्य पापोंके बीच तथा सप्तममें पापग्रह हों तो हुएहुए भी अन्ननाश होजावे ॥ १० ॥

अर्थस्थानेक्रूरःसौम्यैरनीक्षितःप्रथमजातम् ॥
सस्यंनिहंतिपश्चादुप्तंनिष्पादयेद्व्यक्तम् ॥ ११ ॥

दूसरे स्थानमें पापग्रह शुभदृष्टिरहित हों तो पहिली बोईहुई खेती नाश हो दूसरे बारकी जुती हुईसे अन्न उत्पन्न होवें ॥ ११ ॥

जामित्रकेंद्रसंस्थौक्रूरौसूर्य्यस्यवृश्चिकस्थस्य ॥
सस्यविपत्तिंकुरुतःसौम्यैर्दृष्टेनसर्वत्र ॥ १२ ॥

सप्तम केन्द्रमें वृश्चिक सूर्य्यसे दो पापग्रह हों तो फसल नष्ट होवे जो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि भी हो तो कहीं कहीं अच्छी भी होगी ॥ १२ ॥

वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्तमषष्ठोपगौयदाक्रू ॥
भवतितदानिष्पत्तिःसस्यानामर्घपरिहानिः ॥ १३ ॥

वृश्चिकके सूर्य्यसे ६ । ७ स्थानोंमें पापग्रह हों तो अन्न तो होंगे परंतु भाव घटेगा ॥ १३ ॥

विधिनानेनैवरात्रिवृषप्रवेशेशरत्समुत्थान्नम् ॥
विज्ञेयःसस्यानांनाशायाशिवायवातज्ञैः ॥ १४ ॥

जो योग वृश्चिकके सूर्य्यसे कहे हैं वे तो ग्रीष्मकी फसलके हैं वैसेही वृषके सूर्य्यमें शरदकी फसलका विचार शुभाशुभ करना ॥ १४ ॥

त्रिषुसेव्यादिषुसूर्य्यः सौम्यैर्युक्तोनिरंतरंविचरेत् ॥
ग्रैष्मिकसस्यंकुरुतेसमर्घंशुभयापयोगंच ॥ १५ ॥

सूर्य्य ५। ६। ७ राशियोंमें निरंतर शुभग्रहसे युक्तही रहे तो ग्रीष्मकी फसल बहुत होगी भावभी सस्ता होगा ॥ १५ ॥

कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदसस्यस्यतद्वदेवरविः ॥
संग्रहकालेज्ञेयोविपर्य्ययः क्रूरदृग्योगात् ॥ १६ ॥

सूर्य्य ९। १०। ११ राशियोंमें निरंतर शुभयुक्त रहे तो शरदकी फसल बहुत, भाव सस्ता होगा जो पापयुक्त दृष्ट रहे तो दोनहू योगोंमें अन्न अल्प भाव तेज होगा यह विचार विशेष संग्रह समयमें करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ वर्षाज्ञानम् ।

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्यदिलग्नात्तृतीयगः ॥
तोयसंज्ञोग्रहस्तत्रभवत्येवजलप्रदः ॥ १७ ॥

प्रश्नलग्नसे जलराशि ४। १०। ११। १२ तीसरी तथा उसीमें जल संज्ञक ग्रह चन्द्रमा शुक्र हों तो वर्षा शीघ्र होगी ॥ १७ ॥

बुधशुक्रयोर्मध्यगतः सूर्य्यः स्याज्जलशोषकः ॥
तयोर्यदिसमीपस्थस्तद्वाबहुजलप्रदः ॥ १८ ॥

- सूर्य बुध शुक्रके बीच हो तो जल सूखता है जो इनके समीपही हो तो बहुत जल देताहै ॥ १८ ॥

अग्रेयातियदाभौमः पश्चाच्चलतिभास्करः ॥
तत्रवृष्टिर्नविपुलाजायतेनात्रसंशयः ॥ १९ ॥

मंगलके पीछे सूर्य्य हो तो वर्षा नाममात्र और आगे हो तो बहुत होतीहै १९

वर्षाप्रश्नेशशिन्यंभोराशिगेलग्नगेपिवा ॥
केंद्रगेवाशुक्लपक्षेचातिवृष्टिः शुभेक्षिते ॥ २० ॥

वर्षाप्रश्नमें चन्द्रमा जलराशिमें वा लग्नमें हो अथवा शुक्लपक्षका चंद्रमा जलराशिका केंद्रमें शुभदृष्ट हो तो अतिवृष्टि होवे ॥ २० ॥

अल्पवृष्टिः पापदृष्टे प्रावृट्काले विशेषतः ॥
चंद्रवद्भार्गवे सर्वमेवंविधगुणान्विते ॥ २१ ॥

उक्त चंद्रमापर पापदृष्टिभी होवे तो अल्पवृष्टि होवे वर्षाकालमें यह योग हो तो बहुत दिनोंमें वृष्टि होवे. ऐसेही शुक्रसे भी जानना ॥ २१ ॥

प्रावृषींदुः सितात्सप्तराशिगः शुभवीक्षितः ॥
मंदात्त्रिकोणसप्तस्थो यदि वा वृष्टिकृद्भवेत् ॥ २२ ॥

वर्षाकालमें चंद्रमा शुक्रसे सप्तममें शुभदृष्ट हो अथवा शनिसे त्रिकोण वा सप्तम हो तो वर्षा शीघ्र होवे ॥ २२ ॥

सद्योवृष्टिकरः शुक्रो यदा बुधसमीपगः ॥
तयोर्मध्यगते भानौ तदा वृष्टिविनाशनम् ॥ २३ ॥

जो शुक्र बुधके समीप हो तो तत्काल वृष्टि करे जो बुध शुक्रके बीच सूर्य्य हो तो वर्षाका नाश होवे ॥ २३ ॥

मघादिपंचधिष्ण्यस्थः पूर्वे स्वातित्रये परे ॥
प्रवर्षणं भृगुः कुर्य्याद्विपरीतं न वर्षणम् ॥ २४ ॥

पूर्वोदयी शुक्र मघादि पांच नक्षत्रोंमें एक नक्षत्रसे दूसरेपर गमन करे तथा पश्चिमोदयी स्वातीसे तीनपर गमन करे तो वर्षा होवे. जो ऐसाही वक्रगती करे तो वर्षा न होवे ॥ २४ ॥

पुरतः पृष्ठतो भानोर्ग्रहा यदि समीपगाः ॥
तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रातिलोमगाः ॥ २५ ॥

सूर्य्यके आगे और पीछे मार्गी ग्रह समीपही हों तो वर्षा करते हैं. कोई वक्रीभी हों तो अवर्षण करते हैं ॥ २५ ॥

सौम्यमार्गगतः शुक्रो वृष्टिकृन्न तु याम्यगः ॥
उदयास्तेषु वृष्टिः स्याद्भानोरार्द्राप्रवेशने ॥ २६ ॥

सूर्य्यसे शुक्र उत्तरापथग हो तो वृष्टि; दक्षिणापथग हो तो अनावृष्टि करताहै तथा शुक्रके उदयास्तमें एवं आर्द्राप्रवेशमें भी वर्षा होतीहै ॥ २६ ॥

गुरोःसप्तमराशिस्थःप्रत्यग्रोभृगुजोयदा ॥
तदातिवर्षणंभूरिप्रावृट्कालेबलोज्झिते ॥ २७ ॥

वर्षाकालके प्रश्नमें बृहस्पतिके सप्तममें पूर्वोदयी शुक्र हो तो वर्षाकालमें अतिवृष्टि होवे ॥ २७ ॥

आसन्नंरविशशिनोःपरिवेषगतोत्तरा ॥
विद्युत्प्रपूर्णंमण्डूकास्तनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ २८ ॥

सूर्य चन्द्रमाके समीप उत्तरतर परिवेष (मौंडल वा परिधि) तथा बिजुली वा बादलमें छोटी चमक हो मेंडूक बोलें तो अवर्षण होवे ॥ २८ ॥

नखैर्लिखंतोमार्जाराश्चावनिर्लोहिताभवेत् ॥
रथ्यायांसेतुबंधाःस्युर्बालानांवृष्टिहेतवः ॥ २९ ॥

मार्जार अपने नखोंसे भूमि वा काष्ठ आदि खोदें तथा भूमि रक्तवर्ण हो और मार्गमें बालक खेलसे पुल बांधें तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ २९ ॥

पिपीलिश्रेण्यवच्छिन्नासंयतावहवस्तदा ॥
द्रुमादिरोहःसर्पाणांप्रतीदुर्वृष्टिसूचकाः ॥ ३० ॥

पिपीलिका (छोटी मकोडी) बहुत इकट्ठी एक पंक्तिसे चलें तथा सर्प वृक्षोंमें चढें और आकाशमें चन्द्रमाका प्रतिबिंबसा दीखे तो वृष्टि होतीहै ॥ ३० ॥

उदयास्तमयेकालेविवर्णोर्कोथवाशशी ॥
मधुवर्णोतिवायुश्चेदतिवृष्टिर्भवेत्तदा ॥ ३१ ॥

उदय तथा अस्तसमयमें सूर्य्य वा चन्द्रमा वर्णरहित यद्वा शहद समान रंगके हों और अतिवायु चले तो वर्षा होवे ॥ ३१ ॥

आर्द्रद्रव्यंस्पृशतियदिवावारितत्संज्ञकंवा
तोयासन्नोभवतियदिवातोयकार्य्योन्मुखो वा ॥
प्रष्टावाच्यःसलिलमचिरादस्तिनिःसंशयेन
पृच्छाकालेसलिलमितिवाश्रूयतेयत्रशब्दः ॥ ३२ ॥

जो प्रश्नसमयमें प्रष्टा गीली वस्तु वा जल और जलसम्बन्धी वस्तुको

स्पर्श करे अथवा जलके समीप पूछे अथवा जलसंबन्धी कार्य्य करता हो तथा प्रश्नकालमें जलका शब्द जलका नाम सुना जावे तो निस्सन्देह शीघ्र वर्षा होवे ॥ ३२ ॥

विरसमुदकंगोनेत्राभंवियद्विमलादिशोवियातिविकृतं काकांडाभंयदाचभवेन्नभः ॥ पवनविगमःश्च्यंतेवेझषाःस्थलगामिनोरसनमसकृन्मण्डूकानांजलागमहेतवः ॥ ३३ ॥

जलका रस स्वाद जाता रहै गौके नेत्र समान आकाश हो दिशा निर्मल हों तथा कौवेके अंडकासा रंग आकाश हो वायु शब्दवान् होवे वायु नरम चले मछली स्थलमें आवे सुना जावे और मेण्डक बोले तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ३३ ॥

गिरयोंजनवर्णसन्निभायदिवाबाष्पनिरुद्धकंदराः ॥
कृकवाकविलोचनोपमाःपरिवेषाःशशिनश्चवृष्टिदाः ॥ ३४ ॥

पर्वत श्यामरंग दीखें यद्वा कन्दरामें जल टपकके भर जावे कृकवाक पक्षीके नेत्र सदृश परिवेष चन्द्रमापर हों तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ ३४ ॥

प्रायोग्रहाणामुदयास्तकालेसमागमेमंडलसंक्रमेच ॥
पक्षक्षयेतीक्ष्णकरायनांतेवृष्टिंगतेर्कैनियतेन चार्द्राम् ॥ ३५ ॥

विशेषतः ग्रहोंके उदय और अस्त समयमें तथा उनके संक्रममें पक्षक्षयमें सूर्य्यके अयन चलनेमें आर्द्रा प्रवेशमें वर्षा होती है ॥ ३५ ॥

समागमेपततिजलंज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्चसंगमे ॥
यमारयोःपवनहुताशजंभयंह्यदृष्टयोःसहितयोश्चसद्ग्रहैः ॥ ३६ ॥

बुध शुक्र तथा बध बृहस्पति और बृहस्पति शुक्रके एक राशिमें प्राप्त होनेसे वर्षा होती है, शनि मंगलके साथ होनेमें जो शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न हों तो वायु तथा अग्निका भय होता है ॥ ३६ ॥

अथ सस्यनिष्पत्तिः ।

दिशिकस्यांभवेत्सस्यानिष्पत्तिःक्वचसानहि ।
कस्यदेशस्यभंगोहिकादिशिक्वचतन्नहि ॥ ३७ ॥

किस दिशामें सुकाल कहां अन्नकाल और किसका भंग किसकी वृद्धि होगी ऐसे प्रश्नमें ॥ ३७॥

चतुर्णामपिकेन्द्राणांमध्येयत्रशुभग्रहः ॥
तस्यांचसस्यनिष्पत्तिःस्वास्थ्यंचैवभविष्यति ॥ ३८ ॥

प्रश्नलग्न वा जगत्लग्न अर्थात् मेषार्कसामयिक लग्नसे जिस केन्द्रमें शुभ ग्रह वा जिसका स्वामी बली हो उसके अनुसार दिशामें अन्न बहुत होगा, रोगादि उपद्रवभी नहीं होवेंगे, जहां पाप वा स्वामी निर्बल हो वहां उसके अनुसार दुर्भिक्ष रोगादि होंगे लग्नसे पूर्व चतुर्थमे दक्षिण सप्तमसे पश्चिम और दशमसे उत्तर जानना ॥ ३८ ॥

यस्यांदिशिशनिःपापैर्युतोवाप्यवलोकितः ॥
दिशितस्यांचह्यस्वास्थ्यंदुर्भिक्षंचभविष्यति ॥ ३९ ॥

जिस दिशामें शनि पापयुक्त वा पापदृष्ट हो उसमें रोगादि उपद्रव और दुर्भिक्षभी होंगे ॥ ३९ ॥

दिशियस्यांरविस्तत्रधान्यनाशोनृपाद्भवेत् ॥
यत्रापिमंगलस्तत्रधान्यनाशोग्निभीस्तथा ॥ ४० ॥

जिस दिशामें सूर्य्य पापयुत दृष्ट हों तहां राजासे अन्नका नाश होवे, जहां वैसाही मंगल हो तहां अन्नका नाश और अग्निभयभी होवे ॥ ४० ॥

यस्यांदिशिशुभाःखेटाःसमस्तबलशालिनः ॥
निष्पन्नासैवविज्ञेयासस्यस्वास्थ्यंचतत्रहि ॥ ४१ ॥

जिस दिशामें शुभग्रह समस्त बलयुक्त हों तहां सब अन्न अच्छे होंगे और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, बलहीन शुभग्रहोंसे अनिष्ट बलवान् पापोंसे कुछ प्रकार शुभ और मिश्रितमें मिश्रफल कहना ॥ ४१ ॥

केन्द्रेषुसर्वतःपापाःसमस्तबलसंयुताः ॥
देशस्तदाविनष्टोसौज्ञातव्यःशास्त्रकोविदैः ॥ ४२ ॥

सभी केन्द्रोंमें पाप बलसहित हों तो सभी देश नष्टप्राय होंगे विशेष शास्त्रज्ञोंने उनका बलाबल और संबंधादि विचारके कहना ॥ ४२ ॥

समर्घंवामहर्घंवावस्तुमेकथयाशुकम् ॥
पृच्छायांयेनखेटेनशुभत्वंप्रतिपाद्यते ॥ ४३ ॥
खेटोसौयावतोमासांस्तस्यलग्नस्यसौम्यताम् ॥
विधत्तेतावतोमासान्समर्घंब्रुवतेबुधाः ॥ ४४ ॥

सुकाल वा अकाल कौन २ अन्नका कब २ होगा ऐसे प्रश्नमें जिस ग्रहसे पूर्वोक्त क्रममें उस अन्नादिके नाम राशिसे शुभता पाई है, वह जितने महीनोंमें दूसरी राशिको प्राप्त हो सकता है उतने महीनोंपर्यंत समर्घ रहेगा पंडित ऐसा विचारते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

अथोसावशुभंचिंत्यंकियद्भिर्वासरैरयम् ॥
सौम्यभावंविलग्नस्थंविधास्यतिविनिश्चितम् ॥ ४५ ॥
ज्ञातव्यादिवसामासामासैस्तावद्भिरस्यच ॥
महर्घतावस्तुनोहिप्रतिपाद्याविचक्षणैः ॥ ४६ ॥

जब कोई अशुभके शुभ होनेका समय पूँछे तो लग्नमें जितनी संख्या सौम्य भाव उन्हें निश्चय करके दिन वा महीने जहां जैसा संभव हो बुद्धिसे विचार करके समर्घ और महर्घ विद्वानोंने कहना ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

आधिष्ठातुर्बलंज्ञेयंलग्नेस्वामिविवर्जिते ॥
बलहीनेत्वधिष्ठायततः स्वामिबलेबलम् ॥ ४७ ॥

जिस कार्य्य वा वस्तुका जो अधिष्ठाता है, उसके लिये उसीका बल प्रथम जानकर उसके बलानुसार हानि वृद्धि कहनी, लग्नमें अधिष्ठाता ग्रह बली होता है यदि लग्नेश बलहीन हो, जो अधिष्ठाता बलहीन हो तो सदा लग्नेशका बल देखना अधिष्ठाता आगे कहते हैं ॥ ४७ ॥

रविस्तुमुक्तामणिहेमताम्रसौमाम्रवर्मपरदारकाणाम् ॥
मुक्तेक्षुशंखद्रववस्तुरूप्यक्षितीश्वराणांलवणस्यचेन्दुः ॥ ४८ ॥
मसूरताम्राकणधातुशस्त्रप्रवालकानामधिपःकुजःस्यात् ॥
सुगन्धवस्त्राद्विदलान्नपाक्षिहरिन्मणीनांप्रभुरिन्दुजःस्यात् ॥ ४९ ॥
सिद्धार्थगोधूमयवेक्षवानांसर्वाब्जिकर्पूरगवांगुरुश्च ॥
सहाप्यकाश्वान्नविचित्रवस्त्ररूप्यांबुजानांस्फटिकस्यशुक्रः ॥
कर्णेभनीलीबलचर्मकृष्णवस्त्रायसां वैमाहिषस्यचार्किः ॥ ५० ॥

वस्तुवोंके अधिष्ठाता मोती, चुन्नी, सुवर्ण, तांबा, रेशम, अस्त्र, शस्त्र, कवच, गरमी आदिका स्वामी सूर्य्य. मोती, ईख, शंख, रसकी वस्तु, नारियल, आम आदि और चांदी, राजे, लवण इनका स्वामी चंद्रमा. मसूर, तांबा, सिंगरफ, हरताल आदि धातु, वस्त्र, मूंगाका अधिष्ठाता मंगल. सुगंधि द्रव्य, वस्त्र, द्विदल, अन्न, पक्षी, पन्ना इनका बुध. राई, सरसों राडा आदि और गेहूं, जौ, ईखका विकार और मिस, सिंगाडे, कसेरू आदि जलोत्पन्न वस्तु तथा कर्पूरका बृहस्पति. इतर फुलेल आदि सुगंधित वस्तुका और अन्न, विचित्र वस्त्र, चांदी, जलज वस्तु, स्फटिकका शुक्र. ऊन, पशमीना, नील, चर्मजात, कृष्णवस्त्र, लोहा, भैंस आदिकोंका अधिष्ठाता शनि है. विशेष ग्रहतत्वभावतुल्य बुद्धिबलसे जानना ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ताजिकनीलकंठीप्रश्नतंत्रभाषाटीकायां समर्घानर्घवृष्टिसुभिक्षादिप्रश्ननिरूपणम् ।

समाप्तोयं ग्रंथः ।

विज्ञापनम् ।

श्रीनीलकंठःशरदांफलोत्तरंप्रश्नाख्यतंत्रंयदकारिपूर्वम् ॥ तत्सांप्रतंपूर्णतरंनलभ्यते ह्यावश्यकंप्रश्नफलंहिमन्ये ॥ १ ॥ तस्मादिदंभूरिगुणंसुसंग्रहंसर्वोपकारायमहीधरेण ॥ शास्त्रांतरीयंतदभाषयामयाद्विजन्मनाकारिकृतंहिपूर्वैः ॥ २ ॥ श्रीकीर्तिशाहनृपतेःखलु राज्यवेशोद्धिभ्राग्निशून्यनवतामित १८०८ शाकिमाहे ॥ गढवालदेशटिहरीनगरेबृहत्कसज्जातकस्यविवृतेःशुभभाषयांते ॥ ३ ॥ तंत्राणांत्रितयस्यपाठसरलाश्रीनीलकण्ठ्याःकृताभाषायन्ममचापलंकिमपितत्सन्तः क्षमन्त्वंबुधाः ॥ बालानांसुखबोधसंततिकरीज्योतिष्कदृग्ज्योतिर्नोलोकनासुपकारिणींसुविशदांकुर्वंतुमाहीधरीम् ॥ ४ ॥ छिद्रान्वेषणतत्पराःपरकृतेर्विध्वंसकादूषकामात्सर्येणपरार्थनाशनपराडुर्बुद्धयो मानिनः ॥ सत्कार्येशिथिलाःकुकर्मसुखिनोनिंदंतुनंदंतुवा मेकृत्यंसुकृतंपरोपकृतयेकुर्वंतुदुर्मत्सराः ॥ ५ ॥ चन्द्राक्षिवस्विन्दु १८२१ शकेतुभाद्रेशुक्लनवम्यांचगुरावशोधित ॥ अनेकसंलेखवशादशुद्धांमाहीधरींरामभरोसशर्म्मा ॥ ६ ॥

विज्ञापनम् ।

श्रीनीलकंठ दैवज्ञने वर्षफल दो तंत्रोंके उपरान्त जो प्रश्नतंत्र बनाया था वह इस समयमें संपूर्ण नहीं मिलता और प्रश्नविद्या प्रत्यक्षफलहै तथा यहां जातकमें बृहज्जातक ताजिकमें नीलकण्ठी सर्व साधारणके अर्थ भाषा होगई तो प्रश्नभी अवश्य होना चाहिये ॥ १ ॥ इस कारण पूर्वाचार्य्योंका सुन्दर संग्रहीत बहुत गुणवान् जिसमें सभी प्रकारके प्रश्न अनेक शास्त्रोक्त हैं सब पाठकोंके हितार्थ महीधरनामा ब्राह्मण जिला गढवाल राजधानी टीहरी निवासीने इसे भाषासहित करदिया ॥ २ ॥ श्रीमान् महाराजा टीहरी गढवालके अधीश श्री १०८ कीर्त्तिशाह साहब बहादुरके राज्यप्रवेश ९०४ द्विगुण अर्थात् १८०८ के शालमें बृहज्जातक भाषाटीका रचनाके उपरान्त उक्त नगरमें॥ ३ ॥ नील-कंठी तीनहूं तंत्रोंकी पाठ सरल (ज्योतिष) तारा विचार सम्बन्धी फलोंका स्फुरण करनेवाली नीलकंठीके अनभिज्ञों (बालकों) को सहजहीमें बोधरूप सन्ततीकी सृष्टि उत्पन्न करनेवाली सर्वजनोंका उपकार करनेवाली माहीधरी इस भाषाटीका सज्जन पुरुष पण्डित भलेप्रकार प्रकाश करें तथा इसमें जो कुछ मेरी अनभिज्ञता एवं धृष्टता हो उसे क्षमा करें ॥ ४ ॥ और जो लोग पराये छिद्र (दूषण) ढूँढनेमें तत्पर है पराये किये सत्कर्मोंका नाश करनेवाले एवं मत्सरी (परायी भलाईसे विनाही आग जलभुन जानेसे पराये प्रयोजनको भंग कर तत्पर, तथा शुभकृत्योंमें शिथिल अर्थात् जिनसे शुभ कर्म अपने हाथसे कुछ नहीं होसका प्रत्युत बुरे कामोंसे सुख माननेवाले "घमंडखोर" दुर्बुद्धि हैं वे मेरे परोपकारार्थ इस परिश्रमको देखकर निंदा करे अथवा आनंदित होकर प्रशंसा कियाकरते रहैं, किंतु जो विज्ञमहाशय निर्मत्सरी, पराये सुकृत्यसे आनंद मान-नेवाले एवं दुष्कृत्यसे चिंता करनेवाले हैं, वे इस कृत्यको सुकृत करें ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,	खेमराज श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण–मुंबई.	श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस–मुंबई.